

द्धा

जै न सि

l

न्त मा ला

7 प्रयोधक---

जैन-दियाकर प्रसिद्धयका पंडिस मुनि भी चौचमलजी महाराज

प्रकाशक---



### दो शब्द

"जैन सिक्सन्त साला ' की निरोपता दिकाने के क्षिए भूमिका विकान की मुक्ते कोई कावरमकता प्रतीत नहीं होती है। क्योंकि यह स्वयं विशिष्ट है। इस के प्रकाशित करने का मुक्य भ्येय यही है, कि स्वाभ्यायियों के क्षिए यह पुस्तक कुक कनुपक्रक्य-सी हो रही है। भ्रसपूर भाव स्मरावीम पुरुष भी हुम्मीचन्त्र जी स॰ के पाटानुपाट शास्त्र विशारद बास महावारी पुरुष भी मसासास सी महाराज के प्रशासिकारी शास्त्रक चैयवान् बैनाचार्यं पुत्रम भी सूबचन्द्र श्री महाराश 🕏 सन्प्रदायानुपायी कविवर सरक्ष स्वभावी पवित मुनि भी द्वीराखादाशी म॰ के सुशिष्य सग हड़म जैन दिवाकर प्रसिद्ध बक्त पंडित मुनि भी चौथमख जी महाराज के सब्बोच से मैं इस प्रसाद को प्रकाशित करके स्वाध्यान प्रेमियों की सेवा में सादर भेंट करता 🖞 । मूक-संशोधन में पूरी २ सावधानी से काम क्षिया गया है। किनु फिर भी मनुष्य नुदियों का पात्र है। चतः दृष्टि-दोप से कोई ब्रह्मिद रह गई हो हो ब्राशा है, कि मुद्र पाटक शुद्ध करके पड़ने की पूपा करेंगे।

६६ चीराप्तामा देवली } विजया दशमी सं• १६६४ } भवशेष— वर्षायः जैन

> यह सेंस्करण १००० भ्रमुक्य मेंट

### दो शब्द

"वन सिंदान्य मासा 🏻 की विश्वपता डिन्गनक सिंप मृमिका सिन्दने की मुखे काइ कान पकता प्रतान नहीं होती है। क्योंकि यह स्वय विशिष्ट है। इस क प्रकाशित करन का मुख्य ध्येष वहीं है, कि म्बाष्यावियों इ खिए यह बुम्बद कुछ धनुपस्चय-सी हो रही है। सत्रण्य शत-म्मरपीप पूरप भी हुवनीचन्द्र भी स॰ क पाटानुपाट शास्त्र विशास्त्र बास ब्रह्मचारा पूरेप भी सम्रासास की सदाग्रज के पद्मियकारा। ग्रास्ट्रीज पपनान वैनाबाय पूज्य क्या न्यूनबस्द जी सहागत क सम्बन्धानुवासी कविवर मरस व्यमाका पवित्र भुति भी दीराकासजी म० क सुशिष्य जग इंडन बैन-दिवाकर प्रसिद्ध बच्च पंडिय मृति भी चौपमस जी महाराज क नद्बाच म में दूस पुस्तुक का प्रकाशित करक स्वाच्याय प्रसिपीं की सवा में नाइर भेंट करता हूँ । प्रक्र-सराधन में पूरी २ साबधानी से काम श्विषा गया इ । किंतु बिल भी मनुष्य बुटियों का पाप ई । बात दृष्टि-दौष में काई चग्रुदि रह गई हा ना चारा है, कि मुन पारक गुद्ध करक पड़ने भी हुपा भरेंग 1

६२० चीमागामा दृहरी विजया राजमा सं १९६४

भवशंष— श्लिबचन्द् जैन मकाराव मांगीकास रिका रिकेट, चीराख्र

#### स्यमो सिद्धाण #

# जैन सिद्धांत माला

### ॥ दशवैकालिक सूत्रम् ॥

## ॥ दुमपुष्फिया मदम अन्मयणं ॥

धम्मो मगलसुकटं, कहिंसा सलमो तथे। देवा वि त नर्मसंति, जस्त धम्मे सया मणे	ntn
जहा दुमस्स पुष्पेसु, ममरी मावियह रसं।	
ण यपुष्तं किलामेइ, सो य पीर्णेई काप्य एमेए समणा मुत्ता, जेलोप सविसादुणो।	ાસા
विहंगमा व पुलेसु, दायमचेसया रया	HFH
यय च मिति लन्मामो, शाय कोइ उयहम्मई।	
ष्महागर्देसु रीर्यते, पुष्पेसु भगरा जहा महुगारसमा युद्धा, जे भषति व्यक्तिस्या।	11811
माणाभिंडरया दता, तेण युवित साहुगो ।। ति मेमि	सम्ब
इति हमप्रियानाम प्रत्यमग्रस्यार्थं समस्य । १ ।।	



व्शवै	रातिक सूर्वं मध्ययन १	ŧ	
॥ भह खु इय	॥ भह खु हु यायारकहा तह्य भज्मत्या ॥		
सभमे सुद्रिकापार्या,	विष्पमुकाण ताइए।		
तेसिमेयमणाइपण,	निग्गंत्याण महेसिण	11811	
<b>पर्</b> सियं कीयगर्ड.	नियागमभिष्ठद्वाणि य ।		
रामचे सिगायो य,	गधमल्ले य बीयणे	ાશા	
संनिही गिहीमचे य,	रायपिंड किमिच्छए।		
सवाह्या द्वपहोयया	य, संपुच्छणा देहपत्नोयणा य	n\$n	
महाधए य नालीए,	<b>छत्त्रस य घारसङ्घाए।</b>		
तेगिन्छ पाण्डापाय,	समारम च जोइगो	((2))	
सेक्षायरविंड च,	ष्ट्रासदीपितयकप् ।		
गिहंतरिनसेजा य	गायसमुन्बदृषाणि य	।।धा	
गिहिएो वेकायहियं,	सा य भाजीषमस्त्रया।		
वचानिञ्युद्दमोइच,	भाइरस्सरणाणि य	11811	
मूलप सिंगमेरे य,	<b>पच्छुसंदे प्</b> रिम् <mark>षुदे ।</mark>		
फंदे मूले य सिंदते,	फले बीए यध्यामप	11011	
सोवपने सिंघवे नोगो	रोमालोखे य चामए।		
सामुदे पंसुकारे य,	कालासोग्रो य सामप	lisii	
प्षयो चिषमणीय,	बत्थीफन्मपिरेयणे ।		
घेनणे दसमणे य,	गायन्भगविभूसर्थे	HAH	
सब्बमेयमण्डल,	निग्गयाण महेसिए।		
संवमन्मि च जुचार्यः	<b>सतुभूयविद्या</b> रिए।	li <b>t</b> ell	

विगुता छम्न सजया । निग्गमा एम्जुदंसियो

117711

पषासंबर्धारण्या,

पषनिगादका घीरा,

## ।। भह सामग्रगपुष्वय दुर्भ भज्कपण् ॥

कह न् कुळा सामय्या, जो कामे न निवारए। पए पए विसीयतो. सकप्पस्स वर्स गन्नो пŧп वत्थगधमलकार. इत्थीको समणाणिय य । बाब्छदा जे न भुजंति, न से पाइ चि पुचई บสม जेय करी पिए भोए, लाई विपिष्टि कुम्बई।

मादीयों चयद भोए, से हु "बाइ" ति नुबई บริบั समाए वंहाए परिव्ययक्षो, सिया मणी निस्सरई वहिद्धा । ' न सा महं नोवि चह पि तीसे'' इचेव ताओ मिरापुरु राग ॥४॥

धायावयाहा ! चय सांगभद्ध , कामे कमादी फमियं खु दुस्ख । दिवाहि वाम विगापका रागं एव सुद्दी होहिसि संपराप HXII

पक्यं र जिल्यं जोदं, ध्मफेउ दुरास्यं। नग्द्धनि यंगय भाष् पुत्ते जाया भगवर्णे 11411 । धरधन प्रमानामा ज्ञा सं जीवियकारणा।

वंत इण्हांस भावत राय त मरण भये IIVII तं पडिम संधगविषद्वाणे । चह च भागगयस्य गममं निद्वची चर मा कल १६ रणा द्वीमा Hell

सह न वादिमि भाष जा जा दिण्छिमि नारिको। र्षाद्वभाषा मविस्मित वायाह्या ध्व हता HEH मंत्रवाप सुमानियं । न स मा वयले गांचा धन्म गर्नाष्ट्रवाद्या कर्यात पहा गामा

110511 वंडिया पश्चिम्हाता । उ कर्मन संबद्धा

जरा से पुरिमृत्तमा क सि वाम ॥११॥ ब लवडूर्र न गगु ६ व सर्भवस्तुपुरवर्षं सन्म बाम्नवर्णं समर्च ॥ ३ ॥

दशवैक	निक सूर्व कम्ययन १	Į
॥ भह खु द्वय	।यारकहा तह्य भज्क्षयसा ॥	
सजमे सुट्टिमपार्ग,	विष्यमुकाण ताइर्ण ।	
तेसिमेयमणार्वण,	निर्गत्याया महेसिया	utu
<b>एहे</b> सियं कीयगढ,	नियागमभिहदाणि य ।	
राइभन्ते सिणाणे य,	गभमल्ते य धीयर्थे	॥शा
संनिही गिहीमचे य,	रायपिंद फिमिच्छप।	
संवाह्या द्वपहोयणा य	ा, संपुच्छणा वेहपत्तोय <b>या</b> य	H¥H
श्रष्ट्राषए य नात्तीय,	छत्तस्त य धारणुद्वापः।	
तेगिच्छ पाग्रहापाप,	समारभं च जोइयो	HAII
सेव्यायरविंद च,	ष्ट्रासदीवलियंकए ।	
गिहंसरिनसेजा य	गायस्मुन्यदृषायाि य	HAH
गिहियो वैद्यायदिय,	जाय चाजीयमत्तिया।	
सत्तानिष्युद्धभोद्द्यं,	षाग्रस्सरयायि य	11411
मूलए सिंगमेरे य,	<b>ए</b> च्छुखंडे चनिष्युडे ।	
फंदे मूलेय समित्रे,	फते पीए य धामए	11011
सोयचने सिंधवं कोयों	रोमालोखें य शामए।	
सामुद्दे पंसुकार य,	फानाकोर्गे य चामए	।।दा।

बत्धीकम्मविरेयणे।

निम्मयाण मद्दसिए । लद्वमूर्यविद्वारिण llut

118011

118 811

गायम्भंगविभ्सयो

विगुषा छमु समया।

निर्माधा उग्मुदंमिएो

घृषणे ति यमणे म,

ष्प्रमणे दतपणे य,

संबम्मि च जुत्ताएं,

पवासवपरिएए।या,

१पनिगादका पीरा,

सम्ममेयमणाइल,

`	वन स्तिकात माला
	·····
॥ भ	इ सामग्रेणपुष्त्रय दुर्भ भज्मप्रया ॥

वत्यगधमलकारं, इत्थीको समग्राणिय य ।	
मच्छदा जे न मुंजीत, न से चाइ ति वुचई	प्रशा
ज य फंने पिए मोए, लग्ने विपिष्टि कुटवई।	
माद्दीणे चयद भोए, से हु "चाद" सि वुद्ध	11311
समाण वेहाण परिव्ययतो सिया मणो निस्सरई पहिद्या !	
' न मा महं नोवि छह पि तीसे" <b>इसेव धाओ</b> विख्एज रागं	11811
श्रायाययाना ! चय सोगमह , कामे कमाही कमियं स दुक्र	T I

11711

<del>\_</del> -----

द्धिराहि नाम पिणाण्य रागं एव सुदी होहिसि संपराप ווצוו धमकेउ दुगसय । कते जाया मगंघणे 11411 जा सं जीवियकारणा । चित्राच सङ्जमाकामी रोयं त गरण भव

वंत्र इन्ह्यांन भावतं IIMI स चडमि चैयमपविद्वाने । चार्रं च भागरायस्म. गप्रगं निष्ट्रभा पर मा इल गथगा दामो IIdi सद न कार्टिंग माप जा ना रिण्डमि नारिको ।

भाहिषाता महिस्समि वायाद्वा स्व इदो HEII

नाच मा वयले माचा. मेजवाप सुमानियं।

धन्म संपश्चित्राह्मा चंद्रपण च्हा नागा He#H

जरा से पुरिमुलका ह नि बनि ॥११॥

धान्दवर्ण सद्दर्भ ॥ ३ ॥

र्वश्चिम पविषयनामा । वर्ष करेति संबद्धा

नम्द्रनि यंत्रय भाषा

परसंग्रालयं आहे.

वित्वर्ति भएगु

दृति शामनागुष्ट्यय नाम

क्य पर विभीवती. संबरप्रसासम् राख्ये

फह न कुजा सामरशं, जो कामे न निवारर।

ष्णहावरे बदस्ये मन्ते । महत्वए मेहुणाभो वेरमण । सव्य मन्ते । मेहुणं पषक्यामि । से दिव्य या, माणुस या, विरिक्यजोणिय या, नेय सय मेहुणं सेविध्या, नेयन्नेहिं मेहुण सेविध्या, मेहुण सेवन्ते वि धन्ने न समगुजाणे जा। जायधीषाए विविद्दं विविद्देगं मरोण वायाए काएणं न फरोम न कारवेमि करतेषि धन्ने न समगुजाणामि । वस्स मन्ते । पिहक्तमामि निन्दामि गरिहामि धप्याण योसिरामि । वस्से मन्ते । महत्वए स्विद्देशोमि सञ्जाको मेहुणाभो वरसण् ॥ ४॥ ।

छहायरे पव्चमें अन्ते । महत्वय परिगाहाओ वेरमणं । सव्यं अन्ते । परिगाहं पबल्लामि । से कप्पं या, यह या, खर्णुं या यूलं या चित्तमंतं या व्यवस्तानतं या । नेम सर्यं परिगाहं परिगिण्हाविद्धा, नेयन्नेहिं परिगाहं परिगिण्हाविद्धा, परिगाहं परिगिण्हाते यि का ने न समसुजाणिद्धा । जावन्नी वाप तिवह विविदेश मणेण यायाप काएणं न करोमि न कारविम क्रंतिय कर्नं न समसुजाण्माम । वस्स अन्ते । पहिन्द्धामामि निन्दामि गरिहामि कप्पाण् योसिरामि । पद्धमें मन्ते । महत्वय त्यदिक्षोमि सव्यामो परिगाहाचो वरमणं ॥ ४ ॥ ।

चहायर छहे भन्ते। वर राइमोधरणाधो वरमण् । सहयं भन्ते । राइमोपण् पषक्स्तािम । से ध्यमण् वा पाण् ना साइम या साइमं या । नव सर्य राइं नुंजिज्ञा नवन्तेहिं राइं नुंजािच्छा राइ मुख्तेऽवि धन्ने न ममणुजालेग्झा। जाव जीवाण, तिविहं विविहर्णं मणेण् यावाए माण्यं न करिम न फारबीम करेंबेल धन्न न ममणुजारािम । तस्म मन्ते याविष्जा, पायो धाइयायन्तेऽषि धान्ने न समसुजायोज्जा, जाववश्रीवाय विविद्दं तिविद्देश मयोग वायाय फाएस न फरिम न फारवेमि धरतिय धान्न न समसुजायामि, तस्स मन्ते । पिकक्षमामि निन्दामि गरिष्दामि धायास्य वेसिरामि । पढमे भन्ते । महरुषय जबद्विष्मोमि सन्याधो पासाइवायाको वेरमस्य ॥ १॥

बाहावरे दुबे मन्ते । महत्वय मुसावायाको वेरमण् । मञ्च भन्ते । मुसावाय पवक्सामि । से कोहा मा, लोहा मा भया था, हासा था नेम सय मुसं पहण्डा नेषडन्नीह् मुस भयाविश्वा मुस समन्ते वि बन्ने न समणुजायोग्जा जावश्वीवाय, विविह तिषिद्देण मर्गेण वायाय कायण क कर्मत न कारवेमि करतिय कार्ने न समणुजायामि । तस्स भन्ते । पविद्यामि निन्दामि गरिहामि कार्याण् योसिरामि । दुब्बे मन्ते । महत्वय सर्वाष्ट्रकोमि सञ्चाको मुसायावाको यरमण्॥ २॥

बाहावर तथ्ये भन्ते । महत्वय १ व्यक्तिनादायाची बेरमया।

सञ्य भन्ते । व्यक्तिहाराय प्रवस्थामि । से गामे वा, नगरे या रख्ये या, व्यक्तं या, पहु था, व्यक्तं मा युक्त था विश्वमत या व्यक्तिमन या, नय सथ क्षित्रने गिषिहण्या नेवञ्जनिहि व्यक्तिमन या, नय सथ क्षित्रने गिषिहण्या नेवञ्जनिहि व्यक्तिमन या, नय सथ क्षित्रने गिष्यहण्या स्वाचन सम्यु-जालगा जायगायाय विविधि विष्यस्य स्थेत्ये यायाय कायस्य त्र कर्मा न कारविम करनीय व्यक्तं स्थाप्य यो सिरामि मन्त्र परिक्रमामि निज्ञामि गरिस्माम व्यवस्याये विस्तामित्य स्वयस्याये विस्तामित्य स्वयस्य धहावरे चडत्ये मन्ते । महन्वए मेहुणाभी वेरमण् । सम्य मन्ते । मेहुण् प्रवस्त्वामि । से विन्नं या, माणुस चा, विरिक्खानीिण्य वा, नेष सय मेहुण् सेविन्ना, नेषन्नेहिं मेहुण् सेषिक्ता, मेहुण् सेवत्ति धान्ने न समणुजाएंग्जा । जावजीबाए विविद्दं विविद्देणं मणुण् वायार फारणं न कर्रेमि न कारवेमि कर्रांपि धान्ने न समणुजाणामि । तस्त भन्ते । पविद्यमामि निन्नामि गरिहामि धालाण् वोसिरामि । चस्से भन्ते । महन्त्रप स्वविद्वामि सन्त्राधो मेहुणाधो वेरमण्॥ ४॥

द्याहाधरे पञ्चमे भन्ते । महत्वप् परिमाहाधो वरमण् । सत्यं भन्ते । परिगाह पद्यस्थानि । पे ध्रप्प था, यहु था, खणुं या धृद्ध गा विद्यमंशं या ध्यन्तिमतं वा । नेव सयं परिमाह परिगिष्हाविद्धा, नेवन्तेहि परिगाई परिगिष्हाविद्धा, परिगाई परिगिष्हाविद्धा, परिगाई परिगिष्हाविद्धा, परिगाई परिगिष्हन्ते वि धाने न समसुमाणिद्धा। आवश्ची थाए विविद्दं विविद्देश मर्गेण यायाप ध्राएणं न करमि न धराविद्या करविष् धान्ते । समसुमाणिद्धा । प्रदाम मन्ते । परिमाम किन्दामि गरिहामि धरायाण योगिरामि । पद्धमे मन्ते । महत्वप उर्वाह्मोमि सन्त्याष्ट्री परिमाहाको येरमण् ॥ ४॥

श्रद्वापरे छट्टे भन्ते। षए राइमोझणायो घरमण् । सन्धं भन्ते । राइमोपण् पद्मस्यामि । छे स्ममण् षा पाण् या साइमं या साइम षा । नय मयं राई मुंजिञ्जा नेपन्नाह् राई मुजापिञ्जा राइ मुजतेऽषि सन्ते न समणुजाणे ञा। जाव श्रीपाण, विविद्दं विविद्दं मणेणं पायाए काण्यं न स्टर्सि म कार्याम करसीप स्थान न समणुजाणाम । तस्य भन्त पिंदक्रमामि निन्दामि गरिहामि चप्पाण बोसिरामि । छुट्टे मेरी । वर उषट्ठिकोमि सञ्चाको राङ्गमोक्यणाको वरमण् ॥ ६॥ इरुचेयाइ पत्र महत्वयाई राङ्गोष्मणवेरमगाछट्टाई क्यचिट्यिट्टयार ववसंपिक्वचा ग्रं बिहरामि ॥

से निक्यू वा निक्सुणी वा संजयिरयपिंडह्यपक क्लायपाक स्मे दिया वा राजो वा पराजो वा परिसाराओं वा सुचे वा जागरमाणे वा से पुढार्व वा मिलि वा सिर्ल वा लेलु वा ससरक्से वा वार्य हत्येण वा परण्य वा कहेण वा किलियोण वा संगुलियाए वा सिलागण का किलियोण वा कांगुलियाए वा सिलागण का सिलागण का मिलियों वा ने भालिहिंच्या, न पिलिहिंच्या, न पिलिहिंच्या न मिलिहांच्या न मिलिहांच्या न मिलिहांच्या न मिलिहांच्या न मिलिहांच्या न मिलिहांच्या न पर्हालेजा न मिलिहांच्या न महांविजा । अपने भालिहांच्या । वाकर्जीवाए तिथिहें तिष्वहंच या मिल्हां वा न समण्डाणिका। जावक्रीवाए तिथिहें तिष्वहंण मणेण वायोप कापण न करीम न कारवेमि करत पि कार्न न समण्डाणामि। वस्स भ ते। पिकसमामि निवामि गरिहामि भाराणों वोसिरामि।। १।।

से भिक्त् था, भिक्तुणी या संजयिरस्पाविद्यप्य क्नायपावटम्म दिष्या या, राष्ट्रो या, एमध्यो या परि-मागध्या या, मले या, जागरमाणे या, से उद्गं या, घोम या हिम या महित्य या करन या दरितसुन या सुद्धोद्गं या उत्त्रक्त या पाय उत्तरक्ते या यस्य, मसिसिस्द्रं या स्वायं मामागद्व या वया न मामुनिष्या न संपृतिद्या, न भाषी जिल्ला न पर्यावला । सक्तादिला न पक्तिस्ता, न भाषी संफुसाबिजा, न श्राबीलाविजा, न पवीलाविजा, न श्र क्लोबाबिजा, न पक्लोबाबिजा, न श्रावाविक्जा, न पया विज्ञा, श्रम्न श्रामुसंत वा, संपुसंत वा, श्राविलत वा, पवी-लते या, श्रक्लोबतं वा, पक्लोबतं वा, श्रायावात वा, पया यन्त वा न समगुजाग्रिजा, जावश्लीवाण, तिविह तिविहंग्य मग्रेण वायाप फाएग्र न फरेमि न कारवेमि फर त पि श्रम्म न समगुजाग्रामा । तस्स मन्ते । पश्चिकमामि निन्दामि गरिहामि श्रप्याणुं वोक्षिरामि ॥ २॥

धे सिक्स् या भिक्तुणी धा, संजयिषरवर्षिह्यपद्मा क्सायपावक्रमे, दिश्रा धा, राष्ट्रो पा, एतको घा, परिमातको या, मुसे धा, जारमाएं धा धे ध्रगिंश वा १गाल धा, मुसु धा, आर्थ धा, जालं धा, ध्रलायं धा, मुद्धागिंश धा, उसे धा, न उंजिक्जा, न घट्टिन्जा, न भिदिक्जा, न दक्जा लिक्जा, न पक्जालिक्जा, न निक्यादिक्जा, का नं न दक्जा विक्रा, न पर्जालिक्जा, न मिदिक्जा, न पर्जालिक्जा, न पर्वालिक्जा, न पर्वालिक्जा, न पर्वालिक्जा, न पर्वालिक्जा, न मिद्दे धा, पर्वालिक्जा, न मिस्स धा, पर्वालिक्जा जावक्जीयार तिष्वा धिविद्य मार्ग्य धायार कार्ग्य परिवालिक स्थान स्यान स्थान स्थान

से भिष्म् पा, भिष्मुणी या मजयपिरयपहिद्यपष षतायपायकमो, दिष्मा या राष्ट्री या, एगस्री या, परिमानको या, मुत्ते या, जागरमाले या, से मिण्ल या, भिट्टमणेल या, वानिवेटेल या, पत्तेल बा, पत्तमभील या, साहाए या, साहामभील वा, पिट्ट्योय था, पिट्टयहरयेया था, चेलेया था, चेलकन्नेया था, हत्येया वा, मुहेया था, घप्पयो था काय, बाहिर वा वि पुमार्ल न कुमिट्या न थीपट्या, बन्नन कुमायिन्या, न वीद्यायिन्या धन्न कुमेट वा, बीद्यंत या न समग्रुजायिन्या जायन्त्रीवाप,

क्षन्त फुन्द वा, बाक्षद या न समणुआायाचा जायाचाप तिविहं तिविहेर्ण मर्योग वायाप काएरां न करेमि न कारवेमि करंतिप क्षन्तं न समणुआणामि। वस्स मन्ते। पिकक्षमामि निन्दामि गरिकामि कप्पायां वोसियमि ॥॥॥

से भिक्सू वा, भिक्सुयी था, संजयविरयपिड्डयपर क्सायपावक्रमे, विष्मा वा, राघो वा, पराघो वा, परिसागको वा, सत्ते वा, आगरमायो वा, से मीय्सु वा, बीयपड्रहेसु बा,

रुदेसु वा, रुडपइहेसु वा, नापसु वा, जायपहहेसु वा, हरिपसु वा, हरियपइहेसु वा दिन्नेसु वा द्विन्नपइहेसु वा, सिक्तेसु वा, सिक्तिकोलपिकिसिस्सप्सु वा ना गण्डेड्डा, न सिहेड्डा, न तिसीइड्डा, न तुष्टाहिड्डा, धान न गण्डाविड्डा, न सिहोदिड्डा, न निसीड्डाविड्डा, न तुष्टाहिड्डा, कान गण्डाविड्डा, वा, निसीड्डाव वा, तुपहर्व वा न समपुजाणिड्डा आवड्डाविड्डा दिवाई विविद्देणं मणेणं पायाप कारणं न करेस न कारवेदि इस्तिष्ट इन्डिड न समपुजाणिति । वस्त अन्ते ! पिंडव्डावािस

निन्दामि गरिहानि कप्पायं बोसियानि ॥ ४ ॥
से मिक्स् वा मिक्सुयो या संजयविश्यपिष्ठद्यपष्ट क्ष्मायपावकस्मे, दिचा वा, राम्रो वा, प्रामो मा, परिसागभो या मुसे वा जागरमाण वा से की व्या, पर्यंग या क्ष्मु वा पिशीलपं या, इत्यंसि या पायंनि या वार्षुसि वा, वर्रसि वा वदरीस वा सीसिस या, वर्ष्यसि वा पिंडगाईसि वा कंपसीस

या, पायपुरुद्धणसि या स्यहरएंमि या, गुरुद्धगति या, पंडरांसि

दशबैकातिक सूत्रं भव्ययनं ४	<b>१</b> १	
षा दृढगिस था, पीढगिस या, फलागिस या, सेवजिस षा, संवार गिस था, कानवरिस था तहण्यारे एकगरण्याप तको संज्ञयानेव पिढलेहिय पिढलेहिय पमिकिक पमिकिक एगतमयण्यिका, नी ए संघायमाविक्यका ॥६॥		
मजयं चरमाणो म, पाणम्याइ हिंसइ । पाचइ पावय कम्म द से होइ कहुम फर्ल मजयं चिड्डमाणो म, पाणम्याइ हिंसइ ।	u <b>v</b> ii	
यवद्गपावयं कम्मं त से होइ कहुक फल कास कासमाणों का, पाणामृयाद्ग हिंसइ।	ારા	
बन्धइ पावयं कन्म, त से होइ कमुझ फलं भाजय सयमाणो भ, पाणभूयाइ हिंसइ । भाषइ पावय कन्म, ७ से होइ कसुझं फल	मशा महाम	
चजय मुंजमाणो च, पाणमूयाइ हिंसइ । भषड पावर्ष कम्मं, व से होइ कडुचं फलं	likli	
श्रासय भासमाणी श्रा, पाणभूयाइ हिंसह । वधइ पाषय कम्मं, स से होइ फबुझं फल	॥६॥	

lizii

IIEII

118011

कह घरे फह चिट्टे, छहमासे कह सए। कह मुंजन्तो भासंतो, पायकम्भ न यघह

जय चर जय चिहे, जयमासे जय सए। जय भुजन्तो भासतो, पायकम्म न यघइ

सम्बन्धयपम्यस्म, सम्म भ्याइ पासको । पिहिकासवस्स द्वस्म, पावपम्मं न गंबइ

पढमं नार्ण तस्त्रो दया, एव चिट्टइ सध्यसंजय । समार्गी किं काही, किंवा, नाही व सेयपावर्ग

१२	जैन सिद्धांत माला	
सोचा जाणाइ	कल्लाया, सोचा जायाइ पावग ।	
चमय पि जार	ण इसोबा ज सेयंत समायर	115311
जो जीवे वि	न याण्इ भजीवे विन याण्इ।	
जीषाजीवे ध	याणुषो, ऋहं सो नाहीव संजम	114511
_	विमास्य इ, भाजीवे वि वियास इ।	
	यागांतो, सो ह नाहिच संजर्म	115111
	नीचे य दोषि एए वियाग्र <b>इ</b> ।	
	विह सम्बजीवाण जाण्ड	िरशा
	विद्दं सन्यजीवाण जाण्यः।	11/011
तया चरणं र	गाव च, बंध मुक्छ च जाया <b>इ</b>	લશ્કા
	व पार्व च, बंधं मुक्छः च जासाइ।	111411
रया निविद्या	ए भोए, जे दिब्से के य मासुचे	
	दए भोए जे दिव्य जे य मासुचे।	118611
	संजोर्ग, सभिम्तरं वाहिर	
	सजोग, सर्बिभवर बाहिर्र ।	।।१७॥
	विश्वास, पञ्च <b>रप भ</b> सागरिय	
	धित्तार्णं पञ्चदर मरागारिय।	114-411
मधा संस्कर	मृद्धिक धम्म पासे चरातरं	
जया संवर	पुडि इस्में वासे प्राप्तर।	iiţeii
सया धराइ	कमार्थ अमेहिकलुसंकर्ट	113011
अपा धराइ	कम्मर्थ क्योहिकल्सकः।	114011
तया सम्प	तर्ग नाए इसए पाभिग दइ	115 \$11
ज्ञथा सन्य	त्रः नाण, दमण पाभिगण्द्रः।	,,
सया सीगम	स्रोगं य, जिएो नास्य स्थमी	أأددأأ

पष्टबंते व से दत्य, पक्सकृति य सजय ।	
हिंसेज्ज पाणभ्याइं, वसे शहुव धायरे	ואוו
वन्धा तेण न गच्छिया, संचर्य सुसमाहिए।	
सइ बरुपोग मगोग, जयमेव परकमे	11411
श्गाखं झारिय रासि, तुसरासि च गोमय ।	
ससरक्क्षेहि पार्श्हें, संबन्धों सं नद्दक्रमें	।जा
न बरेस्य वासे वासंते, महियाए व परंविए।	
महावाप व वायते, विरिच्छसंपाइमेसु वा	11511
न चरेक्त वेससामंते, वशचेरवसासुर ।	
वंभयारिस्त दंतस्स होन्जा तस्य विसोत्तिना	الغاا
भणाययणे वरंतस्त, संसमीए भनिकसण् ।	
होजन वयार्थ पीला, सामवण्टिम अससको	114011
तमहा एवं विकाणिता दोस दुमाइयब्दणः।	
षरजए वेससामन्त मुणी प्रांतमस्सिए	118811
सायं स्क्षं गाविं, विच गोयं ह्यं गर्भ।	
संबंदम फलई जुई दूरको परिवन्त्रए	गररम
चसुप्रप नावसप्र, भप्पदिष्ठे चसाउते ।	
इंदिकाई बहामार्ग, दमइचा मुखी चरे	118311
दयद्यस्य न गच्छ्रेग्जा भासमायो च गोचरे।	
इसन्दो नाभिगच्छेग्या, कुलै उचायय सपा	114811
बालोबं धिगालं दारं, संघिदगभवणाणि ब । चरन्तो न विणिगमाए संस्टुःसं विषयाप	
रमो गिह्नवहण च ग्हस्सारिक्समाणि य ।	सर्भा
स्वित्तसकरं ठार्णं दृश्या परिवादण	119.61.
disting at one from means.	115.611

दशवैकालिक सूत्रं अध्ययनं ४	<b>१</b> ३
जया सोगमकोर्ग च, जियो जागुई केवती।	
षया जोगे निरुभित्ता, सेलेसि पश्चित्रज्ञह	गर३॥
जया जोगे निर्दमित्ता, सेलेसि पहिचण्यह।	
तया कम्मं सवित्तार्गं, सिद्धि गच्छइ नीरको	115811
जया कम्मं स्ववित्ताण, सिद्धि गच्छइ नीरक्रो ।	
षया क्षोगमत्ययत्थो, सिद्धो इवइ सासम्मो	ારશા
सुदसायगस्य समणस्य, सायादत्तगस्य निगामसाइस्स ।	
उच्छोत्रणापहोत्रस्स, दुल्तहा सुगई वारिसगस्स	गरहा
वयोगुणपहाणस्स, उज्जुमइ स्नन्तिसंजमरयस्य ।	
परीसहे जिए। तस्स सुल्लहा सुगई वारिसगस्स	115c11
पच्छा वि ते पयाया, सिप्पं गच्छति समरभवणाई।	
रेसि पिछो तवो सजमो छ, खति छ वमचेर च	liseli
इच्चेय छुन्जावशिषा, सम्महिट्टी सया जए ।	
दुल्लह लहिसु सामएएं कम्मुणा न विराहिज्जासि सिवेहि	111. Ell
इति छुज्जीविशिषा साम चत्रसं प्रवस्तरस समत ॥४	11
।। श्रह विंडेसका काम पचमज्मरका।।	
सपत्ते भिक्खकालिमा, यसभवो चमुच्छियो ।	
इमेण कम्मजोगेण, भत्तपाएं गवेसए	11811
ये गामे था नगर या, गो <b>द्य</b> रमागद्यो मुखी।	
परे भदमणुन्विग्गो, भन्विक्सिचेण चेमसा	11-11
पुरको जुगमायाय, पेहमायो महि घर ।	
वम्बतो वीबहरियाई, पासे छ दगमहिम	11\$11
मोषाय विमम सागु, विज्ञल परिषज्ञए ।	
संदमेण न गच्छिग्वा, विजिमाणे परक्रमे	11811

पवर्डते य से वत्थ, पम्सानंत य सञ्जण ।	
हिंसेम्ज पाणम्याई, वसे जदुन थायरे	।।श्रा
वन्दा तेण न गच्छिजा, संजय सुसमाहिय ।	
सइ भएगोण मन्नोण, अयमेय पराहमे	11411
इगासं छारिय रासि, तुसरासि च गोमय ।	
ससरक्छेहि पाएहि, संज्ञको तं नश्कमे	ાળા
न चरका वासे वास्ति, महियाप घ परंतिए।	
महावार व वायते, विरिच्छसंपाइमेसु घा	11211
न चरेरव वेससामंते, वभचेरवसाणुपः।	
वमयारिस्स दंतस्स होग्जा तत्थ विसोत्तिशा	11811
चणाययणे चरंतस्स, संममीए चभिक्सम् ।	
हारत बयागं पीला, सामरग्राम्स सर्वसंस्रो	114011
तम्हा एमः विकाणिता दोस दुमाइवर्दणः।	
व जए वेमसामन्त, मुणी प्रांतमस्सिष	ઘરશા
सार्ण स्कूष्ण गार्षि, दिल गोर्ण हर्य गर्य।	
सविष्म भल्लई जुद्धे दूरभो परिवयम्	u <b>१</b> २॥
चसुन्नए नावस्पर, अप्पहिद्वे चस्त्रावन्ने ।	
इंदिकाइ जहांभागं, दमइत्ता सुर्यी परे	गरशा
दबटवस्स न गच्छेग्जा भासमाणो भ गोभरे।	
इसन्तो नाभिगच्छेग्जा कुर्त उबावर्य स्था भाकोमं धिमालं दारं, संधिदगभवणाणि भा।	114.811
चरन्तो न विशिष्णकार, संकट्टार्थ विवन्त्रप	
रक्षा गिह्यइस्स च रहस्सारक्सिमासि स ।	ાશ્યા
सकित्सकर ठाए दूरको परिव जप	118 511
Charles and V	117.311

दरावैकालिक सूत्र सभ्ययनं ४	₹¥
पिंकुट्ट कुलं न पविसे, मामग परिषञ्जए।	
मनियत्त कुलं न पविसे, चियत्त पविसे कुल	118011
सागीपावरपिहिञ्च, भप्यमा नावपंगुरे ।	
कवाडं नो पणुद्धिन्ता, चमाइसि अञाइमा	11 <b>१</b> =11
गोमरमापविद्वो भ्र, वसमुत्तं न घारए ।	
घोगासं फासुच नदा, जागुन्नविय बोसिरे	118811
नीय दुवार समसं, कुट्टुग परिषक्त्रय ।	
भनमसुविसची जत्य, पाणा दुष्पविलेहगा	।।२०॥
जत्य पुष्फाई वीद्याई, विष्मइसाई छोट्टए ।	
महुणोयतिसं इल्लं वट्ठूगं परिवन्त्रए	गारशा
पक्षमं दारमं सार्गः, वष्ट्रमं घा वि कोट्टए ।	
च्ल्लंघिमा न पविसे विरहित्ताण व संबद	ાારસા
भसंसत्तं पत्नोइरजा, नाइदूरावलोद्यए ।	
उप्पुरूत न विनिक्साप, नियष्टिकत द्ययपिरो	비구취
षद्रभूमि न गच्छेग्जा, गोषरगगमा मुखी।	
फुलस्स मूर्मि जाणिता, मिर्च भूमि परक्रमे	114811
वत्येष पश्चितिहरुवा, भूमिभागविश्वक्सणो !	
सियाणस्य य वषस्य, सलोग परिवश्यए	॥२४॥
दगमहिम्रजायायो, मीचाणि हरियाणि म ।	
परियम्बतो चिडिन्बा, सन्विदिष समाहिए तत्य से चिडमायस्त, बाहार पायभोष्मणं ।	गरहा
वस्य च ।यहमायस्य, बाह्य रायमाभया । बाह्यवर्षा न इच्छिन्दा, पहिगाहित्त एपियां	112.41
चाहारन्ती सिचा तथ परिमाहिण्य भोषण ।	।१२४॥
दिवियं पिडमाइफ्से, न मे कप्पइ वारिस	112=11

ांन	सिद्धांत	माना
<b>~</b> .		

nzeil

1,3011

113811 ાારમા 113311 HAMI العجاز

113411

110511

ારવા

113411

118-11

<b>१</b> ६	वन सिद्धांत माना
	र्णाण, धीकाणि, हरिक्राणि <b>छ ।</b> नगा, वारिसि परिवन्त्रण
	विषया स, सचित्त घट्टितासि य । ठाए, उदग संपसुल्लिया
	न्त्रइता, श्राहार पायमोद्ययां । गडक्के, न मे कप्पइ वारिसं
दिविय पश्चि	त्येया, दन्दीए भायलेख था । माइबस्ते, न मे ६०५६ पारिस
इरिकाल हिं	ासिणिद्धे, ससरवसे महिमाऊसे । गुजुष, मणोपिता घजणे होणे
र्वाक्ट ठमसं	म बेहिष्म सोर्राट्ठमपिट्ठकुरुकुसक्य भ सट्ठे, ससटठे चेव बोद्धक्वे
दिस्त्रमाणं र	इत्येण, दञ्डीप भागग्रेण घा। त इच्छिन्द्रा पच्छा इत्सद्रीह भवे इत्येण दञ्डीप भागग्रेण घा।
	4 - 4 3 - 0 3 - 0 3 4 4 1 1

विब्जमाया पश्चिष्ठ्यका क् तत्वेसियाय सक्

तुष्ह तु भुंजभाषाण दो वि सस्य निमस्य । विश्वमाणं पश्चित्रका, ज सत्वेसण्यं भषे

गृहिवयीय उवस्यात्य विविध् पाणभोष्ययं। मुजमारा विधन्त्रिक्जा भत्तसेसं पश्चित्रहर

सिमा य समग्रट्ठाए, गुम्बिगी फालमासिगी। र्वाहुका वा निसीइन्मा, निसमा वा पुणुइए

दुष्क तु नुंजभाणाणं एगो सत्य निभवव । दिन्जमारा न इच्छिन्ता छ्व से पश्चित्रहर

दरायेकालिक सूत्रं अध्ययन ४ र १	ţu
त भवे मत्तपाण तु, सजयाण श्रकरिपश्च।	
रिंतिसं पविचाइक्से, न में फप्पइ तारीस	118411
यस्य पिरञ्जमासी, दारगं वा कुमारिक ।	
व निक्किवित्त रोचर्त, माहारे पाग्रभोयण	गाप्टना
त भवे भचपार्यां तु, संजयार्यां झकप्पिय ।	
विविधं पश्चिमाइक्से, न में कृष्यइ वारिसं	118411
ज भवे भत्तपाण तु, कप्पारूपम्मि सकिय ।	
विविधं पश्चिमाइक्सी, न में कणइ वारिसं	118811
द्गयारेण पिहिना, नीसाप पीतपण वा ।	
कोढेण वा विलेवेण, सिलेसेण वा केण्ड	।।४४॥
व च वर्बिमदिष्मा दिव्या, समग्रहाप व दावप !	
विविध परिवाहक्ले, न में कराई वारिसं	118411
भसण पाण्म बावि, स्ताइम साइम तहा।	
ज जाणिस्जा सुणिस्मा था, दाण्ठुा पगर्ड इमं	।।४७॥
त भवे भचपाण सु, संजयाणं धकप्पिष्यः।	
दिविद्य पढिभाइक्से, न में फणइ वारिस	11 8411
भसण पाण्गं वाचि, लाइमं साइमं तहा ।	
र्च जाणिण्या सुणिण्या वा, पुरणहा पगर्ड इमं	1.8511
वें मबे भचपाएं तु, सजयाण चकलिया ।	
दिविषं पश्चिमाइमसे, न मे फप्पइ वारिसं	likoli
भसर्य पायुर्ग याचि, साइम साइमं वहा ।	
व आखिग्जा मुणिग्जा वा, पणिमहा पगढं इमं	118311
वं भवे भत्तपाण तु, सजवाण श्रकणिश्रं । विविश्रं पहित्राइफ्से, न मे कप्पइ तारिसं	
राजन गरुनाइनल, व म क्ष्या <b>इ</b> सारस	ાામસા

दुढहामो मुहापाह, मुहाजीयीवि दुहुहा । मुहापाह मुहाजीयी, वो वि गच्छवि मुगाई ॥ वि वेमि ॥ १००॥

n til

IRII

tt¥tt

nati

11211

11411

Hell

1151

#### ॥ इति पिंडेसकाए पढमो उद्देसो समत्तो ॥

पहिमाहं सलिहित्ताण, लवमायाइ संजए । दुर्गभ पा सुगभ पा, सन्ध नुंजे न छडए सेन्ज्ञा निसीहियाए, समायभो च गोचर। भयावगट्टा भुवाण, जद्द तेणुं न सथरे तको कारणसमुपययो मन्तपार्थ गवेसए। विद्या पुरुवरसेए, इमेग्रं उत्तरेग्र य कालए निक्समें भिक्स कालेए य पश्किमे । बकालं च विविध्यता काले काल समायरे भकाते परसि भिषस् काल न पहिलेहसि। भाषाणं च किसामेसि समिवेस च गरिष्ठसि सइ काले बरे मिक्स, फुब्जा पुरिसकारियां। भनामोचि न सोइञ्जा ववी चिश्रहियासए तहेब्दावया पाया, मचहार समागया। तं उजुडां न गच्छितजा, अयमेव परक्रमे गोद्यरमापभिट्ठो च न निसीइश्व कस्यई। कर्ड च न पर्विष्ठा, बिहुताय व संजय मामास फर्सिहं दारं फवाड वा वि संद्रपः। अवसंविद्या न बिद्धियता, गोब्यरमगद्यो मुखी

वरावेकातिक सूत्रं बध्ययन ४ च १	२३
समय माह्य बाबि, कियिया वा वर्णीमग।	
रवसकमत भत्तहा, पाराष्ट्राए व सञ्जय	गि१णा
तमइक्षमितु न पिषसे, न चिट्ठे चक्खुगोधर।	
एगतमयक्रमिचा तत्थ चिद्विख सजए	118811
षणीमगस्त वा तस्त, दायगस्तुभयस्त वा।	
श्रम्पत्तिम सिमा हुजा, लहुत्तं पवयग्रस्स या	મારસા
पिंडसेहिए स दिन्ने सा, तक्यों तम्मि नियत्तिए।	
रवसंक्रमिञ्ज भचहूा, पाणहाण व सजर	।।१३॥
उप्पर्त परम था थि, कुमुभ वा मगद् तिभी।	
भन्न या पुष्पसिचिसं, व च सलुविधा दए	१११४॥
व मवे भचपार्य सु, सजयाय सकिपम ।	
दिविक परिकार्क्से, न में कृष्यह सारिसं	॥१३॥
उत्पन्न परम बाबि, कुमुभ वा मगद्विभ ।	
श्रन्त या पुष्फसन्दिन्तं, त च सम्मादिमा द्व	118811
व भवे भन्तपाया तु सजयाया श्रकव्यिश्च ।	
दिविश्व पविश्वाद्यस्थे न मे दृष्पइ तारिस	॥१७॥
साक्षमं या विरात्तियं, कुमुमं उपलनातिय ।	
सुणालिष्य सासधनातिष्य उच्छुत्वश्व धानिन्वश्व	115211
वरणाग वा प्यालं रुक्सस्स वणगस्स या ।	
म नस्स या वि इरिकास्स मामग परियञ्चन	॥१६॥
वर्तियार्चे या द्वियाद्भि, घामिष्य भित्रक्य स्थ।	
दिविष्य पश्चिषाइक्स्ने, न स कृष्णइ वार्टिस	115011
वहा क्षेत्रमणुस्सिन्न, यलुष्य कासयनान्निष्यं ।	
विलयपदम नीम, भामग परियञ्जय	115 411

ારસા

ારસા

गरशा ואאוו []>[]] 112011 सरदार IRLII ॥३०॥ Hatn 114311

तह्य चाउलं विष्टं, विश्वडं या सत्तनिष्युडं । विज्ञविट्ट पृष्ट्विन्नाग, सामग परिपञ्जण

हविष्टं मार्अनेगं च, मृत्तगं मृत्तगत्तिमः।
षामं भसत्थपरिराग्यं, मरासा वि न पत्थप
तदेव फलमधूणि पीत्रमंथणि जाणित्रा ।
विद्दलग पियाल च, भामग परियञ्जप
समुद्राण चरे भिष्म्स <b>् कु</b> लमु <b>चावयं</b> सया।
नीय कुल्लमश्कम्म उत्सद नाभिभारप
श्रवीग्रो विसिमेसिका न विसीएक पहिए ।
बमुन्धिको भोषयम्म माययये एसयारप
बहु परघरे श्रात्य विचिद्द खाइमसाइमं ।
न तस्य पश्चिमो कुप्पे, इच्छा दिख्य परो न सा
संबंखासण्यत्ये वा, भन्त पाण च संजय ।
बर्दितस्स न कृष्पिञ्जा, परुषन्त्रे वि ब्र्म दिसम्रो
इस्पिचां पुरिसं बावि, बहर वा महरूताग ।
वंदमार्गं न आइजा, नी भ ग्रं फरसंबए
जे न वेंद्रेन से कुप्पे विद्योगन समुद्रासे ।
एवमन्नेसमाणस्य सामग्णमणुनिष्टः
मिझा एनइमो लईं जोमेण विधिगृहइ।
मामेय वाइयं संतं वर्ठ्णं सयमायए
बाचडा गरुको जुद्धो बहुपार्य पक्तुत्रयह ।
दुत्तोसको स से होई निल्लार्थ च न गम्बद
सिमा एगइमो सर्द्र, विविद्दं पाणमोध्यण ।
सहर्ग महर्ग मुचा, विधिन्त विरसमाहरे

वशायकातिक सूत्र व्यव्ययन ४ उ २	२४
जारातु ता इमे समगा आययटी अय मुगी।	
संतुही सेवए पत, ज़्ह्यिती सुवीसच्ची	แสรม
पुयण्ठा जसोम्हामी माणसम्माणकामए ।	
वहु पसबद्द पार्ष मायासल्ल च कुठबद्द	ग्रद्भा
सुरं षा मेरग वावि, धन्न वा मध्वगं रसं।	
ससक्स न पित्रे भिक्स, उसं सारक्खमप्पणो	113511
पियए एगमो तेगो, न में कोइ विभागइ ।	
दस्स पस्सद् दोसाइं, नियहिं च सुग्रेह मे	॥३७॥
ष्ट्रा सुविमा वस्त, मायामोस च भिक्खुयो ।	
भयसो प श्रनिव्यागं, सयरं च श्रसाहुआ	113=11
निच्चुन्यिगो जहा तेणो, अचक्रमोहि दुन्मइ ।	
वारिसो मरणते वि, न आराहेइ सवर	॥३६॥
भायरिए नाराहेर, समयो भावि वारिसो।	
गिहस्था वि स गरहति जेस जासति वर्षरसं	113011
पर्वं तु अगुणुप्पेही, गुणाल च विवस्त्रपः।	
वारिसो मरर्गते वि, ग भाराहेइ सवर	118811
वर्षं कुन्वइ मेहायी, पणीच वन्त्रप रस ।	
मन्जलमायविरद्यो, तबस्ती श्रद्भाउद्धस्तो	แรงแ
वस्स पस्यह् धन्त्राण्, श्राग्रेगसाहुपृष्ट्यं ।	
विका श्रत्यसञ्जनं, फिचइस्सं मुणेह मे	118311
एव तु गुणप्पेही, श्रमुखाख च दिवन्त्रए ।	
वारिसो मरणत नि, भाराह्य संवर	115311
ष्पायरिए पाराइइ सम्यो धावि वारिसी।	
गिहरभा वि स पूर्वति, जेस वास्त्रित वारिस	गरया

तयतयो ययतयो, रूपतेयो प्र जे नर । भायारभावतयो प्र, मुज्यह दयकिञ्चिस

li8∉ij

नद्रुण पि वेषच, उपयम्नो द्यकिन्यसे । तस्यायि से न याणाइ, कि मे फिया इस फर्स तस्रो वि से चक्रसाणं, सन्भइ पत्तमुष्मत ।

॥%औ ।।%औ

नरगं विरिक्सजोिंग या, बोही जत्य सुवुण्तहा एक च दोस दट्ठ्यां, नायपुरोग मासिकं। करामाय पि मेहावि, मायामोर्स विवयत्रए

विद्या

सिक्सिक्य भिक्तेसणसीहिं, संजयाण बुद्धाण सगाये । सत्य भिक्त सुर्पाणहिंदिए, विव्वत्रस्त्रगुण्य विहरिज्जासि

॥ चि बेमि ॥४०॥

॥ इति पिंग्नेसणाप भीको उद्देसो ॥ इति पिंग्नेसणाण पंचममन्म्वयणं समर्थ ॥॥॥

#### ।। अह छह पम्मत्यकामकमत्यसा।

नाग्द्रमण्सपन्तं, संजमे च वचे रथं। गांग्रमागमसपन्तं उग्जाग्यास्म समोसद्वं रावाग्या रायमधा य माह्या चतुव सन्तिचा।

11811

पुच्छति निहुष्यपायो, षद्दं में षायारगोयरो तेसि सो निहुष्मो दंवो सन्तम् सहरायहो । सिरुसाए सुसमावतो षायक्काई विषयस्स्रयो

ઘરાા

सिक्सार सुसमादश्चा श्वायक्ता । पणक्स्स्य इंदि धम्मत्यकामाणं निमाधाणं सुर्वेह मे । श्वायारगोष्टर भीम, सवसं दुरहिष्टिभं u£u

दरायेकातिक सूत्र अध्ययन ४. च २	२७
नजस्य परिसं वृत्तं ज लोए परमदुवरं।	
षिचलहाणभाइस्स, न भूत्र न भविस्सइ	ાાયા
ससुद्गाविद्यसायां, वादिद्याया च जे गुणा ।	
भक्संडफुढिका कागव्या, तं सुगोह जहा तहा	11411
दस भट्ट य ठाणाई, जाई धालोऽवरमध्इ।	
वत्य बन्नयरे ठाणे, निग्गंधचाको भस्तइ	11011
षयद्भक्षं कायद्भक्षं, व्यक्तपो गिहिभायएं।	
पित्रयंक्रनिसिज्ञा य, सिग्णागं सोहवस्नगं	।।दा
वस्थिमं पदमं ठाणं, महावीरेण देखिणं।	
षहिंसा निक्या विष्ठा, सब्द भूपसु संज्ञमी	IIEII
जावन्ति लोए पागा, तसा भदुव यावरा ।	
ते जाएमजाएां वा, न हुएो एो वि घायए	115011
सन्वे जीया वि इष्छंति, जीविउं न मरिज्जित ।	
वन्हा पाणियहं घोरं, निग्गंथा यञ्जयति एां	118811
मप्पणुट्टा परट्टा वा, कोहा वा अद्र या मया।	
हिंसगं न मुसं यूचा, नोवि बन्न वयावए	ાશ્ચા
मुसायाची य सोगम्मि सध्यसाहूहिं गरिहिची।	
मविस्सासी य भूभाग, तन्द्रा मोसं विवज्ज्ञए	118311
चित्तमतम्बित वा, ऋषं वा वह मा घर्डु ।	
दवसोह्एमिचं पि, उग्गह्सि मजाइया	।।१४॥
स प्राप्ता न गिण्हीत, नो वि गिण्हावए पर ।	
भन्न या गिरहमाणुं पि, नालुजाल्वि सञ्चया	।।१४॥
ध्यनभपरिष्म पोरं पमाय दुरहिट्टिष्मं !	
नायरंति नुणी सोष, भेषाययणयग्वित्रणो	गरदा

۶ <u>६</u>	
जन सिद्धात माल	Ī
तमतणे पयतणे, स्वतणे म जे नर।	
मायारभाषतायों म, कुत्रभइ दर्याक नियसं	
नेव्या वि वेपच, वयसको उपक्रि	118#11
तत्यावि से न याणाइ, कि में फिला इस पर्स	_
वचो वि से चइसार्य, लब्भइ एतम्बा।	।।५न।
नरगं विशिक्तकोति कर है	
नरगं विरिक्सजोिं वा, मोही जत्य सुदुश्तह	ાજના
पद्म च दोस यट्ठ्रणं, नायपुरोण मासिकां।	
असुमाय पि मेहावि, मायामीसं विषय अस्	lisen
सिक्सिक्स मिक्सेस्यसोहि, संज्याय युद्धाः तत्थ मिक्स सुप्पणिहित्यः निकास	
तत्थ भिक्स सुप्पशिहिष्प, विञ्वलञ्जगुण्य	व समाच । विकासिक्तानिक
॥ इति विंडेसगाए बीको उद्देश	॥ चिषेमि ॥४०॥ तो ॥
इति पिंडेसगाए पंचममञ्चयगं समस्	•
	ואוו
।। अह छह भम्मस्थकाम्बन्धया	17 1 I
ना एवं संग्रसपनने, संज्ञमे 👽 सने 🖼	0 11
गोणमागमसपन्नं सञ्जाणिन्म समोक्तः	
रायाणो राषमचा य भारता कारत करि	11811
पुच्छति निहुक्यपाणी, यहं में भाषारगीयरी	
Per 2 C 2	4.74

લચા

H¥II

(181)

तेसि सो निहुमो दतो सम्बभ्रमसहावहो।

मायारगोमर भीम, सयसं दुरहिट्टिशं

सिक्काप सुसमाउत्तो भागक्यार विभावसाणी इदि धन्मत्यकामार्ग, निमायार्ग सुरोह मे ।

दशवैकालिक सुत्रं सम्ययनं ६	<b>₹</b> የ
पच्छाकमा पुरेकमा, सिन्ना वत्य न कणह ।	
एषमह न मुकति, निमाथा गिहिमायणे	IIX₹II
भासंतीपक्षिश्रंकेसु, मंचमासालपसु वा ।	
पणायरिक्रमञ्जाण, आसर्तु सातु वा	117811
नासंवीपतिश्रंकेसु न निसिन्जा न पीढर ।	
निमाया पहिलेहाए, वृद्धवृत्तमहिष्टुगा	ાકશા
र्गभीरविजया एए, पाणा दुष्पत्रिज्ञेह्गा ।	
भासदी पत्तिश्रंको भ, एयमठु विवस्तिभा	ાયદ્વા
गोभरगगपविद्वस्स, निसिन्दा जस्स कष्प ।	
इमेरिसमणायारं, आवण्डह अवोहिश	।।४५।
विवत्ती वभचेरस्स, पार्याण च वह वहो ।	
वर्णीमगपडिग्चाची, परिकोही चगारिए	[[녹드]]
त्रगुत्ती वभचेरस्स, इत्थीको वा वि सक्छा ।	
इसीलवरूण ठाण, दूरको परिवन्त्रए	॥४६॥
विष्ह्मभगरागस्स, निसिम्जा जस्स दृष्पद्र ।	
जराए सभिभूबस्स, याहिबस्स तबस्सिगो	114011
वाहिको वा भरागी वा, सिए।एं जो च पत्थए ।	
युक्तवो होइ आयारो, जढो हवइ संजमो	114811
संविमे सुदुमा पाणा, घसासु भिवगासु भ ।	
जे भ निषम् सिणायतो, विभावेणपितावर	म६२म
वम्हा ते न सिंखायति, सीश्य असियेश या।	
जावन्त्रीय वय घोर, भसिएएएमहिट्टगा	॥६३॥
सियाण भदुया एक, लद्ध पत्रमगाणि छ।	
गायस्तुम्बदृष्टृाष्, नायरति कया <b>इ</b> वि	112511

30 जैन मिद्धांत माना वणस्तई न हिंसति, मरासा पयसा कायसा । विविद्गा फरण्याएग्, संजया मुसमादिशा वणस्मइ विहिसता हिंसइ उ तबस्सिण। वसे भ विविद्द पाणे, चवस्तुरे भ भचनस्तुरो तम्हा एय वियाणित्ता, दोसं दुग्गइयङ्ग्णं । वणस्सद्दसमारंभं, जायन्त्रीवाए वज्जए तसकार्य न हिंसंति मणसा वयसा कायसा ।

विविदेश करगुजीवस सजया सुसमाहिया तसकायं विहिंसंबो हिसई उत्तयस्सिए। तसे च विविद्दं शागे चक्सूसे च ध्वनक्सूसे तम्हा एवं विकासिया, दोसं दुगाइवहुस्स । वसकायसमारंभं, जावब्जीवाए वजाए

जाई चत्तारि मुखाई, इसियादारमाइयि । ताइ तु विवस्त्रतो, संजम क्राग्रुपात्तप पिंडं सिम्बं च बस्यं च, चरुत्यं पायमेव य ।

. सकप्पिको न इच्छिजा पश्चिमाहिका कृष्पिको जे नियार्ग ममायंति कीक्ममुदेसिकाह्यं। यह ते समग्रुआयावि इइ वृत्तं महेसिगा

तम्बा भसणपाणाइं कीयमुदेसिमाहरं। वज्जयपि ठिचापाएं। निग्गमा धम्मजीविगो कंग्रेस कंसपाण्सु, कुडमोएसु वा पुगो। मृद्धतो ससग्रपाणाई साबारा परिभस्तक मीकोदगममारभे, मचघोक्यसम्बद्धाः।

आइ इनिति भृषाई दिही तस्य श्रसक्ती

비노이 UERU

112 (1)

ારસી

118411

ile XII

11874

118411

॥४औ

॥४न्॥

lis sit

비노리

वशवैकालिक सुत्रं क्राध्ययनं ६	38
पच्छादस्यं पुरेकम्यं, सिचा दत्य न कप्पइ।	
प्रमह न मुजीव, निमाथा गिहिभायणे	॥४३॥
मासंदीपिक्षभंकेसु, मंचमासालएसु घा ।	
भगायरिष्णभद्धाण, द्यासङ्चु सङ्गु वा	ાાકશા
नासंदीपलिश्चकेसु, न निसिम्जा न पीढए।	
निगाया पश्चित्रहाप, वृद्धवुत्तमहिट्टगा	118811
गंभीरविजया एए, पाए। दुष्पविजेहगा ।	
भासंदी पलिखंको भ, एयमठुं विविश्विमा	॥४६॥
गोभरमापविद्वस्स, निसिच्जा जस्स कप्पइ।	
इमेरिसमणायार भावन्त्रइ अवोहिशं	।१४७॥
षिवसी वभचेरस्स, पाणाण च वह वहो ।	
वर्णीमगविक्याको, पश्चिकोहो कगारिक	비복되
अगुत्री वभचेरस्स, इत्थीको वा वि सक्यां।	
इसीजवरूण ठाण, दूरको परिवस्त्रए	।।४६॥
षिण्ड्मभयरागस्स, निसिम्बा अस्स इप्पड् ।	
जराए भभिभूबस्स, वाहिबस्स तवस्सिणो	।।६०॥
वाहिको वा करोगी या, सिर्णार्य जो उपत्यर।	
युक्तंतो होइ बायारो, जडो हवइ सजमो 🗼	।।६१।।
संविमे सुदुमा पाणा, घसासु भिन्नगासु म ।	
जे भ भिक्सू सिर्णायतो, विश्वदेशुप्पिसादर	ग्रहरा
वम्हा ते न सिगा्यति, सी९ण उसिगोण वा।	
जावश्त्रीय यस घोर, भसियायमहिङ्गा	॥६३॥
सिणास बादुया कक्ष, बाद्ध परमगाणि छ ।	
गायस्तुन्वदृखद्वाय, नायरित क्याइ वि	ग्रहशा

of	वैन सिद्धांत माना	
सिविद्देगा फर	रंसति, मणसा वयसा फायसा । एकोण्म, संजया सुसमादिमा	11341
तसे म पिवि	रंसतो, हिंसइ च वयस्सिए। हे पाणे, चपसुरे च ध्ययस्तुरे	ાકનો
वगुस्सङ्समा	पाणिचा, दोसं दुग्गइयदृ्णं । रंभं, आधा जीवाए बञ्जए	(१४३)।
तिषिद्या कर	हेंसति मणसा वयसा फायसा । राजोएरा संक्षया सुसमाहिया	linaj
तसे भ विहि	र्सवो, हिसई र संपत्तिए। हि पारो चयम्ब्रुसे म माचस्सुसे	[[8]]
उसकायसम	बमागिता, दोसं तुरगद्भवद्गुण । १रंमं, जावन्त्रीवाए वद्यए	มูชุรูแ
ता३ तु विव	: मुखाई, इसियाहारमाइयि । कारो, संजम बाग्रुपातप च वस्यं ज, चस्त्य पायमेव य ।	ાકભા
सक्ष्मिसं र	च चत्य च च चठत्य पायमव स् । त इच्छिज्ञा पडिगाहिज कृत्यिक्ष रमायंति, कीकामुदेसिकाहर्ज ।	११४द्री
	गुजार्याचि इइ बुचे महसिया। गुपायाई कीयमुहेसिकाहर्य।	118611
कंसेसु कंस	चप्पायो, निग्गथा घम्मझीवियो पाएसु, कुढमोपसु वा पुर्यो ।	likoli
मुक्तको चार सीमोदगस	त्रणुपाणा <b>रं, भागा</b> रा परिभस्त <b>र्</b> मारमे, मचघोष्ण <b>वर्</b> णे ।	liktii
आई होनीर	म्यारं, विहो तत्य सस्वमो	ાષ્ટ્રના

दशबैकालिक सुत्रं अध्ययनं ६	9,5
पच्छाकमां पुरेकमां, सिक्षा तत्थ न कणह ।	
एषमह न मुजति, निमाया गिहिभायसे	ાાકશા
भासंरीपतिश्रकेषु, मंचमासात्रएसु वा ।	
मणायरिक्रमञ्जाण, भासक्तु सक्तु वा	।१५४॥
नासंदीपलिबांकेसु न निसिक्जा न पीढए !	
निमाया पिंडलेद्दाए, बुद्धवुत्तमहिट्टगा	।।४४॥
र्गभीरविजया एए, पाया दुष्पिक्वेह्गा ।	
मासंदी पलिखंको बा, एयमहु विवश्विका	॥४६॥
गोधरगापविष्ठस्स, निसिब्बा जस्स कप्पइ ।	
इमेरिसमणायारं, भावस्त्रइ भवोहिश्रं	।१४७।
विवत्ती वभचेरस्स, पाणाण च यहे वहो ।	
वर्णीसगपविग्धाको, पश्चिकोहो कमारिया	1[25]]
भगुषी वभचेरस्स, इत्यीको वा वि संक्या ।	
<b>इ</b> सीक्षवहुण ठाण, दूरको परिवस्त्रप	112811
विष्ह्मन्नयरागस्स, निसिम्बा बस्स रूप्पर् ।	
वराप भभिम्भस्स, वाहिभस्स तवस्सियो	ligoli
वाहियो वा बरोगी वा, सिर्णाणं जो र पत्यप ।	
वुक्ततो होइ आयारो, बढो हवइ संजमो	ग्रह्शा
संतिमे सुरुमा पाणा, घसासु भिन्नगासु म ।	
जे म भिक्सू मिणायतो, विश्ववेशापितावए	।।६२॥
वन्हा ते न सिणायवि, सीपण उसियोय वा।	
जायम्बीष वय घोर, भसिणाणमहिंदुगा	गहरूम
सियाय बदुवा कक, त्दू परमगायि ब ।	
गायस्तुब्बट्ट्ग्ट्टाए, नायरति फयाइ वि	114811

मेहुणाची उवसंतस्स, कि विभूसाय कारिक

विभुसावित्रम भिनस, कम्म वपद विक्रण ।

ससारसायरे घोरे, जेगां पदद दुरुत्तरे विभूसावित्रमं चेत्रां, वुद्धा मनति वारिसं।

सायकेज यहुलं चेंचां, नेयं ताईहिं सेवियां

सवित अप्पाणममोहवसियो, ववे रया सजम अस्त्रवेगुयो। ध्याति पावाइं पुरेकडाइ, नथाइं पाबाइ न ते कर्ति

संभोगसंता भागा महिन्या, सविश्वविश्वासुगया जसंसिक्षो। उठपसन्ने विमले व चिदमा, सिद्धि विमाणाई उपैति तक्षणो

।। चि बेमि ॥६६॥

॥ इति छठ्ठ घम्मस्य कामग्रन्क्यस्य समर्च ॥ ६ ॥ मह सुवकसुदी साम सत्तम महम्मयसः

चरण्ड् सम् भासाण्, परिसंखाय प्रमधं।

वरह त विगायं सिक्से दो न भासिम्ब सम्बसी जा म सबा मवत्तव्वा, सबामोसा म जा मुसा ।

समुप्पे€मसंदिद्ध, गिरं भासिक्त पम्तर्थ

एय च भट्टमझं वा जंतुनामेद्र सासर्थ। स भार्स सबमोर्स च पि संपि भीरो विवरक्षप

जा च बुद्धेहिं नाइमा न वं मासिक्त पत्नवं भसवमोसं सर्वं च भयावस्त्रमक्ष्मसं।

तम्हा सो पृष्ठो पानेख, किं पुरा को मुसं वर

तम्हा गण्यामी वक्सामी, अमुगं वा सी मविस्सइ ! बाह्यं वाणं करिस्सामि, एसो वाणं करिस्सङ

विवदं पि वहामुर्चि, जं गिरं भासप नरी।

11 8 11

11 8 11

11811

HEXII

11661

ાદબા

॥६व।

दशमैकालिक सूत्रं भ्रम्ययन ७	<b>\$</b> \$
पवनाई उ वा भासा, पसकालम्मि सकिया।	
संपयाइकाम हे था, स पि धीरो निवस्त्रप	ાષ્ટ્રા
भईभन्मि य कास्त्रिम, प्रमुप्परसम्मागप ।	
जमहं तु न जाणिक्जा, एवमेकं तु नो वए	11511
भईभम्मि य कार्लान्म, प्रमुप्परग्रमग्रागए	
अत्य संका भवे व तु, एयमेय तु नो वप	ાાકાા
ष्ट्रभिन्ति य कालस्मि, प्रमुप्परसम्मागर ।	
निसंक्रिय भवे ज तु, एवमेर्च तु निहिसे	114011
वहेब फरसा मासा, गुरुम्बोवबाइणी।	
संबा वि सान वत्तव्या जमो पायस्य मागमो	118811
तहेव फाएा 'काएों' ति, पडगं पंडगे सि वा।	
गाहिमं वा वि रोगि चि, तेण घोरे चि नो वप	।।१२॥
पएणन्नेण चहेरा, परो जेखुवहस्माइ।	
मायारभावदोसन्नु, न तं भासिख परणार्व	118311
सोव होते गोलि चि, साग्रे वा बसुते चि य !	
वमप दुइए वा वि, न त भासिक परणार्व	114811
भिक्किए पश्चिए वावि अन्मो माइस्सिम चिय। —	
पिनस्सिए भायशिक्ष ति, भूए शतुशिक्षति य	114711
हते हतेचि मन्नेचि भट्टे सामिशि गोमिशि ।	
होते गोते बसुते चि, इत्यियं नेयमासवे	118611
यामभिन्जेय य युचा इत्यीगुचेया या पुर्यो । जहारिङ्मभिगिरक बालियः लविख्य या	118-611
मञ्जर पञ्चर वा वि, वप्यो युद्धपिउ सि य ।	11/411
मारको भारणिस्त्र चि, पुत्ते सनुस्मिनिय	115211
•	

₹8	जैन सिद्धांत माला	
होज गोल षसु नामधिक्जेण र	त चिमित्ति, भट्टा सामिय गोमिय । जिचि, पुरिसं नेवमालव य युचा, पुरिसगुचेण वा पुणो ।	114511
पंचिषियाण पा	ाम्मः, बालधिञ्ज त्तविञ्ज वा ग्यार्णः, एस इस्थी बार्य पुर्म ।	ાારગા
वहेव मगुस प	जािंगुरुजा, साम जाइ ति भातमे स्मृपिक्सं माथि, सरीसियं।	॥२६॥
परिवृह् चिया	वक्के पाइमित्तिय नो वप व्या य्या उपचिप तिय।	ારચા
तदेव गामो दु	. वावि, महाकाय क्ति कायवे सम्ब्रको दस्मा गोरहग क्ति य । मा क्ति नेवं भासिक्ज परग्राव	॥२३॥
जुद गवि चि	नार्यनय भासक्त्र प्रशास र्णम्याधेग्रुरसदय तिय । यायि, वप सवहिश्यिति य	ારક્ષા
सहेव गतुमुक्त	ार्ण, परुषयाणि वर्णाणि य ।  हाप, नेवं मासिक परणार्थ	ווצאוו
चलं पासायखं	भार्ण, वोरखाणि गिहाणि य । वाण, व्यक्षं उदगदोणियां	113€11
पीढए चंगवेरे	य, नंगते मझ्य सिया। भी वा, गंडिया य अर्ज सिया	।शिक्षा
भासणं समणं	जार्य हुम्मा मा किंमुवस्तर । भार्स, नेव मासिम्न परण्यं	गरमा
		(41)

दशमैकालिक सूर्व अध्ययनं ७	<b>₹</b> ¥
तद्देष गंतुमुकार्ण पद्मवयािश वर्णाणि य ।	
रमसा महरूत पेहाप, एवं मासिज्ञ परण्य	114011
जाइमंता इमे रुक्ला, दीहवट्टा महालया !	
पयायसाला विकिसा, वए दरिसणि चिय	॥३१॥
वहा फलाई पद्माई, पायखब्जई नो धए।	
वेलोइयाइं टालाइं, वेहिमाइ चि नो वप	।।३२॥
भस्यका इमे भावा, बहुनिव्बद्दिमा फ्ला ।	
बहुद्ध बहुद्धंमूचा, भूयस्य चि वा पुछो	113311
सदेवोसही भो पक्षाभो, नीतियाओ द्वर्षी इ य ।	
लाइमा भग्जिमार चि, पिहुसक्ज ति नो वए	ારજા
रुदा वहुसम्या, बिरा भोसदा वि य ।	
गरिमयाची पस्याची, संसारात चि बालवे	॥३४॥
सहेष संस्रहिं नथा, दिश्व कब्झ त्ति नो वए।	
तेण्गं वायि वस्कि ति, सुतित्यि ति य भावगा	113511
संखंडि संक्षडि चूया, परिएयह क्ति तेगागं ।	
पहुसमाणि तित्थाणि, भावगाण वियागरे	।।३७॥
तहा नईको पुरुणाको, कायचिक्र ति नो वर ।	
नायाहिं सारिमाउ ति, पाणिपिज्ञ ति नो वप	।।३८॥
वहुवाहश्च भगाहा, वहुसिल्लुप्पिलोदगा ।	
यहुषस्यश्चेदगा याचि, एवं भासिश्च परण्यं	113£11
तहेष सावन्त्रं जोगं, परस्सद्वाप निष्टियं। चीरमार्ण वि वा नषा, सावन्त्रं न त्रवे मुणी	1017-11
सुकडि चि सुपद्धि चि, सुच्छिन्ने सुहडे मडे !	118011
स्निहिए सुन्हिति, सावन्त्रं वन्त्रए मुणी	118511
+ v	.10 111

48	जैन सिद्धाद माला	
देहो ? इकिचि अमि	चि, मट्टा सामिय गोमिय I	
होन गोन वसुनिचि,	पुरिसं नेवमालव	118811
नामधिक्जेया यां धूषा	, पुरिसगुचेण वा पुर्णो ।	
जहारिहमिनिगिग्म,	प्रासिविद्यं लिथिस्त्रं वा	ારના
पंचिदियाण पाणाण	यस इत्यी श्रयं पुमं ।	
आव गुन विद्यागिक	जा, ताथ जाइ ति भालये	ઘરશા
वहेब मणुसं पसु, परि	क्सं वावि, सरीसिवं ।	
धूले पमेइले वस्के,	गाइमित्तिय नो वए	ાારસા
परिषुद्ध कि गां वृया,	न्या उविचय चिय।	
संजार पीखिए वावि	महाकाय चि भागवे	ારશા
सहेब गाभ्रो दुन्माभी	, दम्मा गोरहग चि य ।	
वाहिमा रहजोमा चि,	नेवं भासिक्ज परग्रव	ારજા

HRRH

ारधा

ારબા

गरना

likalı.

जु६ गवि चि गं ब्या घेसु रसदय चि य। रहस्से महद्भर वा वि, वप सवहिए। ति य

धहेव गतुमुख्त्राणं, पञ्चमाणि वणाणि य । रुक्सा महस्र पेहाए, नेषं मासिध्व पण्यायं

बास पासायसंभागं, बोरगाणि गिहायि य। क्रिज्डमासनावाण, असं चवगवीणियां

बासर्णं सयर्षं जार्णं हुम्जा वा किंचुवस्सर । भन्नोबपाइणि भासं, नेय मासिग्य परणवं

वीदए चंगतेरे या नंगले महम सिया। जंतलही व नाभी वा, गढिया व भर्ज सिया

दशमैकालिक सूर्व अध्ययनं ७	રૂપ્ર
वहेष गंतुमुद्धास पश्ययासि वसासि स ।	
क्ष्मसा महस्त पेहाए, एवं भासिव्य पण्णावं	॥३०॥
जाइमंता इमे रुक्सा, दीहषद्वा महातया ।	
प्यायसाला बिडिमा, वए दरिसिया त्ति व	113 \$11
तहा फलाई पकाई, पायसञ्जद्द नो वए।	
वेलोइमाई टालाई, वेहिमाइ चि नो वप	संदेशा
भसथडा इमे जंबा, बहुनिठ्वट्टिमा फला।	
षद्ग्ज बहुसंम्या, भूयस्य ति वा पुणो	ાાફકાા
पहेवोसही मो पकाची, नीवियाची छवी इ य।	
साइमा भविजमार सि, पिहुसम्ब ति नो वष	ાાકશા
रुदा बहुसभूया, यिरा स्रोसदा वि य ।	
गटिमयामा पस्यामा, संसाराच चि भालपे	ાયમા
तहेष सस्रद्धि नषा, स्थिष कव्ज ति नो षए।	
तेगुनं वावि वश्कि ति, सुविस्यि ति य बावगा	।।३६॥
संखंड संखंड वृ्या, पिययह चि तेयागं।	
वहुसमाणि वित्योणि, मापगाण वियागरे	।।३७॥
तहा नईको पुरसाको, कायत्तिव्य ति नो वय ।	
नावाहिं वारिमाउ ति, पाणिपिन्य ति नो वए	113=11
वहुवाहसा सगाहा, वहुससिसुप्पितीदगा ।	
वहुवित्यडोदगा यापि, एव भासिक्ज पण्यार्च	113411
वहेव सायन्त्रं जोगं, परस्सद्वार निद्वियं।	
कीरमाणं वि या नषा, सावन्त्रं न तवे मुणी सुकदि चि सुपक्ति चि, सुच्छिन्ने सुद्दे मडे ।	118011
सुनिहिए सुत्रहित्ति, सावस्तं वस्त्रद मुखी	1112011
9. 10 1 8 11 8 1 A 21 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	118811

,-		
	ाचि <b>मनि</b> चि, महा सामिय गोमिय । त्मुलिचि, पुरिसं नेवमालवे	118811
	। यं प्या, पुरिसगुचेय वा पुर्यो ।	
जहारिहमा	ागिन्म्ह, बाक्षषिञ्च क्षत्रियम या	ાારગા
पंचिदियाण	पाणाणं एस इत्यी वर्ष पुर्म ।	
जाव ग्रान	विजाग्णिग्जा, वाव जाइ चि मानवे	गरशा
व <b>देव मगु</b> स	। पसु पक्सिं घावि, सरीसिवं।	
•	वम्मे, पाइमित्ति य नो धए	ાારસા
परिषुष्ट चि	ए वृ्या, वृ्या ज्विचिए ति य ।	
संजाप पीरि	गृध वावि, महाफाय चि आयवे	॥२३॥
	दुवमत्रको दम्मा गोरहग त्ति य ।	
	जोगा सि नेवं भासि <b>म्ख</b> परग्रा <b>धं</b>	ારજા
जुद गवि नि	त्ते यं व्याधेस्य रसदय त्तिय।	

IIKRII

गरधा

।रिका

गरना

li₹ŧII

रहस्से महद्भर वा वि, वर सवहर्षि चि य

तहेष गंतुमुक्तायां, पञ्चयाया प्रणाया य । क्षम्बा महस्र वेहाए, नेवं भासिक प्रयाणं

इन्द्रं पासायसंमार्या, वोरयाया गिहायि य । फिलहमालनाषाया, सन्नं उदगदोयियां

बासर्ण समर्ग जार्ग हुम्जा मा किंचुपस्सर । भद्मोवपाइग्रि भासं, नव भासिम्त परम्प

पीढए चंगवेरे य, नंगते मध्य सिया। जंसलडी व नाभी वा, गंडिया व चलं सिया

ਕੈਰ ਕਿਤਾਂਤ ਸਕਾ

312

तद्दव सावश्वरहामोयगी गिरा, घोहारिगी जा य परोवधाइगी। से फोह कोह मय साव माणुवी न हासमाणो वि गिर बहुण्ड ॥४४॥ सुषकपुद्धि समुपेहिया मुखी, गिर च दुई परिवन्जए सया। मियं भदुरु असुवीइ मासए, सयास मक्के लहुई पससया ॥४४॥ भासाए दोसे य गुर्गे य जागिया, तीसे च दुहे परिवन्तर सया । छसु संजए सामण्ए सया जण,बर्ज वृद्धे हिममागुलोमिया।४६॥ परिष्साभाक्षी सुसमाहिष्ट्रिय, चडक्कसायावगए अधिस्सिए। स निद्ध्यो भूत्तमल पुरेकडं, भाराह्य लोगमिया वहा पर ॥१७॥ वि वेमि ॥ इति सुवकसुद्धीनाम सत्तम श्रवमयण समत्त ॥॥ ।) मह भागारपणिही भहममञ्मूषणः।) भायारपणिहिं तर्त्तु, जहा काम व भिक्सुणा । ' तं मे उदाहरिस्सामि आसुपूर्विव सुर्गोह मे 11811 पुरुविदराभगियागस्य त्यारवस्यस्य वीयगा।

मरा।

। ससा य पाणा जीय चि, इइ वस महेसिणा तेसि चन्छ्र एजोएए, निच होयञ्चय सिया। । मयासा कायवहोरा, एव हवइ संजय ાચા पुढ़िव भिर्ति सिलं जेलु, नेय भिद् न संजिहें।

11811 सुद्रपुदर्धी न निसीए, संसरक्लिम य श्रासरो । 11211

। विविध्य करणजीवया, संजय सुसमाहिए ा प्रमिन्नेतु निसी**र्**क्जा, बा**र्**चा अस्स उगा**र्** सीम्बोदमं न सेविन्जा, सिलायुट हिमाणि य ।

। उसियोद्गं तक्सासुयं, पिंदगाहिग्झ सञ्चर चत्रक्लं भप्पणोकायं नेय पुछे न सलिहे। , समुप्पेह वहाम्यं, नो एां संघट्ट्प मुणी

uşu

11511

३६	जैन सिद्धांत मा	त्स	
पयत्तपद्धि ति व पद्धमात	तथे, पयत्तिक्षम	त्ति व द्धिन्नमात्रवे	ı
पयत्तनद्विति व <b>फम्महे</b> र	यं, पहारगाढि	चि व गाइमात्तवे	॥४२॥
सब्बुक्स परम्धं वा, भार	उलं नित्य परिसं	1	
पविक्रियमवत्तरमं, प्रा	वयत्तं चेष नो व	य	118411
सञ्बमेश्रं वर्स्सामि, स	ब्बमेयं ति नो ष	<b>4.1</b>	
परायोद सन्यं सध्यत्य,	प्ध मासिम्ज प	<b>ग्यार्थ</b>	113811
सुकीयं वा सुविकीक, क	किंग्ज फिग्जमे	य वा ।	
इसे गिण्ड इस सुंच, पा	णयं नो वियागरे	τ	11873
मप्पग्चे वा महग्चे वा,	क्प वाविकप	वेषा।	
पणियहे समुप्पन्ने, अए	विष्यागरे		118811
तदेवासंजय घीरो, भास			
सर्य चिट्ठ बयाहि ति, नेर	वं भासिग्ज परण	<b>प्र</b> वं	।।४७॥
बहवे इसे असाह् लोप			
न लवे बासाहु साहुसि,		ाल <b>वे</b>	[양숙]]
नागावंसग्रसंपन्ने, संज्ञ			
एव गुगासमाउत्तं संव			[[8£]]
देवाण मणुयाण च ति भमुगाण अभो होउ, म	। स्थाया <b>प वृमा</b> ह	[ ]	
अनुवास जना हाउ, स	ા બાદ્દાએ જાવા	44	비보이

वाको वृहं व सीटण्हं, सेम भाग सिवं ति था। क्या ए हुन्द्र एकाग्रि, मा वा होउचि नो वप

बंदित्रस्य ति एं युवा, गुरमासु परिय ति य । रिद्भितं नर दिस्स, रिद्भित वि भानन

तह्य मेहं व नह व माएवं न देवदेव चि गिरं वहुरजा। समुच्छिप उमप वा पद्मीप, वहुरत या पुट्टे वलाइप चि

गरशा

แหล

liktii

व्शवेकालिक सूत्रं मध्ययन =	3£
वहु सुरोह कररोहि, वहु अच्छीहि पिच्छह ।	
न य दिहुं सुयं सब्यं, भिक्स अन्साटमरिहद	ાારના
सुय वा जद्र वा दिह, न त्विञ्जोषघार्य ।	
न य फेए स्वाएएं गिहिजोग समायरे	॥२१॥
निहार्णं रसनिम्बूद, भरग पावग वि वा ।	
पुट्टो वापि अपुट्टो या, लाभालामं न निश्चि	भरसा
न म भोयगुम्सि गिद्धो, चरे चंह्र खयपिरो	
मफासुयं न मुंजियमा, कीयंमुदेसियाहर	ાારશા
सिमहिं च न कुव्यिन्जा, अग्रुमाय पि संजए।	
मुहाजीबी असंबद्धे, हविब्ज जगनिस्सिए	ાારજા
ज्रवित्ती सुर्वतुट्टे, भिष्पच्छे सुहरे सिया।	
षाप्तरत्तं न गच्छिक्जा, सुषा यं जियसासयं	ારશા
क्र्यासुक्तेहिं सहेहिं, पेम नाभिनिषेसप ।	
दारणं कक्स पासं, काएण किह्यासए	गरहा
खुई पिशास दुस्सिश्ज, सीर्व्यहं भार्यहं भय ।	
षाहियासे बाव्यहिको, वेह दुःभसं महायसं बात्यगयम्मि बाइच्चे पुरत्या स क्रायुगाए।	॥२७॥
भाहारमाक्ष्य सन्य, मणसा वि रा पत्यप	112-11
ष्ट्रवित्रों भच्यते, भप्पभासी मियास्यो !	।रिद्या
हविन्य चयर दंते, योव सम्यु न सिंसए	ારઘા
न बाहिरं परिभवे, श्राचायां न समुद्रसे।	11/4/1
सुयतामे न मध्यस्या अवा ववसि पृद्धिए	113011
से जागुमजाण वा, कष्ट बाइस्मियं पय ।	
संबर सिप्पमपाण, बीय तं न समायर	113/511

रे⊏	जैन सिद्धांत माता	
	मर्षि, धनाय धा सजोइय।	
	षष्टिक्जा, नो एां निन्धावए मुखी	비디
	ाग, साहाप विदुयणेण वा ।	
न वीद्रश्च व्यय	ाणो कार्य, वाहिरं वा वि पुग्गलं	[[3]]
	विग्ना, फल मूर्लं च फरसाई ।	
	<b>पीयं,</b> मरासा वि रा पत्थप	118011
गहरोसु न चि	ट्टेम्ज्ञा, वीएसु इरिएसु वा ।	
<b>उद</b> गम्मि तहा	निष्यं, पस्तिगपयागेसु मा	112311
वसे पाणे न हि	(सिञ्जा, वाया बादुव धन्मुगा।	
<b>एवरको सब्ब</b> र	रूपसु, पासेम्ब विविद्य सर्ग	॥१२॥
	हाए, जाई जागिजु संसप ।	
दयाहिगारी भू	एसु, ब्रास चिट्ठ संपित् वा	118311
	हुमाइ, जाइं पुन्छिन्ज संजप।	
इमाइ वाइं मे।	श्वी, बाइक्सिग्ज विव्यक्तयो	114811
	हुमं च, पाशुक्तिगं तदेव य ।	
	रिम्नं च, मंबसुहुमं च बहुम	ાશ્યા
	गिता, सञ्बनावेग संजय ।	
	निच्चं सर्व्यिदियसमाहिए	।।१६॥
	हिज्ञा, जोगसा पायकंत्रतः ।	
	भूमि प, संधारं मदुवासण	।।१७।।
	j, सेलं सिंघायाञ्चल्लिय ।	
कासुर्य पश्चित	हिसा, परिट्ठाविस्त्र संजय	117511
पानासम् परा	गारं, पायद्वा भोषयस्य षा । यं भारे, न य रूषेसु मर्य कर	
स्य १५६ म	म माया न म त्यष्ठ गया कर	113417

वशवैकालिक सूत्र वाध्ययनं द	४१
बोग च समण्यम्मन्मि, जुंजे अण्लसो धुव ।	
जुत्तो य समण्धम्मस्मि, भर्ट लहरू भणुत्तर	118311
इहलोगपारकहिय, जेगं गच्छइ सुम्गइ ।	
बहुसुय पञ्जुवासिद्धा, पुच्छिबज्ञत्यविणिच्छ्य	118811
इत्यं पायं च कायं च, पिशहाय जिइंदिए।	
भल्लीयगुत्तो निसिए, सगासे गुद्रणो मुखी	ાઢશા
न पक्सको न पुरस्रो, नेव किनाय पिट्टबो।	
न य ऊर समासिन्जा चिहिन्जा गुरुगंविए	118411
अपुच्छिको न भासिका, भासमा रस्त अंवरा ।	
पिट्टिमंसं न खाइरजा, मायामोस विवश्यप	[[89]]
भाषांतिय जेण सिया, आसु कुष्पिञ्ज वा परो ।	
सञ्ज्ञाते त न मासिग्जा, मास बहियगामिणि	118211
दिह मिय बसदिद्ध, पश्चिपुत्र विश्व जिय ।	
षयपिरमणुच्यिग्ग, भास निसिरे असव	118£11
भागारपम्मिष्वर, दिहिषायमहिङ्जग ।	
षयविवस्तिय नवा, न व उवहरी मुगी	likoli
नक्सत सुमिण जोग, निमित्त मतभेसजं।	
गिहियो स न बाइक्से, भूयाहिगरण पय	गररम
मञ्जूष्टं पगढ व्ययम्, महस्त्रं सययासम् ।	
चचारम्मिसपान, इत्यीपसुविवन्तिय	ામરા
विधिता य मवे सिग्जा, नारीए न सबे कह ।	
गिहिसंधय न कुम्बा, कुम्बा साहृहिं सथवं	115311
जहां <del>पुत्रकुद्वपोयस्स,</del> नि <b>षं कु</b> ललको भर्य	
एष खु षभयारिस्स, इस्थीविमाइको भयं	117811

80	जैन सिद्धांत मालां	
भगायार परका	म नेव गृहे न निषहवे।	
सूई सया विगव	भाषे, भसंसत्ते जिद्देविष	गु३२ग
भमोहं वयस कु	क्षा, भावरियस्स महत्वरो ।	-
र्ष परिगित्रमः धार	पाप, फन्मुग्गा स्ववायप	મુવેર્યા
श्रघुषं जिविश्व	नवा सिद्धिमग्गं वियाणिया।	
विधियदृद्ध भो	गेसु, बाउं परिमियमप्पणो	।(इंश्रा
वसं धार्म घ पेह	ाप, सदामादमामपण्णो ।	
	भाग, रहप्पार्ण नि जुंजर	115811
जरा ज्ञाव न पी	लेड, वादी जाय न बहुद्द ।	
आर्विदिकान ह	(ायंति, शाव धम्मं समायरे	113511
कोई माग्रा च म	। र्यं च, लाभ च पाववद्वयां ।	
धमे वसारि दोव	ते च, <b>इच्छ</b> तो हियमप्पणी	।विका
कोहो पीई पणा	सेश, माणो विणयनासणो।	
माया मिचाणि	नासेइ, कोमो सध्वविद्यासयो	11 <b>3</b> 511
	कोई, मार्थ महत्वया जियो ।	.,,
मायमञ्जवभावे	ण, क्षोभं संतोसको जिले	0350

कोहो य मायो य काणिमाहीका, माया य लोमो च पवहुमाया।

वसारि एए फसिया फसाया सिंबंदि मुलाई पुरुवभवस्त ॥४०॥ रायाणिएसु विद्यार्थं पर्वजे धुवसीलधं सययं न हावहता।

इम्मो स्व बस्तीणपत्तीणगुचा, परकमिळा सवसजमस्मि ॥४१॥

निहंचन बहु मिश्रका सप्पदार्स वियत्रपः। मिहो कहाहि न रमे सम्मायन्मि रको सया

118,511

कें याबि मंदि ति गुरु विश्ता, हहरे श्मे भणसुए ति नवा । हीसंति मिच्छं पहिषञ्जमाणा, करंति आसायगं ते गुरूणं ॥२॥ पगईए मदा वि मवति एगे, बहरा वि य जे सुखबुद्धोववेचा । मागारमंता गुणसुहिमपा, जे हीलिया सिहिरिष भास कुजा।श। जे काबि नागं बहर ति नवा, कासायए से कहियाय होइ। एवायरियं पि हु हीलयती, नियच्छाई जाइपहं स्यू मंदी मासीनिसो धावि परं सुरुट्टो, कि जीवनासाद परं नु इसा १। भायरियपाया पुरा भणसमा, भनोहिमाधायरा नत्यि मुक्सो ॥॥। जो पावनं कलियमयक्कमिञ्जा, मासीविस वा वि हु कोवह्रजा। जो वा विस खायइ जीवियही, एसोवनासायग्रामा गुरुगां सिया हु से पावय नो बहिक्जा, आसीविसो वा कुविको न मक्खे। सिया विसे हातहर्त न मारे, न यावि मुक्सो गुरुहीत्तरणाय ॥७॥ जो पष्टवर्य सिरसा भिनुमिच्छे, सुत्त व सीहं पढिवोहइउजा। को वा दए सन्तिभगो पहार, एसोवमासायग्या गुरुणं सिया हु सीसेण गिरिं पि भिंदे, सिया हु सीहो कुविको न भक्खे। सिया न मिद्रिक व सत्तिकामां, न यावि मुक्को गुरुहीलणाए।। पायरियपाया पुण अप्पसन्ना, अधोहिष्मासायण नत्यि मुक्स्रो । वन्दा अयावादसुद्दानिकसी, गुरुपसायानिमुद्दी रमिन्दा ॥१०॥ जहाहिकामी जलएं नमसे, नाणाहुइमंतपयाभिसित्तं । प्रधायरिय उवचित्रहरूजा अख्वनाखीयगणी वि संती 118811 अस्तंतिप धम्मपयाइ सिक्से, वस्तंतिए वेणइयं परंजे ।

सकारए सिरसा पजतीको फायिनारा भो नणसा य निष् ॥१२॥ ल जा द्या संनमधंभचेर, फछायभागिस्स विसोहिठाएँ। जे मे गुरू सबयमणुसासयंति, तेहिं गुरू सययं पूचयानि ॥१३॥ चित्तमित्ति न नि म्बए, नारि या सुष्मलंकिय। भक्सरं पि य वहुणं, विद्विं पश्चिसमाहर الكلااا हत्यपायपहिष्किन्नं, फरणनासविगण्पिय । भवि वाससय नार्टि, वसयारी विवस्त्रप ાાપ્રધાા विम्सा इरियससमी, पर्यीयं रसभोवर्ण। नरस्येत्रगयेसिस्स, विसं वादान्डं जहा ાપ્રમા क्रगपञ्चगसंठार्गं पारहवियपेष्ठिय । इत्यीया तं न निरम्बए, कामरागविवरूए 비포되니 विसएसु मग्रुरुणेसु, वेम नाभिनिवेसए । अधिव तेसी विष्णाय परिणामं पोमाकाण य HYER पोमालायः परियाम तेसि नवा बदा वदा । विग्रीयतिषद्दो विहरे, सीईभएग अप्यगा

जैन सिद्धात मालां

23

ाइ सकाइ निक्संघे परिवायहम्प्या ॥६०॥
वाइ सकाइ निक्संघे परिवायहम्पग्रस्यां
तमंव अप्युपालिला, गुणे आविर्ययसम् ॥६१॥
वर्षं चिमं सजमजोगय अ, सक्मायजोगं च सया आहिष्ट ।
सूरे व सेयाइ समतमाखं अजमप्यो होइ कलं परेसि ॥६२॥
सम्भायसम्मायस्य परस्स छाइयो, अपावभावस्स स्वे रसस्स ।
विसुनमई जं सि मर्ल पुरेष्डं, समीरियं रुप्पमलं व जोइया॥६३॥
से तारिसे दुक्ससई जिइविए, सुएया जुसे अममे अस्तिष्यो ।

वतावर कम्मपर्याम्म अवगय,कसियानमपुरावतमे व अविमा। वशा वि वीमा। इति आवारपियशीयामं अद्यममस्मद्ययसम्बर्धः ॥दा। अद् विरायसमादी साम नवममञ्जायया धभा व कोहा च मयरमाया, गुरुस्तगावे विरायं न सिक्से। सा चव उ तस्स अमूद्रभावो, प्रसं च कोवस्स बहाव होइ ॥१॥ जे याबि मंदि ति गुरु विश्वा, बहरे इमे छालसुए सि नवा । हीलंबि मिच्छं पिष्ठवन्त्रमाणा, करंबि आसायणं ते गुरुणं ॥१॥ वगइए नदा वि अथित एगे, बहरा वि व जे सुष्पपुद्रोववेषा । आयारमंत्रा गुणुसृष्टिभणा, जे दीलिया सिहिरिय भास कुन्ना।३॥ जे धावि नाग बहरं ति नवा, आसायए से आहियाय होह । एवायरियं पि हु हीलयतो, नियन्छई जाइगई सु मदो ॥१॥ आसीसिसो बाबि परं सुरुहो, किं जीवनासाद परं नु कुन्ना १ । आयारियपाया पुण धण्यसमा, आयीहिआसायण नित्य मुस्स्त्री ॥१॥ तो पावनं जलियमध्वस्तिन्त्रा, आसीहिसासायण नित्य मुस्स्त्री ॥१॥ तो पावनं जलियमध्वस्तिन्त्रा, आसीहिसासायण गुरुणं ॥६॥ सिया हु से पावय नो सहित्य, स्त्री श्राम्परो गुरुणं ॥१॥ सिया हु से पावय नो सहित्य, स्त्री श्राम्परो वाक्षीन्त्राणा ॥१॥

सिया हु से पायय नो बहिश्या, शासीषिसो वा कुविश्वो न सक्से ।
सिया विसं हालहल न मार, न याथि मुक्सो गुरुहोलणाए ॥॥॥
जो पठ्ययं सिरसा मिलुमिच्छे, सुन्त व सीहं पहिचोहहरूजा ।
जो वा वृष्य सिप्तममे पहारं, पसोवमासायण्या गुरुयां ॥।=॥
सिया हु सीसेणु गिरि पि भिंदे, सिया हु सीहो कुविश्वो न सक्से ।
सिया न भिंदिण्य व सन्तिश्वमां, न याथि मुक्सो गुरुहीलणाए ॥
श्वायरियपाया पृथा श्वापसन्ना, श्रवोहिश्वासायण् नत्ति मुक्सो ।
वन्हा क्यात्राहसुहाभिक्छी, गुरुपसायाभिमुहो रिमिश्या ॥१०॥
अहाहिश्वमी अल्लां नमसे, नायाहुइसवपयाभिसित्त ।
यथायरियं वविष्ठहरूपा श्वर्णवनाणीवग्यो वि संवो ॥११॥

यभागारम वनाभद्वश्था अध्यक्ताधावगभागा व सर्वा ॥११॥ जस्तिविष धम्मपयाइ सिक्से, सस्तिविष ध्याइयं पवंजे । स्वारण सिरसा पंजनीको, फायिगरा भी मस्ता य निष्व ॥१२॥ सन्जा व्या संजमवभयेरं, कहास्त्रभागिस्स विसोहिठाएं। जे मे गुरू सययमसुसासर्याव, तेहिं गुरू सययं पूच्यामि ॥१३॥

88

जहा निसंते तवण्षिमाली, पभासह फेवलं भारहं तु । पवायरिको सुयसीलवृद्धिए, विरायद् सुरमञ्जे व र्रो 118311 जहाससी कोमुइजोगजुत्तो, नक्सत्तवारागग्यपरियुष्टपा।

से सोहइ विमले बन्भमुक्ते, प्यं गणी सोहइ भिक्स्नुमन्मे ॥१४॥ महागरा भागरिया महेसी, समाहिओंगे सुयसीलवृद्धिए। सपाविदकामे अणुत्तराई, आराह्य वोसई घन्मकामी 118 द्य सुबा या मेहावी सुभासियाई, सुस्तूसए आयरियप्पमत्तो ।

भाराहरूताया गुर्णे भरोगे,से पावर्र सिद्धिमणुत्तरं ॥ चि वेमि ॥१० ॥ इति विगयासमाहिकम्बयो पढमो धरेसो समचो ॥

मृजार संघप्पभवो दुमस्स, संवार पच्छा समुविति साहा । साहत्पसाहा विदहति पत्ता, तको से पुष्कं च प्रसं रसो य एव घमस्स विगुष्मो मूर्त परमो से मुक्सो।

जण किस्त सूर्य सिग्धं, नीसेसं पाभिगच्छई जे य चंडे मिए थडे, दुष्याई नियडी सहे !

वस्म इ से कवियीयपा, कठ सोमगर्य जहा विग्रयंपि जो ख्वापगं, चोश्यो कुप्पई नरो । विच्वं सो सिरिमिन्जविं, दंडेग पहिसेहए

सहस्य अविशीयप्पा, उपयम्भा द्या गया । दीसंति दुइमेहंवा, माभिक्रोगसुवद्विया

सहेच स्विगीयपा, उचत्रमा ह्या गया।

दीमंति मुहमहंता, रहि पत्ता महायसा तहय अविणायपा, लागीस नरनारियो ।

दहसाधपरिक्तुमा भामकभवयणेहि य। क्लुणा विवस्तदंदा, मुल्पियामा पपरिभाषा

11411 दार्सीन दुरमहरा, द्वाया म विगलिदिभा

Hell

ntn

ાચા

11811

11811

וועוו

11511

दशवैकालिक सूत्रं काश्ययनं ८ च २	४४
वहेष सुविग्रीयपा, लोगंसि नरनारिमो ।	
वीसवि सुहमेह्वा, इहिं ५चा महायसा	11811
बहेय ध्रषिणीयप्पा, देवा अक्सा य गुरुमना ।	
दीसंति दुइमेहंता, वाभियोगसुषट्टिया	118011
तहेव सुविग्रीयपा, देवा जक्सा य गुरुमगा।	
वीसवि सुहमेहवा, शृद्धिं पत्ता महायसा	118811
जे भायरियडवश्मायाग्, सुस्तूसावयण करा।	
तेसि सिफ्सा पवदंति, जनसित्ता इव पायवा	गध्या
चप्पणुट्टा परट्टा बा, सिप्पा गोडग्रियाग्य य ।	
गिहियो उवभोगठ्ठा, इहजोगस्स कारणा	118311
जेगा धर्घ वहं घोरं, परियावं च बारुगा ।	
िषसमाणा नियच्छति, जुत्ता ते सनिश्विया	11,6811
ते वि व गुढं प्यंवि वस्स सिष्पस्स कारणा।	
सकारवि नमसवि, तुट्टा निदेसवित्यो	118411
किं पुण जे सुयमाही, भणुतहियकामप ।	
भायरिया च वए भिष्स्य, तम्हा तं नाइवस्तप	॥१६॥
नीकं सिक्ज गइ ठाण, नीय च आसणाणि य ।	
नीय च पाप यंदिका नीय कुम्जा य धर्जाले	।।१५॥
संघट्टइसा काएए, सहा उयहिएामिव ।	
समेह भवराह में, वहरूज न पुरा चिय	॥१द्या
दुगाओ वा पद्मीपण चीक्की वहद रहं।	
पर्व दुवृद्धि फिचार्या, वृत्ती दुत्ती पकुरुवह	।।१६।।
मान्नदते सर्वते वा, न निस्चार परिस्मुरो ।	112 - 11
मुत्रयां भासया धीरो मुस्सूसार पश्चिसुयो	115011

कार्ल इदिवयारं च, पश्चितिहित्ताण देवहिं।

तेस तेस स्वाएस, तं स संपश्चिवासप 113711 विक्ती ऋविग्रीयस्स, सपत्ती विग्रियस्स य । बस्सेयं दुइको नायं, सिक्सं से क्रमिगच्छड ાારસા जे याबि चंडे महहदिगारवे, पिसुएो नरे साहसहीयपेसयो । भविद्वधम्मे विराप भक्तोविष, भसंविभागी न हु वस्य मुक्तो ॥ निदेसवत्ती पुण जे गृरूण सुयत्यघम्मा विणयम्मि कोविया

वरितु ते भोषमियां वुरुक्तरं, स्रवितु कम्मं गइमुक्तम गय ॥कि वेमि॥ इति विखयसमाहिखामबक्तमयी बीको पहेंसो समन्तो॥

चायरियगिमिवाहिकमी, मुस्यूसमायो परिकागरिका। कालोइयं इंगियमेथ नवा, जो इंदमाराइयई स पुत्रो भायारमञ्जा विशासं परंजे, सुस्त्समाणो परिगिम्क वर्षः । 11811 जहोषहर्ट मभिकसमाणी, गुर्व तु नासायई स पुरुती रायणिएसु विख्यं पर्वेखे, बहरा वि य के परिसायिक्टा। ાશા नीयत्तरों बहुइ सबधाई, भोषायवं बक्करे स पुत्रो बान्नायवळ चरई विसुद्धं अषणहुवा समुयाएं व निवर्च । 11211 अलब्यं ना परिदेषद्रजा लब्दुं न विकत्थयई स पुजी सभारसिग्जासणभत्तपाणे, भाषिरुप्रया भइकामे दि सरी। ) IISII जो एषमापाण्भितोसङ्ख्या, संतोसपाइन्नरए स पुत्रो मका महत्रं मामाइ संटया, प्रभोमचा उच्छाइया नरेखा । [[1]] मणा पर । ब्राह्मण जो उ महिल्ल कंटण, वईमए फन्नसरे स पुरुषो ।।।६॥ मुहुत्ततुक्त्या उ हवंति फटया, भागीमया ते वि तभी सुद्धाः। वायादरुचाणि दुरुद्धराणि, वराणुवंधीणि महस्मवाणि

समावयता वयणाभिषाया, इलंगया दुम्मणिय जर्णति । धम्मु चि किया परममासूरे, जिइदिए जो सहई स पुळो ॥।।।।। भवपण्यायं च परम्मुहस्सं, पश्चक्खभो पहिणीयं च मासं। भोड़ारिणि चिपयकारिणि च, भास न मासिज्य समा स पुक्री ॥ चतोतुए चक्कुहर जमाई, चिमसुणे यावि चरीयवित्ती । नो मावए नो वि य माविष्या, ककोन्हरूले य संया स पुञ्जो ॥१०॥ गुणेदि साह चगुणेदिऽसाह, गिण्हादि साह गुण संचऽसाह । वियाणिमा मुप्पमम्पूर्ण, जो रागदोस्टेहि समी स पुन्जो ॥११॥ वहेब बहरं च महक्ष्मं वा इत्थी पुमे पञ्चइयं गिहिं वा । नो हीलए नो वियक्षिसहरूजा, धंम च फोहं च चए स पञ्जो॥१२॥ जे माणिया सयय माण्यति, जत्तेण कन्नं व निवेसवति । ते माग्रप माग्रपिहे धयस्सी, जिहदिए सबरए स पुरजी ॥१३॥ तेसि गुरूण गुणसायराणं, सुषाण मेहावी सुमासिया । चरे मुणी पंचरप विगुचो, चडकसायावगए स पुज्जो 118841 गुरुमिइ सयय पडियरिय मुगी, विश्वयनिस्मे व्यमिगमकुसले। घुणिय रयमक्षं पुरेक्ष, भासुरमक्लं गई गय।। सि देमि॥

।। इति विज्ञयसमाहीए तहको चहेसो समत्तो।।

सुयं में कावसं। तेग् भगवया एवमक्साय। इह स्रज्
धेरेहि भगवंतिह वचारि विज्ञयसमाहिष्ठाणा पक्ता। क्यरे
स्रज् ते धेरेहि भगवंतिह चचारि विज्ञयसमाहिष्ठाणा पक्ता। इसे
स्रज् ते धेरेहि भगवंतिह चचारि विज्ञयसमाहिष्ठाणा पक्ता।
इसे स्रज् ते धेरिह मगवंतिह चचारि। विज्ञयसमाहिष्ठाणा पक्ता।
व जहा-विज्ञयसमाही सुयसमाही, ववसमाही,
आवारसमाही।

भिण्य सुप् य तवे, घायारे निष १डिया। भभिरामयेति चप्पाण, जे भवति जिद्दंविद्या"॥शा ४६ जैन सिर्चान माला

कालं ह्यंतरमारं पः परिक्राहिसाण् इतिह । नागः भाग त्रपाण्या, सं संपिद्धित्रामरं विषसा क्राविधीयसम्, संवश्च विशियसम् म ।

113 (11

ાારચા

11811

HRI

и¥П

IISII

113/11

विवश्ता चावणावस्म, संपंता विाजयसम् सः । जारोयं तुरुषा नार्यं, सिनगर से मिनिगन्दाद् ॥ जे वावि चक्षे मदद्दारिगारये, पिगुण् नर सादसदीण्पेसण्रे ।

चित्रहुपम्म विचार बाक्रीविण, बासियभागा न तु सस्त मुस्ती ॥ निहेमवत्ता पुण ने गुम्प्ण सुवस्थपमा विचायिन कोविया वरित स बोपमियाँ दुरुपर, स्वित् बम्म गहसुत्तम गय ॥ति वैमि॥

भावरियामिनाडिभमी, सुस्त्समायो पडिजागरिजा। बालोइर्य इंगियमेय नथा जो छदमाराह्यइ स पुञो बाबारमहा विययं पर्वेचे, सुस्त्समायो परिगिग्फ वर्धः।

इति विश्वयसमाहिशामज्ञयशे वीश्रो उदेसी समसी॥

जहोबद्दहं काभिकसमाणे, गुरुं तु नासायद्दं स पुत्रज्ञो रायाणिपस् विणयं पर्वजे, बहुरा वि य जे परियायजिद्धा । नीयक्त्ये पट्टइ सबवाई, कोवायवं वककरे स पुत्रज्ञो कान्नायवळ वर्ष्द्र विसुद्धं, जमण्ड्रया ससुयायां च निष्कं। कालद्वयं नो परिवेषह्जा लद्धं न विक्तस्ययई स पुत्रो

सधारित जासण्मचपाणे, चिष्ण्वण चहलामे वि सते। जो दवमणाण्यमितोसहजा, संतोसणाहन्तरए स पुत्नो सका सहेच बासाइ चंट्रया, चन्नोमया उच्छह्मा नरेखं। ब्राणासए जो व सहिज कंटए, बहुमय कमसरे च पुत्नो

संवासर जो ह सहित्र फंटर, बईमर कमसरे स पुरुते ॥६॥ स्वासर जो ह सहित्र फंटरा, क्रकोमया ते वि वको सुकदर । सुद्वत्युक्ता ह इवंदि फंटरा, क्रकोमया ते वि वको सुकदर । सामादुक्तायि दुरुद्धरायि, नेरासुबंधीयि महस्मयाणि ॥३॥ श्वभिगम वररो समाहिश्रो, मुनिमुद्धो मुसमाहियपश्चो । विरुत्तिहर्य मुद्दावह पुर्यो, कुन्यह य सो पयस्नेममणयो ॥६॥ जाहमरयाष्ट्रो मुनह, हत्यत्य च चयह सन्दस्तो । सिद्धे वा हवह सासप, देवे वा श्रुपरप्र महिद्दिए ॥ चि वेमि ॥७॥ इति विरायसमाही नाम श्रुद्धयो सहेसो॥नवसमञ्क्षयणं समर्चा।॥॥

### ।। श्रह मिक्ल्नाम दसममज्यस्यर्णं।।

निक्सम्ममणा य वुद्रवयणे, निषं चित्तसमाहिको दविद्या । इत्थीण वसं न यामि गच्छे, बंदं नो पश्चियायङ् जे स भिक्स् ॥१॥ पुढ़िष न सार्ये न खायावप, सीभोदग न पिए न पियावप । ष्मगणि सत्य बहा सुनिसिय, रान बले न बलावर जै स भिष्छ ॥ भनिलेश न बीए न बीयावए, इरियाशि न छिंदे न छिदावए। वीद्याणि संया विषञ्जयतो, सचित्तं नाहारए वे स भिक्छ ।।३॥ यहरण वसथावराण होह, पुष्ठवितणकठूनिस्सिमाण् । वन्हा एड्रेसिम न मुंजे नो वि पए न प्यावए जे स भिष्न्स ॥४॥ रोइय नायपुत्तवयणे, अन्तसमे मन्निक्त छप्पि काए । पच य फासे महरूबयाई, पचासवसवरे जे स भिक्स Hirii वत्तारि वमे सया कसाए, पुरामोगी य इविज्ञ युद्धवरणे। श्रह्यो निम्जायरुषरयए, गिहिजोगं परियब्जर जै स भिक्ख ॥६॥ सम्मदिट्टी सया समृद, सत्यि हु नागो वर्षे सजमे य । वयसा पुणाइ पुराणपावमं, मणवयकायसुसंबुद्धे जे स भिक्स ॥॥॥ तहेव असण पाण्गं वा, विविद् साइमसाइमं लभिना । होही भट्टो सुर परे वा, त न निहे न निहावर जे स भिक्स ॥=॥ उद्देय मसर्ण पाण्य या विविद्धं लाइमसाइमं लभिया। द्धवित्र साहम्मियाण मुंजे, मुबा सम्मायरए जे स भिस्ल् ॥ध।

पत्रस्थिदा सम्म विरायममारी भवद् सं ह्या-मागुर्मामध्येना मस्पम्ह। मन्ने मन्नद्दिवद्भद्द । नगमसद्द्र । न म भग प्रसमंपर्माहरः । पद्धयं प्रथ भगदः। भगदः य द्वयं विज्ञामः॥

५६६ दिगालुमामण्, गुम्पूमइ सं ५ पुला प्रदिष्ट्रिय । न य माणमण्य मञ्जा, विगुयनमाहिकायपद्विष्"

पर्वाच्यहा रालु मुष्पममादी भयद् । रा जहा-मुष्प म भवित्मई सि बाग्यादश्यस्य भेयद्र। एगर्मा श्विः भविस्मामि ति श्रान्यद् यस्य भगइ । चप्पाण टामइस्सामि (त चान्यइयस्य भग्रई । ठिचो पर ठायइस्सामि सि भाग्नाइयन्त्रं भवइ । चउत्थ पर्य भवइ। भवइ भ इय सिलागा ॥

नागुमगरमधित्तो च, ठिम्रो च ठावइ पर । मबाणि च चहित्रिता, रस्रो सुझसमाहिए"

च उध्विहा खलु तबसमाही भयह । तं बहा-में। इहतोग ट्रयाप तदमहिट्टिज्जा नो परलोगटुमाए तयमहिट्टिग्जा, नो कित्तिवन्नसहसिक्तोगटुचाए सयमहिट्टिग्जा, नमस्य निग्नर द्रयाप तनमहिद्धिमा। चन्तर्थ पर्य भवह । भवह म इत्य सिलोगी। विविद्युगतियोरएय निर्मं भषद् निराक्षप निर्वारिए। IIRII

तबसा ध्याद्रपुरायपावर्ग, जुजीसमा तबसमाहिए

परुष्यिहा स्थलु मायारसमाही भषद् । सं जहा-नी इह-लोगड्याप भायारमहिट्टिस्ना, नो परलोगड्टयाए भायारमहि ट्रिक्जा, नो कित्तिषमसहसिलोगठुयाप भाषारमहिठ्रिक्जा न भूतव बारइतिहि हे उहि बायारमहिट्टिक्या। पटत्यं पर्यं सवह भवइ भ इस्य सिक्षोगो।

खिगावयग्ररप व्यक्तियो, पश्चिमाययमाययद्विष । मायारसमाहिसंबुढे भवद म वंते भावसम्प

비논대

11311

ntil

#### एमी सिदार्थ

# श्री उत्तराध्ययन सूत्रम्

### ॥ विशायसर्वं पदम भाजमत्त्राम् ॥

11711

11211

HRII

संजोगा विष्यमुद्धस्य, प्रश्नगरस्य भिष्रसुगो । विणय पाउकरिस्सामि, भारतपूर्विय सुर्गोह मे

ष्माणानिदेसकरे, गुरुव्यमुबवायकारप । श्रीयागारसपन्ते, सेविणीय चि वदर्श

मागाऽनिरेसकरे, गुरुग्यमणुववायकारए । पश्चिणीए असन्दे, अविशीए चि वश्व

बहा सुर्गी पूर्कपर्गी, निकसिम्जई सन्वसी।	
एध दुस्सीलपश्चिणीय, मुद्दरी निकसिन्जइ	લકા
क्रमुकुण्डमं चङ्काणं, विद्व मुंजङ् सूयरे । एवं सील चङ्काणं, दुस्सीले रमङ्के मिए	الغاا
मुणिया भाषं साणस्स, सूयरस्य नरस्स य ।	
विराप ठवेच्य भप्पासिन्छन्तो हिरमप्पसो	11511
वन्हा विद्ययमेसिन्जा, सीलं पहिलमेखमो ।	
युद्धपुत्त नियागठ्ठी, न निकासिक्षइ फयहुई	iloli
निसन्ते सियामुहरी, दुदाएां भन्तिए समा।	
महुजुत्ताया सिष्सिञा, निरद्वाया र यञ्जप	।(दा
मणुसासिको न कुप्पिन्छा, संदि सेविन्छ परिष्ठप ।	
खुड़ेहिं सह संसम्मा, हासं कीड च पञ्चप	HEH

त य मुगाहिम बर्ज बहिस्ता, न म श्रुप निर्देशरूप पर्मन । मेत्रमानातानुति उत्तान भवद्यम् । स विवस् 11841 त सदद द् गामकरण अकासपदारकातपासी सी। भगभागमस्मापहास, समगुरपुक्तसह य ज स जितन् ॥१॥ विषय परिवरिक्षणा महात्त्रों, मा भीयव भयभरवाई हिस्स । विविद्याणमधारव य नियं, न सरीर पामित्रंबद अ स सिस्स् ॥ मनद वासिट्यत्तद्द, मण्डे य दए व ल्सिए वा । पर्रायमम मुली हथिका, प्रतिमाले प्रकारद्वा जे सिभिन्स् ॥ श्रमिभ्य काण्ण परीसदाई, समुद्धदे जाइपहाउ भल्पर्य । विश्व नाइमरण महाभय, वचरण सामणिएजे स भिवरत् ॥१४॥ ह्स्थमजण पायसंजण, यापसंजण सज्दृद्धि। काम्मपरए सुसमाहियपा, सुत्तत्वं च विवासद्व जे स भित्रस् ॥१४ उवहिम्मि भमुच्जिए भगिसे, व्यमायउँ पुलनिव्युलाए । क्यविक्रयसिन्धियो विरय, सम्यसंगावगर्यय जे स भिनस्य ॥१६॥ धलालो भिषम् न रखेमु गिम्मे, ईद्ध घर जीवियनामिकसी। इष्ट्रं च सकारण पुथर्ण च चप ठियप्पा भणिहे जे स भिनस्यू॥१७ न पर वहरुजासि अर्थ कुसीले, जेग प कुष्पिस्त न व बहुउजा । आणिय पत्तेय पुमपान, भत्ताण न समुकत्ते जे स मिक्स् ॥१८॥ न जाइमले न य रूवमचे, न जाममले न मुण्या मसे। मयाणि सब्बाणि विवञ्जाता धन्मजनप्रयूरप जे स भिक्स ॥१६॥ पवेश्राए अस्त्रपर्य महासुर्यी, घम्मे ठिस्रो ठावसई परंपि । तिकसारम विध्यस्य इसीलिसिंगं न यावि शास इत्य जे स शिक्स् तं वेहवार्सं असुई असासर्यं, समा चए निवहियदियपा । व प्रदेशाः क्रिंबिस् बाईमरणस्य वध्यां, उनेइ भिक्स कपूर्यागमं गईं॥ वि बेसि इवि भिष्य नामं वसममभ्यत सम्बं॥ इवि वसवैद्याक्षिणं सूर्यं समत्तं॥

क्तराध्ययन सूत्र सम्ययन १	¥₹
एयं विग्रयजुत्तस्त, सुत्त पत्य च तदुभय ।	
पुरक्षमाणस्य सीसस्य, वागरिक्व वहा सुय	# <b>२</b> ३॥
मुसं परिहरे भि <del>पस्</del> य, न य स्रोहारिणि वए।	
भासादोसं परिद्रेर, माय च बद्धए सया	ઘરશા
न तबेट्य पुट्टो सावब्जं, न निरहं न मम्भयं।	
भप्यसा परहा वा उमयस्तन्तरेस वा	ાારશા
समरेसु भगारेसु, साधीसु य महापद्दे ।	
एगो एगत्यिप सद्धि, नेष चिट्ठे न संज्ञवे	ાારફાા
ज मे <b>पुदाणु</b> सासन्ति, सीपण् फरुसेण वा ।	
मम लाभी चि पेहाए, पयभो व पहित्स्गी	ાારબા
मगुसासणमोवायं दुक्कस्सयय चोयणं।	
हियं व मण्याई पण्यो, वेसं होई असाहुगो	सरना
हिय विगयमया पुदा, फरसं पि प्रशुसासणं।	
वेसं त होइ मूढायां, स्वन्तिसोहिकर पर्यं	शिरधा
बासरो उपचिट्ठेजा, अणुचे बकुर थिरे ।	
मण्डाई निरुट्टाई, निसीएजऽण <del>ङ्</del> रसमुद	113011
कार्तेण निक्लमे भिक्ल, कार्तेण य पिकमे ।	
प्रकालं च विविश्वचा, काले काल समायरे	113811
परिवाडीए न चिट्ठेग्जा, भिक्ख दत्तेसण चरे ।	
पहिरुवेग एसिसा, मियं कालेग भक्सए	॥३२॥
नाइदूरमणासन्ते, नन्तेसि चक्सुफासको ।	
एगो चिट्ठेम्ज भत्तहा, लिमचा व नश्कमे	॥३३॥
नाइउचे य नीए या, नासन्ने नाइव्रुखो ।	
पासुर्य परकर पिरह, पश्चिमाहरूज सजप	ग्रइशा

~~~

72 वन भिजां । माना मा य पल्यानियं कामी, पद्रय मा य भान है।

कालेण व श्रादिश्चित्रा, राश्रा भाइत्रज वस्ता भाइच भण्डातिय कद्र न निण्डस्थित क्याई रि।

112011

118811

कह कर नि भागिया, बकर्च ना कर ति व मा गनियस्तव कर्म, प्रयश्मिक्द्रे पुगा पुगा । क्स व दह माइल्ले, पापनं परिवासप

ાશ્ચા भागामया धुनवया कुसीला, मिउंपि पर्स्ट पहरिति सामा । चिचाराया लहु वयसीयाया, पसायय स हु दुरासर्थ पि

118311 नापट्ट। यागर किंचि, पुट्टा या नासियं यग । फार्ट बसर्च मुक्वेजा, धारम्जा विवसित्वय भाषा चेव दमेयन्यो, भाषा हु सल दुइमो । ग्रहश्रा

श्रापा दन्तो सुद्दी होइ अस्ति लोप परस्थ य 115711 वरं मे श्रप्पा दन्तो, संजमण कवण य। माहं परहि दम्मंती, वधग्रीहिं घहहि य

118511 परियोगिय च बुद्धारा, वाया चतुन कम्मुणा ।

भाषी वा अइ वा रहस्से नेव कुरजा क्याइ वि न पक्तको न प्रको, नेव किथास पिहको। ાશ્લા न जुंके करुणा कर, सवर्ण नो प्रविसार्ण नेय पल्डस्थिय कुम्जा, पनसापियक च सजप ।

॥१न। पाए पसारिए बाबि, न चिट्ठे गुरुणन्तिए भागरिपद्दिं वाहित्तो, प्रसियीको न कमाइ वि । 118411 पसायपेही नियोगही, ध्वचिष्ठे गुरु सवा

भातवन्ते सवन्ते या, न निसीपम्ब क्याइ वि

।(२०।) गरशा

चइ ऊगमासगं भीरो, जन्मो जुन्नं पहिस्सुग्रे बासलगको न पच्छेक्ता, नेव सेक्जागको क्याइ वि भागम्मुक्रक्षो सन्तो, पुरिष्ठक्षा पंजलीवहो गरशा स पुष्प्रसस्य सुषिणीयससप, मयोवई चिद्वह कम्मसपया। ववोसमायारिसमाहिसंबुढे, महन्जुह पच वयाइ पात्त्वया ॥४४॥ स देवगधव्यमयुस्पूष्प, चह्नु देह मलपंष्पुञ्चयं। सिद्धे या हबह सासप, देवे या अप्परप महिद्विप ॥४८॥ ॥सि वेमि ॥ इति विद्ययस्य नाम पदम अन्मयण समस्य।॥१॥

## ।। भइ दुइय परिसद्दक्तयण ॥

सुय मे ध्याउस तेण भगवया एवमक्साय । इह खल् वा वीस परीसहा समर्थेणं भगवया महावीरेण फासवेगा पर्वेह्या। जे भिक्स सोदा नदा खिदा भागम्य भिक्सागरियाए परिष्ययन्त्रो पुद्दो नो विद्दन्नेज्ञा । छयरे ते खलु वावीसं परीसहा समयोग भगवया महावीरेण कासवेग पवेदया जे भिक्स सोचा नवा जिवा अभिभूय भिक्सायरियाए परिन्त्रयती पट्टो नो विदन्नेज्ञा १ इमे ते से सु वाधीस परिसद्दा समग्रीग भगवया महावीरणं कासवेण पवेद्या, जे भिक्स् सोबा नवा जिल्ला भभिभ्य भिषसायरियाए परिन्ययंती पुट्टी नी विनि-हन्नेज्ञा, तं जहा दिगिछापरीसहे १ पियासापरिसह सीय परीसहे ३ इसिए परिमहे ४ इसमसयपरीसह ४ अचेलपरीसहे ६ अरइपरीसहे ७ इत्यीपरीसह = चरियापरीसह ६ निसीहिया परीसहे १० सेन्जापरीसहे ११ भक्तोसपरीसह १२ वहपरीसहे १३ जायगापरीसहे १४ भनामपरीसहे १४ रोगपरीसह १६ वर्णपासपरीसह १७ जङ्गपरीसहे १८ सफारपुरकारपरीसहे १६ पन्नापरीसहे २० भन्नाणपरीसहं २१ दंसणपरीसह २२ ॥ परीसहास पविभन्ती फासवेसं पवेश्या। व में बदाहरिस्सामि, भाग्रुपृट्मि सुयोह में 11111

| X¥.                                  | वैन पिछान माना                                                                          |         |
|--------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------|---------|
| सफरिश मुप                            | विध्यः, पश्चित्रप्रभागः गृत्दः ।<br>निःवयः चपरिमाद्वियं<br>प्रति गुण्यिना गुरवं पश्चः । | ntai    |
| रमप परिश्वप स                        | क्षां, सावस्त्र वसाय मुक्ताः<br>स्थाः                                                   | 113.511 |
| यान सम्मद्द सा<br>सद्दुषा में घव     | संतो, गनियस्यं व पाइप<br>हा स कारोपा                                                    | 113 મા  |
| पृत्तो म भाय ना                      | पा, पापादाहोत्त गन्नह<br>इ.सि. साह सम्बद्ध                                              | ॥३वा    |
| न फोषप भाषरित                        | थि। सास दासि ति मझइ<br>र्यः अप्रकार कि                                                  | แงนเ    |
| भागार्थ फीवयः                        | या, न सिया सोचगवेसप्<br>नषा, पत्तिवया पसायपः                                            | likeli  |
| भम्मविज्ञयं च वव<br>सम्मविज्ञयं च वव | वसी, वएउज न पुरा चि स<br>हार, बुदोहायरिय सया।                                           | 118,611 |

HERIT

แรงก

HABII

।(४४)।

g8£11

तमायरन्त्रो घवहार्र, गरह नासिगच्छुइ मयोगर्य घडाग्य जायिचायरियस्स छ।

त परिगिष्क वायाप, कम्मुगा स्वयायप वित्ते काषोइए निचे, स्निप्नं हवद सुभोइए ।

जहोवर्ड सुकर्म किशार कुरवर्र संया मन्दा नमह मेहायी जोए किसी से जामए।

इवई फि॰चाण सरणं, भूयाणं जगई जहा पुरुषा अस्स पमीयन्ति, संबुद्धा पुरुषसथुया ।

पसना लाभइस्सीत, विवक कहिय सुर्य

स पुज्जसत्ये सुविधीयससप, मयोत्रई चिद्व इन्मसपया । सवीसमायारिसमाहिसंबुढे, महन्तुई पत्र वशाइ पात्तिया ॥४०॥ स देवगधन्वमसुस्सपूद्ध, चइतु देह मलपंकपुष्ययं। सिद्धे या इषद्र सासप, देवे वा व्यपरप महिद्दिप ॥४८॥ ॥कि वेमि ॥ इति विद्ययसुय नाम पदम व्यन्क्रयस्य समक्ष ॥१॥

#### ॥ भइ दुइय परिसङ्क्रभयणः ॥

सूर्य मे भाउसं तेए। भगवया एवमक्साय । १६ सल् वा-धीसं परीसहा समग्रेणं भगवया महावीरेण कासवेणं पवेइया। जे भिष्म् सोषा नवा जिषा भभिभूय भिक्छायरियाए परिम्ययन्तो पट्टो नो विद्दन्तेच्या । कयरे ते खलु वाबीसं परीसहा समयोख भगवया महावीरेण फासवेखं पवेश्या जे भिक्स् सोबा नवा जिवा भिमिम्य भिक्सायरियाए परिन्त्रयतो पट्टो नो भिइन्नेब्जा ? इमे ते खेलु वादीसं परिसद्दा समग्रीण भगवया महावीरेएं कासवेगा पवेह्या, जे भिक्स सोचा नवा जिल्ला भाममूय भिष्मागरियाए परिष्वयंतो पुट्टी नो विनि हन्नेज्जा, वं जहा दिगिद्धापरीसहे १ पियासापरिसहे सीय परीसह ३ विसण परिसह ४ वसमसयपरीसहे 🗷 अधिलपरीसह ६ बारइपरीसहे ७ श्त्यीपरीसहे द चरियापरीसहे ६ निसीहिया परीसहे १० सेन्जापरीसहे ११ श्राकोसपरीसह १२ यहपरीसह १३ जायणापरीसहे १४ व्यक्तामपरीसह १४ रोगपरीसहे १६ तणपासपरीसद्दे ११७ जङ्गपरीसद्दे १८ सकारपुरकारपरीसद्दे १६ पन्नापरीसद्दे २० भन्नाग्यपरीसद्दे २१ वंसग्रपरीसद्द २२ ॥ परीसहारा पविभन्ती कासवेरां पवेदया। व में बदाहरिस्सामि, बारापुवृध्यि सुरोह में 11811

| 25                                        | वैन विद्यात मानाः                                  |           |
|-------------------------------------------|----------------------------------------------------|-----------|
| विभिन्नापरिमा                             | रद, भगाना जिक्त भावते ।                            |           |
| नीवा न विश                                | विष् न वयं न वयावयं                                |           |
| कालीपर बगर्स                              | हार, दिसे धर्माहासंत्र ।                           | 11211     |
| मायन्त भागम                               | पाणस्य, प्रशासमाग्रमा पर                           |           |
| समो पटा पिय                               | माण, दागम्बी समासम् ।<br>                          | มสม       |
| सीमोदर्ग न स                              | विश्वा विव <b>रस्ते</b> मण् वर                     |           |
| विभागाय गर्                               | विकास विवासिताम्य वर                               | 11811     |
| परिमाहमहानी                               | म, भाउर मपित्रांतिए।<br>हेन तं वितिसरे परीसह       |           |
| भारत विकास                                | क त ।वातस्य परी <b>सद्</b>                         | 11811     |
| नारवेलं मार्ग र                           | , सीय पसइ एगया।                                    |           |
| न में नियासी                              | न्त्र साम्बाण जिल्हासणं                            | กรุก      |
| भार स भारता है                            | मत्यि द्वविचार्यं न विस्मद्                        |           |
| स्थिम मि <del>नाने</del>                  | मामि, इइ भिक्स् न विवय                             | justi     |
| जिस्स्य गारिकाल<br>जिस्स्य सामाजिका       | ण, परिवाह्ण विज्ञिष् !<br>वर्ण, पार्य नो परिवृत्वष | ,         |
| ानसु या गार्था                            | ाण, साय ना परिवृत्व <b>प</b>                       | ii=ii     |
| साम जो स् <del>तिरा</del> स               | ाषी, सियाण नो वि पत्थप ।                           | "-"       |
| गांच या पास्त्रस्य<br>प्रदेशिय क्रम्यास्य | विस्ता, न वीपस्ता य भाषाय                          | IIEII     |
| उद्धा य प्रसमस्य                          | हिं, समरे व महासुगी।<br>वे वा, सुरो अभिहरों परं    | HEII      |
| य सम्मे र करे                             | व वाः स्रामाहरा पर                                 | litoli    |
| न सर्वास न वार                            | ग्जा, मर्गं पि न प्रमोस्त्।<br>ग्रेजित मंससोशिय    | 11/011    |
| व्यव न देख पार                            | थ <b>अ</b> श्वत मससाधाय                            | 118811    |
| भारशुरकाह वस्य                            | हिं, दोनसामि चित्रचेलए।<br>नसामि, इह मिक्सू न वितर | 11.5.5.11 |
| मधुना सन्ता हा                            | रकाम, इह।भक्त्यू न बित्रए                          | 119.511   |

गश्रा

118811

एगयाऽचेत्रप होइ. सचेले भावि पगया।

पर्य भन्महियं नवा, नायी नो परिदेवण

| <b>उत्तराध्ययन सूत्रं अध्ययन २</b>                                                     | ኢ৩      |
|----------------------------------------------------------------------------------------|---------|
| गामाखुगाम रीयंत, भणगार श्रक्षिचण ।                                                     | ~~~~~   |
| भर्ग्स प्राणुप्पवेसेम्बा, व विविक्स्ने परीसह                                           | 114811  |
| अरङ् पिट्टको किच्चा, विरए मायरविसर ।                                                   |         |
| धम्मारामे निरारम्भे, ख्वसन्ते मुखी चरे                                                 | गरभा    |
| सङ्गो एस मणुसार्ग, जाको लोगम्मि इत्यिको।                                               |         |
| जस्त एया परिनाया, सुकह तस्त सामरण                                                      | 118611  |
| पयमादाय मेहामी, पहुम्याध इत्यिखी।                                                      |         |
| नो ताहि विणिहन्नेरजा, चरे <del>रवत्त</del> गवेसए                                       | ।।१७५।  |
| एग पन चरे लाढे, अमिभ्य परीसहे।                                                         |         |
| गामे वा नगरे वावि, निगमे वा रायहास्मिप                                                 | n₹⊊n    |
| मसमायो चरे भिक्सू, नेघ कुम्जा परिमार्ह ।                                               |         |
| भसंसत्ते गिहत्येहिं, भेणिएभो परिव्वए                                                   | 118611  |
| सुसासे सुनगारे वा, रक्तमूले व एगमो।                                                    |         |
| बा <del>हुवकु</del> को निसीएक्जा, न य विश्वासए परं                                     | ॥२०॥    |
| धत्य से विद्वमाणस्स, रवसरगाभिधारए ।                                                    |         |
| चकाभीषो न गच्छेन्जा, चहित्ता अन्नमासरा                                                 | गरशा    |
| रवाययाहि सेम्बाहि, तवस्सी भिषस् थामध ।                                                 |         |
| नाइवंश विह्शिस्त्रा, पावदिष्टी विह्शाइ                                                 | ॥५२॥    |
| पहरिह्युत्रस्तयं लख् कद्वाण्मदुव पाषय ।<br>किमेगरात्रं करिस्सह, एव तस्यऽहियासए         | 117.811 |
|                                                                                        | गरशा    |
| भक्कोसेस्जा परे भिष्स्तु , न तेसि पहिसजले ।<br>सरिसो होइ यालाय, राम्हा भिष्स्यु न सजले | ווארוו  |
| सोधार्यं फरुसा भासा दारुया गामकरटमा।                                                   | 11 811  |
| तुसियोभो उपेहेण्या, न दाभो मयसीकर                                                      | 113211  |
|                                                                                        |         |

| \$<br>त्रेन मिद्रान | भाना |
|---------------------|------|
|                     |      |

Pall

ntil

11/11

ווצון

HEII

11311

ᄩᆒ

HEH

110811

118811

મારસા

118311

יצ विभिन्नापरिमाण यहः, सपास्मा भित्रस्य भागायं । मिद्धार न दिशास्य न पर पासमान कालीवस्थामंबाध, विस्व धर्मामसम्बर्धः मायान भ्रमगुपागुरम, भ्रदीगुमगुमा ५३ तमा पृष्टा पियामाप श्रीमण्या सम्बस्यत् । सीभोदर्ग न ऐपिम्बा विषदस्पेमण पर छिन्नायाप्सु पथेसु, भाउर सपिपासिए। परिसुक्त्युदादीयो, सं विविषक्षे परीसहं चरंतं विरयं लुह् सीय पसइ दगया। माइवेल मुणी गच्छे, सोच्पाण जिणसासण न म निवारणं भत्य द्रविचाण न विश्वह । बाह तु बारिंग सेयामि, इह भिक्स न वितय उसिए परियावेथा, परिवाइए विश्विप । चिस घा परियावर्ण, सार्थ नो परिद्यए इण्डाहिताची मेहाबी, सिणाण नो वि पत्थव । गार्य नो परिसिचेन्जा, न बीपन्या य प्राप्य वद्वी य वंसमसर्ग्ह, समर व महामुखी। नागो संगामसीसे वा, सूरो समिह्यो पर न संतरो न वारेग्जा, मर्ण पि न पद्मोसर। प्रवेह न हुग्रे पाग्रे, भुंजते मससोग्रिय परिजुएसोहिं वत्येहिं, होक्सामि विषयेशय। अदुवा सचेल होक्सामि, इह भिक्स न वितए क्रायाऽचेत्रए होह सचेन्ने भावि एगया। एपं भन्महियं नवा, नायां नो परिदेवए

| उत्तराध्ययन सूत्रं बाध्ययनं २              | ķ٤     |
|--------------------------------------------|--------|
| भभिषायणमन्मुद्वाणं, सामी कुम्बा निमवण्।    |        |
| जे वाई पढ़िसेवन्ति, न तेसि पीइए मुग्री     | ।।३८४। |
| बराकसाई मणिन्छे, समापसी मलोजुर ।           |        |
| रसेसु नाणुगिञ्छेट्या, नाणुतपोक्त पन्नवं    | 113811 |
| से नृष्य मण्पुन्यं, फम्माऽएएएफ्सा कवा।     |        |
| केणाई नामिजाणामि, पुट्टो केण्य कण्डुई      | 118011 |
| बाह् पच्छा रह्म्नन्ति, फन्माग्राणफला फबा।  |        |
| एवमस्सासि भाषाण, नदा कम्मविवागय            | 118811 |
| निरद्वगम्मि विरची, मेहुणाची सुरुषुडी।      |        |
| जो सक्खं नामिजाणामि, धम्म कन्ताणपावर्ग     | 118411 |
| सबोबहायमादाय, पहिस पढिवज्यको ।             |        |
| एवं पि विहरको में, झरमं न नियट्टई          | แรงแ   |
| नत्य न्या परेलोप इड्डी याबी तबस्सियो।      |        |
| श्रदुवा विविश्वो मि सि, इइ मिक्सून वितए    | 118811 |
| मभू जिएा मत्मि जिएा, मतुवावि भविस्सार ।    |        |
| मुसं ते पवमाइसु, इह भिक्स्यू न चित्रप      | ।१४४॥  |
| एए परिसहा सन्वे, कासवेश पवेह्या ।          |        |
| जे भिनस्यू न विद्यमेका, पुढ़ो केण्ड क्यतुइ | 118411 |
| ॥ चि वेमि ॥ इति दुइ% परिसहन्मयणं समर्च     | H      |
|                                            |        |
| ॥ मह तहमं पाउरगिज्ज मज्क्तवण् ॥            |        |
| चचारि परमगाग्रि, बुद्धहाग्रीह जन्तुग्रो ।  |        |
| माणुसत्त सुइ सद्धा, संत्रमन्मि य धीरियं    | 11311  |

एक नवा न सेवंति, वतुर्ज वर्णवस्त्रिया

कित्तिन्नगाप मेहाबी, पंकेस व रपस्य वा । चिस वा परियावेस, सार्च नो परिवेदय

वेएक्ज निकारापेक्षी चारियं धम्मणुचर । जाव सरीरभेषचि, जल्लं काएया घारप

| dwill contract and in a table of                |                                         |
|-------------------------------------------------|-----------------------------------------|
| तिविक्तं परमं नरा।, भिक्त् धम्मं समावर          | 113411                                  |
| समण सजय वत, इणिग्जा पीइ फरभइ ।                  |                                         |
| नित्थ जीवस्म नामु त्ति, एव पेड्रम्ब संबद        | ।।२७॥                                   |
| दुकरं छलु भी निष्य, षणगारस भिक्युणी।            |                                         |
| सन्य से नाइय होइ, नतिय दिनि प्रजाइय             | liscii                                  |
| गोयरगापविद्वस्स, पाणी नो सुष्पसारव ।            |                                         |
| राष्ट्री बागारवासु चि, इह भिषस्तू न चितप        |                                         |
| परस् पासमसेग्डा, भोषणे परिणिहिए।                |                                         |
| त्तद्वे विषक्षे अन्नद्वे था, नासुत्तप्वेरन पहिए | 115011                                  |
| श्रक्तेवाह न लब्भामि, श्रविद्वामो सुद सिया ।    |                                         |
| जो एव पहिसंचिक्स्ने, अलाभी सं न वस्त्रए         | 113,511                                 |
| नण्या उपाइयं दुक्सं, वेयगाप दुहद्विप ।          |                                         |
| भवीगो बावप प नं पुट्टो वस्थिहियासप              | મારમ                                    |
| तेशिच्छ नाभिनदेजा सचिक्सचगवेसए।                 |                                         |
| <b>ए</b> व स्नुसस्स सामण्यं जंन कुट्यान कारवे   | ग३३॥                                    |
| भाषेकगस्स बृहस्स, संजयस्य दबस्सिगो।             |                                         |
| वर्णेस सयमाणस्य हुम्बा गायविराह्या              | 118811                                  |
| भागवस्य निवापश अन्ता इवइ नेयशा।                 | • • • • • • • • • • • • • • • • • • • • |

וועלוו

113 £11

गिष्धा

| उत्तराध्ययन सूत्रं बाध्ययनं २              | <b>સ</b> ્દ |
|--------------------------------------------|-------------|
| भभिषायणमन्मुद्वाणं, सामी कुन्जा निमत्ण ।   |             |
| जे साई पश्चियन्ति, न तेसि पीइए मुखी        | 113=11      |
| क्रमुक्साई व्यप्पिन्छे, बनाएसी मतोन्य ।    |             |
| रसेस् नागुगिक्तेन्त्रा, नागुतपेक्त पन्नवं  | 113611      |
| से न्या मण्डुन्यं, कम्माऽणायाकता कहा।      |             |
| जेणाहं नामिजाणामि, पुढ़ो केणह करहुई        | 118011      |
| भह पच्छा ध्रस्कन्ति, कम्माणाणफला स्वा ।    |             |
| प्यमस्त्रासि अप्पागा, नवा कम्मविनागय       | 118811      |
| निरहर्गाम्म विरद्यो, मेहुणाची सुरुषुष्टो।  |             |
| जो सक्खं नामिजाणामि, धम्म इल्लाणपावरां     | 118411      |
| तबोबहागामावाय, पश्चिम पश्चिवज्ञको ।        |             |
| एवं पि विहरको में, छटम न नियट्टई           | 118411      |
| नत्यि न्णु परेजोए 👣 यावी वयस्ति हो ।       |             |
| भतुषा वेनिको मि सि, १३ भिषस्यून चितर       | 11880       |
| भ्रभ् जिए। भत्य जिए।, भदुषायि भविस्सइ ।    |             |
| मुस ते एयमाहसु, इइ भिक्सू न चित्रए         | ાષ્ટ્રશા    |
| पप परिसहा सब्बे, कासवेग पवेदया ।           |             |
| जे भिक्सू न विहम्मेखा, पुट्टो फेण्ड फण्तुइ | แหล         |
| ॥ चि वेमि ॥ इति दुइः भ परिसह ऋयणं समर्च    | u           |
| ।। भद्द तद्दर्भ पाउरंगिन्ज भन्मत्पर्ग ॥    |             |

षश्चारि परमगािण, बुद्धािणीह जन्तुणो । माणुसर्च सुद्द सद्धा, सजमन्मि य भीरिय

| Ęo                                    | <b>ेन सिद्धो । माता</b>                                                         |  |
|---------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------|--|
|                                       | र नाणागासाम जाइम ।<br>कटटु, पुजा सिर्मभया प्रया                                 |  |
| ण्गया दयनाण्मु                        | नरएमु वि एगया ।<br>य, भाराकम्मदि गन्छद्                                         |  |
| ण्गया स्यक्तिका इ<br>नद्या की इपयगी र | !इ, तम्रो पण्डात्रयुक्तमो ।<br>य, सम्रा सुरुथुपिपातिया                          |  |
| न निविम्जन्ति मं                      | पाणियो फम्मक्किनसा।<br>सार, सब्ब्रेसु य सचिया                                   |  |
| चमाणुमासु जोएं                        | ढा, दुक्किया यहुवयणा ।<br>शिसु, विणिहरमन्ति पाणिणो<br>प, भागुपुरुवी फयाह र ।    |  |
| जीया सोहिमगुष्प                       | त्यु भारतुषुच्या क्याइ र ।<br>त्ता काययदि मशुस्तय<br>त्रद्धः सङ्गधम्मस्स दहरा । |  |

जं सोचा पश्चिमप्रनित, तथ स्वतिमहिसय

सह च लखं सद्धं म, बीरय पुरा दुन्तह। बहुव रोयमाणा वि नो य यां पश्चिकत्रप

मसुसत्तिम्म बायाको, जो धम्मं सोब सहहे । तवस्सी वीरिय कर्युं सबुडे निदुर्गे रयं

सोही डम्बुयभूयस्स, धम्मो सुद्धस्य चिट्ठई । निव्यार्णं परम जाह, घयसिचम्य पानप

वितिष कम्मुणो हेर्च असं संनिग्ण संविष् । सरीरं पादव हिचा, घब्दं पक्रमई दिसं

माहच सवण लर्डु सद्धा परमदुद्धा । सोचा नेमातय मर्गा वहवे परिभस्तई n2n

11311

IIAII IIAII IIAII

11511

11311

118-11

113.511

115511

HESH

विसातिसेहिं सीतेहिं, जक्ला उत्तरस्य । महासका व दिप्पता, मन्नंता व्यप्णवध

मप्पिया देवकामाण, कामरूवविद्वियणो। एड्र कप्पेस चिठ्ठन्ति, पृत्या वाससया वह

तत्य ठिचा जहाठाएं, जक्सा भावकसए चया।

118711

चवेन्ति माखुसं जोिंख, से वसगेऽभिजायई 112511 सेचं वत्य हिरस्य च, पसवो वासपोरसं। चत्तारि कामस्राधाणि, तत्य से स्ववन्दर्श ારબા मित्तवं बायक होइ, उचागोप य वरणवं । बापायके महापम्ने, अभिजाए जसोवले 118511 भोषा मगुस्सप भोष, अप्यक्तिये बहार्य । पुठिय विसुद्धसद्धन्मे, केवल वोहि विकास 1)8£11 चररगं दुद्धरं नद्या, संजम पश्चिषद्विया । तवसा ध्यक्तमंसे, सिद्धे हवड साह ए 112011 ।। चि वेमि ।। इति चार्रागम्य गाम तर्मं सम्भगगं समच ॥३॥ ।। भ्रष्ट चउत्थ भसस्वय भज्मत्वया ।। चसस्त्रय जीविय मा पमायप, अरोवश्रीयस्स हु नत्यि दाशा । एव वियाणाहि बणे पमचे, फिरएए विहिंसा प्रजया गहिति ॥१॥ जे पावष्टम्मेडि भए मणसा, समाययन्ती भगः गहाय । पहाय ते पासपयहिए नरे, वराष्ट्रवद्धा नरम दर्वेति HSH तेणे वहा संधिमुहे गहीप, सकम्मुणा फिन्ह पावकारी। पय पया पेच इहं च लोए, स्वाण फम्माण न सुरुख स्रात्य ॥३॥ ससारमावन परस्स बहा, साहारणं जं च फरेड् कम्म । फम्मस्स ते वस्स उ भेयकाले, न यंधवायंधवयं उर्वेति 11811 विशेण गाण न सभ पमभ, दमम्म क्षांप मद्राप परत्या ।
गीवव्याग्रहंग मर्णनमोद्द, नयाउगं त्रह्मतृत्व मय
सुश्ता पाणी पिष्वुद्धीया, न भासरे परिवर मामुपत्र ।
पोरा सुश्ता भावल सरीरं, भारणगर्धी व चर्डप्यमसे ।
पर पयाई परिकंकमाणो, क किंवि पासं इह मरणमाणो ।
लाभंचर जीविया यहहता, पद्धा परिमाय मलापर्यसी ॥।॥।
दार्च निरोह्ण उपद मोफ्सं, भारों जहां सिक्तियवम्मपाणे।
वुव्याई पासाई परत्यमसे, वन्ह्या सुणी निष्पमुर्थेद सोक्स ॥।॥।
स पुव्यमेश न लभेज चच्छा, एसोवमा समयाद्यायां ।
विसीयह सिवल भाउपम्म, कालोवणीय सरस्स भेष
लिप्यं न सक्षेद्र विवनमेर्ड, तम्ह्या समहाय पहाय कामे ।

।। शह अकाममरशिष्टं पश्चम अवस्तपशा।। श्रदण्यंसि महोषसि, यगे विष्णे दुरुत्तरे । शद्य परो महाफने, इम पव्हमुशहरे सन्तिमे य दुवे ठाणा अक्सामा मरणिक्या। श्रकाममरणे जैव, सकाममरणे ठहा

11811

HRH

| उत्तराध्ययनसूत्र स्रध्ययनं ४.                 | <b>6</b> 3   |
|-----------------------------------------------|--------------|
| बालाण जकामं तु, भरणं असइ भने ।                |              |
| परिख्याएं सफार्म तु एकोसेग सई भवे             | H <b>3</b> H |
| विन्यमं पदम ठाएं, महाबीरेण देखियं।            |              |
| कामगिद्धे जहा वाले, मिसं कृराई कुव्वई         | ાકા          |
| जे गिद्धे कामभोगोसु, एगे कुडाय गच्छई।         |              |
| न मे दिहे परे लोए, चक्ख दिहा इमा रई           | ાાયા         |
| हत्थागया इमे कामा, कालिया जे काणागया ।        |              |
| को जागाइ परे लोप, भारत्य वा नरिय वा पुणो      | 11 ફા        |
| अयोग सक्रि होक्सामि, इह बाले पगरमई।           |              |
| कामभोगागुरापण, केसं संपद्मिश्चई               | lloll        |
| तभो से व्यव समारभई वसेसु यावरेसु य।           |              |
| <b>म</b> हाप य भगहाप, भूगगाम विद्विस <b>ई</b> | 11511        |
| हिंसे वाले मुसावाई, माइस्ते पिसुएो सढे ।      |              |
| भुंजसायों सुरं मंसं सेयमेयं वि मन्नई          | 11511        |
| फायसा वयसा भत्ते, वित्ते गिद्धे य इत्थिसु ।   |              |
| तुहको मर्ज सथिएइ, सिम्लुगागु व्य मट्टिय       | 115011       |
| तथो पुट्टो भायकेर्य, गिलायो परितपर्ह ।        |              |
| पभीको परकोगस्स कम्माखुप्पेहि भ्रप्पणो         | 118811       |
| सुया मे नरप ठाणा, बसीजाण च जा गई।             |              |
| यात्ताया फूरफम्माएं, पगावा अत्य वेयसा         | ાશ્ચા        |
| सत्योवषाइयं ठाएां, जहा नेयमशुस्सुयं ।         |              |
| थाद्दाक्रमोद्दि गञ्जन्तो, सो पच्छा परिवर्णा   | गरशा         |
| जहा सागढिको जागा, समं हिच्चा महाप्रं।         |              |
| षिसम ममामोइरुणो, अक्से भमान्मि सोवई           | 114811       |

| <b>{</b> ¥        | जैन सिद्धांत माना                                             |        |
|-------------------|---------------------------------------------------------------|--------|
| एय भम्म (४३व      | हम्म, ऋदम्मं पहिचात्रिया ।                                    |        |
|                   | <sup>१</sup> ते, भारले भमा व साय <b>इ</b>                     | ।।१४।  |
| सका संगरण         | वस्मि, पान संवसह भया ।                                        |        |
|                   | मर <b>इ,</b> घसे य कलियानिष                                   | गरधा   |
| ण्य चकाममस्य      | ए मालाए पुषपद्यं।                                             |        |
|                   | एं, परिस्वाण मुणद् म                                          | ।[१५]  |
| मरणं पि सपुरा     | णाण, बहा मयमणुरमुर्य ।                                        |        |
| विष्यसण्सम्मा     | पाय सजयाण वृसीमधी                                             | ॥१न।   |
| न इ.मं सब्बसु     | भिनस्मु, न इमं सम्बस् गारिस ।                                 |        |
| नाणासीलाचग        | ारस्या, विसमधीला य भिन्दाणी                                   | HŽEH   |
| सन्ति एगेहिं भि   | क्युद्धि, गारत्था संधमसरा ।                                   |        |
| गारस्थेहि य सब    | विद्यि साहवी सञ्जनुत्तरा                                      | 112011 |
| घीराजिया निरा     | णिया, अधी संपाधिमुख्डिए।                                      |        |
| एयाणि विन ध       | ायन्ति, बुरसी <del>लं</del> परियाग <del>यं</del>              | ાવશા   |
| विद्वोत्तप्रव दुस | तीले, नरगाची न <b>मुख्यह</b> ।                                |        |
| भिक्साए वा गि     | इत्येवा सुन्यए फम्मइ विश्वं                                   | મારસા  |
|                   | गायि, सद्दी काष्य फासए।                                       |        |
|                   | वर्स, पगराय न् हायप                                           | गरक्त  |
|                   | वि ने गिहिनासे वि सुन्त्र ।                                   |        |
|                   | वाच्यो गच्छे जनसम्सोगर्य                                      | hRSA   |
|                   | भेक्स् वोण्ड् अज्ञयरे सिया।<br>हेवा, देवे वावि महिहिए         |        |
|                   | १ पा, ५५ पाप <b>माराहुर</b><br><b>१</b> , जुईमन्तासुपुष्यसो । | וופציו |
|                   | सेहि भाषासाइ जसंसियो                                          |        |
|                   | • • • • • • • • • • • • • • • • • • • •                       | गरहा।  |

| <b>ए</b> त्तराध्ययनस् <sup>धं</sup> श्रष्ययनं ६                        | <b>ξ</b> ኒ |
|------------------------------------------------------------------------|------------|
| वीहाडया इड्डिमन्ता, समिद्धा फामरूवियो ।                                |            |
| अहुगोववनसकासा, मुद्धो मिनाकिप्पभा                                      | ાારબા      |
| तािया ठाणािया गच्छन्ति, सिक्सिया सजम तर्षे ।                           |            |
| भिक्स्ताप वा गिहित्थे वा, जे सन्ति परिनिव्यु <b>डा</b>                 | ॥२८॥       |
| तेसि सोचा सपुञाण, सजयाण युसीमध्यो ।                                    |            |
| न चंतसंधि मरणं ते, सील व तो वहुस्मुया                                  | ।।२६॥      |
| द्वितया विस्रेसमादाय, दयाधम्मस्स खन्तिए ।                              |            |
| विष्यसीएग्ज मेहावी, तहाभूष्य भष्यया                                    | [[\$0]]    |
| वचो काले भभिप्पेप, स्रश्न वालिसमन्विप ।                                |            |
| विगापन्त्र लोमहरिसं, भेयं देहस्स फंस्नए                                | ॥३१॥       |
| बह् कालिम सपत्ते, आघायाय समुस्वयं ।                                    |            |
| सकाममर्गा मर्रा, विग्रमन्नयरं मुगी                                     | ારેસા      |
| ॥ चि वेमि ॥ इति अकाममरशिक्नं पंचमं अक्सयर्गं सम                        | ाचं ॥॥॥    |
| ।। भइ खुडुगानियठिज्ज छहुं भज्मस्पर्ग ॥                                 |            |
| जाव वऽविक्जापुरिसा, सब्वे ते वुक्खसभवा।                                |            |
| क्षुप्पन्ति बहुसो मूदा संसारम्मि अयान्तप                               | 11811      |
| समिक्स पर्यिष्ठए तम्हा, पासजाई पद्दे यह ।                              |            |
| अप्पणा सबमेसेग्जा, मेसि भूपसु कप्पर                                    | ાારા       |
| माया पिया पहुसा भाषा, भग्ना पुत्ता य कोरसा ।                           |            |
| नालं ते मम वायाप, लुप्पंतस्स सकन्मुणा                                  | H¥II       |
| प्यमहं सपेदाप, पासे समियवंसरो ।                                        |            |
| हिन्दे गेहि सिग्रेहं च, न मंस्रे पुन्यसंयुर्य                          | 11811      |
| गवास मणिङ्गयकां, पसवो दासपोठसं ।<br>सञ्चमेयं चङ्चाणं, शामरूषी भविस्ससि | 135.11     |
| भन्तम् पश्चाण्, कामरूवा मायस्यास                                       | ।।श्रा     |

| 44                  | चैन सिद्धांत माता              | _      |
|---------------------|--------------------------------|--------|
| थावरं जनम           | भव, भर्म भन्ने उपस्मार्ट ।     |        |
| प <b>ष</b> माणसः    | कम्महि, नार्स हुन्सामा मायणे   | 11411  |
| चामस्यं सर          | यभो सम्यं, दिस्त पासे पियायण।  |        |
| न इस्से पासि        | णो पाणे, भयवेराचा उपरए         | licil  |
| ष्यायाएं नर         | थ दिस्स, नायएउन त्रणामिय ।     |        |
| दोगुन्छी वा         | पणो पाए, दिनं नुजेन्ज भीयण     | IEI    |
| इहमेगे उम           | प्रन्ति, भ्रप्ययस्ताय पावर्ग । |        |
| ष्यायरियं वि        | विचाणं, सम्बदुक्साण मुगई       | 1121   |
| भएषा चफ             | रन्ता य, य भमोक्सपद्विख्यो।    |        |
| <b>घाया</b> चिरियमे | तिण, समासासेन्ति भव्यय         | 115011 |
| न चिचासा            | प्य भासा, क्रमो विकाससम्बद्धाः | •••    |
| विसम्ना पाय         | कम्मेहि, याला पंडियमाणिको      | 11884  |
| जे केइ सर्ग         | रे सचा, वण्णे सने य सन्वसी।    |        |
| मग्रसा काय          | वक्तेणं सब्वे ते दुक्ससम्भव।   | 11831  |
| चायमा दीह           | मदार्ग, संसारम्मि अगुन्तप् ।   | .,,    |
| तम्हा सञ्यवि        | इसं पस्त, अप्यमची परिख्या      | 118811 |
|                     | ।(दाय नावकंसे कयाइ वि ।        |        |
|                     | ायहाप, इमं देहं समुद्धरे       | 114811 |
| विविष्ण क           | मुगो हेच, कासकसी परिवय ।       |        |
|                     | पाणस्सस, कडं लड्ग मक्सए        | [[88]] |
|                     | ा कुट्येन्धा, होयमायाप् संजय । |        |
| पक्सीपर्सं स        | मादाय, निरवेक्को परिष्यप       | 118511 |

यसयासमिको सम्बन्धः गामे व्याययको परे । वापमचो पमचेहि, पिण्डवाय गवेसप

| <del>उत्तराध्ययनसूर्वं अध्ययन</del> ७                                                     | ξœ           |
|-------------------------------------------------------------------------------------------|--------------|
| एवं से उदाहु भएतरनायी, भयुत्तरदंसी अयुत्तरनायदंस<br>भरहा नायपुत्ते, भगवं वेसालिए विवाहिए॥ | ग्यघरे       |
| ॥ चि बेमि ॥ इति खुङ्गागनियंठिन्ज छठु बन्मन्यण समर्च                                       | 11411        |
| ।। भइ एतय सत्तमं भन्भवयां ॥                                                               |              |
| जहापसं समुहिस्स, कोइ पोसेन्त्र एलय ।                                                      |              |
| भोपण जयसं देश्जा, पोसेश्जा वि सपहरणे                                                      | H <b>?</b> H |
| वचो से पुढ़े परियुद्धे, जायमेष महोदरे।                                                    |              |
| पीणिए विक्ते देहे, भाएसं परिष्यस                                                          | 11311        |
| जाव न पद भाएसे, ताव जीसद से दुही।                                                         |              |
| मह पत्तिम भाषसे, सीसं होत्तूण सुम्बई                                                      | (IŽI)        |
| जहां से संखु उरम्भे, भारसार समीहिए।                                                       |              |
| एषं वाले अहस्मिट्टे, ईहई नरयाच्यं                                                         | 11811        |
| हिंसे वाले सुसावाई, भद्रायामि विलोबए ।                                                    |              |
| मन्नदत्तहरे तेयो, माई कं नु हरे सदे                                                       | lixii        |

цұп

Itell

미디

IBII

118-11

इत्थीविसयगिके य, सहारंभपरिगाहे । मुजमार्खे सुरं मंसं, परिष्ठे परंदमे

भयकक्करभोद्र य तुविल्ले चियलोहिए। भारतं नरए फसे, जहाएसं व एलए

भासणं सवणं जाणं, वित्तं कामे व भुंजिया । दुस्साहडं घण हिण्या, वह संविणिया रयं

सभो फम्मगुरू जंसू, पच्युव्यन्तपरायर्थे । भय व्य भागयाएसे, मरर्शतिमा सोयई

तको बारपरिक्सीयो, चुया दहविहिंसगा । बासुरीयं दिसं यासा, गच्छन्ति बायसा समं

| <b>ξ</b> <                 | उत्त नियांत्र माला                                       |        |
|----------------------------|----------------------------------------------------------|--------|
| यहा कागिणिय                | <b>६<sup>न्</sup>, सदस्म दारण नरा ।</b>                  |        |
| चपार्थं चम्बर्ग र          | भाषा, राय रम्ब पु द्वारप                                 | 113341 |
|                            | ामा, दपफामाण अन्तिए।                                     |        |
| सहस्सगण्या अ               | प्रो, भाउं कामा य दिविषया                                | ાશ્ચા  |
| ष्ट्र ग्रेगपासानव्य        | ॥, जा सा पन्नवस्त्रो ठिई।                                |        |
| ञाणि जीयन्ति दु            | म्मिहा, उण्याससमाउए                                      | તારસો  |
|                            | चिया, मूर्ल घेसुण निगाया ।                               |        |
| एगो ऽत्थ लहुङ्गः           | लाभ, एगो मुलेल बागधी                                     | 11481  |
| ण्यो मूस पि हार्           | रेत्ता प्रागमो वस्य पाणिम्रो ।                           |        |
| वयहारे उपमा प              | स्ता, एवं धम्मे वियाग्रह                                 | 11821  |
| माणुससं भवे मृ             | [लं, लाभो देवगई भने।                                     |        |
| मूजच्छेपण जीव              | ार्यं, नरगविरिक्स <del>च</del> र्यं धुवं                 | 118611 |
| दुइचो गई यास               | स्स भाषश् पद्दमृक्षिया।                                  |        |
|                            | घ, जं जिए स्रोत्तयासदे                                   | 111    |
|                            | होइ, दुविहिं योग्गई गए।                                  |        |
|                            | गुगा, <b>भद्रा</b> प, सुचिराद्वि                         | 11841  |
|                            | प्, पुलिया बालं च पश्चित्रयं।                            |        |
|                            | न्ति, माणुर्सि चोणिमेन्ति जे                             | [[\$1] |
| वेमायाहि सि <del>क्र</del> | वाहिं, जे नरा गिहिसुब्वया ।                              |        |
|                            | जोयि, कम्मसना हु पाणियो                                  | । २०।  |
| जेसि तु विचना              | सिक्सा, मूबियं ते काइव्छिया।<br>सेसा, कादीया अन्ति देवयं |        |
| सीलयन्ता सावर              | मसा, भदाया जान्य वृवय                                    | ારશા   |
| एवमवीयाध भ                 | क्स्यू, कागारिं च विमाणिया।<br>जिक्सं, जिबमागे न सविदे   |        |
| कह्यसु ।जन्म               | क्षिक्स, जिन्माच न सामव्                                 | गरशा   |

| उत्तराध्ययनसूत्र स्थापनं द                                                                        | ĘŁ     |
|---------------------------------------------------------------------------------------------------|--------|
| जहा कुसगी उदग, समुदेख समं मिखे ।                                                                  |        |
| एव मारासमा काना, देवकामाण अंतिर                                                                   | ॥२३॥   |
| कुसग्गमेचा इमे कामा, सिकदर्द्धम्म बाउए।                                                           |        |
| करत हेरं पुराकार, जोगन्खेम न संविदे                                                               | ાારકાા |
| इह कामाणियट्टस्स, अचट्ठे अयरन्मई ।                                                                |        |
| सोचा नेयावयं ममां, ज मुख्यो परिभस्सइ                                                              | ॥२४॥   |
| इद फामाणियट्रस्स, श्रन्तट्टे नायरन्तर्द ।                                                         |        |
| पूर्वहनिरोहेण, भवे ववे चि मे सुय                                                                  | ॥२६॥   |
| द्भी जुई जसो बरुणो, बाउं सुहमशुक्तर ।                                                             |        |
| मुख्नो जत्य मणुस्पेमु, रत्य से उषषञ्चर                                                            | ાારહા  |
| धातस्स पस्स वालत्त, महन्म पडिबद्धिया ।                                                            |        |
| विषा घम्भ बाहस्मिहे, नरए उषयद्भई                                                                  | IIRSII |
| घीररस पस्स घीरत स <b>व</b> धम्मा <b>णु</b> वन्तिणो ।                                              |        |
| चिचा धपमा धम्मिट्ठे, देवेसु स्ववद्धाई                                                             | ારશા   |
| मुक्तियाण वात्तभाव, भवार्त् चेय पृष्टिय ।                                                         |        |
| चर्ऊरा वालभाष, श्रवाल सेवर् मुखि ।                                                                | 비현기    |
| ॥ ति वेमि ॥ इति एलय मन्यर्ण समत्त ॥ ॥                                                             |        |
| ।। भह काविलीय महम अज्यक्ष्यस् ॥                                                                   |        |
| भधुवे मसासयम्मि, संसार्मिम दुक्खपवराप ।                                                           |        |
| कि नाम होज से कम्मर्य, जेगाह दुग्गह न गच्छेग्जा                                                   | 11411  |
| विजिह्न पुरुवसजीय, न सियोई कर्दिन कुरुवरजा।                                                       |        |
| भसिर्णेहसिर्योहकरहिं, दोसपश्रोसेहि मुख्य भिक्स्<br>वो नार्ण्यसर्गसमगो, हिर्यानस्टेमाय सम्यजीवाण । | itsii  |
| या नायप्रसायसमाना, हिमानस्यनाय सम्यत्रामाय ।<br>सेसि विमोक्सागृहाप, भासइ मुणिषरो विगयमोहो         | 11\$11 |
|                                                                                                   | 11711  |

| yo.            | चैन सिद्धात माना                         |
|----------------|------------------------------------------|
| सन्यं गर्धं फर | हं प, विष्यबद्द सहाधिद्द भिम             |
|                | ग <mark>ण्मु पासमाणा न जिल्प</mark> ा सा |
|                | विसन्ने, दियनिसीयसवृद्धियोग              |
|                | य मूढे, यासद मश्दिया य रहे               |
|                | में फामा, नो सुजहा अधीरपुरि              |
| मह सन्ति सु    | म्पया सार्, जे वरन्ति घतर य              |
|                |                                          |

म्। इ परथ । न्नम्म बेदि । खिया या

समन्त्रामुख्ने वयमाणा, पाणवर्दं मिया प्रयाणन्ता । मन्दा निरयं गच्छन्ति, याक्षा पाषियाहि दिहीहि [[4]] न हु पाणपहं भागुआणे, मुचेन्त्र फवाइ सञ्चदुक्साण । एवारिएहिं बन्छाय, जेहिं इमी साहुधम्मी पश्ची

11411 पाणी य नाइवापम्मा, से समीइति वुस्नइ वाइ। तको से पाषय फर्म, निस्ताइ खर्ग य यताको 11311 जगनिस्सिपहिं मृषहिं, वसनामेहिं थावरहिं च । नो तेसिमारमे वर्षे, मगसा वयसा कायसा **जे**व सुद्धेसग्राको नण्याग्रं, तत्य ठवेदज भिक्सू कप्पाग्र । आयाप घासमेसेच्या, रसगिद्धे न सिया मिक्साप

116011 118811 पन्ताणि चेय सेवेग्जा सीयपिंडं पुराणकुमासं। भादु बक्सर्स पुजार्ग था, जवस्पट्टाए निसेवए मंथु ॥१२॥ जे जन्मणं च सुविणं च, भन्नविम्म च जे पर्यजंति । न ह ते समगा बुच्चंति एव भायरिएहि भक्साय 118311

इहजीवियं क्राग्रियमेत्रा, पमठ्ठा समाहिजोएहिं। ते काममोगरसगिद्धा, वववव्यन्ति चासुरे काथ

114811

118811

11211

IIXII

11511

ससो वि स सम्बद्धिया संसारं वहु सम्मुपरियटन्छि।

बहुफुम्मलेवजिताण, बोदी होइ सुदुतहा तसि

| उत्तराध्ययनसूत्रे अध्ययन ६                                               | ७१     |
|--------------------------------------------------------------------------|--------|
| कसिए पि जो इस लोग, पहिपुरए वृत्तेका इकस्स ।                              |        |
| तेगावि से न सतुस्से, इह दुप्पूरए इमे भागा                                | 118411 |
| वहां लाहो वहा लोहो, लाहा लोहो पवर्द्ध ।                                  |        |
| दोमासकय कश्चं, कोबीए वि न निट्ठिय                                        | ।१७॥   |
| नो रक्ससीसु गिम्फेञ्जा, गंडवच्छासु उर्गगचिचासु।                          |        |
| बाबो पुरिसं पक्षोभित्ता, सेलन्ति जहा व दासेहिं                           | 118511 |
| नारीसु नोषगि <del>न्मेन</del> ्जा, इत्थी विष्पञ्च <b>हे अ</b> ग्णागारे । |        |
| धर्मा च पेसलं नच्या, तस्य ठवेरज मिनस्य प्राप्तास                         | 113£11 |
| १६ एस धम्मे अक्झाए, कविलेगं च विसुद्धपन्नेगं।                            |        |
| वरिहिन्ति जे ए काहिन्ति, तेहिं काराहिया दुवे सोग                         | 113-11 |
| ॥ चि वेमि ॥ इति काषिलीय कटुमै कश्करणी                                    | 티리     |
| <del></del>                                                              |        |
| ।। ऋह ग्रावम निम्पवज्जा ग्रामज्यस्यण ॥                                   |        |
| षइञ्या देवलोगाचो, उववन्नो मागुसम्मि होगम्मि ।                            |        |
| रवसन्तमोहणिञ्जो, सरह पोराणियं जाह                                        | 11411  |
| जाइ सरिचु भयवं, सइसवुद्ध चाणुक्तरे धम्मे ।                               |        |
| पुर्त ठवेतु रक्ते, अभिणिक्समई नमी राया                                   | 11311  |
| सो देवलोगसरिसे, अन्तेरुखरगधो वरे मोए।                                    |        |
| मुजिल नमी राया, धुदो मोगे परिच्ययई                                       | 11311  |
| मिहिलं सपुरजणवय, वलमोरोहं च परियणं सध्यं।                                |        |
| चिष्या भामनिक्सन्तो, एगन्तमहिब्दिको मयय                                  | 11811  |
| कोज्ञाहजगभूर्य, भासी मिहिलाप पब्ययन्वस्मि ।                              |        |
| वश्या रायरिसिम्मि, निमिम्म श्रीभणिक्समन्त्रिम                            | ווצוו  |
| मस्मुद्धिय रायरिसि, पवस्त्राठाणमुत्तम ।                                  |        |
| सको महाणुरुवेण, इमं वयणमन्त्रयी                                          | 11\$11 |
|                                                                          |        |

चैन सिद्धात माजा. 40 सन्यं गर्धं कलर्दं च, विश्वज्ञद्दं वहाविद् भिस्तृ । सन्येमु कामजारम् पासमाणा न निष्पद्व साई भोगानिसदोसविसन्ने, दियनिस्नेयसवृद्धियोगस्य । यांने य मन्दिए मृद्धे, य मह मस्दियाँ व स्वेत्तास्म दुप्परिषया इमे कामा, नो स्वहा क्रपीरपृरिसेहिं। घह सन्ति सुख्यया साहू, जे सरन्ति प्रतर पण्चिया या समण्यस्यो ययमाणा, पाण्यदं मिया प्रयाणन्ता ।

الايلا

1120

11411

INI

11511

11411

117 7 11

118311

HSSII

118811

मन्ता निरयं गच्छन्ति, वाला पावियादि विद्वीति न हु पाणुयहं भ्रम्णुआयों, मुचेग्ज क्रयाह सञ्चदुक्साया । एवारिएहिं भन्छाय, जेहिं इमी साहुधम्मी पमची

पाणे य नाइवापस्त्रा, से समीइत्ति पुरुषङ् ताइ। तचो से पावय कर्मा, निग्जाइ उदगें य धलाओ जगनिस्सिपहिं भृषहिं, दसनामेहिं यावरहिं स । नो तेसिमारमे दंडे, मणसा ययसा कायसा चेय 114011 सद्धेसणाची नच्चार्ण, तस्य ठवेच्च भिनस्तु बाप्पाण् ।

जायाप पासमेसेन्जा, रसगिते न सिया मिनसाप पन्तासि चेव सेवेरजा सीयपिंड पुरासकुम्मासं। बादु वकसं पुलागं या, जवस्यद्वार निसेवर मंधु जे सक्त्रणं च सुविणं च, मज़विक्त च जे परंजंति ।

न हु ते समगा वृष्यंति एव आयरिएहि अवसाय ्र ।।१३॥ इहसीवियं क्रांग्रियमेचा, पमट्टा समाहिजोपहिं।

ते काममोगरसगिद्धा, बववज्जन्ति भासुरे काए क्तो वि य प्रवृद्धिता संसारं वहु मणुपरियटन्ति। बहस्माक्षेवज्ञितायां, बोदी होइ सुदुद्धहा तेसि

| <del>उत्तराप्ययनस्</del> त्रं सभ्ययनं ध       | <b>ξυ</b> |
|-----------------------------------------------|-----------|
| एयमट्टं निसामित्ता, हेउकारणचोहमो ।            |           |
| तमो नमी रायरिसी, देविन्यं इ्यामध्यवी          | 113811    |
| सदं नगरं किया, तबसवरमगालं ।                   |           |
| स्वन्ति निष्णुपागारं, तिगुत्त तुष्पर्धसय      | 112 H     |
| घर्णु परक्रम किया, जीव च इरिय सया।            |           |
| घिइ च केयएं किया, सक्षेग्र पत्तिमन्थए         | ॥२१॥      |
| ववनारायजुत्तेया, भित्त्या धन्मधंचुयं।         |           |
| मुगी विगयसंगामो, भवास्रो परिमुख्य             | ॥२२॥      |
| एयमहं निसामित्ता, देवकारणचोइभो ।              |           |
| तको नमि रायरिसि वेविन्दो इरामध्वधी            | મુસ્લા    |
| पासाप कारक्ताण, बद्धमाणगिहाणि य ।             |           |
| यात्तमापोदयाची य, तचो मण्डसि सस्तिया          | ઘરશા      |
| एयम्हुं निसामित्ता, हेऊकारणचोइको।             |           |
| तको नमी रायरिसी, देविन्य इल्पमन्त्रवी         | ાારશા     |
| ससय सनु सो फुण्इ, जो मगो फुण्इ घर।            |           |
| जत्मेष गन्तुभिच्छेजा, तत्य कुवेज सासय         | 112511    |
| एयमट्टं निसामित्ता, हैऊकारणचोइको ।            |           |
| रुषो निर्म रायरिसि, देघिन्दो इरामाय <b>धी</b> | llacil    |
| भामोसे लोमहारे य, गठिमेष य तक्तर।             |           |
| नगरस्य खेमं काङ्ग्य, सद्मो गच्छस्ति स्रतिया   | गरना      |
| एयमहु निसामित्ता, इऊकारणचोइमो ।               |           |
| सको नमी रायरिसी देविन्द इस्पमध्यपी            | likkli    |
| वसई सु मशुस्तेहि, मिच्छा दहो पजुन्नह ।        |           |
| धकारिखोऽस्य बामान्ति, मुबई कारको उछो          | ॥३०॥      |

| υ <del>?</del> | चीन मिद्याव माना               |         |
|----------------|--------------------------------|---------|
| किएसु भा ध     | ञ मिदिनाण, कोसाद्वराम द्वा ।   |         |
| सुन्यान्त राह  | ण महा पासाप्स मिक्षम य         | jjali   |
| ण्यमञ्जलिसा    | मिघा, इंडकारमधीरका ।           | ** .    |
| वस्रो नमी रा   | परिसी, दिवाद इग्रमन्त्रधी      | 1111    |
| मिहिलाण चे     | ए यन्त्रे, सीयम्बाए मणीरम ।    | 11      |
| पसपुष्फफलोबे   | प, वर्ण बहुगुरो सवा            | [JEM    |
| वाण्य हीरमा    | एम्मि, चेह्यम्मि मणोरम ।       | HE      |
| दुहिया ससर     | ण भत्ता, एर फन्दन्ति भी समा    |         |
| एयमङ निसार्    | मेचा, इंडकारणचीइको ।           | lišeji  |
| धमो निर्मि स   | परिसि, द्यिन्दो इत्यमस्यी      |         |
| पस अगीय        | थाऊ य, पर्यं हरमह मन्द्रिं।    | 115.511 |
| भयवं भन्तेवर   | तेयां फीस या नामपेक्सह         |         |
| प्यमठं निसार्  | मेचा, इंडकारयाची हुन्हों।      | गर्शा   |
| वजी निम रा     | यरिसि, देविन्द इग्रमस्ववी      |         |
| सह बसासी ई     | गियामो, चेसिं मो नस्य किंचगां। | 118311  |
| मिडिलाए डब्स   | क्रमायीय, न में डब्सइ किंचर्य  |         |
| च तपुसक्तच     | स्स, निष्याबारस्य भिवसुगो ।    | 115811  |
| पिय न विज्ञे   | किंचि, कप्पियं पि न वस्त्रह    |         |
| बहंख मुखिए     | ो भइ, भगगगरस्य भिक्सुगो ।      | ।।१४॥   |
| सब्बच्चो विष्प | मुकस्स, यगन्तमणुपस्सची         |         |
| एयमङ्ग निसारि  | नत्ता, देउकारखचोदको ।          | ।।१६॥   |
|                | रिसि, देविन्दो इग्रमस्ववी      |         |
| पागारं कारहर   | तम् गोपुरदृत्तगाम् य ।         | १११७॥   |
|                | ोमो, वमो गच्छसि सचिमा          | 110     |
|                |                                | 115211  |

| क्तराध्ययनसूत्रं श्र <u>ा</u> च्ययनं ६             | úΣ      |
|----------------------------------------------------|---------|
| प्यमहं निसामित्ता, हेऊकारणचोइभो ।                  |         |
| तको नमी रायरिसी, देखि वं इग्रमञ्बदी                | แรงแ    |
| मासे मासे हु जो वालो, कुसग्गेयां हु मुंजय ।        |         |
| न सो सुयक्सायधम्मस्स, कर्त ध्रम्पइ सोलसि           | 118811  |
| एयमहु निसामिचा, द्वेउकारणचोइभो ।                   |         |
| सभो नर्मि रायरिसि, देविन्दो इग्रमन्यधी             | ॥४४॥    |
| हिरण्णं सुवण्णं मणिमुत्तं, कंसं दूसं च वाह्णं ।    |         |
| कोसं वड्डावइसायं, सभो गच्छसिस्त्रसिया              | 118£11  |
| एयम् ह निसामिता देउकारगचीइ ची।                     |         |
| तको नमी रायरिसी, देविंदं इरामध्यवी                 | 118ભા   |
| सुबस्यारुप्पस्स उ पञ्चया भवे, विया हु फेलायसमा असं | स्रया । |
| नरस्य लुद्धस्स न तेहि किंचि, इच्छा हु आगाससमा अय   |         |
| पुढवी साली जवा चेव, हिरयण पसुभिस्सह ।              |         |
| पश्चिपुण्णा नालमेगस्स, इइ विच्वा तर्व चर           | 118611  |
| एयमठु निसामित्ता, देउकारणचोइचो ।                   |         |
| तको नमि रायरिसि, देशिन्दो इरामध्यवी                | llkoll  |
| श्रच्छोरगमध्मुदए, मोप वयसि पत्थिया ।               |         |
| असन्ते कामे पत्थेसि, संकप्पेण विहम्मसि             | แรงแ    |
| पयमठ्ठं निसामित्ता, देउकारणचोद्दश्रो ।             |         |
| तको नमी रायरिसी, देविन्दं इग्रमन्यवी               | แหลเเ   |
| सल्तं कामा विस फामा, फामा प्रासाविसीवमा ।          |         |
| कामे पत्थेमाणा, अफामा जन्ति दोमाई                  | 112311  |
| भद्दे ययन्ति कोद्देश, मार्गेश सहमा गई।             |         |
| मामा गइपडिन्पाको, लोभाको दुइको भयं                 | 115811  |

| 40              | जे न       | भिद्यात | माभा |
|-----------------|------------|---------|------|
|                 |            |         |      |
| एयम् निमामित्रा | <b>EX.</b> | मिन्।इप | रा । |

113 (11

ાકસા

113311

HARI

113211

ારફા

112ull

11351

113411

Hoxil

HYRH

માકસા

प्यम्भ निर्मानका, द्रुष्टारण्याक्षा ।
तका तमि रार्याम्, र्यात्या इण्मन्दर्या
ते कह परिषया तुम्हे, नानमन्ति नराहिया ।
यसे त ठापहराण, तम्मे गम्द्रानि राधिया
ण्यम् हिनामिसा, इंडकारण्योहको ।
तको नमी रार्यारास, त्रिवन्दं हण्मक्ष्यी
को सहस्सं सहस्ताणं, सगाम दुव्य विणे ।
एमं विणेख सण्याणं, एस से प्रमो जभो
सण्यामिय सुन्माहि, कि ते जुम्मेण् पम्ममो ।
क्राय्यामियस्पाणं, वहसा सुहसेहण्
पविनियाणि कोई, माणं नायं तहेब होहं च ।
दव्य वेष सप्याणं, सब्दं सापे विण् विण् विण

प्यमहं निसामित्ता, देऊकारणचोक्को । तको नमि रायरिसि देविन्दो क्र्यमध्ववी

जहत्ता विष्कते जाने, भोईता समयामाहस्ये । वत्ता भोबा य जिट्टा य तको गच्छासि स्वतिसा

जो सहस्स सहस्सार्ण मासे मासे गृक्ष वृष् । तस्स वि संज्ञमो सेको, कदिन्तस्स वि किंपण

घोरासम चद्दसाण, बन्त पत्येसि बासमं । इद्देव पोसहरको, भगाहि मसुयाहिवा

एयमहुं निसामिता, देऊकारयाचीइको । सक्रो नमी रायरिसी, देवि दं इयामध्यक्षी

प्यमष्ट निसामित्ता, हेऊकारणपोइको । सक्यो नमि रायरिसि, देविन्दो इणमञ्जवी

| क्तराध्ययन सूत्र बास्ययनं १०                                                                                                              | <b>U.9</b>                |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------|
| इड्र इत्तरियम्मि साचप, जीवियए बहुपबवायए ।<br>विहुत्याहि रयं पुरे कहं, समय गोयम । मा पमायए                                                 | สจิน                      |
| दुल्ताहे सन् माराधे ममे, चिरवात्रेग वि सञ्चपाणियां।<br>गादा य विवाग धन्मुयो, समयं गोयम । मा पमायप                                         | [[8]]                     |
| पुर्वावकायमञ्ज्ञो, रक्षोसं जीवो च संवसे ।<br>कालं संस्थाइय, समयं गोयम ! मा पमायए                                                          | וואוו                     |
| ष्माचकायमङ्गद्धो, च्क्कोसं जीवो च संवसे ।<br>फाल संस्राङ्ग्य, समयं गोयम ! मा पमायप<br>तेषकायमङ्गद्धो, च्क्कोसं जीवो च संवसे ।             | 11411                     |
| तज्ञायमञ्जामा, ज्यात जावा उत्तव ।<br>काल संसाईय, समयं गोयम <sup>1</sup> मा पमायए<br>माउकायमञ्जूषो, जन्नोस जीवो उ सबसे ।                   | ાહા                       |
| काल संसाईय, समय गोयम ! मा पमायप<br>वरास्सईकायमइगमो, उद्योस जीयो उ स्वसे।                                                                  | 비타                        |
| फालमणन्तदुरन्तयं, समयं गोयम । मा पमायए<br>केशन्त्रयकायमश्राको, रकोसं जीवो च संवसे ।                                                       | IIEII                     |
| फालं संखिरवसंभियं, समयं गोयम ! मा पमायए<br>तेष्ट्रित्यकायमाराको वक्कोस खीवो व संबसे !                                                     | ।।१०॥                     |
| काल संखिञ्जसिन्दं, समर्थं गोयम ! मा पमायए<br>च वरिन्दियकायमङ्गको, उक्कोसं जीवो उ संबर्धे ।<br>कालं संखिज्ञसन्नियं, समर्थं गोयम ! मा ममायए | ग्र <b>र</b> म<br>ग्रह्मा |
| पंचित्रियकायमङ्गात्रो, उक्तोसं जीवो उसंबंधे।<br>सम्बद्धसमग्रह्यो, समयं गोयस <sup>ा</sup> मा पमायए                                         | गरसा                      |
| वेचे नेरहए शहनको चक्कोसं तीवो उ संयसे ।<br>हक्केकभयनक्ष्म, समय गोयम! मा पमायए                                                             | 114811                    |

| ٥1             | जैन सिद्धान माता              |
|----------------|-------------------------------|
| -<br>भवजीकस्या | मार्ज्रस्थं, विश्वनिषद्रण इत् |
| य दइ भभिक      | रुगाचा इगाहि महुरादि यम       |

(¥Î I التزاز चढा त निजिमा कोढो, महा माला पराजिमा । 11241

चहा त निरक्षिया माया, चहा क्षीभा वसीकची भहो त भज्ञय साहु भहो स साहु मह्४। भको त उत्तमा सन्ती, मही त मुत्ति उत्तमा

इह सि उत्तमी भन्त, पच्छा होहिसि उत्तमी। सोग्तमुत्तमं ठाएं सिद्धि गच्छसि नीरभो एव व्यक्तिस्थ्यन्तो र।यरिसि उत्तमाय सञ्चार ।

पयाहियां फरे वो पूछा पूछों व दइ सको तो विदुष्टण पार, चणकुसलक्सागे मुणिवरस्त । भागासेसुप्परमो जलिय चवलकुंडलविरीही

नमी नमेइ अप्पाण सक्सं सक्सेण चोइको। चहत्रण गेहं च धवही, सामरुखे पस्तुवद्विकी एव फरन्ति संबुद्धा पविचा पविचक्सरा।

विशायदृन्ति भौगेसु, जहा से नभी रायरिसि ॥ति बेमि ॥ इति नभिपष्यज्ञा नाम नवमं खन्मत्यग् समत्तं ॥॥।

।। आह दुमपत्तय दसमं भाजमत्यगां।।

दमपत्तप् पंडयप् बहा, नियडह् राहगयाया कवप् ।

एवं मरायाण जीवियं समर्थ गोयम ! मा पमायए क्समो जह बोसविन्तुए, योव चिट्ठइ सम्बमागाए । एवं मरायाण जीवियं, समयं गोयम ! मा पमायप

11711

गरम

1123

비존대

العجاز

[[투어]

116811

गहरा

| क्तराध्ययन सूत्रं भाष्ययन १०          |   |
|---------------------------------------|---|
|                                       | - |
| स्र्या, भार्यका विविद्या फुसन्ति ते । |   |

UŁ

| घरई गरह विसुद्द्या, भार्यका विविद्दा फुसन्ति ते ।     |         |
|-------------------------------------------------------|---------|
| विह्डह विदेसह ते सरीरये, समयं गोलम ! मा पमायर         | ॥२७॥    |
| षोड्यिन्द सिर्ग्रोहमप्पग्रो, कुमुथ सारहर्य व पाणियं । |         |
| चे सञ्वसिगोहवस्त्रिप, समर्थ गोयम । मा पमायए           | ॥२८॥    |
| विवास वर्स च भारिय, पव्यक्त्यों हि सि वस्तारिय।       |         |
| मा चन्तं पुर्को वि माविष समय गोयम ! मा पमायण          | ॥२६॥    |
| भवरन्मिय भित्रवाधव, विरतं चेव घणोहसंचयं !             |         |
| मा तं विश्यं गवेसए, समयं गोयम ! मा पमायए              | 113011  |
| न हु जियो अज दिस्सई, बहुमए दिस्सई मगादेसिए।           |         |
| सं११ नेयाचर पहे, समयं गोयम ! मा पमायए                 | 113811  |
| भवसोहिय फण्टगापहं, चोद्रएगो सि पेह महालयं।            |         |
| गम्छिसि मरगं विसोहिया, समय गोयम ! मा पमायए            | ग्रह्मा |
| भवले बह भारवाहए, मा भग्गे निसमे वगाहिया।              |         |
| पच्छा पच्छाणुहावए, समय गोयम । मा पमामए                | ।।३३।।  |
| विष्णो हु सि अय्यवं महं, कि पुण चिट्टसि वीरमागको      | ı       |
| चिमितुर पारं गमित्तप्, समयं गोयम । मा पमायप           | 114811  |
| भक्तेयरसेिए इस्सिया, सिद्धि गोयम कोयं गच्छसि।         |         |
| क्षेमं च सिष अगुत्तरं, समयं गोयम । मा पमायप           | गर्भा   |
| वृद्धे परिनिब्धुडे चरे, गामग्प नगरे व सजप ।           |         |
| सन्तीममां च बृहर, समयं गोयम । मा पमायर                | ॥३६॥    |
| वुद्धस्स निसम्म भासिय, सुकृदियमहुपन्नोवसोहियं।        |         |
| रागे दोस च छिन्दिया, सिद्धिगई । गए गीयमे              | ારબા    |
| ॥ चि बेमि ॥ इति दुमपत्तयं समर्च ॥                     |         |

| 95                       | जैन सिद्धांत माला                         |
|--------------------------|-------------------------------------------|
| पर्य भयमंसारे, म         | सरइ गुहागुर्दाह कमादि।                    |
|                          | , समयं गायम । मा पमायप                    |
| त्रज्ञाविमाणु            | सत्तर्ण, भारिभच पुणर्रान दुख्दं ।         |
| यहा दसुवा मिक्ष          | स्युया, समयं गीयम । मा पमायप              |
|                          | चणं भदीण १वेन्दियया हु दुहदा ।            |
| विगन्तिन्दियय। हु        | दीसइ, समय गोयम। मा प्रमायण                |
| भारीयापंचे न्दियसं       | । पि से लहे, उत्तमधन्तमुद्द हु दुहहा।     |
| कुवित्थिनिसेषएः          | त्रणे, समयं गोयम । मा पनायप               |
| सद्य वि उत्तम            | <b>छ</b> ६ स <b>रद</b> णा पुणरवि दुह्हा । |
|                          | अर्थे समय गोयम ! मा प्रमायप               |
| धम्मं पि हुस <b>रह</b> न | त्या, बुहह्या कारण फासमा ।                |
| - १६ कामगुणेहि स         | ज्ञित्या, समय गोयम ! मा पमायप             |
| परिजुद्ध ते सरीव         | यं, केसा पर <b>पुरया स्</b> यन्ति ते ।    |
| से सोयवले य हा           | वर्ष, समय गौयम । मा प्रमायप               |

परिजूरह ते सरीरयं, फेसा परबुरवा हवन्ति ते। से चक्खवल य हायई, समय गोयम। मा पमायप

परिज्रुक् ते सरीर्यं, केसा प्रबुर्या इवन्ति ते। से बाग्रवसे य हासई, समय गोयम। मा पमायए

परिजर्ड ते सरीरमं, कैसा परंड्रवा इकन्ति ते । से जिल्लाको य हायर्डू, समय गोमम ! मा पमायर

परिज्या ते सरीरयं, केसा पण्डुरया इवन्ति ते से फासबसे य हायई, समर्थ गोयम । मा पमायए

परिजर्ड ते सरीरयं केसा परकुरया इवन्धि ते। से सब्दवत्ते य द्वायई, समर्थ गीयम ! मा पमायए 11225

11168

ારહી

내(대

11(1)

મુરબા

ારશા

ાારસા

ારસા

1148)1

ારહા

गिरुद्धा

| उत्तराभ्ययनसूर्वं सध्ययनं ११                   | <b>=</b> ? |
|------------------------------------------------|------------|
| क्तहडमरविखप, वृद्धे भमिआइप ।                   |            |
| दिरिमं पिरसलीयों, सुवियीप चि वुचई              | 114311     |
| वसे गुरुकुते निच, जोगवं एवहायावं ।             |            |
| पियंकरे पियंघाई, से सिन्हां लग्रमरिहाई         | 114811     |
| सहा संस्रम्मि पर्यं, निहियं दुहुको वि विरायह । |            |
| पव बहुस्सुए भिक्स, घन्मो किसी तहा सुय          | ।।१४॥      |
| जहां से कम्बोयार्ग, भाइएग्रे कन्यए सिया ।      |            |
| चासे अवेग पवरे, एव इयह महुस्मुए                | 118411     |
| जहाइयणसमारुडे, सूरे दवपरक्रमे ।                |            |
| रमणो नन्दिघोसेएं, एवं हवइ बहुस्मुए             | ।।१७॥      |
| जहा करेलुपरिकिएणे, कुंजरे सहिहायणे ।           |            |
| यत्तवन्ते अपविहए, एवं हव इ बहुस्पुए            | 118511     |
| जहां से विस्सासिंगे, जायस धे विरायर्थ ।        |            |
| षहसे जुहाहियई, एवं हयइ वहुत्सुए                | 113811     |
| जहां से विक्सावादे, ध्वमी बुष्पहसप् ।          |            |
| सीहे मियाण पयरे, एव हयह बहुस्सुए               | ાારના      |
| बहा से वासुदेवे, संसम्बन्धायाघरे।              |            |
| भप्पविष्ठयधते जोहे, एव इवड् यहुस्सुप           | 13(1)      |
| अहा से चावरन्ते, चक्कवडी महिड्डिए।             |            |
| चोइसरयणादिवई, एवं इवड् वहुस्सुए                | ાારસા      |
| जहां से सहस्तम्से, वज्जपायी पुरन्तरे ।         |            |
| सम्मे देवाहिवई, एवं हयई बहुत्सुप               | ારશા       |
| बहा से विभिर्विद्धंसे, स्विट्टन्ते दियागरे।    | шан        |
| ज़बन्ते इय तेएए, एवं दुवह यहुस्सुए             | गरशा       |

| C0     |   |    |    |
|--------|---|----|----|
|        |   |    |    |
|        | u | मद | वह |
| संच्या |   |    |    |

स्सुयपुरुव एगारस भज्ञरूपर्ण ॥ संत्रभा विष्युकस, श्रणगारसा भित्रमाणी । चायार पाउकरिस्सामि, भारतपुष्टिय मुर्गेह म

दे**त मिठांत मा**जा

जे यावि होई निविश्व, थद्धे लुद्धे ऋणिमाह ।

चभिषस्त्रण उल्लयह, चपिणींग श्रवहस्त्रण मह पंचिह ठाणहि, बेहि सिक्सा न तस्भद्द ।

यम्भा फोहा पमाण्यां, रोगेयातसाण्या य

षह बहुहिं ठाणेहि सिक्सासीलि चि वृषद् ।

भहस्सिर सया दन्त, न य मन्ममुदाहरे

नासीले न वसीले, न सिया भइलीलए।

मफोइएो सबरए, सिनसासीनि चि यवई बाह चोइसहिं ठाणेहि, यट्टभायों र संजप । ध्यविणीए दबई सो उ निज्वाण च न गच्छा

कमिनसाम् कोही हवड, पवन्धं स पकुरुपई। मेचिज्ञमाणी बमइ, सुर्य लक्षण मर्ज्जई

मनि पायपरिकसोवी मनि मित्तेस कुम्पई।

सुष्पियस्सावि मित्तस्स, रहे भासह पावधं पइयग्रवाई दुविले यद्धे लुद्धे अग्रिमाहे ।

असंविभागी अवियत्ते अवियापि चि वृष्ट्यई

बाह पन्नरसिंह ठागोहिं, सुविग्रीय कि वृवर्ष । नीयवत्ती अववतं, अमाई अकुउत्ते

व्यापियस्सावि मित्तस्स रहे रुक्तम्य भासक्र

बाप्प च बाहिक्सवई, पवन्धं च न कुत्रवई।

मेत्ति ज्जमाणा भयई सुय लग् न मन्नाई न य पायपरिक्लोबी न य मिसेस कुप्पई।

11641 118811

1184

HU

иWI

IIVII

IIXII

11711

11411

쁘네

11811

| एत्तराध्ययनसूत्रं सम्यसर्न ११                  | <b>5</b> ₹ |
|------------------------------------------------|------------|
| कतहडमरविजय, गुद्धे सभिजाइए।                    |            |
| हिरिमं पिंडसंक्षीयों, सुनियीप चि वुवर्ष        | 118311     |
| वसे गुरुकुते निषं, बोगवं ववहागावं।             |            |
| पियंकरे पियंवाई, से सिक्सं लक्समरिहई           | 114811     |
| जहां संसम्मि पर्यं, निहियं दुहुमों पि विरायह । |            |
| पव बहुत्सुप मिन्स्त्, धन्मो किसी वहा सुयं      | HtxH       |
| जहां से कम्बोयायां, भाइस्यो कन्यप सिया ।       |            |
| चासे कवेण पबरे, एव हचड् बहुस्पुए               | सर्दा      |
| जहाइयणसमारुडे, सूरे वदपरकामे ।                 | ******     |
| समयो निविधोर्स्या, एवं हषइ धहुस्सूप            | ।।१७॥      |
| जहां करेसुपरिकिर्ग्ये, कुंजरे सहिहायगे।        |            |
| बतवन्ते अपिंडहर, एवं हव इ बहुस्पुर             | ।१दा       |
| जहां से विक्सर्सिंगे, जायसन्ये विरायर्थ !      |            |
| वहसे जुहादिवई, एमं हयई बहुस्सुए                | 117411     |
| जहां से विक्सदाढे, ध्वमी दुणहंसए।              | .,,,,      |
| सीहे मियागा पवरे, एव हवह बहुत्सूप              | 112011     |
| बहा से वासुदेवे, संख्यकायाधरे ।                |            |
| कप्पबिहयवले जोहे, एव इच्छ वहुस्सूप             | 13811      |
| जहां से चाउरन्ते, पद्मश्रद्दी महिद्दिए !       |            |
| चोइसरयगाहिवई, एवं इवइ वहुस्युए                 | દાવસા      |
| जहां से सहस्सन्स्रे, वद्मपाणी पुरन्दरे ।       |            |
| सम्मे देवाहिवई, एवं इवई बहुस्सुए               | भरवस       |
| बहा से विभिरविद्धंसे, संबहुन्ते दियावरे।       |            |
| वनन्ते इय तेपण, एवं इयह वहुस्सुए               | 113811     |

| 0       |  | <b>े</b> निर्वात मात्रा                      |  |
|---------|--|----------------------------------------------|--|
| l al lu |  | वहुस्तुवपुड्य एगार                           |  |
|         |  | स, भणगरस्त भित्रम्<br>सामि, भाणुपुर्दिय मुणे |  |

मज्ञस्यर्थं ॥ ŧ

जे यापि होइ निविञ्जे, धद्धे सुद्धे ऋणिमाह् । श्रमिक्सण उस्तवह, श्रविणांग श्रवहस्मग मह पंचहि ठाणेहि, जेहि सिक्सा न तहभइ।

थम्भा कोहा पमाएएं, रोगेणातस्सएए य

भइ भट्टहिं ठाणेहि सिक्सासीनि सि युग्द । भहस्तिर सया दन्त, न य सम्मगुदाहरे नासीको न वसीको, न सिया भाइकोल्ए । मकोइयों सबरप, सिक्झासीति चि वृषई

मह चोइसहिं ठायेहि, वहुमाये उ संजय । भविणीए दबई सो उ, निस्वाण च न गण्छाइ काभिकतार्गं कोही हवड पयन्धं च पकुठवर्ड ।

मेचिकामाणो वमइ, सुर्व लद्भण मकाई मनि पाषपरिक्सोपी भनि मिसेस कुप्पई। सप्पियस्सावि मित्तस्स, रहे भासइ पावर्य

छह पनरसहि ठायोहि, सुवियीप कि वृद्धि ।

नीयवत्ती अववतं, अमाई अकुउडले

पहरुगवाई दुहिले बडे लुडे वाग्रिमाहे ! असविमागी अवियत्ते अविग्रीए ति वृच्वई

द्याप च कहिक्सवई, प्रवन्धं च न कुठवई ।

मेलिञ्जमाणा मयई, सुय लढु न मस्त्रई

न य पामपरिषक्तियी न य मित्ते सुकुरमाई।

क्राप्पियस्सावि मित्तस्स, रहे कक्षण भास**ई** 

હાશ્લી

તારશા

118311

11831

1111

IFII

иWI

11811

الداا

n¶l

11341

| <del>श्तराध्ययनसूत्रं बाध्ययनं ११</del>    | <b>5</b> ₹     |
|--------------------------------------------|----------------|
| क्याहडमरविजय, वृद्धे समिजाइय ।             |                |
| हिरिमं पिक्संनीया, सुविग्रीप त्ति वृवर्ष   | 118311         |
| वसे गुरुक्ते निवं, जोगवं स्वहाराषं ।       |                |
| पियंकरे पियंबाई, से सिन्सं जदमरिहाई        | 118811         |
| जहा संक्षम्मि पय, निहियं तुहको वि विरायह । |                |
| पर्व बहुस्मुए भिक्ख, घम्मो किसी तहा सुय    | 114711         |
| जहां से कन्त्रोयाणं, साहण्ये कन्यप सिया ।  |                |
| भासे जवेग पवरे, एव हवड् वहस्सुए            | U <b>१</b> \$0 |
| बहाइएग्रसमारुडे, सूरे वदपरक्रमे ।          |                |
| चमको नन्दिभोसेर्ग, एवं हवइ वहुत्सुए        | गरना           |
| जहा करेगुपरिकिएणे, कुंजरे सहिदायणे।        |                |
| बतयन्ते अप्पडिहए, एवं हव इ बहुस्सुए        | ॥१८॥           |
| जहां से तिक्सिसिंगे, जायसम्घे विरायई।      |                |
| वहसे जुहाहिमई, एवं इवह बहुत्सुए            | 118811         |
| वहा से विक्सदाढे, छ्वागे दुष्पह्सए।        |                |
| सीहे मियाण पवरे, एवं हवई वहुस्सुए          | ॥२०॥           |
| वहा से वासुदेवे, संखनकगयाधरे।              |                |
| भप्पडिहयनते जोहे, एव हवड वहुस्सुए          | 1 २१॥          |
| जहां से पाउरन्ते, पद्मपद्दी महिद्दिए ।     |                |
| चोइसरचगाहिकई, एवं हयइ वहुस्सुप             | ॥२२॥           |
| वहा से सहस्सन्छे, वजपाणी पुरन्दरे।         |                |
| सक्षे देवाहिषई, एवं हपई बहुत्सुए           | ારશા           |
| जहां से विसिरमिद्रसे, उपिट्टन्ते दियाभरे।  |                |
| मकन्ते इव तेएगा, एवं इवह घटुस्पुए          | HRFII          |

| <b>=</b> 2             | ीन सिद्धात माना                                    |            |
|------------------------|----------------------------------------------------|------------|
| जहां से उद्य           | इ पान, नम्सन्तपरियारिए।                            |            |
| परिपुरले पुर           | णमासीय, यथ हयह बहुस्सुय                            | ∎৹মা       |
| जहां से समा            | (याण, कोट्टागार मुरस्तित्तः।                       |            |
| नागाधन्नपश्चि          | पुण्णे, एवं ह्या बहस्मुए                           | ારશા       |
| जहां सा दुमार          | ण पयरा, जम्य नाम सर्वसरण ।                         | .,,,,      |
| भगादियस्य              | देयस्स, एवं ह्यइ बहस्सए                            | ારબા       |
| जहासानई ए              | । पवरा, सन्निना सागरगमा ।                          |            |
| सीया नीक्षवन्त         | वपवहा, एवं हवड यहस्मप                              | મુરવા      |
| जहां से नगाय           | । पबरे, सुमह मन्दरे गिरी ।                         |            |
| नायोसहिपञ              | जिए, एवं <b>हवड्</b> घहुस्सुए                      | ((રશ!      |
| जहासे सयभ्             | रमणे, उपही भक्तकोत्र ।                             |            |
| - ना <b>यारय</b> गपि   | पुरुषो, एव हथा बारस्या                             | ાારના      |
| - समु <b>ए</b> गम्भीरस | मा दुरासया. भचकिया हेलाह क्लान्ट                   |            |
| सुमस्स पुरुशा।         | वर्णनस्य वाष्ट्रणा, स्रवित्त व्हर्मा राष्ट्रमन्त्र | र गया ॥३१॥ |
| લભદ્દા દ્વાયમાદ્દા     | । इ.च्याः, क्यमहगवस्यः ।                           |            |
| ज्याप्पास पर           | चेन, सिद्धि संपाछग्रेमासि                          | શકરા       |
| ॥ चित्रवीम ॥ १         | इति वहुस्सुयपुष्क पगारसं व्यवक्तयर्गं र            | उमर्ख ॥११॥ |
| ]] 4                   | मह इरिएसिज्वं बारहं अस्क्ष्यया                     | II         |
| सोयागकुक्षसंभ्         | मो, गुणुचरपरो सुगी ।                               | ••         |
| इरिएसवनो मा            | मि, बासि भिक्स् विदन्तिको                          | 11811      |
| =िनासभाभासा            | प सम्बादस्य सिर्वेस था।                            | 11711      |

ાચા

इरिएसग्रभासाप, स्वारसमिर्द्रसु थ । जन्मे नायागनिवसेवे, संजन्मे सुसमाहिन्मे

मयागुची वयगुची कायगुची विद्यास्त्रिको । भिक्ताहा बन्भद्रव्यम्मि, वसवाडे व्यहिको भोमचेत्रया पसुपिसायम्या, गच्छक्सताहि किमिह ठिमो सि।।।।। जक्से वहि विन्तुयरुक्सवासी, भएकम्पभो वस्त महामुख्यिस्त । पच्छायइचा नियगं सरीर इमाई वयणाइसुवाहरित्या समयो बह सबझो वस्मयारी, विरम्भो धरापयगपरिमाहाम्रो । परप्यवित्तस्य ७ भिक्लकाले, अनस्य बहा इहमानको मि वियरिक्षद्र सम्बद्द सुरुवर्द्द, झन्न पमुर्य मनवाणमेय । जाणाहि में जयणजीविद्य पि, सेसावसेस तमऊ व्यस्ती ॥१०॥ उपक्स मोयण माहणाण, अच्छियं सिद्धमिहेगपन्सं। न ऊ वर्य परिसमभपाया, बाहामु हुम्मं किमिह ठिम्रो सि ॥११॥ यहेस बीयाई वयन्ति कासगा, वहेब निम्नेस य बाससाय । प्याप सदाए दसाह मन्मं, भाराहुए पुरुष्मियां सु क्षित्तं ॥१२॥ सेचाया अम्ह विश्याया लोप, वहिं पंकियसा विरहन्ति पुरसा। जे माह्या जाइविञ्जोबवेया, वाई हु खेचाइ सुपेसलाइ ।।१३॥ कोहो य माणो य बहो य जेसि, मॅसि बदस च परिमाहं च । ते माहणा आइविग्जाविषूणा, ताई तु सेचाई सुपावयाई ।।१४॥ हुन्मेत्य भी भारधरा गिराएं, बहुं न जाएंह बहिन्ज वेप । ध्यावयारं मुखियो चरन्ति, वारं तु खेचारं सुपेसलारं

| अहा <b>ये उबुगद्द च</b> ेद, नक्खचपरियारिए !              |         |
|----------------------------------------------------------|---------|
| विश्वपुरे पुरुषमासीय, प्य इयह यहुस्सुय                   | ■국보II   |
| जहां से समाइयाण, फोट्टागार सुरक्तिए।                     |         |
| नागाधमपदिपुरस्रे, एवं हयह बहुस्मुए                       | મરફા    |
| बहा सा दुमाण पथरा, जम्यू नाम सुर्वसणा ।                  |         |
| बाखाडियस्स देवस्त, एव इयइ घटुस्सुए                       | ારબા    |
| जहा सा नईग्र पवरा, सक्षिजा सागरंगमा ।                    |         |
| सीया नीस्रधन्तपवहा, एवं इवइ यहुत्सुए                     | ॥२५॥    |
| जहां से नगरण पवरे, सुमह मन्दरे गिरी।                     |         |
| नाखोसहिपञ्ज <b>तिए, एव इवइ यहुस्सुए</b>                  | ારઘા    |
| जहां से संयम्रमणे, ख्रही कक्ककोर्ए।                      |         |
| नाखारयगापश्चिप्रयो, एव इयइ वहुस्सुर                      | IJ≎∭    |
| समुरगम्भीरसमा दुरासया, अविक्रया केण्ड् दुप्पहस्या ।      |         |
| ्युयस्स पुरस्माविषद्भस्स वाह्यो, सविषु धन्मं गङ्गुचम गया | मिश्री  |
| सम्हा सुयमहिद्धिका, उत्तमहगवेसए।                         |         |
| जेगाप्यागं पर चेव सिद्धिं संपास्येकासि                   | ારસા    |
| ॥ ति नेमि ॥ इति नहुस्सुयपुष्क स्मारसं भवमस्यगं समत्तं    | गाइक्षा |
| ।। बाह इरिएसिज्जें नारहं बालस्यशा ।)                     |         |
| सोवागकुलसंभूको, गुस्तुत्तरपरो मुखी।                      |         |
| हरिएसवसी नाम, आसि मिक्स जिइन्दिकी                        | 11811   |
| इरिपसंग्रभासाय, प्रवारसमि <b>र्ध</b> सु य ।              | 11311   |
| जन्मे बायाग्रनिक्सेने, संबन्धो सुसमाहिन्धो               | ાણા     |
| ±गागको वयगचो. कायगचो जिइन्दिको ।                         | WI      |
| मिक्सहा बम्मइव्यक्ति, जनवाडे च्यहिको                     | मशा     |
|                                                          |         |

सीचेया पर्य सरयां चवेह, समागया सञ्बन्धरोया तुरमे । जह इच्छह जीविय या घए। वा, लोगे पि एसी कुमिको बहेका॥२८॥ भवहेडिय पिद्रिसरसमंगे, पसारिया बाह भक्तमाबिहे । निक्मेरियच्छे रुहिरं धमन्ते, अंगुहे निमायजीहने से 113111 ते पासिया सरिक्य फडम्प, विमणी विसएणी भद्र माहणी सी । इसि पसारह समारियाओं, हीतं च निन्द च समाह भन्ते। ॥३०॥ वालेहि मुदेहि व्ययागुपहि, जं हीनिया वस्स समाह भन्ते । महत्त्रसाया इसियो हवन्ति, न हु मुखी कोवपरा हवन्ति ॥३१॥ पुर्वित च इस्टि च असागय च, मस्यपदोसी न मे अस्यि कोड । जक्सा हु वेयापहियं करेन्ति, तन्हा हु एए निहया कुमारा ॥३२॥ भारप च धरमां च बियागामाणा, तुम्मं न बि कुप्पह सहप्रमा । तुष्मं तु पाप सरण उवेमो, समागया सन्यज्ञणेण चन्ते ॥३३॥ भवेश ते महासाग, न ते किंचि न भविमो । मुंबाहि साहिमं कुरं, नाणावनणसंजुय ાારજાા इम च मे ऋरिय पम्यमन्तं, तं मुंजस् अम्ह अग्रुमाहहा । वार्ड वि पश्चित्रह भत्तेपार्गं, मासस्य ऊ पारग्रप महत्त्वा ॥३४॥ त्रहियं गन्धोदयपुष्पवास, विष्या तर्हि वसुहारा य <u>पु</u>हा ।

पह्याची दुरद्वहीची सुरेहि चागाचे चहो वार्ण च पुट्ट ॥१६॥ सब्दक सु पीसह वनोषिसेसो, न दीसह जाहयिसेस कोई। सोधागपुत्त हरियससाह, जस्सेरिसा हृंद्द महासुभागा ॥१७॥ कि माह्या जोहसमारभन्ता, ज्वपण सोहि वहिया विमगाहा। ज मगाहा वाहिरिय बिसोहि, न नं सुहट्ट कुसला स्थन्ति ॥१६॥ इसं च जूर्य वर्णकट्टमांग, सामं च पायं बदार्ग पुसन्ता। पास्माह क्ष्में वर्णकट्टमांग, सामं च पायं बदार्ग पुसन्ता। भग्मावयाण पढिवृत्तभासी, पभाससे कि तु सगासि भन्दें । भवि एय विश्वसंत्र भन्नपाश, न य श दाहामु तुर्म नियण्ठा॥१६॥ सामिइहि मञ्मं सुसमाहियस्त, मुचीहि गुचस्त जिइन्दियस्त । बहु में न बाहित्य बहुस्तिगुण्ड, किमण्ड जन्नाग नहित्य नार्द ॥१५॥ के इत्य सत्ता स्वजोद्या था, प्रश्मायया या सह सरिडपर्हि । पय स् द्रहेण फतेण हुन्या, क्रक्टॉम्स चेन्तुण हातेण्य जी र्ण ॥१८॥ भानजवयार्णं वयण् सुर्णेत्ता, उद्धार्या सत्य वहू कुमारा । द्यकेहि विचेहि कसेहि चेया समागया व इसि वालयन्ति ॥१६॥ रक्षो वहिं कोसलियस्य घूया, भइ चि नामेख अखिन्दियगी। वं पासिया संख्य इम्ममाण इन्ह्रे कुमारे परिनिव्यवेद वेवाभिष्योगेया निष्योद्दरण, विष्यामु रहा मस्यसा न माया। नरिन्वद्विन्द्भिवन्द्रिएएं, जेगामि वता इसिगा स एसो ॥२१॥ क्सो ह सो चमातवो महप्पा, जितिन्दिको संजको बन्भयारी । जो में वया नेच्छाइ विश्वमार्थि, पिच्या सर्व कोसजीएया रहा।।२२॥ महाजसो पस महाणुभागो, भोरव्यको भोरपरक्रमो स । मा एव हीलेह बाहीलियान्त्रं, मा सब्धे देएया भी निहहेन्द्रा ॥१३॥ क्याई रीसे वयगाइ सोचा, पत्तीइ महाइ सुमासियाई ! इसिस्स देवावडियहगाए, जनका कुमारे विशिवारयस्थि મરશા ते घोररूवा ठिम बन्चिविषसेऽसुरा विद् वं बया वासयन्ति। ते सिश्वदेहे दिहर वमन्ते, पासिसु मदा इसमाह सुक्को HEXII गिरि नहेबि बागह, वर्ष दन्तेहि सायह। जायतेय पापहि हसाह, जे भिक्तुं भवमग्रह 119611 आसीविसो चमाववो सहेसी , घोरञ्चको घोरपरकमो य । भासावता ज्यान । भगर्या व पक्सन्द प्रयंगसेणा, जे भिक्सुपं मचकाले बहेद ॥२०)

| उत्तराभायनसूत्रं मध्ययन १३                          | 50    |
|-----------------------------------------------------|-------|
| चक्कवट्टी महिद्वीको, वस्मवचो महायसो ।               |       |
| मायारं बहुमार्येणं, इस वस्यामन्वनी                  | 11811 |
| द्यासीमो भावरा दोवि, चन्तम नवसासूगा ।               |       |
| बन्नमन्नमणुरसा बन्नमन्नहिएसियो                      | IIXII |
| वासा वसरुए बासी, भिया कार्सिजरे नगे।                |       |
| हंसा मयंगवीरे, सोबागा कासिभूमिए                     | 11411 |
| देवा य देवलोगस्मि, मासि भम्हे महिहिया।              |       |
| इमा गो छठ्ठिया जाई, धन्नमन्तेग जा विगा              | jjojj |
| <del>फर</del> मा नियाणपगडा, तुमे राय ! विचिन्तिया । |       |
| तेर्सि फ्राविवागेगा, विष्यभोगमुवागया                |       |
| सबसीयपगरा, कम्मा मए पुरा कहा ।                      |       |
| ते भक्त परिमुखामो किंनु चित्ते विसे वहा             | IIEII |
| सन्य सुचिर्ण सफर्स नराण, कबाण कम्माण न मोक्स        |       |
| मत्येहि कामेहि व उत्तमेहि, भाषा मम पुरक्षक्रोधनेए   | ॥१०॥  |
| जाणाहि सम्य महासुमाग, महिह्यि पुरस्यक्तोषवेयं।      |       |

**मत्येहि** आसार्ग चित्तं पि जागोहि वहेव राय, इही जुई वस्त वि य व्यमुगा ॥११॥ महत्यस्या वयगाप्यभूया, गाहासुगीया नरसवमस्मे । नं भिन्सुको सीलगुर्कोवनेया, १६ जयन्ते समक्षो मि आक्रो।।१२॥ उद्योयए मह कक्के य वस्मे, पवेद्दया द्यावसहा य रस्मा ! इमं गिर्द चित्रधराष्यम्य, पसाहि पंचालगुराविषये 118311 नहेंहि गीपहि य बाइपहि, नारीजणाइ परिवारयन्तो । मुंजांहि मोगाइ इसाइ भिक्स सम रोयई पञ्चला हु दुक्सा। १४॥

वं पुरुषनेहेर्योग क्यागुराग, नराहिक कामगुर्येसु गिई ! परमस्सिको वस्त हिमालुपेही, वित्तो इम वयणमुवाहरित्या ॥१४॥ कहं घरे भिक्तु वय जयामी, पायाइ फम्माइ पुणोद्ध्यामी। भक्साहि से संपय जक्सपूर्या, यह मुजर्ट सुसला धयन्सि।।४०॥ ब्रजीयकार भसमारभन्ता, मोसं भद्तं च श्रसेवमाणा । परिगाह इत्थिको माण मार्य, एय परिनाय चरन्ति वृन्ता ॥४१॥ सुसयुद्धा पंचिद्धं समरेहि, इह जीवियं भागमकसमाणा । वोसट्टकाया सुरूचक्तदहा, महाजयं जयर जनसिट्टं

ાષ્ટ્રશા के ते जोई के य ते जोइठाये, का ते सुया कि व ते कारिसंग। पहा य ते कयरा सन्ति भिष्क्य, क्यरेख होमेख हुसासि ओह ॥४३॥ तमो जोई जीवो जोइठाएँ जोगा सुया सरीर कारिसंगं। करमेहा संजमजोगसन्ती, होमं हुणामि इसिए पसत्यं के ते हरर के य ते सन्तितित्थे, कहिं सिणामो व रय बहासि।

बाइबस ग्रे संजय जक्सप्इया, इच्छामो नार्व भवको सगासे॥४४। धम्मे हरए वम्भे सन्तिवित्ये, भ्रामाधिले भ्रतपसमलेसे ! जिंद सिसाको विमलो विसुद्धो, सुसीइमुखो पजहामि दोसं ॥४६॥ पर्य सियाण इसनेहि विष्टं, महासियार्ये इसियां पसत्यं।

वर्ति सियाया विमक्ता विसुद्धा, महारिसी एतम ठायाँ पत्ते ॥४०॥

।। चि वेमि ।) इति इरिएसिक्सं क्राक्मत्यया समस्त ।।१२॥ ॥ बाह चिचसम्मूहरुषं तेरहम बारक्षयण ॥

जाईपराजिको स्तृत, कासि नियास तु हस्यिसपुरस्मि । चुत्तसीए बस्मवसी, बबयन्ती पटमगुम्माको 11811

कस्पिक्ते सम्मुष्टो, विचो पुरा जायो पुरिमराह्मस्म ।

II (II)

सेट्रिक्सिम्सि विसाले, घन्मं सोउत्प पन्यक्ती

कम्पिष्ठित्म य नगरे, समागया दो वि विचसन्मया।

स्दुक्सफलविवार्गं, कडेन्ति ते पक्रमेकस nan

11811

11711

11311

इत्थिरापुरम्मि चिचा, दहु ग नरवह महिद्वीयं। फामभोगेस् गिद्धेर्णं, नियाणमसुद्द कर 113=11 वस्स मे अपिकक्तिस्त, इमं एयारिसं कर्ज़ । वाणमाणो वि जं धम्मं, कामभोगेस मुच्छिको li3\$il मागो जहा पक्जलावसमो, वहुं भलं नामिसमेइ वीरं। एव वर्य कामगुरोसु गिदा, न भिष्म्लुको ममामगुज्वयामी ॥३०॥ अबेइ कालो वरन्ति राइओ, न यावि भोगा पुरिसाण निवा । विवय भोगा पुरिसं चयन्ति, दुमं नहा सीग्युफलं व पक्सी ॥३१॥ जइ त सि भीगे वहरु बसची, बजाई कम्माई करहि राय। धन्मे ठिच्चो सञ्मपयाणुकम्पी,तो होहिसि देवो इच्चो विरुव्धी।।३२॥ न तुश्म भोगे पश्ज्या युद्धी, गिद्धो सि धारम्मपरिमाहेसु । मोहं क्यो एतिस दिपलायो, गच्छामि राय स्नामन्तियो सि॥३३॥ पचालराया वि य वस्मवृत्ती, साहुस्स वस्स वयण सकार । भरासरे मुंजिय काममोगे, भरासर सो नरप पविहो 118811 चित्तो वि कामेहि विरचकामो चदमाचारित्ततवो महेसी। चणुत्तरं संजम पालइता, अणुत्तर सिद्धिगई गयो וועווו ।।चि बेमि ।। इति चिचसम्भूइक्जं तेरह्म,भक्तस्यण समस्।।१३।। ॥ अह उसुयारिण्ड चोदहर्म अञ्स्यवा॥ देवा भविचाय पुरे भवन्म, केई चुया पगविभागावासी ।

पुरे पुराखे रह्मयारनामे, साप सिनन्ने सुरत्नोगरम्मे सफम्मसेसेय पुराष्ट्रपण, क्लोसु रागेसु य ते पस्या । निज्यप्यासंसारभया अहाय, त्रिणिश्ममा सरया पयमा पुमत्तमागम्म कुमार रोबी, पुरोहिको सस्स जसा य पत्ती । विसालक्तिसी य उहोस्यांगे, रायत्य देवी कमलावर्द य

마네

सन्यं विलवियं गीयं, सध्यं नष्टं विश्वम्यिय । सन्ये भाभरणा भारा सन्ये कामा बुहावहा

भारतियाने तुरावर्स, न व सुर्दं कामगुर्येस् रायं। विरक्तकाम वर्षेष्याण, व निमस्तुर्यं सीलगुर्ये रायं।

नरिंद जाई महमा नराएं, सीवागजाई दुहमो गवाएं । नरिंद जाई महमा नराएं, सीवागजाई दुहमो गवाएं । बर्हि वर्ष सल्यक्यस्य नेस्सा, यसी य सीवागनिनेस्योसु धीसे य जाईइ व पावियाप पृष्कामु सीवागनिवेसयोसु । सन्वस्स सोगस्स दुगंझिएजा, इहं हु कम्माइ पुरे कडाई

सम्बद्ध लोगस्स दुगंखिणुञा, इहं तु कम्माइ पुरे कहाई ।।१६॥ सो दाणि सि राय महाजुमागो, महिड्डिको पुराणुकलोयवेको । पहचु भोगाइ कसासयाई, जावाणबेहे कमिणिकसमाहि ॥२०॥ इह जीविय गाम कमामयास्य प्रतिस्थ करिण्युक्समाहि ॥२०॥

पश्च नागाई असास्याइ, भावाखाइंड बांभाखाम्ब्यमाहि ॥२०॥ इह जीविप राम असास्यान्मि, भिया तु पुरवाहं बाकुत्वमाखो । से सोयई मणुग्रहोत्रयीप भन्मं अकाऊस पर्रमि होप ॥११॥

सहेह सीहो व मिय गहाय, मरून नरं नेह हु बान्तकाते। न एस्स माया य पिया व माया कालिमा सम्मंसहरा मवस्ति॥२२॥ न तस्स तुक्क विभवन्ति नाइको, न मित्तवमा न सुया न संवता। एको सर्य पवणुरोह तुक्कं, कत्तरमेव बाणुवाह कम्म ॥२३॥

विश्वा दुपर्य च वष्ण्य प, लेसं गिष्टं घर घन च सस्त । सक्त्मश्रीको कवसो प्याइ, परं भवं सुंदर पावरं वा ॥२४॥ नं एक मं मुख्यसरीरमं से, विद्देगसं दृद्धिय छ पावरोयां। व ॥ य पना वि य नायको या, वायरमन्त काग्रसंकमन्ति ॥२४॥

ांता अर वांत्रयमापमायं, वर्ष्यां करा इरङ्ग मरस्य राथं । ।सरामा वर्ष्यां सुयाहि, मा कासि कम्माइ महासवाई ॥२६॥ इन्हें पि आयामि जहेद साहु, स में हुमें साहित वक्क्षेयं । भागा इसे संगकरा इवंति, से दुख्या कालो कमहारिसेहिं ॥२०॥

।रिजा

भए। पमुच सह इत्थियाहि, सयणा तहा कामगुणा पगामा । वर्ष कर तेप्पइ जस्स होगो, वं सञ्व साहीग्रामिह्न तुन्म ॥१६॥ धरोग्र कि घन्मधराहिगारे, समर्थेग्र वा कामग्येहि चेव । समगा भविस्साम् गुणोद्द्यारी,वहिंविद्वारा भिगन्म भिक्सा।१७०। जहा य भागी भारणी भासन्तो, खीरे भयं तेष्ठमहा विजेस । पमेव जाया सरीरसि सत्ता, समुच्छई नासइ नावचिट्ठे नोइन्द्रियगोब्क अमुत्तमाया, अमुत्तभावा वि य होइ निद्यो । मस्मत्यहेष निययस्य व धो, संसारहेषं च वयन्ति वन्धं ।।१६॥ जहा वय धन्म बजायमाया, पाध पुरा कन्ममकासि मोहा। शोरुडममाणा परिरिक्सयन्ता, त नेव मुन्जो वि समायरामो॥२०॥ बादमाहयम्मि लोगस्मि, सञ्बद्धो परिवारिए । व्यमोहाहि पहन्सीहि, गिहंसि न रई लभे ॥२१॥ फेरा बन्भाहको लोगो, केस वा परिवारिको । का वा अमोहा बुचा, जाया चिन्सावरी हुमे ॥२२॥ मरुष्णाऽस्माह्मो लोगो, जराए परिवारिको । बामोहा रयणी घुना, एव साय विजाणह 112311

जा जा चळाइ रयणी, न सा पश्चिनियचई । बहर्म कुणुमाणुस्स, बफ्हा बन्ति राइको li-crii जा जा बळाइ रयाणी, न सा पहिनियत्तह।

धम्मं च फुरामागुस्स, सफ्ला अन्ति राइको ווערוו एगमो सबसिसाए, बुहुमो सम्मत्तसज्ज्या । पच्छा जाया गमिस्सामी, भिषसमाणा ऋते ऋते 117511 जस्पत्थि मधुणा सफ्लं जस्स घडत्यि पत्नायणं ।

जो आएो न मरिस्सामि, सो हु फंस्ने सूप सिया

जाइम्ररामञ्जूभयाभिभ्या, पहिंविहाराभिनिविद्वचित्ता। ससारचकस्त विमोक्सणहा, दह्य त कामगुणे विरचा 1181 पियपुत्तमा दोन्नि वि माह्यस्स, सफम्मसीतस्स पुरोहियस्स।

सरिचु पोराणिय तस्य जारं, वहा सुविषणं वय सञ्जमं च IIXII ते फामभोगेसु भसञ्जमाणा, मालुस्सएसु ज यायि दिन्या ! मोक्साभिष्ठंसी श्रभिजायसङ्गा, वातं वर्षागम्म इम दशाहु 1191

चसासयं वह इसं विहारं, यहुचन्तरायं न य दीहमाउं। वम्हा गिहंसि न रहं सभामो, भामन्तयामो चरिस्सामु मोर्ख ॥॥ बाह तायगो दत्य मुय्यीय तेसि धयस्स वाषायकर वयासी।

इसं वय वेयविको वयन्ति, जहा न होई असुयाण लोगो . इनहिज्ज वेए परिविस्स वित्पे, पुत्ते परिटुप्प गिहसि बाया। मोबाण मोप सह इत्थियाहि, बारण्युना होइ मुणी पसत्था ॥॥

सोयम्मिया बायगृणिन्वयोयां, मोहारियन्ना पळ्नलएाहिएसां। संतत्त्रभावं परितण्यमायां, कालण्यमायां बहुदा वहुं च परोहियं तं कमसोऽख्यम्तं, निमसयम्तं च सुप घर्योगं। बहवामं कामग्योहि चेय, कुमारगा ते पसमिक्स वर्ष

वेया भहीया न भवन्ति वार्यं, मुचा विया निन्ति वम वमेया । जाया य पुत्ता न इवन्ति वार्ण को ग्राम ते आगुमन्नेक पर्य ॥१२॥

11501

परिव्ययन्ते अधियत्तकामे, अहो य राष्ट्रो परिवणमायो ।

अग्रामित्तसुक्या क्रुकालदुक्या पगामदुक्या व्याग्रिगामसुक्या। संसारमोक्सस्स विपक्सम्या साणी वागा याण च कामभोगा॥१३॥

बामणमत्ते धणमेसमाणे, पणोवि मच्यु पुरिसे मर प इमं च में अस्य इमं च नत्थ, इमं च में किवामिम अफिक्य। तमेवमेमं लाजपमार्यं, इरा इरवि ति फर्र पमाए १

114811

| वत्तराध्ययनसूत्र सध्ययन १४                            | દર્        |
|-------------------------------------------------------|------------|
| मरिहिसि राथ जया तया वा, मणोरमे कामगुणे पहाय           | []         |
| एको हु भन्मो नरदेव वाया, न विरुजई अमनिहेह कि          | चे ॥४०॥    |
| नाहं रमें पश्चित्राय पजरे वा, संवायाञ्चन्ना चरिस्सारि | र माेर्ण । |
| भक्षिया। चन्तुकथा निरामिसा, परिगाहारम्भनियच्छ         | ोसा ॥४१॥   |
| दर्वामाणा बहा रच्यो, बज्ममायोसु अन्तुसु ।             |            |
| अन्ते सन्ता पमीयन्ति, रागरीसवसं गर्या                 | ાાકશા      |
| एवमेव वर्यं मूढा, कामभोगेसु मुख्यिया।                 |            |
| बन्ममार्या न वुनम्प्रमो, रागदोसम्मिया जग              | 118.511    |
| भोगे भोषा विभिन्ता य, लहुभूयविद्वारियो।               |            |
| षामीयमाणा गच्छन्ति, दिया कामकमा इष                    | 118811     |
| इसे य बद्धा फन्दन्ति, मम इत्थरज्ञमागया ।              |            |
| वय च सत्ता कामेसु, भविस्सामो जहा इमे                  | ।।४४॥      |
| सामिसं कुलसं दिस्स, वक्कमाण निरामिसं ।                |            |
| मामिसं सञ्बसुधिमत्त्वा, विद्रिस्सामि निरामिसा         | แระม       |
| गिद्धोधमे च नवाण, कामे संसारवरूणे।                    |            |
| <b>एरगो सुबर</b> णपासे व्य, सकमाणो <b>दशु परे</b>     | ११४७॥      |
| नागो व्य वधग विसा अप्पणो वसहिं यए।                    |            |
| एयं पत्यं महाराय, व्स्सुयारि चि मे सुथ                | ११४८॥      |
| पश्चा विचलं रञ्ज, कामभोगे य दुवर ।                    |            |
| निम्बिसया निरामिसा, निन्नेहा निष्परिगाहा              | 118£11     |
| सम्मं धम्मं वियाणिता, निशा फामगुर्ये परे ।            |            |
| तय परिकारहमसार्थ घोरं घोरपरक्रमा                      | ilkoli     |
| पर्म ते कमसो युद्धा, सब्बे धम्मपरायणा ।               |            |
| नम्ममचमवश्यिमाा, वुक्सास्मन्तगर्वेसियो                | JIK\$II    |

चरनेय धम्मं पश्चित्रज्ञयामो, जिंद पयमा न पुण्डमवामो । चणागर्य नय चरिय विचित्, सद्धासमं से विश्वहत्तु राग ॥१८८६ पद्दीरणपुत्तसस हु नित्य वासो, वासिष्टि? भिवसायरियाह भानो। साहाहि हमसो लडह समाहि, दिमाहि साहाहि समेव सासंगरि

साहाहि रुक्तो लहरू समाहि, द्विमाहि साहाहि समेव खासुंगर्ध पद्माविहूणो व्य जहेह पक्सी, भिष्वविहूणो व्य रणे निरन्ते। वियमसारो विण्यो व्य पोए, पहीलापुची मि तहा बाहे पि ॥१०॥ ससीमणा कामराणा कमे ते संविधिकार स्वरूपकार्या

सुसीनया कामगुणा इमे ते, संपिष्टया क्रमारसणम्या ।
गुंजास ता कामगुणे पगाम, पच्छा गमिरमास पहाणममा ॥३१॥
भुचा रसा मोइ ? जहाइ खे बक्को, न जीवियहा पजहामि मोष ।
ताभ कालामं च सुह च दुक्को, सचिक्कमालो चरिरसामि मोषा।
मा ह तम सोयरियाण सम्बदे व्यालाह कर्म है

मा हु तुम सोयरियाण सन्मरे, जुय्णो व इसो पढिसोसगामी।
भुजाहि भोगाइ मए समाणं, जुन्हां लु मिक्सायरियाविहारोगारेश।
जहा य भोई तलुक भुषंगो, निम्मोयणि हिष्क प्रकेष्ट भुत्तो।
एमेप जाया पमहन्ति भोय, ते ह कह नालुगास्तममेको ॥१४॥
क्रिन्दिल् जालं समर्था य रोहिया, मुक्का करण

द्धिन्त्यु जालं समर्त य रोहिया, मण्डा जहा कामगुणे पहाय । धोरेयसीला तबसा ज्यारा धीरा हु भिक्तारियं चरन्ति ॥३॥। नहेश कुंचा समहत्तन्त्रसा, सथाया जालाया विलेख हंसा । वर्जेति पुत्ता य पर्ध य मम्म्ह, ते ह कह नायुगमिस्समेका ॥३॥। पुरोहिय त समुगं सदारं, सोवारीनिक्कान्स पहाय भोष ।

कुबुन्ससारं विरुक्तसम् ५, रायं वासिकसं सञ्जयाय देवी ॥२०॥ वंदासी पुरिसो रायं न सो होइ पसंसिक्तो । माइग्रेग् परिवर्ष, घर्यं कादाउनिक्क्षसि ॥३८॥ सञ्च ज्ञां जह सुद्दं, सञ्चं भावि घर्यं मने ।

सब्बं जर्ग जह तुहु, सब्ब मार्थ पर्या मर्च । सुम्बं पि ते अपस्थान, नेव धायाय व तब n**ar**ii

स्रसियगगुरुमारायपुरा, माहगाभोइय विविद्या य सिप्पिगो। नो तेसि बयइ सिलोगपुय, त परिष्ठाय परिष्वए स भिक्ख ।।६।। गिहिसो के पन्यक्रस दिहा, अप्पवक्रस व संध्या क्षिका । तेसि इहसोह्यफ्जहा, जो सथव न करेड स मिक्स सवगासगुपागुभोवण, विविद्यं साहमसाहम परेसि । भव्य पहिसेहिए नियग्ठे, जे तत्थ न परस्तर्ह स भिक्ख ॥११॥ जं किंचि काहारपाएग विविद्द, खाइमसाइमं परिस लई । को ध विविद्रेश नासुकम्पे, मरावयकायसुस्यु हे स मिक्स् ॥१२॥ भायामग चेच त्रवोद्यां च, सीयं सोवीरजवोदगं च। न हीतार पिएकं नीरसं तु, पातकुताई परिव्यय स भिक्त्यु ॥१३॥ सहा विविद्या सवस्ति जोए, विव्या मासुरसगा विरिच्छा । मीमा भयमेरवा चराला, जो सोबान विद्युक्तई स भिष्य ॥१४॥ षावं विविद्द समिष कोए, सहिए सेयासुगए य कोवियणा । पन्ने श्रामिम्य सञ्बद्सी, ववसन्ते श्रविदेश्य स मिक्स् ॥१४॥

> ॥ चि वेमि ॥ इति समिक्कुयं समर्च ॥ ॥ भह बम्भचेरसमाहिठाशाणाम

श्रासिप्पजीवी श्रामिद्दे श्रामित्ते, जिज्ञन्दिए सञ्दक्षो विष्पमुद्धे । असुक्तसाइ लहुअव्यमक्सी, विश्वा तिह प्राथर स भिक्स ॥१६॥

सोस्रसम् भज्मत्परा ॥

सुर्य मे भाउसं-तेए। भगषया एवमध्यायं । इह सन् धेरेहिं मगवनाहि दस बम्भकेरसमाहिठाणा प्रमुखा, जे मिक्स् सोबा निसम्म संज्ञमवद्वले संवरवद्वले समाहिवद्वले गुचे गुर्तिदिए गुचपम्मयारी सया भणमचे विदरेग्जा। कयरे सह्यु ते धरेहि सासर्थे विगयमोहार्ग, पुन्नि भाषणभाविया । भविरखेव फालेख, दुक्सस्सन्तमुवागया राया सह द्वीप, माहगो य पुरोहियो । माहर्णी दारगा चेय, सब्ब त परिनिब्युटे

॥ वि वेमि ॥ इति वसुयारिकां क्रक्स्यण समर्च ॥१४॥

ાકસી

批划

॥ श्रद्द समिक्ल् पचद्दर्द भज्मत्ययः ॥

मोर्ण चरिस्सामि समिध धम्म, सहिए उम्जुकडे नियागुद्धिन्ते । संबर्व जहिज बकासकासे, बनायएसी परिज्यए स भिक्लू ॥१॥ राच्चोयरमं चरेळा साढे, विरए वेयवियायरक्तिसः ।

पन्ने भमिम्य सब्दर्सी, जे किन्हि वि न मुच्छिए स भिन्स ॥शा मकोसवहं विश्तु धीरे, मुखी चरे लाडे निवनायगुचे। अव्यागमणे असंपिष्टहे, जे कसिंग अहिंगासए स मिक्सू ॥शी

पन्त समग्रासग्र महत्ता, सीचग्रहं विविहं च दंसमसग । भवनामणे असंपिहहे, जे कसियां भहियासप स मिक्सू !Isli नो सक्कइसिच्छाइ न पूर्व, मो वि य वम्युग्रागं क्रुको पर्ससं। से संजय सुन्वय तबस्सी सहिए भाषगवेसय स निकस IIII

नरनारिं पत्रहे सया वयस्सी न य कोष्ट्रत उमेह स भिक्स ॥६॥ दिन्तं सरं भोममन्दक्षिक्सं, सुमिखं लक्सणदण्डवत्युविक्तं। धगवियारं सरस्य विजयं जे विस्वाहि न जीवह स भिक्स । Ibil मन्तं मूलं विविद्दं वेण्डाधन्तं वमयाविरेययाधुमयोत्तविसायां।

बाउरे संरण् विगिच्छियं च, धं परिमाय परिकार स भिक्ता । ।।।।।

जेए पुरा खहाइ जीवियं, मोह वा कसियां नियक्काई।

दीहकालियं वा रोगायंकं हवेच्या, केवलिपमचाको धम्माको भयेच्या। तन्हा सलु नो निगाये इत्यीहिं सर्वि सभियेच्यागए विहरेच्या॥ २॥

नो इत्योगं इन्दियाइ सप्योहराइ सणोरसाइ झालोइसा निब्स्बंइसा इवड् से निमन्त्ये। तं कहमिति ये। सायरियाइ। निमन्त्यस्स सलु इत्योग इन्दियाइ सप्योहराई सप्योरमाई झालोप माणस्स निब्स्बयमाणस्स बन्धवारिस्स बन्धवेरे संका वा कसा वा विद्वनिच्छा वा समुर्श्विष्ठा, भेदं वा लमेज्जा, उम्मायं वा पार्टिण्ड्या वीहकासियं वा रोगायकं इवेज्जा, केवितपलचाड्यो धन्माको अस्तिज्ञा। तन्हा सलु नो निमायं इत्यीग् इन्दियाई मणोहराइ सणोरमाई कालोपञ्जा निक्स्वप्रधा ॥४॥

भगवन्तिर्द् दस यम्भयेरसमाहिठाणा पमवा, वे भिक्क् से स्वा निसम्म संजमवटुले सवरमटुल समाहियटुले गुचे गुर्हे दिय गुन्तवम्भयारी सवा भ्रापमचे विहरज्ञा। हमे सलु वे धरहि भगवन्तिहि दस यम्भयेरठाणा पमवा, जे भिक्त् सोच्या निसम्म सजमबटुले समाहियदुले गुचे गुर्हे दिय गुचयम्भयारी सवा भ्रापमचे विहरज्ञा॥ व सहा विधिशाह स्वयासणाह सेविचा हवह वे निगम्ये। ने इत्यीपसुप्यम्भयस्ताह स्वयासणाह सेविचा हवह वे निगम्ये। व कहाति थे। भावरियाह । निगम्यस्स सलु इत्यासपुप्यस्तासंस्वाई स्वयासणाह सेविचा हवह से निगम्ये। व कहाति थे। भावरियाह । निगम्यस्स सलु इत्यासपुप्यस्तासंस्वाई स्वयासणाह सेवमायस्स वम्भयारिस्स वम्भयेरे सका वा क्ष्मां सा विहानिष्का वा समुष्यक्वा, भेवं वा लमेक्स, स्मानं

सयणासणाइ सेविका इवइ से निमान्ये ॥ १॥

नो इत्यीण करं कहिला इवइ से निमान्ये । स कह्मिंडिं
वे । ब्रायरियाइ । निमान्यस्स खतु इत्यीणं कह कहेनाण्यस्य
कम्मयारिस्स बन्मयेरे संका वा क्षंत्रा वा विवृत्तिक्क्षा वा
समुप्यिकावा भेद वा लमेक्या चम्मायं वा पाध्यिक्जा, वीद
कालिय वा रोगार्यक इयेव्या, केवियमक्षाओ प्रमानों
मंसेव्या । सन्दा नो इत्यीणं कहं कहेक्या ॥ २॥

वा पाटियानजा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेखा, केविं पन्नताचो घम्माचो मसेखा। सन्दा नो इत्थिपसुपरहगर्ससत्तार्

नो इत्पीर्ण सर्वि सिष्ठियेश्वास्य विद्वरिता द्वाइ से नियान्ये। सं फद्दमिति ये। भाषरियादः। नियान्यस्स सञ्च इत्सीर्वे सर्वि सिप्तियेश्वासयस्य वस्मायेरे संका वा क्षंत्रा वा विद्वरित्वा या समुष्यवित्रवत्रा, मेदं वा समेवता, उन्मायं या पावसीस्वार

|        |        |    | • • • |         |                |    |        |  |
|--------|--------|----|-------|---------|----------------|----|--------|--|
|        |        |    |       |         |                |    |        |  |
|        | 4      |    | -     |         | विद्रगिच्छा    |    | ~~~    |  |
| ાપાસ્લ | पन्मचर | તમ | વા    | જ્લા મા | ાવ #ા •ા અલ્લો | વા | સસુવ્ય |  |
|        | •      | •  |       |         | _              | •  | · ·    |  |

ञ्चनस्थापनार्यं साम्राजन १६

वेजवजा, मेव बा लभेवजा, सम्माय वा पार्टिशवजा, दीइकालियं ।। रोगायंकं हवेरजा, केवलिपनचाको धन्माको संसेरजा।

।महा स्रज् नो निग्गन्ये विभूसा**णुषादी ह**विञ्जा ॥ ६ ॥ नो सहरूपरसगन्धफासागुवादी हवह से निमान्धे। तं कह मिति चे । बायरियाह । निमान्यस्य खल् सहस्वरसगम्भभसासु गविस्त वरभयारिस्त वरमचेरे संका या कंसा वा विद्रागिच्या वा समुप्पविजन्ता, भेवं वा लभेवजा, उन्मायं वा पाठियाज्जा, रीहकातिय वा रोगार्यकं हवेग्जा, केवलिपमसाधी धम्माधी मसेग्जा। सन्हा सजु नो सहरूबरसगन्वपासाणुवादी भवेग्जा से

निगान्ये । दसमे वन्मचेरसमाहिठाएँ। हषह ॥१०॥ हषन्ति इस्य सिलोगा । त जहा ।

वं विवित्तमणाइएए, रहियं इस्थिजणेल स । वस्मचेरस्स रक्खहा, बाह्ययं सु निसेषए

मरापन्दायजगुणी, कामरागविषद्वगी।

वस्मचेररको भिष्या, योकहं तु विवस्त्रप

सम च संयमं थीहि, सफद च भमिक्ताण्।

यम्मचेररको मिष्न्य, निषसो परिषण्जय भंगपर्वगसंठाणं, चारुश्ववियपेहियं । वन्सचेररको थीयां, चक्खुगिक्कं विवरत्रप

कृह्य रुह्म, गीर्च, हसियं मणियकन्दिर्च । बम्भचेरको धीर्या, सोयगिन्धं विवस्त्रप

इस किइं रइ दृष्पं, सहसाविचासियाणि य। बन्मचेररको थीए, नासुचिन्ते क्याइ वि

11311 11271

11211

11311

11

IIXII

11511

नो निगान्थ पुरुषस्य पुरुषकालियं प्रशुसरिता हवा व निमान्ये । व कहमिति चे । भाविरवाह । निमान्यस्स स्रलु पुरुष् पुरुषक्षित्य भाखुसरमाणस्य यम्भवारिस्स वन्भवेद संभ्र व कंसा या विश्विष्य्वा या समुष्याञ्चा, भेवं या लमेखा, कमार्य या पाविष्या, दीहफालिय पा रोगायक हवेज्या, केवलिपम्याक्ये धम्माको भसेन्या । तन्हा सन्तु नो निमान्ये पुन्वर्य पुन्न फीलियं भाससरेक्या ॥ ६ ॥

नो पाणीयं भाहारं भाहिरचा ह्यइ से निमान्ये। वं कहिमित से। भायिरयाह । निमान्यस्य सालु पाणीयं भाहारं भाहिरमाणस्य वनभायिरस्य वंभायेरे सका वा कंसा वा विह्यिन्द्या वा समुप्पविज्ञवज्ञा, भेद या लमेवजा, उम्मायं वा पाणियक्या वीहकालियं या रोगायकं ह्येवजा, केवलिपमलाको धन्माको मंसेवजा। उन्हा सालु नो निमान्ये पाणीय भाहारं भाहारेवज्ञा। ७॥

नो भड्मायाए पाणभोयएं भाहारेला हवड् से निमान्धे। तं कहमिति चे। भावरियाह्। निमान्धस स्वतु भड्मायार्थ पाणभोयएं भाहारेमाणस्य वन्मयारिस्स वन्मचेरे संका वा कस्ता वा विद्याग्यक्षा वा समुप्यक्रियम्, भेर्दं वा तमेच्या, पनमार्थ वा पाविण्यम्मा, वीह्यानियं वा रोगार्थसं हथेस्मा, केवलिपन्नसाको धन्माको मंसेरमा। तन्दा सन्तु नो निमान्ये भड्मायाए पाण मोयएं भाहारेरमा। त्या

नो विभूसारायावी हभइ से निमान्ये ! वं कहमिति से । बायरियाह । विभूसावाचिय विभूसियसपीरे इस्थित्रायस बानिससियम्बे इनइ । तको यां वस्स इस्थित्रायसं

| उत्तराध्ययनसूत्रं श्रध्ययन १७                             | १०१     |
|-----------------------------------------------------------|---------|
| ।। शह पावसमिशाज्ज सत्तदह भज्यस्यमा ॥                      |         |
| जे केइ च पन्यइए नियएठे, धम्म सुणित्ता विणकोववने ।         |         |
| सुदुद्धं लहिएं बोहिलाभ, बिहरेस्ज पच्छा य जहासुह तु        | 11811   |
| सेन्द्रा दढा पावरशास्मि ऋष्यि, उप्पत्रई भोतु वहेब पार्च । |         |
| ् जाणामि ज षष्ट्र साउसु सि, कि नाम काहामि सुएए भन्ते      | मशा     |
| जे केई पञ्चहर, निहासीले पगामसो ।                          |         |
| भोषा पेवा सुद सुवह, पावसमर्गो चि व्वह                     | пŞп     |
| भायरियस्वम्माएहि, सुयं विगाय च गाहिए।                     |         |
| ते चेव सिंसई वाले, पावसमर्गे ति वृषद                      | 11811   |
| ब्यायरियसवज्ञमायायाः सम्मं न पश्चितप्पद्ः।                |         |
| श्रप <b>रिपृगर थद्रे,</b> पावसमणे त्ति वु <b>बई</b>       | IIXII   |
| सम्भएमायो पाणाणि, वीयाणि हरियाणि य ।                      |         |
| श्रसञ्जय संज्ञयमनमाणो, पावसमणे ति वुषई                    | 11811   |
| संधारं फलगं पीढं, निसेन्ज पायकम्बल ।                      |         |
| अध्यमन्जियमारहरू, पावसमयो ति वुच्चई                       | 11011   |
| व्यव्यस्स चर्राः, पमत्ते य समिषस्त्रण ।                   |         |
| क्लंपणे य प्रहे, य पावसमणे ति वृच्चई                      | 11511   |
| पहिलेहेह पमचे, भावसम्मह् पायकस्वल ।                       |         |
| पिंबतेहामणावसे, पायसमणे चि बुच्चई                         | IIEII   |
| पिंडलेहेड पमचे, से किंचि हु निसामिया।                     |         |
|                                                           | 118011  |
| बहुमाइ पमुहरे, थद्धे लुद्धे मणिगाहे ।                     |         |
|                                                           | 118 811 |
| विवादं च बदीरेड, बाइम्मे बात्तपप्रहा।                     |         |
| बुग्गइ कलइ रसे, पावसमग्रे चि युच्यइ                       | ાશ્ચા   |

| co            | जैन सिद्धात माना         |
|---------------|--------------------------|
| णीय भत्तपाण   | तु, खिप्प मयभियद्गुण ।   |
| म्भचरस्या भिष | ह्यू, निरमसो परियञ्जए    |
| म्मलद्धिमियक  | नि, जत्तस्य पिष्यदाण्य । |

tiell

쁘

119811

ાદભા

800

q: ਹ

U नाइमच तु भुजेखा, यम्भचेररको सवा विभूस परिवामिका, सरीरपरिमयहण् । वम्भचेररको भिक्क्यू सिंगारस्य न धारए

IIEIJ सहे क्वे य गन्धे य, रसे फासे सहेव य। पचविहे फामगुणे, निषसो परियद्मप 비원에 चालचो थीनगाइय्सो, थीफदा य मगोरमा ।, 118911

सथवो चेव नारीण, वासि इन्दियदरिसण् कूइय राइय गीर्य हासमुक्तासियाणि य। पणीय मत्तपार्णं च, महमायं पाणमीयर्णं गत्तभसणमिट्रं च कामभोगा य दुध्वया ।

ાશ્ચા नरस्सत्तगवेसिस्स विसं वालवरं अहा 118311 द्रख्नए कामभोगे य निष्पसो परिवक्षए। . सकाठार्गाणि सञ्जाणि, वञ्जेट्या परिवहाग्यव 118811 धम्मारामे चर मिनस्त्र, विश्वमं धम्मसर ही।

धन्मारामरत दन्ते वन्मचेरसमाहिए देवदाण्यम घटवा, जक्सरक्कासकिमरा।

वस्मयारि नर्मसन्ति, दुकरे जे करन्ति स एस धन्मे पूर्व निष्ये, सास्य क्यित्सिय।

मिद्या सिम्मन्ति चाणेण, सिम्मिस्सन्ति वहावरे

[[{2]]

सिवेमि ॥ इतियम्भचेरसमाहिठाया समत्ता ॥१६॥

| उत्तरा <b>प्ययनसूत्र मध्ययन</b> १८.                                  | १०३    |
|----------------------------------------------------------------------|--------|
|                                                                      |        |
| इयाणीर गयाणीर, रहाणीर तह्व म ।<br>पायत्ताणीर महया, सन्यन्नो परिवारिए |        |
|                                                                      | गरा।   |
| मिए खुद्दिसा इयगच्छो, कम्पिल्जुब्जाण केसरे।                          |        |
| भीए सन्ते मिए तत्य, बहेइ रसमुच्छिप                                   | 11711  |
| षह फेसरम्मि चन्त्रायो, ष्मयागारे विवोधयो ।                           |        |
| सब्कायबकायसंजुत्ते घटनबकायं कियाय                                    | 11811  |
| अप्योवमण्डवस्मि, मायश् मखवियासने ।                                   |        |
| तस्सागए भिगे पासं, बहेइ से नयहिवे                                    | ાષા    |
| बह भासगभी राया, जिप्पमागन्म सी तहिं।                                 |        |
| हुए मिए ७ पसित्ता, खणगार तत्थ पासई                                   | 11411  |
| भह राया तत्य संभन्तो, भयगारी मणा हभो ।                               |        |
| मए ७ मन्द्पुरुणेण, रसगिद्धेण पितुणा                                  | [[ન]   |
| मार्स विसञ्जद्भाग, मगुगारस्स सो निषो।                                |        |
| विराप्या बन्दर पार, भगव पत्य में समे                                 | 비디     |
| भह मोग्रेण सो भगवं, भगगारे म्हणमस्सिप !                              |        |
| रायाया न पश्चिमन्तेइ, रामी राया मयद्वुमी                             | ાહા    |
| संबन्धो बहुमन्मीति, भगवं बाहुराहि मे ।                               |        |
| कुद्धे तेएसा भसागार उद्देश्य नरकोडिको                                | 110811 |
| श्रमणो परिथवा तुस्म, श्रमयदामा मवाहि य ।                             |        |
| व्यागिचे जीवलोगम्मि, किं हिंसाए पसम्बसी                              | 118811 |
| जया सर्व्यं परिश्वरज्ञ, गन्तञ्चमयसस्स ते ।                           |        |
| ष्मिण्ये जीवलोगिम्म, फि राजिम्म पस जसी                               | ાશ્સા  |
| जावियं चेय रूषं च, विम्जुसंपायचंचलं ।                                |        |
| जस्य सं मुक्तसी राथ , पेश्वत्थ नानवुष्तस्ये                          | 118311 |

| <b>१</b> •२             | जैन सिद्धाव माना                 |
|-------------------------|----------------------------------|
|                         | , जत्य तत्य निसीयइ ।             |
| मासयम्मि प्रयाउ         | चे, पावमगर्यो चि यु <b>च्च</b> इ |
| ससरक्षपार सुबद्         | , सेम्ब न पहिलेहरू।              |
| संधारए भगाउसे,          | पायसमर्थे सि वुच्चई              |
|                         | षाहारेइ षमिक्सण ।                |
| भरए य तवोकम्मे,         | पावसमयो सि वृष्यद                |
|                         | म्मि, भाहारेइ मभिष्यय ।          |
| चोइचो पडिचोएइ           | , पायसमग्रे सि युच्चई            |
| मायरियपरि <b>वाई,</b> प |                                  |
| गार्णगणिए बुन्भूप       | पावसमयो सि मुन्ह                 |

सय गेह परिचल, परगेहसि वावरे। निमित्तेग स ववहरइ पावसमयो ति युवई 미테 सभाइपियर जेमेर, नेष्ट्रह सामुदाणिय । गिहिनिसेका च बाहेह, पावसमयो चि बुबह 118211 एवारिसे पनकुसीक्षसंतुके, रूपंघरे मुख्यिकराण हेट्टिमे ।

अयसि क्रोप विसमेव गरहिए, न से इह नेम परत्य क्रोप ॥२०॥ जे वनजर एए सुमा उ दोसे, से मुख्यर होड़ मुग्रीया सस्ते !

अर्थास लोप अमर्थ व पृष्ट आराह्य लोगमियां सहा पर ॥२१॥ ॥ चि बेसि ॥ इति पानसमधिक्यं सचद्रं शक्सत्यसं समसं॥१७॥

।) शह सजहन्त्र महारहमं भन्मत्वशं ।।

इम्पिक्ते नयरे राया, अदिवयायसभाइयो।

иtW

11(8) 11(2) 1.89) [[tvi]

11811

त्रानेया संजय नामं, मिगम्यं वयशिपगर

| उत्तराच्ययनस्य द्याच्ययनं १८.                  | १०३    |
|------------------------------------------------|--------|
| ह्याणीप गयाणीप, रहाणीप तह्य य।                 |        |
| पायत्ताखीए महया, सञ्बन्धो परिवारिए             | ઘરાા   |
| मिए छुद्दिता इयगन्नो, कम्पिल्लुग्जाग केसर ।    |        |
| भीए सन्ते मिए तत्य, वहेद रसमुच्छिए             | 11711  |
| पह केसरम्मि उञ्जाणे, प्रणगारे तबोघणे।          |        |
| सरमायज्मायासंजुत्ते धम्मरमाया मित्यायश्        | 11811  |
| षण्भोषमण्डवस्मि, मायइ क्स्नवियासने ।           |        |
| वस्सागए भिगे पार्स, बहेइ से नराहिवे            | ાયા    |
| <b>यह भासगमी राया, सिप्पमागम्म सो वहिं।</b>    |        |
| रूप मिए च पसिन्ता, ऋगागार तत्य पासई            | 11411  |
| मह राया तत्थ सभन्तो, भग्रगारो मणा हभो।         |        |
| मए ६ मन्द्रपुरुयोग, रसगिद्धेण धित्तुणा         | lloll  |
| भास विसम्बद्धाण, भणगारस्त सो निवो।             |        |
| विग्रुप्स वन्द्रप् पार, भगवं एत्थ मे समे       | 비디     |
| <b>पह</b> मोखेख सो भगवं, भुखगारे माखमस्तिए।    |        |
| रायास न पश्चिमन्तेइ, तको राया भयवृदुको         | 11811  |
| संबद्धी भहमस्मीति, भगवं वाहराहि मे ।           |        |
| इन्द्रे तेएए अग्रगारे, बहेरज नरफोडिको          | 115011 |
| षमभो पत्थिवा तुन्मं सभयदाया भवाहि य ।          |        |
| अणिचे जीवलोगम्मि, कि हिंसाए पसग्जसी            | 118411 |
| जया सञ्जं परि <b>ष</b> ञ्ज, गन्तव्यमधसस्स ते । |        |
| षणिचे जीवलोगिन्म, किं रव्यम्मि पस प्रसी        | ॥१२॥   |
| आयियं चेष सर्वं च, विस्तुसंपायच्चल ।           |        |
| जरम त मुक्तसी राथ , पेबस्थ नाबयुक्तसे          | गरशा   |

जैन सिद्यांत माना १०२

व्यविदासणे कुकुर्प, जत्य तत्य निसीपर्दे । भासण्याम्म भाषाउत्ते, पापसमणे ति वुरुवह

ससरक्याप सुबई, खेरज न पश्चित्हई। संधारए प्राणाउत्ते, पायसमणे ति युच्चई

दुद्धद्दीविगइको भाहारेइ भभिक्सण् । भरप य सवीकमी, पावसमारी चि प्रचर् षरथन्तिमा य सुरम्मि, षाद्वारेई प्रभिषसण्य ।

चोड्यो पश्चिपपु, पायसमर्गे चि बुटवड् चायरियपरिवार्द, परपासएरसेयपः। गार्यगणिष बुस्मूष पायसमयो चि युवर्ड

सर्ग गेह परिषञ्ज, परगेहसि वावरे। निमिचेगा य वषहरइ पाघसमयो चि वृचई

सन्नाइपियक क्षेत्रेड, नेच्छड सामुदाणिय । गिहिनिसेस्ज च नाइह, पावसमणे सि वृच्छे

प्यारिसे पंचकुसीलसंबुडे, रूपंघरे मुख्यिमराख देहिमे ! क्रवंसि क्षोप विसमेष गरिहए, न से वह नेष परस्य क्षोप ॥२०॥

जे बब्जए एए सुवा व दोसे, से सुन्वए होड् सुव्वीया सबसे । अयंसि लोप अमर्थ व पृष्ट आराह्य लोगमियां सहा पर ॥२१॥

॥ वि बेमि ॥ इति पावसमग्रिक्नं सचव्हं भन्मत्यग्र समर्च ॥१७॥

।। बाह् समहत्व महारहम भन्मवर्श ।। इम्पिश्ले नयरे रामा अविष्णपत्तवाह्यो।

तामेण संजय नामं, मिगन्यं वयणिमाए

11811

ntW

utti

ntx)

1.8(1)

ાશ્ક્રી

118431

118811

| स्तराध्ययनस्यं सध्ययनं १८                      | १०४     |
|------------------------------------------------|---------|
| मायाषुश्यमेयं सु, मुसामासा निरत्थिया।          |         |
| सजमभागोऽधि मह, वसामि इरियामि य                 | ાારફાા  |
| सन्वेप विद्या मध्यः, मिच्छ।विठ्ठी प्राशारिया । |         |
| विरुत्रमायो परे लोप, सन्मं जायामि भाषय         | ાારુગા  |
| ष्रहमासि महापायो, जुङ्मं वरिससभोवने ।          |         |
| वा सा पाल्लिमहापाली, विञ्वा वरिससम्बोवमा       | ારવા    |
| से पुर बम्भकोगाको, मासुसं भवमागर ।             |         |
| भप्पणो य परेसि च, भारं आगो जहा तहा             | ારિશા   |
| नागारक च छन्द च, परिवन्त्रेश्च सञ्जय ।         |         |
| भगष्ठा जे य सञ्बत्था, इइ विज्ञामगुसचरे         | 113011  |
| पश्चिमामि पसिगार्ग, परमंतिहि वा पुर्णो ।       |         |
| भहो एठ्रिए भहोराय, इह विस्ता तव चरे            | 113811  |
| ज च मे पुरुद्धसी काले, सम्म सुद्धेण चेयसा।     |         |
| वार पारकरे वुद्रे, वं नाएं जिससाससे            | ।।६२॥   |
| किरियं च रोगई धीरे, मकिरियं परिवक्तप।          |         |
| दिहीए दिहीसम्पन्ने, धर्म्स चरसु दुच्चर         | 114411  |
| पय पुण्णपर्यं सोषा, अत्यधम्मोवसोहिय ।          |         |
| भरहो वि भारह वास, चिदा कामाइ पञ्चए             | गाउँथा। |
| सगरो वि सागर त, भरहवास नराहियो ।               |         |
| इस्सरिय केवलं हिंधा दयाइ परिनिव्युद्धे         | ॥३४॥    |
| पद्मता भारहं वासं चक्कपट्टी महद्विमो ।         |         |
| पठवज्जमध्भुषगद्भो, मधय नाम महाजसो              | ॥३६॥    |
| सग्रकुमारो मग्रुस्सिन्दो, चक्रवट्टी महिश्रो ।  |         |
| पुत्तं रम्बे ठवेडरण, सो वि राया वर्षं घर       | ારૂગા   |

| १०४                  | जैन सिद्धीत माला                                      | ,       |
|----------------------|-------------------------------------------------------|---------|
| वाराणि य सुर         | ग चेय, मित्ता य तह य धया।                             |         |
| ञीव तमगुजी           | यन्ति, मय नागुज्ययन्ति य                              | H\$AII  |
| नीहरन्ति मयं         | पुत्ता, पितरं परमञ्जास्त्रम्यमः ।                     |         |
| पिवरो वि तहा         | पुत्ते, , म धू रायं सव परे                            | Hispi   |
| सभो तेगुण्जिय        | र बब्बे, बरे य परिरक्षिका ।                           | ı       |
| फीलन्विडले नर        | प रायं, इहतुह्र मलकिया                                | 11881   |
| तेग्रावि अं फय       | किम्संसहया अवसाजका                                    |         |
| <b>फ</b> म्भुणातगाः  | तिज्ञाची. गच्छा इस एक अल                              | tol     |
| सोउच्य वस्त सं       | चिम्बं, <b>क्रा</b> गास्त्रस्य <del>क्रान्स्य</del> , | ***     |
| मह्या सबगान          | व्यिषे, समावश्रो नराहिको                              | ॥ध्य    |
| सजमो भइउ र           | <b>ब्ब</b> , निक्सको जिल्लाका <del>न्त</del>          |         |
| ग <b>र</b> भाविस्स भ | गवद्यो, व्ययगारस्य ब्रान्स्य                          | 113\$11 |
| चित्रार्द्धं पञ्च    | इ.ए. स्रशिए परिभागनः                                  | ***-    |
| जहाते दीसई।          | सव पसन्तं ते तहा मार्गो                               | 112011  |
| किंनामे किंगोचे      | . कस्सद्राय च आक्राने .                               | ., .    |
| <b>कह</b> पश्चियरसी  | वुद्धे, कहं विस्तीय कि सम्बद्धी                       | प्रशी   |
| सज्ज्यो नाम न        | ामेया. वहा गो <del>ने</del> मा कोकले .                | 11.70   |
| गहभासी समार          | परिया, विक्वापरगापारमा                                | ાારચા   |
| किरिय अकिरि          | यं वियार्थ, अभागा य सहस्राति .                        | 11730   |
| एएहि चश्रह ठा        | त्पा <b>र</b> ु मयन्त्रं कि प्रभास <b>ई</b>           | ॥२३॥    |
| इइ पाडकरे मुख        | हे, नायप् परिणिष् <del>युप् ।</del>                   | 11 / 7  |
|                      | पत्रे, स <b>वे</b> स <b>व</b> परकारे                  | ાારકાા  |
| पहन्ति नरप् घ        | रि, जे नरा पावकारियो।                                 | 1, 10   |
| दिष्य च गई ग         | च्छन्ति, परित्ता भरममारियं                            | ારશા    |
|                      | /_                                                    |         |

| वचराध्ययनसूत्र अध्ययनं १६.                  | १०७     |
|---------------------------------------------|---------|
| तरेव विजनो राया, भणहाकित्ति पञ्चए ।         |         |
| रन्म तु गुरासमिद्धं, पयहिनु महाअसो          |         |
| वहेषुग्गं तब किना, अञ्बक्तिस्त्रतेण चेयसा । |         |
| मह्द्यलो रायरिसी, भादाय सिरसा सिरिं         | IIX XII |
| फद धीरो भाईअहि, सम्मत्तो व महि चर ।         |         |
| एए विसेसमादाय, सूरा दढपरझमा                 | ॥४२॥    |
| व्यवन्तनियाणुरामा, सवा में भाक्तिया वह ।    |         |
| षवरिंसु वरन्तेगे वरिस्सन्ति ष्राणागया       | ॥४३॥    |
| कहिं घीरे ब्रहेअहिं, ब्रचाण परियायसे ।      |         |
| सध्वसगिवनिम्मुके सिद्धे भवइ नीरए            | 118811  |
| ॥ चि वैमि ॥ इति संबद्धकां समन्त ॥१८॥        |         |
| ।। मियापुत्तीय एग्णवीस इम अन्क्रयण ॥        |         |
| सुमीवे नयरे रम्मे, काणगुज्जायसोहिए।         |         |
| राया वलमाइ चि, मिया वस्सग्गमाहिसी           | 11811   |
| तेसि पुत्ते वलसिरी, मियापुत्ते चि विस्सुए।  |         |
| भम्मापिऊण दश्प, जुवराया दमीसर               | ॥शा     |
| नन्द्रेण सो च पासार कीलए सह इत्यिहि।        |         |
| देवे दोगुन्दगे चेय निषं मुद्रयमाणसो         | 11411   |
| मिण्रयणकोष्टिमवले पासायालोयणद्विको ।        |         |
| भातोएइ नगरस्स, चटकचियच <b>व</b> र           | 11811   |
| भह्तस्य भइण्डन्त पासइ समण्यस्य ।            |         |
| ववनियमसंजमधरं, सीलाई गुणामागर               | ।।४।।   |
| स वेहर मियापुत्ते विहीए प्रशिमिसाए व ।      |         |
| कहिं मानेरिसं रूपं, विष्ठपुन्नं मए पुरा     | H       |

चइषा भारह वासं चफ्रवट्टी महद्भियो। હારવા सन्ती सन्तिकर जोए, पता गइमणुत्तरं इक्सागरायवसभो, कुन्धु नाम नरीसरो । विक्छायकिची भगय, पत्ती गइमणुत्तरं 11381) सागर सं चक्षाण भरह नरवरीसरो। Ilekii भरो य भरय पत्तो, पत्तो गइमणुत्तर बद्दा भारहं वासं, बद्दा यहाबाहरां। वक्ता उत्तमे भोए, महापरमे वयं वर 11831) पगच्छत्तं पसाहिता, महिं माणनिसूरणो । हरिसेयो मसुस्सिन्दी, पत्ती गहमरासर ાાજરા कांक्रको रायसहस्तेहिं, सुपरिवाई दमें धर । जयतामो जियानसाय, पत्तो गर्मसूनसर 11841) वसण्णरस्य मुदियं चइताणं मुणी घरे। दसरग्रमहो निक्सन्यो, सक्स सक्रेग कोइको । 118811 नमी नमेड बाजार्ण सनस सक्रोण जोडको । जहरूमा गेहं वहदही , सामयमे परमुवद्विसी וואאוו करकरह किंगीसु, पथालेसु य दुन्सुहो। नमी राया विदेश, गन्धारेस य नमाई 118811 एए नरिन्द्वसमा निष्सन्ता जियासासयो। पत्ते र जे ठवेज्या सामग्यो पम्जुवद्रिया 118011 मोवीररायवसभी, नश्ताय मुणी परे। ब्दायणो पस्यद्दमो, पत्तो गरमणुत्तर

तहेच कासीराया, सेक्पोसचपरक्रमे । कासभोगे परिचनजा, पहुंगे फन्ममहायग 118211

118 # 11

| उत्तराध्ययनसूत्रं अध्ययन १६                         | ₹oŁ    |
|-----------------------------------------------------|--------|
| एव धन्मं सकाउरा, जो गच्छर पर्य भव ।                 |        |
| गच्छन्तो सो तुही होइ, वाहीरोगेहिं पीडियो            | 118811 |
| भद्राणं जो महंतं तु, सपाहेको पश्वजङ् !              |        |
| गच्छन्यो सो सुरी होइ, छुहातयहाविवश्चिमो             | ।।२०।। |
| एव धन्मं पि काऊएा, जो गच्छइ परं सव।                 |        |
| गच्छन्तो सो सुद्दी होइ, भव्यकम्मे भवेयणे            | 113811 |
| अहा गे <b>हे</b> पक्तित्तम्मि, तस्स गेहस्स जो पहु । |        |
| सारभण्डाणि नीणेइ, असारं अवन्यक्र                    | ાારસા  |
| प्यं जोप पलिचन्मि, बराप मरखेण य ।                   |        |
| भणागं धारइस्सामि, सुरुमेहि असुमित्रमो               | गरशा   |
| र्षं विन्तम्भापियरो, सामव्या पुत्त दुरुषर ।         |        |
| गुणाणं तु सहस्साह, घारेयञ्चाई भिक्खुको              | 11 811 |
| समया सन्यभूपसु सन्मित्तेसु या अगे ।                 |        |
| पाणाइबायविरई, जाबब्जाबाए दुकर                       | HRKH   |
| निच्वकानप्पमत्तेर्यं, मुसावायविक्वत्रया ।           |        |
| भासियध्य हिय सच्चं, निष्चारतेण दुक्करं              | गरहा   |
| दन्तसोह्यामाइस्स, भद्त्तस्स विवस्त्रयां ।           |        |
| भणवश्वेसिण्जस्स, गिण्ह्णा भवि दुक्करं               | ારળા   |
| षिरद् भवस्भवेरस्स, कामभोगरसन्तुया ।                 |        |
| रुगा मह्च्यर्थ वस्भं, घारेयम्य सुदुकर               | 113511 |
| धण्यभ्रपेसवरगेसु, परिगाहविवस्त्रणः।                 |        |
| सध्यारम्भपरिच्याची, निम्ममच सुदुकर                  | ॥२६॥   |
| घविवाहे वि भाहारे, राईमोय्णवण्यणा ।                 |        |
| समिहीसंचधो चेव, यन्जेयन्त्रो सुदुधर                 | 115611 |

| ton                                        | ्र<br>जैन सिद्धात माला                             |                        |
|--------------------------------------------|----------------------------------------------------|------------------------|
| साहुस्स वृद्धियो वस                        | स, भाउमत्यसाण्डिम सोह्यो ।                         |                        |
| मोद्द गयस्स सन्धस्स                        | , जाइसरण समुप्प न                                  | livil                  |
| जाइसरम् समुप्पनी                           | . मियापत्ते सहित्रिकः।                             |                        |
| सरई पोराणियं जार                           | , सामयण च पुरा कथ                                  | [달리                    |
| विसर्पाई भरतजन्ती,                         | रम्बन्तो संजमस्य ग्रा                              |                        |
| भन्मापयरमुबागम्म,                          | , इमें षयणमध्यधी                                   | 阻                      |
| सुवासि में पंचमहुळ                         | याणि नरएस हस्स्व स्न निर्दि                        | क्त्यजोषिस ।           |
| ागाञ्चरस्यकामा ।म् ३                       | महरणवाद्यो समाजान कर्                              | इस्सामि <b>भ</b> म्मो। |
| अन्य दाय मप् भागा                          | . सत्ता शिक्षणः-रेक्स्स .                          |                        |
| ा प्रमा कड्याववासा,                        | म रावस्थातमातमा                                    | 118811                 |
| <b>म</b> न सरार <b>आग्राह्य,</b> ह         | मसर्वे काराकर्या ।                                 |                        |
| मसासयावासामग्र,                            | दक्कं केसाम भागाः                                  | 11841                  |
| असासप सरारान्म. र                          | (इ.स.च्यास्यास्य ।                                 |                        |
| पच्छा पुरा व सङ्ग्रह                       | में, फर्णमुब्युयसमिभ                               | 114311                 |
| माग्रुसचे भसारम्मि                         | वाहीरोगाया भानप।                                   |                        |
| जरामरण घरमन्मि, स                          | णाप न रमामह                                        | 11480                  |
| जन्म धुन्छ जस <b>धुन्</b> र                | न, रोगाणि मरणाणि य ।                               |                        |
| महा पुरस्ता द्व समान                       | पे, जस्य कीसन्ति जन्तवो                            | 113211                 |
| स्रेतं वस्य हिरक्णं च<br>चक्र्ताण इम दह, ग | , पुचवार च व घवा।                                  |                        |
| जहां फिम्पागकताण                           | परिणामे = >                                        | 114411                 |
| एवं भुत्ताण भोगाणं,                        | गरियामा न सुम्बरी।<br>परियामो न स <del>म्बर्</del> |                        |
| 22 3 2 41                                  |                                                    | HeetH                  |

भद्राणं जो महतं तु, भप्पाइभो पवजह । गच्छन्तो सो दुही होइ, धुदावय्हाप पीडिभो 1186111

1 8=11

| उत्तराध्ययनसूत्रं धाष्ययनं १६                  | 919    |
|------------------------------------------------|--------|
| मुज मासुस्सर भोगे, पंचजनसम्पर तुम ।            |        |
| मुत्तमोगी तथो जाया, पण्छा धम्म चरिस्तसि        | ॥४३॥   |
| सो विंतडम्मापियरो, एवमेयं जहा फुड ।            |        |
| इह स्रोप निष्पवासस्स, निष्प किचिवि दुकर        | 118811 |
| सारीरमाणसा चेव वेयणाची चनन्त्रसो ।             |        |
| मप सोढाओ भीमाओ, असइ दुन्समयाणि य               | 118511 |
| वरामरणकान्तार, चारुरन्ते भयागरे ।              |        |
| मप सोढाणि भीमाणि, जन्माणि मरणाणि य             | 113611 |
| जहा रहं भगगो उच्हो, एचोऽयन्त्रगुणो दहि।        |        |
| नरप्सु वेबणा उण्हा, भस्साया वेह्ना मप          | 118011 |
| जहां इमं इहं सीयं, पत्तोऽणन्तगर्यो तहिं        |        |
| नरप्सु वेचणा सीया,भस्साया चेइया मए             | 118411 |
| कन्वन्तो कंदुकुम्भीस् चरूपामो बहोसिरो ।        |        |
| हुयासर्गे जलन्तम्म, पद्मपुरुषो भग्नन्तसो       | 118811 |
| महारूपमिासंकासे, महम्मि षहरवालुए ।             |        |
| फलम्बवालुयाए य, वर्षपुरुयो भणन्त्रसो           | lixeli |
| रसन्तो फन्दुकुम्भीसु, स्ट्रं बद्धो बदन्धवो ।   |        |
| <b>इरपत्तकरकयाईहि, जिन्नपुरुषो अ</b> ग्यन्तसो  | गरशा   |
| महतिस्सकंटगाहण्यो, धुगे सिम्बिलपायवे ।         |        |
| स्वेषिय पासयद्वेण, क्र्योफ्याहि वुक्कर         | וואסון |
| महाजन्तेसु वन्छ् या, भारसन्तो सुभेरषं ।        |        |
| पीकियों मि सफरमेहि, पावकरमी अगुन्तसी           | 114311 |
| कृतन्तो कोलसुणपहि, सामेदि सक्लेहि य।           |        |
| प्राविको प्रातिको छिन्नो, विष्कुरन्तो धर्योगसो | ॥४४॥   |

uatil

તારસો

113311

112811

الخوزر

ારફથા

113/01

113411

113841

Ilsell

HRGH

18511

छहा तरहा य सीउरह, दंसमसगवेयणा। मकोसा दुफ्यसेग्जा य, वगुमासा जहमेय य वालणा वम्त्रणा चेव, वहव धपरीसहा । वुक्सं भिक्सायरिया, जायणा य भनाभया फावोया जा इमा विश्वी, फेसज़ोश्रो य दारुएो । तुक्सं मन्भव्ययं घोरं, घारेड य मह्दरणो सुहोइको तुर्म पुत्ता, सुकुमालो सुमस्जिको। न हु सी पम् तुमं पुत्ता, सामयग्रमग्रुपातिया जाभक्जीवमविस्सामी, गुणार्गं सु महत्मरी। गुरुषो लोइमार व्य, जो पुचा होई दुव्यहो बागासे गंगसोर व्य, पविसोर व्य दुत्तरो । बाहादि सागरो चेव, तरियम्यो गुणोवही घाल्याकवतो खेब, निरस्साए च सजमे। श्रसिधारागमण चैव, दुकरं चरित्र तथा श्रही देगन्वविहीय, परित्ते पुत्त दुकरे । जवा स्रोहमया चेव, चावेयव्या सुतुद्धर जहां क्रमिसिहा विश्वा, पाछ होत् सुदुक्करा । तहा तुकर करेचं जे, वारूगणे समग्राचणं पहा दुक्त भरेषं जे, होई वायस कोरवको । तहा दुषसं करेडं जे, कीवेर्ण समयः चया जहां तुलाए वोलेर्ड, दुकरों मन्दरों गिरी। सहा निहुयं नीसकं, दुकरं समयाच्या । बहा मुयाहि वरिनं, दुकरं स्थणायरो । वहा अयुवसन्तेणं, दुकरं वमसागरे

| क्तराध्ययनसूत्र अध्ययने १६                 | 194       |
|--------------------------------------------|-----------|
| चवेडमुहिमाईहिं, कुमारेहिं व्ययं पिव।       |           |
| वाडिमो कृष्टिमो भिन्नो, चुरिएमो य चरान्तसो | ॥६७॥      |
| वचाई वम्बलोहाई, वस्याई सीसयाणि य ।         |           |
| पाइको कलकतन्ताइं, कारसन्तो सुभेरवं         | ॥६८॥      |
| तुई पियाइ मंसाई, खण्डाई, सोल्लगाणि य ।     |           |
| साइची विसर्मसाई, भग्गिषरणाइऽग्रेगसी        | ।।६६॥     |
| तुइ पिया सुरा सीडू, मेरभो य महू या य।      |           |
| पाइयों मि जलन्तीयों, वसामी रहिराणि य       | 1[00]]    |
| निषं भीएए। धत्येगा, दुहिएगा, वहिएगा य ।    |           |
| परमा दुहर्संबदा, वेयणा वेदिना मए           | ।१९०१।    |
| विष्ववयदप्पगादाचो, घोराचो चह्तुस्सहा ।     |           |
| महरुभयाच्यो भीमाच्यो, नरपसु वेदिता मप      | ાષ્ટ્રિયા |
| जारिसा माणुचे लोप, वाया दीसन्ति वेयगा।     |           |
| पत्तो अस्तृत्वगुर्सिया, नरपसु दुक्खवेयसा   | ાષ્ટ્રિયા |
| सञ्चभवेसु भस्सामा, वेयणा वेदिता मर ।       |           |
| निमेसन्तरमित्तं पि, जं सावा नितय वेयणा     | ાષ્ટ્રના  |
| त बिन्तम्सापियरो, छन्तेर्गं पुत्र पञ्चया । |           |
| नवरं पुण सामरुगे, दुक्सं निष्पश्चिकम्मया   | ।(७४)।    |
| सो बेंद्र कम्मापियरो, एवमेय जहा फूडं।      |           |
| पिकस्म को छुण्डि, बरएएँ मियपिक्सम          | .[[∳र्ष]] |
| फारमूप भरण्ये व, जहा उ भरई मिगे।           |           |
| एर्प भूम्म चरिस्लामि, संजमेण वर्षेण य      |           |
| अहा मिगस्स भायंको, महारस्याम्म आयर्ह ।     |           |
| ष्यक्तं रक्समूलिमा, को या वाहे विगिच्छिई   | العداا    |

| ११२              | जैन सिद्धांत माना                                              |  |
|------------------|----------------------------------------------------------------|--|
| छिन्नो भिन्नो वि | सवरणाहि, भरतेहि पट्टिसेहि य ।<br>वेभिन्नो य, खोइरणो पावकन्मुणा |  |
| छिन्नो भिन्नो वि | यभिक्षो य, छोड्रएको पावकम्मुका<br>१ जुन्तो, असन्ते समिनाजव ।   |  |

वकम्मणा चोइको सोचजुरोहि, रोम्म्से या जह पाहिको

हुयासर्गे जल्लन्तम्मि, चियासु महिसो विष । वड्डो पक्को य अवसो, पावकम्मेहि पाविको वकासंबासनुबब्देहिं, जोहनुबब्देहिं पविस्वहिं। विलची विलवन्ती है, दक्तिवहेहिं इण्नतसी

रुण्डाफिलन्तो धावन्तो पत्तो वेयरिणि निर्दि।

जलं पाहिति चि तन्तो, सुरघाराहि विवादको क्णहाभिवसो संपत्तो, असिपत्त महावरा ।

श्वसिपसेहिं पदन्तेहिं जिमपुरुवो भागोगसो मगगरिं मुसंबीदिं, स्केदिं मुसकेदि म ।

गया संममागचेहिं, पर्च दुस्सं भगन्तसो

स्तरेहिं तिक्सधारेहिं, खुरियाहिं कप्पणीहि स । किष्मो पालियो दिसी उक्कितो य प्रागेगसो पासेहिं कूबवालेहिं, मिक्से वा क्षयसी कह ।

नुबाहफरसुमाईहिं, बहुईहिं दुमी विय । कृदियो प्रातियो ब्रिसी, विष्युयो य अगुन्तसो

बीवंसपहिं जालेहिं, नेप्पादिं सक्यो विव ।

वाहिको बद्धरुद्धी था, बहु चेव विवाहको

गलहिं मगरजालेहिं, मच्छो वा भवसो महं। इहिमो फालिको गहिको, मारिको य मणुन्यसो

गाहिको लगा वदो य, मारिको य क्रयान्त्रसो



HERII

115 (1

11631

115211

nsvil

116411

HYYH

nz∜ll

Hexil

العواا

| कत्तराध्ययनसूत्रं मध्ययनं २०                                                                          | 224            |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------|----------------|
| गारवेसु कसापसु, व्यवसङ्गभपसु य ।                                                                      |                |
| नियत्तो हाससीगाभो, भनियायो भवन्वयो                                                                    | 112311         |
| व्यणिस्सिको इहं लोप, परलोप व्यणिस्सिको।                                                               |                |
| वासीचन्द्रगुद्रप्पो य, भसरो भगसरो वहा                                                                 | ાદસા           |
| भप्पसरवेहिं दारेहिं, सन्बन्धो पिहियासवे ।                                                             |                |
| बन्मःपरमाणुजोगेहि, पसत्यदमसासयो                                                                       | !! <b>દ</b> શા |
| एव नाणेण चरणेण दंसणेण ववेण य।                                                                         |                |
| मायगाहि य सुद्धाहि, सम्मं भावेचु भप्पय                                                                | IIFSII         |
| वहुयािया च बासािया, सामय्यामखुपानिया।                                                                 |                |
| मासिप्या च भसेया, सिर्दि पत्तो भरात्तर                                                                | liekii         |
| पर्वं करन्ति संवुद्धा, परिश्वया पवियमस्यामा ।                                                         |                |
| विशिषादृत्वि मोगेसु, मिमापुचे जहामिसी                                                                 | 115-411        |
| महापभावस्त महाअसस्त, मियाइ पुत्रस्य निसन्म मासि                                                       | र्ये ।         |
| सम्पर्शाम करियं च रचमं, गर्मप्रहामं च सिलोगविस्सुतं                                                   | [£9]           |
| वियाणिया दुक्कविषद्भण पर्ण ममत्तक्त्यं च महाभयाव<br>सुहावहं घम्मधुर क्युचरं, घारेळ निव्याणगुणावहं महं | ह।<br>अस्टा    |
| •                                                                                                     | HEMI           |
| वि बेमि ॥ इवि मयापुत्तीर्य अवस्त्यर्थं जमत्तं॥                                                        |                |
|                                                                                                       |                |
| ।। भह महानियिधिठच्जं वीसहमं भन्मस्यम् ।                                                               | 1              |
| सिद्धाण नमो किया, संजयाण च मायमो।                                                                     |                |
| भत्यधनमगरं वर्ष, भग्नुसहिं सुग्रेह मे                                                                 | 11411          |
| पम्यरयणो राया, सेणिको मगहाहिवो ।                                                                      |                |
| विदारजच निम्बामी, मरिबकुष्टिंस चेड्प                                                                  | ાણ             |

| <b>१</b> १४                      | जैन सिद्धात माला                                      |                 |
|----------------------------------|-------------------------------------------------------|-----------------|
| फो वा से फोस                     | ६ देइ, को या से पुच्छइ सुई।                           |                 |
| का समाच घ                        | पाएं था, बाहरिच प्रशासव                               | العرا           |
| जयासे सुही है                    | ीर, तथा गच्छह गोवरं।                                  |                 |
| भवपायास्य श्रु                   | (पि, वक्षराणि सरागि य                                 |                 |
| साइसा पाश्चियं                   | पार्च, यहरेहिं स् <del>रोति</del> स                   |                 |
| ामगचारिय चरि                     | चाया गच्छई सिगनान्त्रि                                | 11=\$11         |
| एवं समुद्धिको वि                 | भक्ता, प्रमिष भागीगण।                                 |                 |
| ग्यग्यास्य चार्                  | त्तारा, उद्दे पक्क प्रदान जिल्ला                      | । ≒रो           |
| पदा । सर एस इ                    | ग्णेगचारी, अर्थेगवासे धुवनोयरे व                      | (1              |
|                                  | 역 역약도 해 빠고ㅠ 가 다 ~ ~ ~~                                | एक्जा ।।≒३)।    |
| भम्मापिऊहिंदल                    | स्तामि, एव पुत्ता जहा सुह ।<br>आको, जहाइ उवहिं तहा    |                 |
| मिगधारिय चरि                     | माना, अहार स्वाह सहा<br>स्वामि, सञ्बदुक्सविमोक्सर्या। | [[ដូវ]]         |
| 3 - III MAN                      | 11 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1                |                 |
| ्यवस्य अस्माप                    | 77 marrie                                             | [Fix]           |
| and a solution of                | । व भडीनार्गा क्षत्र स <b>भ</b> न्न                   | [ <b>[</b> =§]] |
| इड़ो विसंध मिर                   | ये. प्रमहार मा 🛌 🦴                                    | He du           |
| र्धायायाम् सम                    | 1. Halingum D                                         | गुडजी           |
| पंचमहरूवयजुत्तो,<br>सरियानगराहरू | , पंचित्र समिक्षी विग्राक्तिकः                        | 11-1411         |

गद्धा

HELH

ILOII

सक्मिन्द्रवाहिरको, तवोकन्ममि कर्माको

निम्ममो निरहंकारो, निस्सगो चत्तगरको । समो य सञ्चभूपसु, वसेसु थायरेसु म

सामानामे सुदे दुक्से, जीविष मरणे वहा। समो तिन्दापसंसास, वदा माणायमाणको

| षत्तराध्ययनसूत्रं ऋध्ययन २०                 | ११७          |
|---------------------------------------------|--------------|
| परिशे सम्पर्यमान्मि, सञ्यकामसमप्पिप ।       | *******      |
| कह आगाहो भवड़, मा हु भन्ते मुस वर           | गारशा        |
| न तुम आएँ अर्गाहस्स, श्रत्थ पोत्य च परियवा। |              |
| जहा ऋणाहो भवई, सणाहो वा नराहिवा             | ાારફાા       |
| सुगोह मे महाराय, भञ्यक्तिसत्तेण चेयसा ।     |              |
| जहा भगाहो भवई, जहा मेय पविचय                | ।।१७॥        |
| कोसम्बी नाम नयरी, पुराण पुरभेयणी।           |              |
| तत्य भासी पिया मञ्म, पम्यघणसंचद्यो          | 118211       |
| पदमे वर महाराय, घटला मे भन्छिवेयणा ।        |              |
| भहोत्या विरुत्ती दाहो, सञ्बगचेसु पत्थिवा    | 113611       |
| सत्यं जहा परमतिषद्धं, सरीरविवरन्तरे ।       |              |
| भावीतिक भरी कुढ़ो, एवं में अस्छिवेयणा       | ।१२०॥        |
| विय में अन्तरिष्क्षं घ, उत्तमंग च पीस्ट्रः। |              |
| इन्दासिणसमा घोरा, वेयणा परमदाहरणा           | 115 611      |
| उषट्टिया मे भायरिया, विज्ञामन्तर्तिगिच्छगा। |              |
| भवीया सत्यकुसला, भन्तमूलविसारया             | गरणा         |
| ते मे तिगिच्छ कुञ्बन्ति, चाचपाय बहाहिय।     |              |
| न य दुन्खा विमोयन्ति, एसा मन्म प्रणाह्या    | गरदा         |
| पिया में सम्बंसारंपि, विज्ञाहि मम कारणा ।   |              |
| न य दुक्सा विमोयन्ति एसा मन्न अगाह्या       | गरशा         |
| माया वि में महाराज, पुत्तसोगदुहृदृया ।      |              |
| न य दुस्सा विमोयन्ति, एसा मन्छ आणाहया       | ાર <b>શા</b> |
| भायरो मे महाराय, सगा जेडकिण्डिगा।           |              |
| च य पुक्सा विमोवित, एसा मध्म आगाह्या        | 11, 411      |

| ११६                                                   | ीन सिद्धांत माला                      |        |
|-------------------------------------------------------|---------------------------------------|--------|
|                                                       |                                       |        |
| नाणादुमलयाइएए, नाण                                    | ।पनिखनिसेविय ।                        |        |
| नाणाङ्सुमसञ्जन, उज्जार                                | पं नन्दगोयमं                          | 11%)   |
| तत्य सो पासई साहुं, सर                                | ाय सुसमाहिय ।                         |        |
| ानसन्न रुन्सम्बद्धान्म, सुप्                          | मार्च सहोत्रय                         | HALL   |
| वस्स रूव तुपासिचा राष्ट्र                             | क्षो तस्य सल्ला                       |        |
| <b>धव</b> न्सपरमा श्रासी, धरह                         | नो स्वविद्यक्त                        | [[2]]  |
| चाडी वरुको चाही सर्व 🖘                                | e)                                    | /      |
| महासान्सा घहामुसी, इ                                  | हो भोगे कास्तानन                      | 11611  |
| तस्स पाए उ व न्विसा, फार                              | रम स एक किया .                        |        |
| नाइयूरमणासन्ते, पजली                                  | ਪ <b>ਰਿਹਦਕ</b> ਜ਼ੀ                    | [MI]   |
| तरुएो सि भक्तो परमहम्मो                               | भोगकानिम संज्ञया ।                    |        |
| जनाष्ट्रच्या स्त सामव्या ग्रा                         | सर समिति 🕶                            | प्रचा  |
| चणाहो मि महाराय नाह                                   | मक्कान विकास ।                        |        |
| अध्यक्ष्यम् साह बावि. स                               | चि जारिका ।                           | [[단]   |
| तच्यो सो पहसिच्यो राया,                               | धेणिको मगहाहिवो।                      | ••     |
| पप त ३। इसन्यस्स, कहा ज्ञ                             | Intantana format                      | 118011 |
| होमि नाहो भयंतायां, भोगे<br>मित्तनाईपरिषुको, मासुस्सं | र्सेजाहि सजया।                        |        |
| मत्त्रमाद्यसम्बद्धाः मासुस्य                          | श्रु सर्वास्त्रं                      | 118411 |
| खप्पणा वि चणाहोऽसि, र<br>चप्पणा चणाहो सन्तो, क        | ायाया मगहाहिया।<br>भारतको स्ट्रिक     |        |
| एवं वृत्तो नरिन्दो सो, सुस                            | प्य नादा भावस्ससि                     | ॥१२॥   |
| वयणं भरस्यपुरुवं, साहुणा                              | गाया सुम्यास्त्रमा ।<br>विकासस्त्रिको |        |
| मस्सा इत्थी मशुस्सा में, पु                           |                                       | 118311 |
| मंजामि मारासे भोगे, धार                               |                                       |        |
| 3 <b>.</b>                                            | •                                     | 114811 |

llexii

धनिमाह्प्पा य रसेसु गिक्के, न मूलको छिन्नइ धन्यणं से ॥३६॥ धारुख्या जस्स न भरिय छाड, इरियाए मासाए तहेसखाए । धायाणुनिकसेषदुगृक्षणुप, न धीरजाय अधुजाइ ममा ॥४०॥

रत्तराध्ययनसूत्रं श्रध्ययन २०

व्यायाणीनक्संबदुगृह्मणाप, न बीरजाय क्याजाह मन्ग ॥४०॥ चिरं पि से मुग्हरुई भवित्ता, व्यायरव्यप तवनियमेहि भट्टे। चिरं पि कप्पाण किलेसहत्ता, न पारप होह हू सपराप ॥४१॥

भिरे पि कप्पाण किलेसहका, न पारप होई हू सपराप ॥११॥ पोल्ले व मुद्दी वह से कसारे, क्यन्तिय कूछनहावणे वा । राडामणी वेदिनियणगासे, कमहत्त्वप होई हु जाणप्सु ॥४२॥

राडामगी चेरुित्वप्पनासे, समहन्वप होई हु जागपस ॥४२॥ इसीलर्लिग इह धारङ्खा, इसिग्मम जीविय बृद्द्द्या । ससंज्ञप संज्ञयलपमागे, विगिग्गयमागच्छ्रह से विरपि ॥४३॥ विस तु पीय जह फालक्स हगाई सत्यं जह कुगाहीयं।

एसो वि धम्मो निसन्नोववन्नो, ह्याइ वयात इवाविवन्नो ॥४४॥ जे तन्त्रसम् सुविण पर्वजमाणे निमित्तकोउद्दतसपगाहे । इदेवविकासववारजीवी, न गष्कद्व सर्ग्य विम्न काले ॥४४॥ तमवमेणेव व से त्रानि, स्या दुही विप्परियासुगद्व ।

समामाण व स भारति, सथा तुहा विपारवासुवह । संघावई नरतिविरक्सजोणि, मोण विदाहेनु बसाहुरूवे ॥३६॥ एहेंसिये कीयगर्व नियागं, न सुंबई किंव काणेसिणवर्वः । कामी विवा सन्वभक्ती भिष्ठा इसी पुर गन्छह कह पाव ॥४७ न सं करी कठक्रेचा करेह, जं से करे काणणिया दुरप्पया ।

हामी विवा सन्त्रभक्ती मिश्विता इत्तो पुर गण्छद्र कह पाव ॥५० न सं करी करक्षेचा करेड्, जं से करे कप्पणिया दुरपया । से नाहडू मबुमुदं तु पत्ते, पच्छाणुवावेगा द्याविहृयो ॥५८॥ निरहिया नमाहर्ष च सस्त जे उत्तमहं विवक्षासमेड् । इमे वि से निर्ध परे वि सोए. दुइको वि से मिन्नड्र तस्य लोए ॥ एमेय हा हम्ब्कुसीलस्बे, ममां विराहिशु विग्रुवनार्ग् ।

इररी विवा भोगरसाए।गिद्धा, निरद्रसोया परियावमेड

| tts                                                                    | जैन सिद्धात माता                        |               |
|------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------|---------------|
| •                                                                      | , एसा मग्क भाणाह्या                     | llક્સી        |
| भारिया में महाराय, प<br>मंसुपुरणेहि नयणेहि,                            | चर में परिसिंचइ                         | ।१२८¤         |
| श्रन्नं पायां च यहार्या च<br>मए नायमनायं घा, सा                        | वाला नेष मुंजह                          | 11423         |
| स्तर्ण पि मे महाराय, प<br>न य दुक्स्ता विमोएइ, प                       | रसा मन्म अणाह्या                        | [[ <b>1</b> ] |
| षचो हं एवमाहसू, धुव<br>वेयणा चासुमवित्र जे,<br>सर्वं च जह मुखेळा, वे   | संसारम्मि भगन्तप                        | 113811        |
| सर्य च जह शुक्रणा, व<br>सन्तो दन्तो निरारम्भो<br>एवं च चिन्सद्दलाणं, प | , पन्त्रए छग्गारिय                      | ।(३२)।        |
| परीयसन्तीय राईय, वेर                                                   |                                         | ।।इड्म        |
| सन्ती दस्ती निरारम्भी<br>वो इं नाहो जामी, मा                           | , पव्यक्ष्मोऽसमारियं<br>यसो म परस्स य । | แสลแ          |
| सञ्बेसि चेत्र म्याणी, व<br>इत्या नई वेयरणी, व                          | वसार्थं भावरायः य<br>प्या मे फूडसामझी । | liákil        |

13411

115511

अत्या कामदुहा भेगा, कत्या मे नन्दर्श परा

कप्पा कत्ता विकत्ता म, युराय म सुराय म। कप्पा मित्तमितं च, युप्पहिम सुपहिसो

इमा हु अमा वि अणाह्या निवा, तमेगविचो निदुभो सुर्योह । नियण्ठधम्मं तहियाण वी नहा, सीयन्ति एगे यहुकायस नरा॥३८॥

| उत्तराध्ययनसूत्रं अध्ययन २१                                                                                   | १२१         |
|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------|
| निमान्ये पावयस्रो, सावप से वि कोविए।                                                                          |             |
| पोएस ववहरन्ते, पिहुरङ नगरमागए                                                                                 | 11513       |
| पिहुडे ववहरन्तस्त, वाणिश्रो देह ध्यर ।                                                                        |             |
| ष संसर्वं पश्गिम्मः, सदेसमद पत्यिको                                                                           | และเ        |
| भइ पानियस्स घरिणी, समुद्रम्मि पसवई ।                                                                          |             |
| मह वालय तर्हि खाप, समुद्रपालि ति नामए                                                                         | 080         |
| क्षेमेस बागर चम्प, सावर वासिए घर ।                                                                            |             |
| संबहुई वस्त घरे दारय से सुदोइय                                                                                | (12)        |
| गायत्तरी कलाको य, सिक्स्बई नीइकोविए।                                                                          |             |
| बोव्यरोग्र य सपन्ने, सुरूवे पियदंसरो                                                                          | 11511       |
| तस्स रूपवड् मञ्ज, पिया भागोड् रूविणि ।                                                                        |             |
| पासाय कीक्षय रम्मे, देवो दोगुन्दको जहा                                                                        | ાહા         |
| मह भन्नया क्याई, पासायानोयखे ठिक्रो ।                                                                         |             |
| वरममण्डणसोभागं, वर्ग्म पासद्र वरमा                                                                            | 11=11       |
| वं पासिक्या संबेग, समुर्पाली इयामन्त्रवी ।                                                                    |             |
| महोऽसुमाण कम्माण, निरमाण पावग इसं                                                                             | 11511       |
| सनुद्धो सो वहिं भगध, परमसनेगमागुमो।                                                                           |             |
| मापुरतस्मापियरो, पब्बए आगागिरयं                                                                               | ॥१०॥        |
| बहितु समान्यमहाकिलेसं, महत्त्वमोह कसिया भयावहं।                                                               |             |
| परियायधम्मं चिमरोयपञ्चा, वयाणि सीलाणि परीसहे                                                                  | य ॥११॥      |
| महिंससर्व प मतेग्रागं च, वत्तो य वर्भ भवरिगाई च।                                                              | <del></del> |
| पश्चिमञ्ज्या पच महुब्बर्गाण, चरिन्ज धन्म जिण्वेसियं निद्।।१२॥                                                 |             |
| सब्देहि भूपहि दयागुष्टम्पी, सन्तिक्खमे संजयवन्भयारी<br>सावम्बजोग परिवम्जयन्त्री, चरिग्ज भिक्स् मुसमाहिद्दव्हि | र<br>नेक्स  |
| arament areamanne arem rate Baumban                                                                           | 5-211/411   |

सोबाण मेहायि सुभासियं इमं, घ्रागुसासण नाणगुणोवनेय । ममः। कुसीलाया जहाय सध्यं, महानियठाया वर पहेस 🗸 🏨 👭 चरित्तमायारग्णनिष तच्चो, प्रागुत्तर संज्ञम पालियाण । निरासने संसमियाण कम्मं, उपेश्र ठाए विटल्सम धुवं पञ्चमादन्ते वि महात्वयोधयो, महामुखी महापङ्गे महायसे । महानियण्डिन्जमिया महासुय, से फहेई महया वित्यरेण ॥हर्म तुट्टो य सेणिको राया, इसमुदाहु कर्यजली । मणाइच बहाभूयं सुद्रु में उनद्सिध HYYH

तुम्म सुलद स् मणुस्स जन्म, लाभा सुलदा य तुमे महेसी। तुब्मे संग्राहा य सबन्धवा य, ज में ठिया मग्गे जिल्लुत्तमाग ॥XX तं सि नाहो ष्मणाहार्णं सञ्चभूमाण संजया । स्तामेमि ते महाभाग, इच्छामि चरासासिए III Şil पुष्किञ्चण मण तुस्मं, म्ह्रणविग्धाको जो कको । निमन्तिया य भोगेहिं, तं सम्बं मरिसेहि मे العورا

एव युग्णिताण स रायसीहो, बग्गगारसीह परमाइ भवीए। सकोरोही सपरियको सम्बन्धवो, भन्माखुरको विमलेक बेयसा। उससियरोमकूनो काञ्च्या य प्रमाहिया । धाभवन्विक्या सिरसा भइयाची नराहियो इयरो वि गुगासमिद्यो, विगचिगुचो विवयडविरको य। HXEIL

विद्या इव विष्पमुद्धी, विद्युद्द वसुद्द विगयमोही ति वेमि ॥ महानियण्ठिकत योसङ्गं भक्तन्यणं समसं॥२०॥ 11501

॥ अह समुद्रपालीय एगवीसहमं अज्क्तवसं ॥ चम्पाप पात्तिप नाम, सावप ष्यासि धार्यिष । महावीरस्स भगवायो, सीसे सो र महप्पक्षी 11811

| उत्तराध्ययनसूत्रं ऋष्ययनं २२                                             | १५३    |
|--------------------------------------------------------------------------|--------|
| ।। भह रहनेमिज्ज वावीसहमं अल्फ्स्यरा ॥                                    |        |
| सोरियपुरम्मि नगरे, भासि राया महिद्विष ।                                  |        |
| वसुदेवुँ ति नामेण, रायत्तक्खणसंजुप                                       | 11811  |
| वस्स भग्जा दुवे भासी, रोहियी देवई वहा।                                   |        |
| सासि दोख्द दुवे पुता, इहा रामकेसवा                                       | ॥२॥    |
| सोरियपुरम्मि नयरे, द्यासि राया महिद्विए।                                 |        |
| समुर्विजय नाम रायलक्क्षणसंजुष                                            | 11\$11 |
| तस्य भक्तासिवानाम, तीसे पुत्तो महायसो।                                   |        |
| भगव ग्ररिट्टनेमि चि, लोगनाई दमीसरे                                       | 11811  |
| सोऽरिट्टमेमिनामो च क्षम्सणस्सरसञ्जन्मो।                                  |        |
| षट्टसहस्सलक्खणघरो, गोयमो कालगच्छवी                                       | ।।४॥   |
| मन्त्ररिसहसंघयणो, समचन्ररसो मसोयरो ।                                     |        |
| तस्स रायमईकन्नं, भग्जं आयइ केसनी                                         | 11511  |
| <b>मह</b> सा रायवरकमा, मुसीला चारपेहणी।                                  |        |
| सन्यत्तवस्यगस्पमा, विष्जुसोयामणिष्पमा                                    | 11411  |
| भहाह जगमो रीसे, षासुदेवं महिद्विय !                                      |        |
| श्हागच्छाउडुमारो, जा से करन ददामि हं                                     |        |
| सन्वोसहीहि एहिष्मो, क्यकोटयमगको ।                                        |        |
| विज्यजु यसपरिहिमो, माभरणेहिँ विम्सिमो                                    | IIIII  |
| मर्च च गन्धहर्तिंग, बासुदेवस्त जेडुग ।                                   |        |
| भास्त्रो सोहर भहियं सिरे चूबामणी जहा                                     | 114-11 |
| मह असिएण इत्तेण जामराहि य सोहिए।                                         |        |
| दसारसक्षेण य सो, सञ्चक्षो परिचारिको                                      | 118811 |
| चचरंगियोप सेलाप, रह्याप बहक्तमं ।<br>पुरियास सन्तिनाएस, दिव्वेस गगस पुरे |        |
| द्वारपाय सान्तनाप्य, १३०वर्ग गर्गस् पुष                                  | ॥१२॥   |

कालण कालं विद्रुपन्त रहे, बलावलं जाणिय ध्रापयो म) सीहो प सहेण न सन्तरोग्जा, वयजोग स्था न भसन्ममाहु॥धा चवेह्माणो र परिन्यएनजा, पियमप्पियं सन्य विविषसप्यजा। न सन्व सन्यत्यऽभिरोगपन्छा,न गांघि पूर्व गर**र्द्र च** संज्ञए॥<sup>१५॥</sup> भागेगच्छन्दामिह माणबेहि, के भावको सपगरेइ भिक्स्। भयभेरवा एत्य चर्निव मीमा, विश्वा माणुस्सा श्रदुपा विरिच्छा॥ परीसहा कुन्यिसहा भयोगे, सीयन्ति जत्या बहुकायरा नरा। से तत्थ पते न विद्यत्र भिष्का सगामसीसे इव नागराया ॥ (जी सीकोसिया वंसमसा य फासा, आयका विविद्या फुसन्ति देहं ! अकुनकुओ सत्य र्जाइयासपस्त्रा, रयाइ स्रेवेडज पुर क्याई ॥१८॥ पहाय रागं च तहेव दोसं, मोह च भिक्स सततं विगक्ताओं। मेड का वापण अकन्यमाणी, परीसहे आयगुत्ते सहेरजा बार्युमय नामग्राय सहसी, न याचि पूर्व गरह च सञ्जय । स चन्जुभाषं पश्चिमन्त्र संजय निम्याग्रसमां विरय वसेश ॥१०॥ बारइरइसद्दे पदीगासंथने विरए बायदिए पहागावं। वरमहपप्रदि चिहरे, छिमसोए अममे अकिया 미국해 विविचत्त्वयणाइ भएका वाई, निरोवतेवाइ ससंध्रहाई। इसीहि चिएगाइ महायसेहि, काएगा प्रसेटन परीसहाड તારશી समाग्रानाणीयगए महसी, भग्रुवर परिष्ठं धमासंबर्ध ।

कार्युत्तर नायाभरे जस्सेसी, कीमासई स्ट्रिय क्लालिक्से ॥२३॥ सुबिह स्रवेडस्य य पुरस्यपाय निरंगणे सम्बद्धो विव्यमुक्के। विर्त्ता समुद्द स महाभवी ये समुद्दपाले कायुग्यागमं गय ॥२४॥ ॥सि बेसि ॥ इति समुद्दपालीयं यगवीवदम काम्क्यण समस्या। २१॥

| उत्तराध्ययनसूत्र अध्ययन २२                  | १२४    |
|---------------------------------------------|--------|
| बासुदेवो य गां भगाइ, लुचकेसं जिइन्दियं।     | ~~~~~  |
| इच्छियमणोरह तुरिय, पावस तं वमीसरा           | ારશા   |
| नाणेणं दंसणेणं च चरित्तेण तहेव य।           |        |
| सन्तीए मुत्तीए, वहुमाणी भवाहि य             | ॥२६॥   |
| एव ते रामकेसवा, दसारा य वहू जणा।            |        |
| चरिट्टनेमि वन्दिचा, सभिगया वारगापुरि        | ાવળા   |
| सोज्या रायकमा, पञ्चन्जं सा जिसस्स र ।       |        |
| नीहासा य निराणन्दा, सोगेण उ समुख्यिया       | ॥२८॥   |
| राईमई विचिन्ते इ. धिरत्यु मम जीविय।         |        |
| आ ह तेण परिवता, सेयं पब्बहर्र मम            | 113811 |
| भइ सा भगरसभिमे, <b>कुव</b> फण्गपसाहिए।      |        |
| सयमेव लुचई फेसे, घिइमन्ता वयस्सिया          | ॥३०॥   |
| वासुदेनो य गां भगाइ, लुक्तकेस जिइन्दियं ।   |        |
| ससारसागर घोर, तर कन्ने तहुं तहुं            | ॥३१॥   |
| सा पञ्यश्या सन्ती, पञ्यावेसी वहिं घहु       |        |
| सयगं परियगं चेव, सीलवन्ता बहुस्सुया         | ાકસા   |
| गिरिं रवतर्य जन्ती, वासेसुद्धा उ चन्तरा ।   |        |
| षासन्ते भाषगारिमा, भन्तो वयणस्य ठिया        | 115311 |
| चीवराष्ट्रं विसारन्ती, जहां जाय चि पासिया । |        |
| रहनमी ममावित्तो, पच्छा विद्वी य वीइ वि      | ઘરેશા  |
| भीया य सा वर्षि वष्टु , पगन्ते संजय वर्ष ।  |        |
| वाहाहि कार संगोष्क, वेबमायी मिसीयई          | ॥३४॥   |
| भह सो वि रायपुत्ती, समुहविजयगभी।            |        |
| भीयं पवेषियं दहुं , इसं घक्कं स्वाहरे       | 113611 |

шя

11583

एयारिसाए इष्ट्रिए, जुत्तीए उत्तमाइ य । नियगान्त्रो भवणान्त्रो, निज्ञान्त्रो वण्डिपुगवी

भह सो शत्य निजन्तो, दिस्स पाणे भगद्दुए ।

| षाहोह पञराह च, सामरद्ध सुदुष्टिस्ट                                                                                         | ***               |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------|
| जीवियन्त तु सम्पत्ते, मसट्टा भक्तियन्यए ।<br>पासिता से महापन्ने, सारहि ह्यमच्यवी                                           | Nist              |
| कस्स भट्टा इमे पाया पर सक्ते मुद्देसियो ।<br>वाडेहि पंजेरेहि च, समिरद्धा य भच्छि                                           | 11481             |
| ष्मह् सारही सब्दो भखई, पर महा उ पाणिगो ।<br>सुम्मः विवाहकस्थिमि भोगावेचं वहुं जर्ग                                         | перп              |
| सोऊण एस्स वयण्, वहुपाणिविणासण<br>चिन्तेइ स महापन्नो, साणुक्कोसे जिए हिऊ                                                    | प्रदर्भ           |
| जड़ सबस कारणा पप, हरमन्ति सुबहू जिया।<br>न मे पर्य तु निस्सेस, परलोगे मविस्सई                                              | H(E)              |
| सो दुग्बालाय जुनस्त, मुत्तर्गं च महावसी ।<br>बाभरणाणि व सञ्चाणि, सारहिस्स पंणामय                                           | Roll              |
| मगापरियामो य फको, देश य जहोइयं समोद्रवणा ।<br>सम्बद्धीइ सपरिसा, निक्खमण तस्स फाउ जे                                        | <sub>ઇ</sub> ર્શો |
| देवमसुस्सपरिवृद्धो, सीयारवर्धं वद्यो समावद्यो।<br>जिस्स्त्रीय बारगाची रचवर्यामा हिम्मो सगव                                 | ારણ               |
| वजायां सपतो, भोइययो उत्तमाव सीयामो ।<br>साहस्सीइ परिपुढी, मह निस्तमइ व पिचादि<br>बाह से सुगन्यगन्धीय, तुरियं सिवयद्वविषय । | गुरुश             |
| बाह से सुगन्यगन्याय, शुर्व क्लान्य ।<br>सयमय लुषह फरें, १षमुद्राहि समाहिमो                                                 | લરકો              |
| // /                                                                                                                       |                   |

|               | <del>एतरा</del> भ्ययनसूत्रं सम्ययनं २३ |
|---------------|----------------------------------------|
| एवं करेन्सि स | ्दा, परिस्या पवियक्सक्ता।              |

840

विशियहन्ति मोगेस, नहा सो परिसोत्तमो nashi ति वेमि ॥ रहनेमिञ्जं वाधीसङ्ग बञ्च्ययः समर्थं ॥२२॥

## ।। अह केसिगोयमिक्ज तेवीसहम अज्मत्यर्ग ।।

बिर्णे पासि चि नामेण, श्ररहा स्रोगप्रभो।

संबद्धपा य सवन्नू, घम्पतित्ययरे जिए

वस्स क्षोगपईबस्स, आसि सीसे महायसे। केसी कुमारसमग्रे, विद्याचरग्रपारगे

भोहिनाण्सुप वृद्धे, सीससंघसमाञ्जे ।

गामासुगामं रीयन्ते, साधर्त्य पुरमागप

विन्दुर्यं नाम एरबाण, वस्मि नगरमण्डले । फासुर सिम्जसंथारे, तत्य वाससुवागय मह तेरोव कालेगा. धम्मदित्ययरे जिसे ।

भगवं वद्भागि सि, सब्बह्मोगम्मि विस्पृष वस्स क्षोगपईवस्स, भासि सीसे महायसे। भगन गोयमे नाम, विद्याचरणपारए।

षारसंगविक वृद्धे, सीसर्सघसमावते । गामासुगामं रीयन्ते, से वि सावत्थिमागए कोट्टग नाम चन्नाग्, वस्मि नगरमण्डले ।

पाप्तए सिद्धसं**यारे, धत्य वासमु**वागए फेसी फुमारसमणे गोयमे य महायसे।

रुभभो षि तत्य भिहरिंसु भन्तीणा सुसमाहिया

11811 lieli

11311

11811 الغاا

11411

11611

II디I

HAIL

| <b>१२६</b>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     | जैन सिद्धांत माला                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              |         |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------|
| रहनेमि महंभद्दे, सु                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                            | रुवे चाहमासिगी ।                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               |         |
| मम मयाह स्वरा.                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 | ਜ ਨੇ ਯੋਗ ਸ਼ਹਿਰ <del>ਤ</del> ੇ                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                  | 113411  |
| पहि वा मंजिमो भो                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               | U. Donard to record                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                            |         |
| अवनामा वन्ना पृथ्ह                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                             | र्षाः सिराससा चरित्रमात्रो                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     | 1184    |
| पहुँ ए रहनेमि सं ३                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                             | भसास्त्रोयप्रयक्तितः ।                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                         |         |
| राईमेई असम्भन्ता,                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              | भणार्गा संबद्धे नक्ष                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                           | 11361   |
| मह सा रायवरकमा                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 | सक्तिया जिल्ला                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 |         |
| बाई इस्तं च सीसं इ                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                             | , रक्समाणी तयं वप                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              | 1180]]  |
| अर्थ स रूपेण क्षेत्रम                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                          | TILL EXCENSES                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                  | 110 -11 |
| THE PARTY OF THE P | H. Grant for record and - "                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    | เเหรีย  |
| TACCA UZMHIGUDI                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                | ±1 ~ -0.0                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                      | 110/-   |
| गण रज्जास भाषक                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 | He is now                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                      | ાજરા    |
| <b>भद्द च भौगरायस्य ।</b>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                      | rier f                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                         | Ha Ar   |
|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                | 118#1   |
| गद्दकाष्ट्रास भा•ा                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                             | ∓7 A α                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                         | 119.01  |
|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                | ग्रह्मी |
| णिका <b>मरहया</b> ला क                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                         | I. The same of the | 118 tri |
|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                |         |
| મુખ ભાવપા નામા                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 | Harmer on a                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    | ।शिक्षी |
| मञ्जूषया अहा नागा, ध                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                           | स्मि संपश्चित्रकारको                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                           | €11     |
| त्यमुची वयमुची, कार                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                            | पगुची जिद्यन्तिको ।                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                            | ll8∉ii  |
| गमण्यं नियसं फासे,                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                             | जावळीयं ददस्यको                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                | 1801    |
| मा सर्वे परिचार्य, जा                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                          | या दोरिया पि केपसी।                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                            | 1 804   |
| हम्म समिचाएं,                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                  | ासाद्ध पत्ता भगुत्तर                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                           | noell   |

비용되다

| श्वराष्ययनसूत्रं श्रष्ययनं २३                           | १२६    |
|---------------------------------------------------------|--------|
| पुष्छ भन्ते अहिच्छ ते, केसि गोयमऽव्वधी।                 | ~~~~   |
| तको फेसी कागुनाए, गोयमं इग्रमव्यवी                      | ાારસા  |
| पाबळामो य जो धम्मो, जो इसो ५वसिक्सिको।                  |        |
| देसियो बदमारोग, पासेग य महामुगी                         | ાારસા  |
| एगकळपवनाएं, विसेसे कि नु कारएं।                         |        |
| धम्मे दुविहे मेहावी, कहं विष्पसभो न ते                  | ॥२४॥   |
| षद्यो केसि वुवन्तं हु, गोयमो इल्मन्द्रवी।               |        |
| <sup>प्र</sup> मा समिक्सिय धम्म, तत्तं तत्तविणिष्टिद्वय | ારશા   |
| पुरिमा वन्जुजसा च, वंकजसा स पच्छिमा।                    |        |
| मिक्सिमा एक्जुपन्ना र, तेगा धन्मे दुहा कर               | ॥२६॥   |
| पुरिमाण दुव्यिसोम्मो ७, परिमाणं दुरसुपालचो ।            |        |
| कप्पो मक्सिमगाण तु, सुविसोउम्से सुपालको                 | ારબા   |
| साहु गोयम । पन्ना ते, छिन्नो मे संसद्घो इसो ।           |        |
| अन्नो वि संसन्त्रो मञ्म, स मे कह्सु गोयमा               | ॥२⊏॥   |
| ष्रचेत्रगो य जो धम्मो, जो इमो सन्तरतरो ।                |        |
| देसिको षद्धमाणेख, पासेख य महानसा                        | મારશા  |
| एगरूज्ञपवनाण, विसेसे 🎏 नु कारणं                         |        |
| र्तिंगे दुविहे मेहावी, कहं विष्पषद्यो न ते              | 119511 |
| कैसिमेयं युषाण तु, गोयमो इणमञ्यवी ।                     |        |
| विभागोग समागम्म, धम्मसाह्याभिष्टियं                     | 113811 |
| पचयत्यं च त्रोगस्स, नागाविद्ययिगप्पर्णं ।               |        |
| सक्त्यं गह्रणत्यं च, कोगे लिंगपद्मीयण                   | ॥३२॥   |
| भह मवे पद्मा व, मोनससन्मूयसाहणा !                       |        |
| नाणं च दंसण चेय, चरित्त चेव निच्छप                      | ॥३३॥   |

| १२८              | जैन सिद्धांत माला                                   |           |
|------------------|-----------------------------------------------------|-----------|
| चमचो सीससध       | ाणं, संजयारां वस्सिएं ।                             |           |
| वस्य चिन्ता समु  | पमा, गुण्यम्बाग् वाइण                               | 11{41     |
| फेरिसो वा इमो    | धम्मो, इमो धम्मो व फेरिसो।                          |           |
| ष्मायारघम्मपश्चि | ही, इसावासाय केरिसो                                 | [[{{t}}]] |
| चारुखामो य हो    | धम्मो. जो इसो वंचसिक्सिको ।                         |           |
| देसिको वद्धमार्य | णि पासेण य महामुखी                                  | ॥१रा      |
| अचेल घो य खो     | घम्मो जो इसो सन्तरकारे ।                            |           |
| एगकज्जपसमाण,     | विसेसे किं न कारस                                   | เหลา      |
| घड़ ते सत्य सीः  | ताया, विनास प्रसिन्धिता ।                           |           |
| समागम कयमाई      | , धमभो केसिगोयमा                                    | गुरुष्ठी  |
| गोयमे पश्चित्रवन | त. सीस <del>र्वेद्ययाच्य</del> े ।                  |           |
| अर्ट कुलमवेक्स   | चो, तिन्द्रस प्रशासको                               | الإلااا   |
| केसी दुमारसगर    | पे, गोयस <del>विस्मायाच्य</del> .                   |           |
| पांडरूब पांडवरि  | ा, सम्म संपश्चित्र <del>क्षके</del>                 | ાશ્લા     |
| पत्नासं फासूब द  | त्यः पंचमं क्यायक्तानिक —                           |           |
| गायमस्स निसंज्ञ  | ार सिप्पे संप्र <sub>वास्था</sub>                   | jjęsii    |
| फेसी कुमारसमर    | ग्रेगोयमे य महायसे।                                 | •••       |
| उभन्नी निसंख्णा  | सोइन्ति धन्तस्रसम्पमा                               | ॥१ना      |
| समागया पर् तर    | भ, पासंबा कोच्या मिया ।                             | ***       |
| गिहत्थाण भणन     | ाभी साहस्सीभी समागया                                | 118811    |
| देवदास्यवगन्धवा  | , जनसरपसायकिमरा ।                                   |           |
| षावस्तास प म्    | यार्ग मासी तत्व समागमी                              | ાારબા     |
| पुच्छाम स महा    | भाग, केसी गोयममस्यक्ष ।<br>१ सु, गोयमो इत्यमध्यक्षी |           |
| वक्ता काल पुषन्त | । कि नामना इत्तमन्त्रवी                             | धरशा      |

| उत्तराध्ययनसूत्र अध्ययनं २३                  | १३१        |
|----------------------------------------------|------------|
| भन्तोहिभयसंभूया, लया चिहुइ गोयमा ।           | t textel t |
| फ्लेंड् विसमक्सीिया, सा व उद्घरिया कह        | ।।४४।।     |
| व लयं सम्बसो हिचा, उद्घरिचा समूजियं।         |            |
| विहरामि जहानाय, मुक्को मि विसमक्खण           | 118411     |
| तमा य इइ का बुना, केसि गोयममञ्यवी।           |            |
| फेसिमेवं वृदंत तु, गोयमो इग्रमन्दवी          | ાાજના      |
| भवत्यहा सया युत्ता, भीमा भीमफत्तोदया ।       |            |
| वसुच्छित् जहानार्य, विहरामि महासुणी          | ॥४दा       |
| साहु गोयम पाना ते, द्विन्नो में संसद्धी इमी। |            |
| भन्नो वि संसन्धी मन्ना, व में इहसु गोयमा     | ાાકશા      |
| संपञ्जतिया घोरा, अमी चिट्ठइ गोयमा।           |            |
| जे बहन्ति सरीरत्ये, वह विश्माविया तुमे       | [[Kol]     |
| महामेहप्पस्याको गित्रक वारि अञ्चलमं।         |            |
| सिंपामि सवर्थ देह, सिचा नी बहन्ति मे         | וואאוו     |
| भग्गी य इह के वृत्ता, फेसी गोयममध्वभी।       |            |
| केसिमेश मुवत सु, गोयमो इणमन्त्रवी            | ાાપ્રસા    |
| म्साया वागिरणी बुत्ता, सुयसीलववी वर्स ।      |            |
| प्रयासिह्या सन्ता, भिन्ना हु न बहन्ति मे     | 118311     |
| अहु गोयम पन्ना ते, ब्रिन्नो मे ससम्रो १मो ।  |            |
| मन्तो वि संसको मक्तं, व मे कहसु गोयमा        | ।।४४।।     |
| मर्यं साहसिको भीमो दुट्टस्सो परिघाषई।        |            |
| असि गोयमचारुदो कह तेए न हीरसि                | וועאוו     |
| प्घावन्तं निगिण्हामि, सुयरस्तीसमाहिय।        |            |
| नमे गच्छह राममां, मार्ग च पहिचलह             | ग्रह्मा    |

| 130                                    | जैन सिद्धां र माता              |        |
|----------------------------------------|---------------------------------|--------|
| माहु गायम प                            | मा त, दिमा म मंसचा द्वा ।       |        |
| मना व संस                              | षो मध्दे, से में बहुन गावमा     | 11/11  |
| भगगाण सह                               | लाएं, मम्हं विद्वसि गोवसा ।     |        |
| संगत प्रदिश                            | ष्यन्ति, षर्द्धं स निद्रिया समे | विदेशी |
| एम निए जिया                            | । पेषः पेषज्ञित निकार हताः      |        |
| दमदा उ जिल्                            | चार्च, सरवसत्त <del>विकास</del> | 11391  |
| सम्य इइ फ                              | यसं, पंक्षी गोयमगुरुकः .        |        |
| कासमय घवत                              | ्र गोयमो दशाम <del>ः क</del> ी  | गिरधी  |
| पगपा प्राज्ञएः                         | सत्तु, फसाया इतिकालि रह         |        |
| व । जाशासु जह                          | निर्ये, विहरामि कर्न रस्त       | ॥ध्या  |
| साहु गायम पन                           | । ते. दिसो में संग्रहरे>        |        |
| अभा । <b>य सस्</b> द                   | र्ग सम्बद्ध, त से ग्रह्म के     | प्रदेश |
| पासान्त <b>यह</b> व ह                  | तीए, पासकता <del>गानिका ।</del> |        |
| ने प्रयोग समुद्रा<br>के प्रयोग सम्बद्ध | नुष्मो कहें वं विहरधी मुगी      | [Bejj  |
| त पास सञ्जासा                          | क्षिता निहन्त्यग्रह्माको ।      |        |

मुक्कपासी लहुक्सूको विहरामि कह मुखी

पासाय इइ के बुक्ता केसि गोयममस्वती। केसिमेषं मुखत तु, गोयमो इखमवदी

रागहोसावृद्धो विष्या, नेहपासा भर्यकरा ।

ते छिन्दिचा अहाना**र्य,** विहरामि ज**हक**र्म

118411

11831

118.511 साह गोयम पनात किनो में संस्था इसी।

द्यानो विससद्यो सःमां, तमे कह्नु गोयमा 118811

| उत्तराम्ययनसूत्र मध्ययनं २३                                                         | <b>१</b> ३१ |
|-------------------------------------------------------------------------------------|-------------|
| मन्तोहिमयसम्या, त्रया चिट्ठइ गोयमा ।                                                | ~~~~~       |
| फ्लोइ विसमक्सीिया, सा उ उद्धरिया कह                                                 | ॥४४॥        |
| ध लयं सन्वसो छिता, उद्घरिता समृतियं।                                                |             |
| विद्यमि जहानाय, मुक्को मि विसभक्क्षण                                                | 118411      |
| लेया य इह का बुचा, केसि गोयममञ्दर्भ।                                                |             |
| केसिमेधं धुवंत तु, गोयमो इरामध्वधी                                                  | 116811      |
| मवतग्रहा लया वृत्ता, भीमा भीमफलोदया।                                                |             |
| तमुच्छितु जहानायं, विहरामि महामुखी                                                  | ॥४८॥        |
| साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नों में संस्थी इसी।                                         |             |
| मन्तो वि संसम्भो मन्त्रं, तं मे फह्सु गोयमा                                         | 118811      |
| संपञ्जितिया घोरा, भगी चिट्ठइ गोयमा।                                                 |             |
| जे बहन्ति सरीरत्ये, वहं विस्ताविया तुमे                                             | ।।४०॥       |
| महामेहप्पस्याची, गिरम वारि जलुत्तमं।                                                |             |
| सिंपामि सययं देह, सिचा नो बहन्ति में                                                | וואאוו      |
| ष्ममी य इह के वुत्ता, केसी गोयममञ्जवी।<br>फेसिमेब बुबत तु, गोयमो इणमन्त्रवी         |             |
| क्ष्माया क्रायिक्त क्रम्म                                                           | ાયસા        |
| ष्माया भमिग्यो बुत्ता, सुयसीलवबो अलं।<br>सुयघाराभिह्या सन्ता, भिन्ना हु न बहन्ति मे |             |
| साहु गोयम पत्ना ते, खिन्नो में ससमी इसी।                                            | ॥४३॥        |
| भन्नो वि संसको मम्म व मे कहसु गोयमा                                                 | 118811      |
| षयं साहसिको भीमो उठस्सो परिधावर्ष ।                                                 | 114811      |
| अस गोयमकारूढो फह तेए न हीरसि                                                        | וואאוו      |
| पेघावन्तं निर्मिण्हासि, सयरस्रीसमाहिनं ।                                            | 11-0-21     |
| नमे गच्छाइ सन्ममा, माग च पहिल्हाइ                                                   | 117611      |

| १३० ी विद्धांत माना                                                                                                               |                    |
|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------|
| चारा न १६ क वर्ता, क्या गानममध्य है।<br>क्रांममच वृथं हे तु, गानमा इल्लास्त्रमा                                                   | العتاا             |
| मणा माहसाची भाषा, बुद्धामा परिभाषद् ।<br>सं सम्म तु तिमिण्हामि, भूममितसम्बद्धाः                                                   | [[]]               |
| साह गोयम पन्ना त, दि ना म संसमा ६मो ।<br>भन्ता वि संसभी मञ्चे, स म फहमु गोयमा<br>फुण्यत पहलो लोए, यदि नामन्ति उत्तुलो ।           | IIXEH              |
| भे य मसीम महार्षः के न नामसि गीयमा                                                                                                | 114011             |
| संगो य इइ के बन्ते. केन्द्री क्षेत्रकार मुखी                                                                                      | 114411             |
| कृत्पवयणपासण्डी सन्ते प्रान्त                                                                                                     | ll £411            |
| सन्तर्मा सु जिएक्सार्य, एस मागो हि रुतमे<br>साहु गोयम पन्ता ते जि नो में संसक्षो इमो ।<br>बन्तो वि संसक्षो मम्म, तं मे एहसु गोयमा | ग्रह्शा            |
| सर्यो गई पहुटा यः वीव हा गान्य ।                                                                                                  | # éAII             |
| महावदगर्वगस्स, गई सस्य न किन्सी                                                                                                   | liéx <sub>i</sub>  |
| दीये य इइ के युचे, केसी गोयसमध्यवी।<br>केसिमेय नुषठ द्व, गोयमो इएएमस्मपी                                                          | ग्रह्सा<br>ग्रह्सा |
| जरामरणवेगेण, पुरममाणाम्य पाणियां<br>भम्मो दीवो पदद्वा य, गई सरणमुक्तमं                                                            | 116व्या            |

॥६वा

| क्तराज्ययनसूत्र ग्रथ्ययनं २३                    | <b>?</b> \$\$ |
|-------------------------------------------------|---------------|
| साहु गोयम पन्ना ते, छिन्नो मे संसद्यी इमी।      |               |
| धन्नो वि ससबो मध्म, त मे फह्सु गोयमा            | ।१६६।।        |
| भग्ग्यवसि महोहंसि, नावा विपरिघावइ ।             |               |
| जिस गोयममास्द्धो, कहं पारं गमिस्सिधि            | [[00]]        |
| का उ ब्रस्साविक्षी नावा, न सा पारस्स गामिक्षी । |               |
| जा निरस्साविणी नावा, सा उ पारस्स गामिणी         | ११७१।।        |
| नाषा य इइ का बुचा केसी गोयममन्त्रवी !           |               |
| फेंसिमेषं वृत्वत तु, गोयमो इएमन्ययी             | ।७२॥          |
| सरीरमाहु नाव ति, जीवो व् <b>ष</b> ६ नाविद्यो ।  |               |
| संसारो भएगावो वृत्तो, ज तरित महेसिगो            | ।।ईला         |
| साहु गोयम प'ना ते, छिन्नो में संसन्धो इमो।      |               |
| धन्नो वि संसद्भो मध्कं, व में कह्सु गोयमा       | ।[७४॥         |
| भाधयारे समे भोरे, चिठ्ठन्ति पाणियो वहू।         |               |
| को फरिस्सइ उद्योय, सञ्बक्षोयम्मि पाणिग्रं       | क्षिश         |
| रुगाओं विमलो भागा, सञ्चलीयपभक्तो ।              |               |
| सो इरिस्तइ सम्बोध, सम्बन्नीयम्मि पाणिए          | ११७६॥         |
| भानु य इइ के बुत्ते, केसी गीयममञ्दर्भ ।         |               |
| केसिमेष बुक्त तु, गोयमो इग्यमव्यवी              | 1196[1        |
| रमान्ने सीपसंसारो, सन्वम् जिण्मक्लरो ।          |               |
| सो फरिस्सइ उज्जोयं, सम्बन्नीयन्मि पाणिए         | العماا        |
| सातु गोयम पन्ना ते, छिन्नो में संसक्तो इसी।     |               |
| पानी वि संस्को सम्म, त में कह्नु गोवमा          | Havil         |
| सारीरमाणुचे दुम्ही, यमसमाणाणु पाणिणु ।          |               |
| क्षेमं सियमणाबाहं, ठाए कि मन्नसी मुणी           |               |

117 जैन विद्या । माना भाषि वर्ग भूषे ठाएँ क्षागमाध्यि दुराहर्द । जस्य नित्य जरामध्, पादिला स्पद्ध। वदा 1=14 ठाले य दद फ वृत्त, बसी गायममस्य ॥ । फेसिमेथ पूर्वर्श तु, गायमो इल्पनत्त्रथा الإجاز निन्याएँ ति भवाद वि, सिद्धा क्षेतममानव य । गोर्म सियं भाषावाहं, ज पर्रात महसिए। 1537 त ठाए। सासव पासं, क्रोयमान्मि दुराहर्ह । ज रूपचा न सोयत्ति, भयोदन्तदस्य मुणी साहु गोयम पन्ना तं, द्धिनो म संसन्धो इमी। नमों ते संसयावीव, सन्यमुक्तमहोयही 내내네 पथ तु संसए छिन्ने, फेसी घोरपरफर्मे । श्रभिवन्दिचा सिरसा, गोयम तु महायस 내내 पचमहत्वयधमां, पश्चिवकद्म भावश्रो। पुरिमस्स पच्छिमस्मि, ममो तस्य सुहायहे العجاد केसी गोयसको निर्व, वस्मि कासि समाग्से । स्यसीलसमुकसो, महस्यत्यविणिच्छको तोसिया परिसा सब्धा सन्मगां स<u>म</u>ुषद्विया। सथया ते पसीयन्तु, भयय केसिगीयमे ॥ ति वेमि ॥ केसिगोयमिक्यं तेबीसङ्ग व्यवस्थ्यम् समर्च॥ ३॥

।। मह समिहको चननीसहर्म क्राउम्प्रयां ।। बाहु पवयणमायाको, समिई गुक्ती बाहेब य । पंचेव य समिईको वको गुक्तीत बाहिका

इरियामासेसणावाणे, उबारे समिइ इय । मणुगुची बयगुची, कायगुची य अहमा 11811

| इत्तराध्ययनसूत्र श्रध्ययन २४                        | <b>१३</b> ४ |
|-----------------------------------------------------|-------------|
| एयाची चट्ट समिईची, समासेण वियाहिया।                 |             |
| दुवानसंगं जिएक्साय, मायं जत्य च पद्ययण              | กรท         |
| मातन्त्रणेण कालेण, ममीण जयणाय य ।                   |             |
| परकारणपरिसुद्धं, संजप इरियं रिप                     | 11811       |
| तत्य भाजन्त्रया नार्ण, वसर्ण चरण तहा ।              |             |
| काले य दिवसे वुत्ते, ममो उपहरक्षिए                  | ווצוו       |
| दन्वमो सेसमो चेव, फालमो भावमो तहा ।                 |             |
| वयणा वरुव्यिहा बुचा, व में कित्तयको सुण             | 11411       |
| प्रविष्मो चक्सुसा पेहे, जुगिमक च से <b>व</b> स्रो । |             |
| फातको जाय रीइखा, उवडते य भावको                      | 11011       |
| इन्दियत्थे विविधित्रसा, सब्माय चेव पद्महा।          |             |
| वम्मुची वप्पुरकारे, दवउत्ते रियं रिए                | 1 411       |
| कोहे माणे य मायाप, लोमे य उश्वत्त्वया।              |             |
| हासे भए मोहरिए, विकहासु तह्व य                      | 11811       |
| एया। बहु ठायाई, परिवरित्रनु संजए ।                  |             |
| भसावरूजं मियं काले, भास भासिरूज पन्नव               | 11,6011     |
| गवेसगाप गहुग्रे य, परिमोगेसग्रा य जा ।              |             |
| माहारोषहिसेन्जाए, एए तिन्नि विसोहए                  | 118.811     |
| डममुप्पायर्णं पढमे, बीप सोहेरज पसरा ।               |             |
| परिमोयस्मि चरका, विसोहेरज जय जह                     | गरेशा       |
| मोहोबहोबगाहियं मरहग दुविह मुणी।                     |             |
| गिरहन्तो निश्क्सियन्तो वा, पउंजेरज इम विहि          | 118311      |
| पम्युसा परिलेहिचा, पमग्जेउम वर्ग जर्र।              |             |
| भारए निक्सिवेन्जा वा, दुहुमो दि समिए सया            | गरका        |

उपार पानवर्ग, रासं विभाग अस्थि ।
भाहार उपहि रहें भाने गावि तहारि रें
भागायप्रसम्भाव, भागावार रहाई रासीप ।
भाषायप्रसम्भाव भागाव प्रयंगसाव ।
भाषायप्रसम्भाव भागाव प्रयंगसाव ।
भाषायप्रसम्भाव, प्रस्म सुप्रगाहप ।
सम सम्भावर यावि, स्विपकान कर्यास्य ।।।।।

비테

113£11

([국어)

112 (1)

ાાગ્સા

પ્રવસા

ils ell

비옥회

त्तन जम्मूतार चापा जागरहात हवाना प विन्दिल्लो दूरमागाढे नासभ (ननविज्ञ्य । ससपाण्यीयरहिप जागाइलि वैसिस वयाची पद्म सिन्द्रची, समावेल विचादिया । वस्त्रो व सभी मुसीध्यो चेल्द्रामि अस्पुप्त्यसी

सबा तहेव मोसा य, सबमोसा तहेव य। चंद्रश्यो भसबमोसा य पश्गुची व्यविद्या संस्मासमारम्भे, बारम्भे य तहेव य। चंद्रश्यो व्यविद्या संस्मासमारम्भे, बारम्भे य तहेव य। चंद्रश्यो व्यविद्या चंद्रश्यो व्यविद्या चंद्रश्यो व्यविद्या चंद्रश्यो व्यविद्या चंद्रश्यो चंद्या चंद्रश्यो चंद्र्यो चंद

11811

11311

11311

HAH

१३७

॥ चि वेमि ॥ इति समिइको चडवीसइम भन्कपण समच॥२४॥

।। भ्रह् जन्नहुज्ज पश्चवीसहम् भ्राउक्तयण्।। माह्याद्युलसंभूभो, भासि विप्पो महायसो ।

वायाइ जमजन्त्रस्मि, जयघोसि चि नाममो **१**न्दियग्गामनिग्गाही, मग्गगामी महासुखी । गामाग्रमाम रीयते. पत्तो बाग्रारसि परि

षाणारसीए वहिया, चन्जाणुस्सि सणोरसे ।

पासप सेन्जासमारे, वत्य पाससुवागए वह तर्णेष कालेगं, पुरीय सत्थ माहरों। षिजयपोसि चि नामेण, जन्नं जयह वेयथी मह से सत्य भागगारे, मासक्यमणुपारणे ।

विजयघोसस्स अनिम्म, भिष्रसम्द्रा चयद्विप । समुषद्रियं वहिं सन्तं, जायगो पहिसेहर ।

न ह बाहामि ते भिक्स, भिक्स जायाहि समस्रो जे य वेयविक विष्पा, बनहा य जे इन्दिया।

ओइसंगविक जे य, जे य धम्माग्र पार्गा

जे समत्था समुद्धन्तु, परमप्पाग्रमेव य । तेसि प्रममिण द्य, भो भिषस् सञ्चकामिय

सो सत्य प्रव पश्चिसको, जायगेर महामुखी। न यि क्ट्रो न वि तुट्टो उत्तमट्टमवेसक्यो नश्रु पाण्ड्य वा, न वि निव्वाह्याय वा। तेसि विमोक्त्रणहाय, इमं वयस्पनदाधी

Hill

11411

1[4]]

lizli 11311

118011

| <b>13</b> 5            | ें। निग्रत माना                                           |         |
|------------------------|-----------------------------------------------------------|---------|
| उबार पानवर्ण, व        | ोसं सिमाणबंहिय ।                                          |         |
| भादारं उयदि यद         | , भानं पापि तहाबिदं                                       | ।(१३८)  |
| भगायायमसन्नाव          | , श्रणावार ७व हाद संकोर ।                                 |         |
| श्रावायमसंनोष १        | ष्ट्रायाग् चेय'सज्ञान                                     | 118411  |
| <b>घ</b> णायायममंत्राए | , परस्स शुवपाइए                                           |         |
| सम श्रम्भृतिर य        | वि, श्रचिरकालकयम्मि य                                     | ાકભા    |
|                        | गाढे नासश्रं विजयाजिए।                                    |         |
|                        | ,उषाराइणि वोसिर                                           | 비(리     |
|                        | इमो, समासेग विवाहिया।                                     |         |
| •                      | ष्यो योच्छामि भरापुन्यसो                                  | 114811  |
|                        | य समामोसा वह्य य।                                         |         |
|                        | ता य, मणुगुत्तिको पर्राध्यक्ष                             | ારગા    |
|                        | ष्ट्रारम्भे य तक्ष्य य ।                                  |         |
|                        | , नियम्बेर्ज जयं अह                                       | 115811  |
|                        | य सम्मोसातदेषय।                                           |         |
|                        | ता य, वहगुत्ती पर्राव्यहा                                 | ॥२२॥    |
|                        | भारम्भे य व <b>हे</b> च य ।<br>, तियत्तेज्ञ जय ज <b>ई</b> |         |
|                        | ानपाञ्च जप अ <b>इ</b><br>च तक्ष्य य तुमहुन्हो             | गरशा    |
| ठास्य स्नसायस्य च      | व तक्ष्म य तुम्रहरूण<br>, इन्द्रियाण य जुङ्गणे            | Hami    |
| बल्या मधी पाला मधी     | 14. 11.4 . 21.44                                          | મારક્ષા |

संरम्भसमारम्भे बारम्भम्म वद्देय य। काथ पवत्तमाग्य मु, नियत्तेग्ज जय जह

एयाका वंच समिक्षा चरणस्म य पवतारो । मत्ती नियत्तर्णे युत्ता, बासुभत्त्थसु सम्बस

મારશા

गरमा

| एसा पवयणमाया, जे सम्म आयरे मुग्री।                   | 11  |
|------------------------------------------------------|-----|
| 201 111411111111111111111111111111111111             | 11  |
| सो स्त्रिप्प सञ्बर्ससारा, विष्यमुबद्द पण्डिप ॥२७     |     |
| ॥ ति वेमि ॥ इति समिइयो चन्त्रीसइम श्रम्मयण समत्तं॥२४ | 11  |
| ।। भह जन्मर्ज्ज पञ्चवीसहम भज्मस्यण ॥                 |     |
| माइग्रहुजसंभूभो, श्रासि विष्पो महायसो ।              |     |
| जायाइ जमजन्तिम्म, जयघोसि चि नामभो ॥१                 | 11  |
| <b>ए</b> न्वियग्गामनिग्गाही, मग्गगामी महामुखी ।      |     |
| गामासुग्गाम रीयते, पत्तो वासारसि पुरि ॥२             | 11  |
| षाणारसीए षहिया, चस्त्रागुम्मि मणोरमे ।               |     |
| पासुए सेरजासंथारे, तत्य पासमुवागप <b>ा</b> ।।३       | tt  |
| बह तेग्रेव कान्नेग्रं, पुरीर तत्य माह्ये ।           |     |
| यिजयघोसि त्ति नामेगा, जन्तं जयइ वयधी ॥४              | Ħ   |
| बद्द से तत्य बर्णगार, मासक्खमणपारणे ।                |     |
| विजयघोसस्स जन्मिन्म, भिक्खमहा स्ववृद्ध । ॥४          | II  |
| समुबट्टिय वहिं सन्तं, जायगो पश्चिसेह्य ।             |     |
| न हु बाहामि ते भिक्स, भिक्स् जायाहि अनुस्रो ॥६       | H   |
| जे य वेयविक विष्पा, बनहा य जे इन्दिया।               |     |
| जोइसंगविक जे य, जे य धम्माण पारगा ॥ऽ                 | 11  |
| ने समत्या समुद्राचु, परमप्पाणमेव य ।                 |     |
| तेसि अम्मिमण देय, भो भिक्स्तू सञ्चकामिय ॥=           | Ħ   |
| सो पत्य पव पविसिद्धो, जायगेण महामुखी।                |     |
| न वि रहो न बि तुहो, उत्तमहुगवेसमो ॥६।                | 11  |
| नमञ्जूषाण्यस्य या, न वि निञ्जाहरणाय वा।              |     |
| तेसि विमोक्स्यगृहाप, इमं वयणमन्दर्वा ॥१०             | II. |

| १३६                                         | जैन <b>सिद्धा</b> र माता                |         |
|---------------------------------------------|-----------------------------------------|---------|
| उचार पामवर्ग, हास                           | सिपाणजिस्य ।                            |         |
| धाहारं उपहि नही, प                          |                                         | 114311  |
| भगायायमसन्तरि, १<br>भाषायमसन्तरि जा         | मणापाण 'रेय हाइ संकोए ।<br>याण चर्चसकाण | ાકુક્ષા |
| भ्राणायायमसंनाण, प                          |                                         |         |
|                                             | , प्रिंपरकालकविम य                      | ાદળી    |
| विन्द्रिएएं दूरमागावे                       | ' नासभे विज्ञवज्ञिष ।                   |         |
| ससपाणवीयरहिए, उ                             | गराइणि योसिर                            | ns=1    |
| प्याची पद्ध समिद्द                          | तो, समासेण वियादिया ।                   |         |
| एको य सभो गुन्तीको                          | वोन्छामि अशुपुरवसो                      | Hiff    |
| सदा तह्य मोसा य,                            |                                         |         |
|                                             | य, मरागुत्तिको घउव्यिहा                 | ॥२०॥    |
| सरम्भसमारम्भे, चा                           |                                         |         |
| मर्ण पवत्तमाण तु, वि                        |                                         | गरश     |
| सवा बहेब मोसाय                              |                                         |         |
| चन्नस्थी <b>जस</b> म्मोसाः                  |                                         | ાારસા   |
| संरम्भसमारम्भे, भार<br>वर्ष पवत्तमाय तुः नि | स्भायतह्ययः।                            |         |
| वयं पवत्तमाय है। ज<br>ठायों निसीययों चेव    | भप्रज्य जय जङ्ग<br>स्रोत स सम्बद्ध      | ારશા    |
| ठाण ।नसायण चन<br>सहसंघणपल्लाभणे, इ          | वर्ष भ धुभक्ष्य<br>निकास स अञ्जत        | 115.01  |
| स्वतामसापुरसामधाः व                         | . 1 . A . 2 2 4 Q                       | ાારશા   |

।।२४॥

गरमा

संरम्भसमारम्भे बारम्भम्म वहेष य। कार्भ पषत्तमाण सु, नियत्तेन्त्र अय अक्

एयाओ पंच समिश्रमो, चरणस्स य पवचयो । गची नियचयो युचा, बसुभस्येसु सम्बसी

| वत्तराध्ययनसूत्रं सध्ययनं २४              | १३६    |
|-------------------------------------------|--------|
| वसपाणे वियाणेचा, सगहेण य यावरे ।          |        |
| जो न हिंसइ विविद्देश, व षथ धुम माइएां     | ।।२३॥  |
| फोहा या जह वा हासा, लोहा या जह वा भया।    |        |
| मुसं न वयई जो छ, त वय यूम माहण            | મારશા  |
| चित्तमन्तमवित्त वा, ऋष्य वो बह वा वहुं।   |        |
| न गिएहर अदत्त जे, तं वय वूम माहएां        | ાારશા  |
| दिन्यमाणुसतेरिच्छ, जो न सेयइ मेहुण ।      |        |
| मणसा कायबक्तेणं, त वयं वृम माहरा          | ાારફા  |
| जहा पोम जले जायं नोवलिप्पद्द वारिए।।      |        |
| एक भक्तिस फामेहि, वं वर्थ वूम माहरा       | ાાગ્હા |
| मलोज्यं मुहाजीवि, भएगार मफिचर्यं।         |        |
| असंसत्त गिहत्येसु, व वर्ष वम माहर्ण       | ॥२८॥   |
| जहिता पुरुषसंजोगं, नाइसमें य वाघवे।       |        |
| को न सज्जइ भोगेसु, तं वयं दूम माहर्एं     | ાવદા   |
| पसुवन्धा सब्धवेया जहुं च पावयन्सुरणा ।    |        |
| न स तायन्ति दुस्सीलं, फम्माणि यलदन्ति हि  | ાારેના |
| न वि मुख्डिएण समणो, न श्रोंकारेण वन्मणो।  |        |
| न मुणी रयणवासेणं, इसमीरण तावसो            | ॥३१॥   |
| समयाप समयो होइ, वन्मचेरण वन्मयो ।         |        |
| नायोण य मुणी होइ, ववेण होइ वावसी          | ાકસા   |
| चन्मुणा वन्भणो होइ, घन्मुणा होइ खत्तिमो । |        |
| वहसो कम्मुणा होइ, सुदो हवइ कम्मुणा        | 113311 |
| एए पाडकर बद्धे खेहिं होइ सिणायको ।        |        |
| सन्यम्मभविशिम्मुर्कं , तं ययं वृम माहरा   | ॥३४॥   |

| 13=                                 | वैन मिद्धात माला                                                              |         |
|-------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------|---------|
| नगराताण मुद्दं अ                    | पुरं, निव अन्नाण ज मुह् ।<br>य, क च भम्माण या मुह्                            | 0350    |
| न त 3मं वियाणा                      | ु, परमणाणुमय य ।<br>ति, भद्द जाणासि सा भण                                     | ઘુરના   |
| सपरिसो पंत्रकी है                   | तु, भपयाता वहि दिशा।<br>वि, पुरुद्ध च महामुणि                                 | ારચા    |
| नक्सचाण मुद्दं पू                   | ह, पृद्धि जमाय अ मुद्द ।<br>हि, पृद्धि धम्माय या मुद्द                        | ઘરટા    |
| पय में ससर्य सङ                     | ा, परमप्पाणमेय य ।<br>गं, साह् फह्सु पुच्छिको                                 | ॥१४॥    |
| नक्सचाया <b>मुदं</b> च              | ा, जमटी वयसा मुद्दं ।<br>न्दो, धम्माण फासवो मुद्दं<br>गा, चिहन्ती पजनीवद्वा । | ग्रद्शा |
| वन्त्रसाणा नर्मसन                   | ता, त्यक्षमं मण्डहारिको<br>( विश्वामाइणसपयां ।                                | ાશ્બા   |
| मूढा सम्भायसमस                      | ा, भासच्छना इबमाणी<br>मुची चारोच महिची जहा।                                   | ॥१दा    |
| सया कुसबसंदिही<br>जो न सम्बद्ध का   | स वर्यं बूम माहराां<br>गन्तुं, पञ्चयन्तो न सोयह ।                             | ((१६३)  |
| रमङ्ग्रहमस्यण<br>जायकत् जहासर्ह     | रिम, वं वर्षं चून मा <b>इ</b> स<br>, निकल्समन्त्रपादर्गं ।                    | ારબા    |
| रागदोसमयाईयं,<br>कार्याम्यां किसं द | र्वं वर्षं वृस माद्यां<br>स्तं ब्राव विषमंससे विवर्षः ।                       | गरशा    |
| शुक्तयं पत्तनिज्या                  | एं, हं वर्ष बूम माइया                                                         | أافدار  |

| The second second as                                     | 9110    |
|----------------------------------------------------------|---------|
| रत्तराध्ययनसूत्रं अध्ययन २६                              | 988     |
| ।। मह सामायारी अव्यीसङ्म मज्कपया।                        | l       |
| सामागरि पवस्सामि, सञ्बदुक्सविमोक्सर्णि ।                 |         |
| अ चरिचाण निर्माया, विष्णा ससारसागर                       | 11811   |
| पदमा बावस्सिया नाम, बिङ्या य निसीहिया ।                  |         |
| भापुच्छाणा यं तह्या, चक्त्यी परिपुच्छणा                  | ાાગા    |
| पत्रमी छन्वणा नाम, इच्छाकारो य छट्टको ।                  |         |
| सत्तमो मिन्द्राकारो उ, तह्कारो य बहुमी                   | 11\$11  |
| ष्ट्रसुद्वाग् च नयम, इसमी उवसपदा ।                       |         |
| पसा दसगा साहूर्ण, सामायारी पवेद्रया                      | 11811   |
| गमणे बाबस्सियं कुळा, ठाणे कुळा निसीहिय ।                 |         |
| षापु <b>च्छरां सर्वकर</b> से, पर हरसे प <b>िपुच्छ</b> रा | ।(४॥    |
| धन्दगा दव्याजाएगं <b>, इच्छाकारो</b> य सारगे ।           |         |
| मिम्ब्राकारो य निन्दाय, तहकारो पिंदस्पुय                 | 11711   |
| अव्सुट्ठाया गुरुपूया, अच्छरो उपसंपदा ।                   |         |
| प्वं दुपचसंजुत्ता सामायारी पवेश्या                       | ાળા     |
| पुन्धिक्षस्म चरव्याप भाइषम्म समुद्विए।                   |         |
| भग्डय पिंडलेहित्ता, वन्दिसा य सम्रो गुरु                 | HSH     |
| पुरिषद्धः ५ अलिउद्यो किं कायस्य मए इह ।                  |         |
| इच्छ निष्पोहरू भन्ते, वेयावसे व सन्मूप                   | ાશા     |
| वेयावचे निउत्तेण कायव्य भगिलायभो।                        |         |
| सरम्बाप वा निरुत्तेण, सञ्यदुक्सविमोध्याणे                | ॥१०॥    |
| विष्सस्स पर्वो भागे, भिक्तू कुञ्जा वियन्स्यो ।           |         |
| वस्रो उत्तरगुणे कुञ्जा दिशामागेस पउसु वि                 | १११ १।। |
| पढमं पोरिसि सन्मायं यीयं माग्रण मियायह ।                 |         |
| तद्दयाप भिक्त्वायरियं, पुणो चज्र्सीद्द सम्मायं           | 118411  |

| \$43<br>                         | ी विवस मानाः                      |         |
|----------------------------------|-----------------------------------|---------|
| एवं गणगमा                        | उत्ता, ज भवन्ति दिश्तमा ।         |         |
| ्रसंगमन्या स्                    | उभ, परमणायम्य म                   | ।।३४४।  |
| ाथ 🕽 समए।                        | ष्ट्रिज, पित्रवर्षास माहण ।       |         |
| समुदाय तथ र                      | े गु, जयपासं महामाण               | ॥३६॥    |
| नुष्ट य विजयः                    | गरे, इणमुदाह क्याजली ।            |         |
| गाहरम्स नहाः                     | भूर्य, सुद्ध, म उपवसिय            | ॥३औ     |
| नुभा जश्या व                     | प्राणं, तस्मे <i>का</i> विक विकास |         |
| नाइसगावड मु                      | च्मे, सुद्भे धम्माण पारमा         | 내목대     |
| नुस्भ समत्था र                   | अस्द्रच, परमध्यामध्येय ग ।        |         |
| तमसुमाह दूर                      | हर्म्ह, भिक्सोग जिल्हा उन्हरू     | ફાર્ફદા |
| न ५६वज सङ्ग                      | भिष्योग, सिर्माप नियम्बन ८        | 11,1    |
| णा मामाहास                       | मयावङ्ग, पार्व संस्थातकारण        | 118911  |
| उपलेबो हो इस                     | गिस. प्रामीत जेन                  | 110-11  |
| भागा भमद्र संस                   | गर, अभोगी विकासक£                 | 118411  |
| उसी सुक्लो य व                   | ो स्वा, गोलया महियामया।           |         |
| प्राप कावास्य                    | किंद्र जो बहो सोएक                | લકરા    |
| ण्य सम्मान्त दुव<br>सिरमा उन्हास | मेहा, जं नरा कामलालसा ।           |         |

HESH

118811

113211

विरत्ता उ न सम्मन्ति, अहा सुक्के च गोलए एव से विजयपोसे जयपोसस्स मन्तिए।

ब्रागुगारस्य निक्कन्तो, धम्मं सोबा अग्रुत्तरं

॥ ति बेमि ॥ इति सम्रहण्डं पद्मवीसङ्ग जनमन्यम् समत्तं ॥२४॥

खविता पुरुषकम्मा६ संजमेण वर्षेण य । जयभोसविजयघोसा, सिद्धि पत्ता अशुक्तर

| उत्तराध्ययनसूत्रं बाध्ययन २६                    | <b>१४</b> ३   |
|-------------------------------------------------|---------------|
| भगज्याविय भवतियं, भगागुवधिममोसर्ति भेष ।        |               |
| ष्रपुरिमा नव खोडा, पाणीपाणिविसोह्णं             | મારકાા        |
| भारमदा सम्मदा, वञ्जेयव्या य मोसली वह्या।        |               |
| पप्तोबखा चरस्पी, विक्सिता वेद्या छूटी           | गरदा          |
| पसिदित्तपस्तम्बतोता, पगामोसा अग्रेगरूवध्या ।    |               |
| कुण्ड पमाणे पमार्य, संकियगणाणोवर्ग कुञ्जा       | ારહા          |
| भय्याइरित्तपश्चिलेहा, श्रविवशासा तहेव य ।       |               |
| पढम पय पसत्यं, सेसाणि र मणसत्त्याः              | ।।२८।।        |
| पदिलेह्या कुमान्तो, मिहो कहं कुमाई जमवयकहं वा।  |               |
| देइ व प्रवस्तार्ग, वापइ सय पश्चित्वहरू वा       | ાવશા          |
| पुदवी-भारकार, तेऊ-बाऊ वर्णस्सर्-संसार्गः।       |               |
| पिंडलेह्यापमत्तो, छ्यदं पि विराहको होइ          | ॥३०॥          |
| पुरवी भारकार, तेजन्याजन्यग्रसम् तसार्गः ।       |               |
| पिक्तेह्याच्याउत्तो, झण्डं सरपस्तको होइ         | ॥३१॥          |
| <b>व</b> ष्ट्यार पोरिसीय, भच पार्यं गवेसर ।     |               |
| ष्ठण्डं समारताप, कारणम्मि समुद्विप              | ॥३२॥          |
| वेयण वेयाव <b>चे, इ</b> रियहाए य संबहाए ।       |               |
| वह पाग्रविचयाप, छठ्ठ पुरा धम्मचिन्साय           | <b>43</b> 411 |
| निगान्यो धिइभन्तो, निमान्यी वि न फरेळा छहि चेय। |               |
| ठाखेहिं र इमेहिं, भणशक्तमणाइ से दोइ             | ાાકશા         |
| भायंके उवसम्में, तिविक्सया वन्मचेरगुचीसु ।      |               |
| पाणित्या ववहेच, सरीरवोच्छेयणहार                 | ારેશા         |
| भवसेसं मण्डम गिरम्ह चक्कुसा पहिलेहर।            |               |
| परमञ्जीयणाची, विदार विद्रुरए मुखी               | 113411        |

| tva                               | जैन सिद्धांत माता                                                 |                                         |
|-----------------------------------|-------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------|
| षामादे मारे                       | रुपना, पासे मासे परणना ।                                          | *************************************** |
| चित्तासाएमु मा                    | पेमु विष्यम इयह पोरिसी                                            | 118311                                  |
| र्थगृक्ष सश्चरतेर                 | र्ण, प्रष्टोर्ण <i>च स्त्रमान</i> ः                               |                                         |
| <b>पहुर हायर या</b>               | य, मारोएं पउरमलं                                                  | 114811                                  |
| ष्यासाउयद्वतं प                   | स्ति, भरूवण कांसल म लेके न ।                                      |                                         |
| फ्रगुणयइसाहेस्                    | ुय, योद्धन्या मोमरत्तामी                                          | ॥१४॥                                    |
| जेट्टामुक्ते भासात                | उसायणे. एहि स्रोतकाहि तानिकार                                     |                                         |
| च्याच्याच्यास                     | भी, तेरप दस प्राप्त हैं करनाने                                    | 118811                                  |
| रात पि घउरो भ                     | सर्थे. भिष्यस्य <del>स्टब्स्य स्टब्स्य र</del> ू                  | .,,,,,,                                 |
| and alleries                      | क्षेत्रा, स्ट्रिसायस स्टब्स्ट कि                                  | !!₹બી                                   |
| पदम पारास स                       | बसार्थ क्षीय गुरुष्ट ६                                            |                                         |
| पश्याप । नहसास                    | स्र है। घडरथी सक्ती कि सम्बन्ध                                    | 118411                                  |
| जनइ जया राक्ष                     | । तबस्यमं <i>स</i> दिल                                            |                                         |
| संपत्त ।वरमञ्जा                   | सम्मार्थ पद्मोसकालक्ष                                             | ॥१धा                                    |
| तम्मव य नक्स्रक्                  | गयणपहरमागसावसेसम्म ।                                              |                                         |
| परात्तय । प काल                   | , पिंडलेहिचा सुणी कुञ्जा                                          | ॥२०॥                                    |
| पुरुषस्यास्य पर<br>ग्रह्म सम्बद्ध | म्माए, पश्चिमेदिचाया भयद्वर्य ।<br>घर्यः, कृत्वा दुश्यायमोहस्मयां |                                         |
| गुरुसीय चलका<br>विकास             | जन, जन्म दुनसायसोस्सर्य<br>ए वन्दिताया वस्त्रो गर्छ ।             | ।।२१॥                                   |
| मपरिक्रमिचाक                      | विस्त, मायगं पश्चितेह्य                                           |                                         |
| महपोसिं पश्चिलेहि                 | चा, पडिलेडिक गोच्क्या।                                            | ાારસા                                   |
| गोच्छगसद्यंगुहि                   | को, वस्वाई पश्चितेहप                                              |                                         |
| <b>एडू थिर भ</b> ष्टुरियं         | पुरुवं धा वस्यमेष पश्चित्तेहै ।                                   | गरमा                                    |
| तो विदयं पण्छेडे,                 | तह्य च पुषो पमक्रिक                                               |                                         |
|                                   | _                                                                 | Ţ                                       |

| <b>एत्तराध्ययनसूत्र श्रध्ययनं २७</b>            | १४४     |
|-------------------------------------------------|---------|
| पारियकाससम्मो, वन्दिसास तथो गुर्छ ।             |         |
| राइयं तु भ्राईयारं, ब्यालोपञ्च जहकम्म           | ไประบ   |
| पिकासिसु निरसद्वी, वन्त्रिसाय वच्ची गुर्द ।     | į       |
| काउरसम्मं तथो कुजा, सञ्बद्धक्सविमोन्स्यणं       | likeli  |
| किं सब पद्धियद्धामि, एवं तत्य विचिन्तए।         |         |
| फारस्सर्ग सु पारिचा, वन्यई थ वस्रो गुर्व        | (IIXII) |
| पारियकारस्तम्गो, वन्दिचाण वभो गुरु ।            | •       |
| वर्ष संपद्धिय जेञा, कुञा सिद्धाण संधव           | ાાપ્રસા |
| पसा सामायारी, समासेण विवाहिया।                  |         |
| जं चरित्ता बष्टु जीवा, विष्णा ससार सागर         | गाइसम   |
| त्ति बेमि ॥ इति सामायारी छव्शीसइमं अञ्चल्या समर | तं ॥२६॥ |
|                                                 | •       |
| ।। श्रद्द खर्त्नुकिज्ञ सत्तवीसहम भज्मस्यशः।     | 1       |
| थेरे गणहरे गग्गे, मुणी चासि विसारए।             |         |
| चाइयरो गणिभावस्मि, समाहि पविसंधए                | 11811   |
| षह्यो हवमायस्स, दन्तारं भाइवत्तर्ह ।            |         |
| बोगे वहमाणस्स, संसारो भइवत्तई                   | ાસા     |
| ससुके जो उ जोएइ, विहम्मायो किलिस्सई ।           |         |
| असमाहि च वेपह, सोत्तको से य भक्तई               | 11411   |
| पर्ग इसइ पुरुष्ठ्रिम्म, एर्ग विन्धइऽभिक्स्मण ।  |         |
| एगो मंजइ समिलं, एगो उपाइपट्टियो                 | 11811   |
| पगो पढइ पारेग, निवेसइ नियव्हर ।                 |         |
| विज्ञहर चिक्कर, सढे वालगंधी पए                  | ।।धा    |
| माई सुद्धेण पढद, कुद्धे गच्छे पश्चिप्पर्ह ।     | 11511   |
| मयलक्सोग्रा चिट्टई, वेगेग्रा य पहावई            | 11411   |

जैन विद्या र माना 841 भत्र भाग पारिसीय, निस्मिषित्ताम् भागम् । 비용네 **ন্যন্যৰ ব ৰশ্বা দ্ৰুৱা, নহৰ্মাৰপ্ৰি**মাৰ্য पारिसाद चरासाए, य दिलागु तथा गर्छ। n्रदा परिकामित्रा कालरस, खेग्जे 🖪 परिलहप पामवराषारभमि च, पहिलेदिस तयं जह । 11361 फाउनमां वच्चा कुचा, सन्यतुष्माविमीक्सणं न्यमियं च ब्रह्मारं, चिन्तिज्ञा ब्रह्मपुञ्जमो । irseli नाण य कमणे थेय, चरित्तम्मि तह्म य पारियक्षाउस्ममो, बन्दित्ताण दक्षी गुरु। दर्वासय तु बाइयार बालोएल जहर्यस्म पदशी र्पाश्कमित्त् निस्सक्षे यन्वित्ताण वद्मी गुरु ! कारसम्म तको छुजा सन्बद्धनसमिनेस्तर्ग 118311 पारियकाटस्सम्गो वन्दित्ताया वध्यो गुर्ने। थुइमगर्ल च काउल्ल, कालं हु संपृष्टिलेह्य લક્ષ્મા पदमं पोरिसि सम्मायं, विश्व माण मियायई । तक्ष्याप निक्सीनस तु, सम्मायं सु चरत्यप 118811 पोरिसीए चरत्यीय, कास तु पिन्नेहिया। सम्भायं तु तथा कुछा, अवोहेन्तो असअए ווצצוו पोरिसीए चडकाए, बन्विक्या वक्षो गुरं। पिकासिन्त कालस्स, कार्न तु पिक्निइप 118411 भागप कायबोरसमी, सब्बदुनस्रविमोक्सको । कात्रसमां तको इजा, सन्दतुकस्विमोक्सरा 118/911 राइये च चाईयारं, चिन्तिक चायुष्ट्यसो ।

118411

नार्णीम दंसर्णीम य, चरित्तीम वर्षीम य

| उत्तराध्ययनसूत्रं बाध्ययनं २८                           | <b>18</b> 0 |
|---------------------------------------------------------|-------------|
| ।। भह मोक्खमग्रागई भहावीसहमं भन्मस्य                    | य ॥         |
| मोक्समगगाई वर्ष, सुर्योह जिस्समासिय ।                   |             |
| चनकारणसंजुनं, नाणवंसणजनसर्गं                            | 11811       |
| नाए। च दस्या चेव, चरित्त च तबी तहा।                     |             |
| पस मम्मु ति पद्मचो, जिलेहिं वरवसिहिं                    | 11811       |
| नाए च दसएां थेथ, चरित्त च ववो तहा।                      |             |
| एयंममामगुष्पत्ता, जीवा गच्छन्ति सोमाइ                   | गरा         |
| तत्य पंचविह नार्ग, सुय आमिनिवोहियं।                     |             |
| ओहिनाए तु तह्यं, मएनाएं च केवलं                         | 11811       |
| पर्यं पंचिवहं नार्या, वृज्याया य गुयाया थ ।             |             |
| पब्जवाया च सञ्चेसि, नाया नायीहि देसिय                   | ווצוו       |
| गुणाणभासको दब्ब, फादव्यस्सिया गुणा ।                    |             |
| लक्सम् प्रज्ञवाग तु, उभन्नो भस्तिया सबे                 | ग्रह्मा     |
| धम्मो भहम्मो भागास, कालो पुग्गल-जन्तवो ।                |             |
| पस लोगो चि पनतो, जियोहि वरदसिहि                         | llet!       |
| धम्मो बहुम्मो बागासं, वृद्धं इकिकमाहिय ।                |             |
| भगन्ताणि य दृष्ट्याणि कालो पुग्गतजन्तयो                 | 11511       |
| गइतक्साणो च धम्मो, बाइम्मो ठाणसक्साणो ।                 |             |
| भायग्र सञ्बद्य्याग्रं, नहं स्रोगाहत्तक्स्रग्रो ।        | 11811       |
| वर्षणालक्सणो फालो, जीवो उवचोगलक्सणं।                    |             |
| नागोग च वंसगोगं च, सुद्देश य दुद्देश य                  | 110511      |
| नाय च दसय जेव, चरित्र च तयो तहा।                        |             |
| र्यीरिय उवचोगो य, एथ जीवस्स सक्खरां                     | 118811      |
| सर्न्थयार-स्वजोक्मो, पभा खाया तवो इ घा ।                |             |
| ष्य्यारसगन्त्रफासा, पुग्गकार्या तु स <del>्रव</del> स्य | ાકશા        |

| 124                | ीन सिद्धांत माता              |        |
|--------------------|-------------------------------|--------|
| दिमान दिन्दर र     | हि, दुरत्वो भन्नप जुर्ग ।     |        |
| रोवि य मुग्नुवादा  | ता, उमहिसा पतायप              | ।[भ]   |
| खजुका जारिसा व     | । जा, दुस्सीसा वि हु वारिसा । |        |
| जोइया धम्मजाण      | म्मि, भजन्ती धिश्तुस्पता      | 내리     |
| दशीगारविष एते,     | पगेऽत्थ रसगारवे ।             |        |
| सायागारविष् को     | एगे मुचिरकोह्ये               | Hall   |
| भिषम्बालसिए एगे    | , णो भोगाणभीरुए।              |        |
| थद्धे पर्ने घरासास | गमी, इउदि फारलेहि य           | 114이   |
| सो वि भन्तरभावि    | सहो, दोसमेव पकुल्यह ।         |        |
| चायरियाण मु वय     | ाणं, पेसिक्लेश्डमिक्सणं       | 118811 |
| न साममें वियास     | गुइ, न यि सा मज्म दाहिई।      |        |
| निगाया होहिइ म     | ने, साहू भागोत्थ वज्ञउ        | ાાશ્ચા |
| पसिया पित्तर्रेषनि | स ते परियन्ति समन्त्रमो ।     |        |
| रायवाह च मझन्स     | ा करेन्ति भिविष्ठं मुद्दे     | 118311 |
| वाइया संगहिया च    | व मचपायेण पोसिया।             |        |
| जायपक्सा जहा ह     | सा प्रक्रमन्ति दिसो दिसि      | 114811 |
| चंह सारही विधि     | नोड. कलंकेल गाम्मा            |        |

নি श्या àl रा **१३**॥ मा ज 811 बह सारही विधिन्तह, क्युकेहि समागको।

कि मस्म तुरुसीसेहि, बाप्पा मे बाबसीयई 118611

जारिसा ममसीसाची वारिसा गिलगरहा।

।। चि बेमि ॥ सलकिन्त्रं सचनीसद्दमं धन्मस्ययं समच ॥१०॥

गलिगहरे जहिचार्यं दर्जं परिष्ट्ई स्व

विहरइ महिं मह्त्या, सीसमूच्य अप्यया

मिदमहबसपन्नो, गम्भीरो सुसमाहिको ।

HYXII

Hell

| क्तराध्ययनसूर्वं ग्रम्यमनं २८                         | 388         |
|-------------------------------------------------------|-------------|
| वसणनाणचरिसे, तबविणप सच्चसमिद्रगुचीसु ।                |             |
| बो किरियाभावर्राह, सो स्नलु किरियार्राह नाम           | ારશા        |
| भगामिमावियकविदी, सस्वेवन्द्र ति होई नायन्वो ।         |             |
| भविसारको पवयणे, अगुभिमाहिको य सेसेसु                  | गरद्वा      |
| जो श्रत्यिकायधन्मं, सुयधन्म सन् चरित्रधन्म च ।        |             |
| सहह इ जिल्लाभिहियं, सो घम्महरू ति नायव्यो             | ॥२७॥        |
| परमत्थसमबो बा, सुदिट्टपरमत्थसेषण घा वि ।              |             |
| षावन्तकृद्वंसण्बद्धारा, य सम्मत्तसं <b>रह</b> णा      | ॥२५॥        |
| नित्य धरिश्व सम्मत्तविहूण इसणे उ मइयव्व ।             |             |
| सम्मत्तनरित्ताइं, जुगवं पृष्टव व सम्मत्त              | गरधा        |
| नावंसियास्य नायं, नायंग विषा न हुन्ति चरणग्या ।       |             |
| भगगिएस नस्थि भोक्स्नो, नत्यि समोक्स्नस्स निव्यार्ण    | ॥३०॥        |
| निस्संकिय-निक्षंत्रिय निब्धितिगिच्छा चम्द्रदिष्टी य । |             |
| धनबृह चिरीकरणे, बच्छद्वपमात्रणे बहु                   | 113811      |
| सामोद्दयस्य पद्धमं, ह्रेदोवट्टावर्णं भवे वीय ।        |             |
| परिदारिवसुद्वीय, सुदुम तह सपराय च                     | गा३२म       |
| मकसायमहयस्त्राय, झुचमत्यस्स जिल्हसः वा ।              |             |
| एय प्रयरिचकर चारित होई भाहिय                          | ॥३३॥        |
| वयो य तुविहो वुत्तो, वाहिरङभन्तरो वहा ।               |             |
| षाहिरो छुटियहो बुत्तो, एमेषटमन्तरी तथो                | ારશા        |
| नायोग जायाई भावे दसर्येग य सद्द।                      |             |
| परिचेण निगिवहाइ, तबेण परिसुक्कइ                       | 114411      |
| सबेचा पुब्बक्स्माई, सञ्जमेण ववेण य ।                  |             |
| सञ्जनुषस्परहीयाट्टा, प्रक्रमन्ति महस्तिणो             | 113€11      |
| ॥ ति वेमि ॥ इति मोक्सममागई समत्ता ॥२                  | <b>-1</b> 1 |

| पगर्त च पुद्दशं च, सखा सठायमेंव य ।<br>संजोगा य विभागा य, पग्जवाल हु समस्यण                                                                     | 118511  |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------|
| जीवाजीवा य य घो य, पुरुखं पाबाऽसवो सहा ।<br>संबरो निम्जरा मोक्सो, सन्तेए वहिया नव                                                               | 1143/1  |
| विष्ठयाणं तु भाषाणं, सन्भाषे चवपसण ।<br>भाषेण सददन्तस्त, सम्मत्तं वं वियादियं                                                                   | ग्रह्मा |
| निसम्पुषपसदद्द, चायादर्द सुच-धीयदृद्दमेव ।<br>व्यक्तिमा वित्यारहर्द्द, किरिया संखेय घम्मदर्द                                                    | [[\$4]] |
| भ्यस्येणादिगया, जीवाजीवा य पुराणपाव च ।<br>सह मन्मद्रयासवसवरो य रोपद्र च निस्सगो                                                                | ntoli   |
| ओ जिल्लाविडे मापे, चवित्रबहे सहहाइसयमेष ।<br>वमेष नन्नह चि म स निसमाहह चि नायव्वो                                                               | ut-li   |
| एए सेव उ भाव, स्वइहें जो परेख सहहई ।<br>इत्रतस्थेण जिल्लेण व उवपसंत्रह चि नायस्वी                                                               | H\$EII  |
| रागों दोसो मोहो, जन्नाय अस्य समागर्थ होह ।<br>साग्राप रोयंतो, सो कलु साग्राहई नाम                                                               | ારબા    |
| जो सुसमहिज्जन्यो, सुप्या श्रोताहर्द् उ सम्मन्तं ।<br>द्यारेण वाहिरण व सो सुचरह चि नायव्यो<br>एतेण द्यारोगाह पयाह जो पसर्र्द्र उ सम्मन्तं ।      | ॥२१॥    |
| हारा अस्पाद प्रयाद जा प्रसंद न सम्मत्ता ।<br>उत्तर ह्य तहायन्त्र, सो बीयरुद्द सि नायरुद्धो<br>सा होद्द बामिगमरुद्द, सूयनाण जेण बारथक्यो विट्ट । | ।(२२।)  |
| एकारम श्रमाइ, पहण्यम निष्टिंगमी य<br>दहाराम समाइ, पहण्यम निष्टिंगमी य<br>दहवास मन्यमावा, मध्यपमासिंह अस्य दबसद्धाः।                             | गरका    |
| व्हवास मन्यमाना प्रमारहर चि नायम्यो                                                                                                             | 112511  |

| क्तराभ्ययनसूत्रं श्रम्ययन २८                          | १४६    |
|-------------------------------------------------------|--------|
| दसणनाणचरित्ते, तथविण्प सच्चसमिक्गुतीसु ।              |        |
| जो किरियामावरुई, सो खल किरियारुई नाम                  | ારશા   |
| भग्गभिमाहियकुर्विद्वी, सस्त्रेविषद् ति हो ६ नायट्यो । |        |
| अविसारको प्रयणे, अणुभिमाहिको य सेसेस्                 | गञ्हा। |
| जो मत्थिकायभन्मं, स्वधन्मं सत्तु चरित्तभन्म च ।       |        |
| सरहर जिलाभिहिय, सो धनमहरू चि नायम्बी                  | ાારહા  |
| परमत्थसथयो वा, सुदिट्टपरमत्थसेवण वा वि ।              |        |
| मावन्नकुदुसण्यव्यणा, य सम्मत्तसद्दणा                  | गरना   |
| नित्य चरित्त सम्मत्तविष्ट्रुण दसर्गे उ भइयव्यं।       |        |
| सम्मत्तवरिचाइ, जुगर्न पुन्य य सम्मत्त                 | गरधा   |
| नारंसियस्स नायं, नार्येण विणा न हुन्ति चरणगुणा।       |        |
| भगुणिस्स नत्थि मोक्सो, नत्थि भमोक्सस्स निञ्चाण        | ॥३०॥   |
| निस्संकिय-निकांकिय निष्टिवितिगिच्छा अमृतविट्टी य ।    |        |
| उपयुद्द थिरीकरणे, बच्छडपमाश्यो बाहु                   | 113811 |
| सामाइयत्य पदमं, छेदोबट्ठावएं भवे वीय ।                |        |
| परिहारिवसुद्वीय, सुहुमं तह सपराय च                    | ॥३२॥   |
| बद्धसायमहद्भस्ताय, छुरुमत्थस्स जियास्य वा ।           |        |
| एय चयरित्तकर, चारित होई बाहिय                         | ॥३३॥   |
| ववो य दुविहो युचो, बाहिरध्भन्वरो वहा ।                |        |
| वाहिरो छ्वियहो युत्तो, एमेवरमन्तरो तयो                | 113811 |
| नायेण जाण्ड्रं भाव दसरोग य सहह।                       |        |
| परितेण निर्मिष्हाइ, सबेगा परिसुडमइ                    | 114411 |
| स्वेषा पुरुषकृत्माइ, सजनेग ववेगा य ।                  |        |

॥ चि चैमि ॥ इति मोक्सममागइ समचा ॥२५॥

113511

सम्बदुक्सपदीखट्टा, पक्रमन्ति महसिखो

॥ भइ सम्मत्तपरकम एग्यतीसहम भउमस्यय ॥

सुय मे भाउस-तम् भगवया एयमस्यायं । इह जनु सम्मचपरकमे नाम अन्मयणे समर्थेण भगवया महावीरस कासवेर्ण पषइए, ज सम्मं सद्दृहिचा पत्तिहता रायहचा फासिसा पालइसा वीरिसा फिसइसा सोहइसा भाराहिस भाणाए भरापालइसा यहवे जीवा सीम्फ्रान्त वुस्फ्रान्त मुक्ति परिनिन्यायम्ति सञ्बदुसाणमन्त फरेन्ति। सस्स ए प्रयमहे एवम्माहिस्जइ, वं जहां —सबेगे १ निव्वए २ घम्मसदा १ गुरुसाइम्मियसुस्य्सया ४ मालोयखया ४ तिन्द्रण्या ६ गरिहराया ७ सामाइए ८ घरडवीसत्यवे ६ वन्द्रगा १० पिड-कमणे ११ फाटस्समी १२ प्रवस्ताणे १३ थवशुक्रमणले १४ कालपिकलेहराया १४ पायच्छितकरसो १६ समावससमा १७ सक्माए १८ वायराया १६ पिंडपुष्ट्यसाया २० पश्चियहराया २१ क्रागुप्पेहा २२ घम्मफद्दा २३ सुयस्स काराहस्यया ५४ पगमामणसंनिवेसणमा २४ संजमे २६ वर्वे २७ बोवाणे २५ सुहसाप २६ भप्पडिकद्वया ३० विविधसयणासणसेयणया ३१ विशिषट्रणमा ३२ संभोगपवन्स्नायो ३३ उवहिपवनकायो ३४ भाइरपणनसाय ३४ कसायपणनसायो ३६ जोगपणनसायो ३७ सरीरपवनकाणे ३८ सहायपवनसाणे ३६ मत्तपवनसाणे ४० सम्भावपवस्तायो ४१ पडिस्त्वयाया ४२ वेयावचे ४१ सम्बग्गसपुरण्या ४४ वीयरागमा ४४ सन्ती ४६ मुत्ती ४७ महते ४८ भजने ४६ भाषसंबे ४० करणसंबे ४१ जीगसंबे ४२ मण्युत्तवा ४३ मयगुत्तवा ४४ कावगुत्तवा ४४ मण्यमा धारणया ४६ वयसमापारणया ४० कायसमापारणया ४८ नाग्रसंपन्नया ४६ दंसण्सपन्नया ६० घरित्तसप्रमया ६१

यनिमाहे ६२ चिक्किन्दियनिमाहे ६३ घाषिन्वयनिमाहे ६४ जिन्मिन्तियनिमाहे ६४ फासिन्वियनिमाहे ६६ कोहिबिजए ६७ माणियनए ६८ मायाविजए ६६ लोहिबिजए ७० पेजवोस मिच्छादंसणिवजए ७१ सेलेसी ७२ डाकम्मया ७३॥

संवेगेण भन्ते जीवे किं आण्यह ?। सवेगेणं व्याप्तर धन्म सदं जाण्यह । वाणुत्तराए धन्मसद्धार संवेगं ह्न्यमागच्छह । वन्यह । तप्पब्ह्यं च ण मिच्छत्तिसीहिं काऊण दंसणाराहए भवह । वंसण्यविसीहीए य एं विसुद्धार बात्येगएइ तेणेव भवमाहणुणं सिक्कई । विसोहीए य एं विसुद्धार सर्वे पुणो भवमाहणुणं सिक्कई । विसोहीए य एं विसुद्धार सर्वे पुणो

निष्येष्णं भन्ते जीवे किं ज्यायह १ । निव्वेषणं विव्यमाणुस तेरिच्छिपमु काममोगोमु विक्वेयं हृव्यमागच्छह् । सम्बविसपमु विरज्ञह् । सम्बविसपमु विरच्छमाण चारम्भपरिचाय करेह् । चारम्भपरिचायं करेमाणे संसारमागं घोष्टिव्रन्यह्, सिद्धिममा पश्चिम्ने य ह्वह् ॥र॥

धन्मसद्भाष या भन्ते जीवे कि जणयश् ?। धन्मसद्भाष या सायासोनस्बेसु रच्छमायो विरस्जद्ग । भागारधन्मं च यां चयद्ग । भागारिए यां जीवे सारीरमाणसायां दुक्सायं क्षेत्रणभेयण संजोगाईयां योच्छेयं करेड् भव्यायाहं च सुहं निन्वत्तेश् ॥३॥

गरसाहिमयसुस्त्स्यणाय ए भन्ते जीवे किं ज्ञायग्रह् । गुरुसाहिम्मयसुस्त्स्यणाय यां विषयपिष्टि ज्ञायह । विराय पिषयन्ने य यां जीवे कागुरुपासायणसीके नेरहयविरिक्सजोणिय-मणुस्तदेयदुन्मईको निरुम्मइ । वयणसंज्ञलणभत्तियदुमणापाप ॥ भइ सम्मत्तपरक्षम एगृणवीसर्म भवमस्यण ॥

सुय मे भाउस-तए भगवया एवमस्साय । **१६** एड् सम्मचपरकमे नाम भग्नस्यणे समर्गेण भगवया महावीर फासवेर्ण पवेइए, ज सम्मं सद्दिता पत्तिइता रोवइध प्यसिचा पालइचा वीरिचा फिचइचा सोहइचा आयहिण भाणाप भाणपालक्ता यहचे जीवा सीरकान्ति युवकान्ति मुक्ति परिनिष्यायन्ति सन्यदुस्नाणमन्त करेन्ति। तस्य ए सम्बर्ध पवन्माहिरुवह, तं जहा —सवेगे १ निब्वेए२ भन्मसद्धा १ गुरुसाहम्मियसुस्य्सया ४ भानोयराया ४ तिन्दराया ६ गरिह्मणमा ७ सामाइए ८ चन्डमीसत्यमे ६ वन्त्रम १० पडि कमणे ११ काटसामी १२ पद्मक्साणे १३ यवस्क्रमंगते १४ कालपिकतेहराया १४ पायच्छितकरणे १६ समावसग्रसा १७ सक्कार १८ वायणया १६ पश्चिपुच्छ्याया २० पश्चियहृण्या २१ मणुप्पेहा २२ धन्मकहा २३ स्रयस्स भाराहणया ५४ पगमामणसंनिवेसणमा २४ संजमे २६ सर्वे २७ बोबाणे २५ मुह्साप २६ चप्पडियद्भया ३० विविचसमगणसग्रसेवग्रमा ३१ विधियदृष्णया ३२ संमोगप<del>वरसा</del>स्ये ३३ स्वहिपवरसासे ३४ भाहारपबन्साणे १४ कसायपबम्साणे ३६ जोगपबन्साणे ३७ सरीरपवन्साणे ३८ सहायपवन्साणे ३६ मचपवनसाणे ४० सम्भावपवनसायो ४१ पविरुवयाया ४२ वेबावचे ४३ सम्बग्धसंपुरण्या ४४ वीयरागया ४४ सन्ती ४६ मुत्ती ४७ महमे ४८ मानवे ४६ मानसम् ४० फरणसमे ४१ ओगसमे ४२ मण्युच्या ४३ वयगुच्या ४४ कायगुच्या ४४ मण्यमा धारण्या ४६ वयसमाधारण्या ४० कायसमाभारण्या ४५ नाधारीपन्नया ४६ वसणसपन्नया ६० चरित्रसंपन्नया ६१ सोइन्दि

पिकक्रमर्रोधं भन्ते बीवे किं बरायइ ?। प० वयछि हासि पिहेश । पिहियवयिद्धिहे पुरा जीवे निरुद्धासने ससवलघरिचे भहसु पवयसमायासु उवउत्ते भपृष्ठ्चे सप्पसिष्ठिय विद्वरङ् ॥११॥

कारासमोग्र भन्ते जीवे कि जगयह?। कारसागोग्र तीयपद्ध पन्न पायच्छित्त विसोद्देइ । विसुद्धपायच्छित्ते य जीवे निव्य यहियए भोहरियमर ज्य भारबहे पसत्थरभन्नगोवगए सुह सुद्देण विदृरक्तु।।१२॥

पष्पसार्योग भन्ते जीवे कि जगयह १। प० बासवदाराह निषम्भद्र । पद्मक्सारोग्र इच्छानिरोहं सग्रयह इच्छानिरोहं गए य ए जीवे सञ्चद्रवेसु विशीयतगर्दे सीइम्प विहरई ॥१३॥

थयथास्मगलेखं भन्ते जीवे कि अखबा १। य० नाखदसरा परित्तवोहिलाम जलयइ। नाएदंसणचरित्तवोहिलामसपन्ने य एं जीवे बन्तकिरिय कृप्यविमाणोवविषय बाराह्या बाराहेड् ॥१४॥

कालपिंद्रलेहरायाए एां भन्ते जीवे कि जगायह?। का० नाणावरिक्ज कम्म स्ववेड ॥१४॥

पायच्छित्तकररोग भन्ते जीवे कि जगपद १। पा० पायकमा विसोहिं जगुयइ। निरइयार वावि भवइ। सम्मं च ग पायच्छित पश्चिवन्त्रमार्गे मर्गा च मगाफलं च निसोहरू, शायार च भायारफस च भाराहेह ॥१६॥

समावराजाप स भन्त आंच कि जरायद् ?। स॰ पल्हायस भाषं ज्ञणयह । पल्हायणभावमुवगए य सन्यपाणभ्यपीयसत्तेस मिचीमायमुप्पाएड मिचीमावसुबगए याचि जीने भाषविसोहिं फाउरम् निच्मए भयद्र ॥१७॥

सञ्चारण भन्त शीवे कि जलगई ?! स॰ नाणायरिएज्जं फम्मं सबेइ ॥१८॥

मणुस्सद्वगङ्को निष्ध्यहु सिद्धि सोगाई च विसेह्र ! पसत्याई च एौ विख्यमूलाई सब्बद्धाई साह्ड । धन्न व यहवे जीव विखिश्ता भषद्द ॥॥।

ष्मानोयणाय र्णं भन्ते जीये किं जरायद १। बानोयणाप्रं मायानियाणमिन्छायंसरासद्धाणः मोनस्त्रममाविग्याणः बर्णवर्स

सारवन्ध्याणि नद्धरणि फरेड् । वस्तुभाध च ज्ञायड् । वस्तु । भाषपश्चितने य ए। जीवे धमाइ इत्थेवियनपुस्तवेयं च न बन्धर् ! पुरुषपद्धं च ए। निन्तरेड् ॥१॥ निन्द्रस्याण ए। भन्ते जीव कि ज्ञायड् १ । निन्द्रस्याण ए पच्छाणुवार्यं ज्ञायड् । पच्छाणुवावेर्यं विरक्षमाणे करसमुस्वेदि पविषक्षत्रम् । करसमुस्तवेवीविकान य ए। प्रस्तामारे मोहस्मिक्यं

कन्मं काषायह ॥६॥ गरहराज्याय यो भन्ते जीवे किं जाग्यवह ?। गरहराज्याय कपुर कारं जाग्यवह । कपुरकाराय यो जीवे कायसस्येहितो जोगेहिंगो नियत्तह, मसस्य य पहिषकाह । पसस्यकोगपहिषक्ने य यो कागुगारे कायुन्तपाइ पकाये सर्वेह ॥४॥

भगागरे भगान्तपाइ परवाचे समेह !!आ सामाइएयां भन्ते औषे कि जयायइ ?! सामाइएयां सावस्थ-लोगाविराई जयायइ !!त!! चडक्वीसत्थपयां भन्ते औषे कि जयायह ?! चडबीसत्थपयां दंसग्रविसीहिं जयायह !!ह!! वन्ह्यापयां भन्ते औषे कि जयायह ?! यन्द्रग्रपयां नीयागोर्य कस्म समेह ! उद्यागीयं कस्म निवचह ! सोहमां च यां क्यहि

हर्च झाणुपद्रां निब्बत्तेइ । दाहिएभाव च ए जिल्हा । १०००

संजमएण भन्ते जीवे कि जणयह १। स० ऋण्यहयत्तं जणयह ॥२६॥

ज्यपर गरना ववेण भन्ते जीवे किं ज्यायह ?। ववेण घोषाण ज्यायह॥२०॥ धोषाणेण भन्ते जीवे किं ज्यायह ?। वो० व्यक्तिरेयं ज्यायह । क्षकिरियाण भविचा तथो पच्छा सिक्तह, युक्तह मुबह परि निक्वायह सञ्चतुक्त्याणमन्तं करेड ॥२८॥

ानव्यायद्व सञ्चतुक्त्वात्यमन्त करद् ।।२८॥ सुरसाएणं मन्ते जीवे किं ज्ञणयद् १ । सु० आगुस्सुयत्त ज्यायद्व । आगुस्सुयाए ए जीवे आगुकस्यए आगुव्याटे विगयसोगे परित्तमोहृत्याच्च कम्मं सर्वेद्व ।।२६॥

भप्पिकवद्भयार ग्रं सन्ते जीवे किं जग्रवह !। भ० निस्तगर्त्त अग्रवह । निस्तगत्तेगं जीवे एगे पगमाचित्ते वि्या य राष्ट्री य भसन्जमाग्रे भप्पश्चित्र यात्रि विहरह ॥३०॥

भ्यतंत्रमाण् अप्पाद्यद्वयः यात्र । यहरङ्गादा। विविक्तसयणास्याययः याः भन्ते जीवे किं जणयङ्ग १ । वि० वरिष्तगुर्ति जणयङ्ग । परिष्तगुष्ते य यां जीवे विविधाहारे वैद्यपरिषे एगन्तरणः मोयसभाषपढिवन्ने अष्ट्रियहफन्मगर्हि निक्जरेड्ग ॥३१॥

चित्तयष्ट्रयाए ग्रां भन्ते ओवे किं जग्रयह १ । वि० पावकम्माग्रां मकरणुपाए भ्रम्सुटेइ । पुन्वयद्वाग् य निग्जरणुपाए व नियसेइ । समो पच्छा चाउरन्त ससारकन्तारं वीइवयह ॥३२॥

समोगपषस्याणेण भन्ते जीवे किं ज्ञणय १ । सं० भालम्बणाई सेवेइ । निराजम्बणस्य य भाषिट्वया योगा मयन्ति । सप्यं जामेण सतुस्य १, परजाम नो भासाषे इ, परजाम नो वकेइ, नो पीइइ नो पत्येइ, नो भामजस्य । परजाम भागस्यायमाणे भागक्षेत्राणे भागस्यायमाणे भागक्षेत्राणे भागस्यायमाणे भागस्यायमाणे भागस्यायमाणे भागस्यायमाणे भागस्यायमाणे अस्यायमाणे भागस्यायमाणे अस्यायमाणे अस्

वायणाप यां भन्ते जीवे कि ज्ञणुषड् १। या निरुद्धरं ज्ञणुवह् । सुयस्य व बर्णुसञ्ज्ञणाप ब्र्णुसायणाग भट्ट्य । सुवस्स ब्रम्क सम्ज्रकाप बर्णुसायणाय ब्रह्माणे वित्यभम्म ब्रावलम्बह् । क्रिय पम्मं अयलम्बमाणे महानिञ्जरे महापञ्चयसाणे भवड् ॥१६॥

पिंडपुच्छ्रणयाए ग्रं भन्ते जीवे कि जलगर १। प० सुरुष तदुभयार विसोहर । कंसामोहणिक्तं कम्म वोच्छिन्दर ॥२०॥

परियद्वणाए ए। नन्ते जीवे कि ज्ञ्यमङ् १। प० बज्रणारं ज्ञ्ययङ्, वंभ्रणकृद्धि च उप्पाएड ॥२१॥

बाखुप्पेहाप यां भन्ते सीवे कि अयायहर्। बाव बावयवस्त्राको सत्तकम्मप्पगढीको चिरायमन्ययावद्वाको सिडिज्ञमन्ययुवद्वाको पकरेह । वीहकाकद्विहयाको हस्सकालद्विहयाको एकरेह । तिव्या स्प्रभावाको मन्यास्प्रभावाको पकरेह । बहुप्पसागाको कप्पप स्स्रगाको एकरेह । बाउर्य व यां कम्म सिया बन्धह सिक्षा तो मन्यह । बसायावेबायिव्यां व या कम्म तो मुझ्लो मुझ्लो उविच्याह । बस्याहम व यां क्यायव्यां वीहमद्ध बाउरत्य संसारकन्यारं किप्पायेव वीहमयह ॥२२॥

धम्मक्हाए यां भन्ते जीवे कि जयुग्द ?। घ० निकार जयुग्द । धम्मक्हाए यां पत्तवयां पमानेह । पत्रवयापभावेयां जीव चागमेसस्स महत्ताए कम्बं निवन्यह ।२२॥

सुयस्य बाराहणयाप र्णं भन्ते भीने कि जयायह १। सु॰ बानार्णं समेह न य संकितिस्तह ॥२४॥

एगमामण्सनिवेसणयाय र्ण मन्ते जीवे कि जणयह १ ए० चित्तरीह करेड ॥२४॥ ष्म्मचे स्रवेद्द, अहा-वेयिगुण्ड ष्माटय नाम गोय । वश्रो पच्छा सिम्डद वुज्मह मुश्रइ परिनिन्वायद सन्वदुक्सणामन्त फरेद्द ॥४१॥

पिक्रिवयाए ए भन्ते जीवे कि ज्ञायक ?। प० ज्ञापवियं ज्ञायक । ज्ञायुम्य ए जीवे द्यापमचे पागव्यक्तिंगे पसत्यिक्तिंगे विसुद्धसम्माचे सत्त्वसमिक्समन्त सञ्वपाणुमृबजीवसन्तेमु बीस सण्डिन्हचे कापविज्ञेष्टे जिक्दन्तिए विवलतवसमिक्समक्षागए यात्रि सचक् ॥४२॥

वेयाववेर्णं मन्ते जीवे किं जणयह १। वे० तित्ययरनामगोत्त इन्मं निवाधक ॥४३॥

सम्बगुणसंपन्नयाप ए। सन्ते श्रीवे कि जएवड् १। स०

ष्मपुणरावर्ति जणयह । श्रपुणरावर्ति पत्तप य ग्रा अवि सारीर माणसाण दुक्साण नो भागी भवह ॥४४॥ वीयरागयाप ग्रांभन्ते जीवे किं जणयह १। वी॰ नेहासुबन्य

क्षायरागयापं या मन्त जाव कि जर्मवर । विक नहायुक्त या विकास विकास । विकास विकास विकास । विकास विकास । विकास ।

सन्तीय ग्रंभन्ते जीवे किं जणयह?।स० परीसहे जिल्हा।४६०।

मुत्तीए गुं भन्ते जीवे किं खण्यह । मु० क्षकिषणं अण्यह । क्राकिषणे च जीवे क्रत्यलोलाण पुरिसाणं कपत्थणिग्यो मवह ॥४४॥

चाउद्ययाप् गुं भन्ते जीवे कि जलयह १। घ० काउउजुयरं भावुन्जुयर भासुन्जुयर चायसंगायण जलयह। घायसधायण सपम्राण् गुजीवे पम्मस्त खाराहण सपह ॥४न॥ उपिद्धमनसायेगं भन्त जाय कि जरायश् । उठ ब्रापितनय जरायश् । निरुपरिष् गु जीये निर्द्धारी उपिद्धमन्वरण् य न स्रिकितस्य ॥१४॥

षाहारपण्यमद्यायोग् भन्त जीने कि ज्ञायम् । बार जीर यासंस्त्रप्रभोगं योच्छि दृष्ट् । जीवियासंस्त्रप्रभोगं योच्छिन्दिश जीव थाहारमन्वरयां न संकितिसम् ॥३४॥

कमायपच्चवस्यायोग् अन्त जीवे कि जयवह?। क० यीवरागः मार्च वरापदः। वीवरागभाषपश्चित्रके वि य स्म जीवे समस्र पुक्के मधः।।३६॥

जोगपरपक्तायोयं मन्त जीवे कि जयायह १। जो० कवोग्स जयायह १ क्योगी या जीवे तथ कतमं न वाचह, पुम्यहर्द निकारेड ॥३७॥

सरीरपञ्चकारोग भन्ते जीव कि जणयह १। स० सिद्धार् सयगुणकिरण निष्यकेह । सिद्धाइसयगुणसंपन्ते य ग्री जीवे जोगगमुकार परमसुदी सवह ॥३८॥

सहायपण्यक्यायोगं मन्तं तीत्रं कि जाग्रवह १। स० एगीमार्वं जाग्रवह । ग्गीभाषम् १ वि य या तीवे एशक्तं मावेभागे अप्य सदे अप्पक्तंत्रे अप्पक्ताह् अप्पक्तार अप्यतुमनुमे संजनगहुने सवरवहुने समाहिए यावि सवह ॥१६॥

भत्तवष्वक्ताणेणं भन्ते जीवे कि जणयह १। २० आणेगाई भवसवाई निरुम्भइ ॥४०॥

सब्भावपदम्बाग्रेण भन्त जीव कि अख्यह ?। स० प्रान यहि जायह। प्रतियष्ट्रिपदिवन य अख्यार प्रचारि केविल कायसमाहारणयाए यां भन्ते जीवे कि जगयह ?। का० वरिर पश्चवे विसोहेह । चरिचपञ्चवे विसोहिचा बहन्स्वायचरिषं विसोहेह । कहन्स्वायचरिचं विसोहेचा चचारि केवलिकम्भसे स्रवेह । सको पच्छा सिशम्ब बुशम्ब मुबद परिनिच्यायह सम्बद्ध क्साणमन्त करेड ॥४८॥

नाणसपन्नयाप स्मन्ते कीवे कि वस्त्रवह?। ना० जीवे सन्यमाषाहिगमं वस्त्रवह! नास्त्रसपन्ने सं वीवे पारस्ते ससार फन्तारे न विस्त्रसह। वहा स्इ समुष्टा न विस्तरह इतहा वीषे समुष्टे संसारे न विस्त्रसह। नास्त्रविस्तर्यक्षेत्रे सपारस्त्रह, ससमयपरसमयविसारए य इतसपायिक्षेत्रवे भवद्र।। प्रशा

दंसणसपन्नयाए ग्रां भन्ते जीवे कि ज्ञायग्र १। दं भविम-ष्क्षचन्नेयग्रं करेइ, पर न विश्मन्नयइ। परं क्रविमन्नप्रमाणे अध्युत्तरेण नाण्वसणेगं अप्पाणं सजोपमाणे सम्भं भावेमाणे विहरङ 16011

चरित्तसंपन्नयाए ए मन्ते जीवे कि ज्ञायह १ । च० सेले सीभाव ज्ञायह । सेलेसि पश्चिवन्ते य व्यागारे चचारि केद-लिक्ष्मां से खवेह । तको पच्छा सिम्मह बुन्मह सुबह परि-निच्यायह सम्बद्धस्त्राणमन्त फरेह ॥६१॥

सोइन्दियनिमाहेखा भन्ते अपि कि जल्पाइ १। सो० मसुन्ना-मसुन्तेमु सहेसु रागदोसनिमाह जल्पाइ। वपबद्धं कन्म न बायइ, पुरुषस्द्रं प निग्नरेड ॥६२॥

महत्रवाष ए। भन्त जीवे कि जरायई १। म० प्रासुस्तिवर्त जलयह। ऋलुस्सियचेल जीच मिउमहबसपने बहु मयहास्वर निठ्रावद् ॥४६॥

भायसचेए भन्ते जीवे किं जणवह ?। भा० मावनिसीर्दि जण्यइ । भावविसोहिए यहमाणे जीवे बारहन्वपमतस धन्मस्य शाराहरायाप भन्मुहेइ। भरहन्तपन्नतस्य धन्मस्य भाराह्यायाय भन्सुट्टिचा परलोगधम्मस्य भाराह्य भवर् ॥४०॥

फरणसम्चेगां भन्ते जीवे किं जगयह १। क० करसर्सी अग्रयह। करग्रसरचे बद्दमाग्रे जीवे जहां वाई वहां कारी यार्वि भवद्य ॥५१॥

जोगस**दे**णं भन्ते जीवे कि जग्गय**द**? । जो०जोगं विसो**हेइ** ॥४२॥ मरागुच्याए रा। भन्ते जीवे किं जरायइ ? । म० लीवे स्मर्मा जग्गयह। पगमाचित्ते गां जीवे मग्गगुत्ते सजमाराह्य मवह॥४३॥

वयगुच्चयाए या भन्ते जीवे कि जगायह ? । व० निध्विवार्ष जगपड । निब्बियारे गु जीवे बड्गुचे बड्माएपजोगसाइगञ्जरे यावि विश्वरह ॥५४॥

कारगुक्तयाप रा मन्ते बीचे कि सखयह । का० संवरं जगमह । संबरेणं कायगचे पुर्णो पावासवनिरोहं करेह ॥४॥।

मणसमाहारणयाप यां मन्ते जीवे कि अणमह ?! म० एगमां जग्रयह । एगमां जग्रहचा नाग्यप्रकाये जग्रयह । नाग्यप्रकाये जगाइता सम्मत्तं विसोद्देह मिच्छत्त च निर्वरेह ॥४६॥ थयसमाहारणयाप भन्ते जीने कि अण्या १। व० वयसा इारखदस्याप्रवाचे विसोद्देश । नयसाहारखद्रस्याप्रवाचे विसोद्दिचा

सलहबोहियस निव्यसेह, बुह्हबबोहियस निव्यस्ह ॥३०॥

षीसइविह मोहणिशन कम्म राष्यर, पञ्चविह नायावरिण्डनं, नविह इं वस्यावरिण्डनं, पपविह धन्तराह्य, एए विभि धि धम्म सुन्तर कसिया पिंडपुर्यो निरावरिण विविध्तं त्रे विभि वि धम्म सुन्तर कसिया पिंडपुर्यो निरावरिण विविध्तं विद्युद्धं लोगालोगरपभाव केवलबरनाय-धम्य सुन्याबेह । जाव सजोगी भवह, ताव ईरियाविहय धम्म निवधह पुरुष्तरिस दुसमयिह्यं। त पद्धमसमय बद्ध, विश्वयसमय वेद्यं तद्वयसमय निद्याव्य, त बद्ध पुष्टुं विश्वरिय वेद्यं निद्याव्य सुन्य निद्याव्य सुन्तरिस विक्रम निद्य सुन्तरिस विक्रम निद्य सुन्तरिस विक्रम निद्याव्य सुन्तरिस विक्रम निद्य सुन्य सुन्तरिस विक्रम निद्य सुन्तरिस विक्रम निद्य सुन्तरिस विक्रम निद

णह धाउय पातक्षा धन्तोमुहुधत्वायधेसाय जोगितरीहं करेमायो मुहुमकिरियं धप्पविवादं मुक्कम्माण म्मयमायो तप्प दमयाप मण्जोग निकृत्यह, वह्नोगं निकृत्यह पायजोगं निकृत्यह स्माह धायपाणुनिरोह करेड इसिपचरहस्तक्यरणारणहाए य य ख्यागरे समुच्छिमकिरियं धनियदिमुक्कमार्थं मियाय मार्थे वेयशिक्ज धाउयं नाम गोत्तं च एए चत्तारि कृत्यंसे जुगर्यं स्रवेद्दाक्ष्याः

तको कोरालियतेयकम्माइ सन्याहि विप्यवह्णाहि विप्य-जिहेचा वक्तुकेदियने कफुसमायगद वह पगसमप्यां कविमा देया तत्य गन्ता सागरीवच्ते सिक्मइ वुक्मइ आय अन्त करेड् ।७३॥

पस सन्तु सम्भचपरकम्मस्स धनम्यणस्य भट्टे समयोग्यं भगषया महाधीरण् श्रापित्य पन्नषिए पर्सविए इसिए इयदं सिए।।ज्या।

॥ चि वेमि ॥ इषि सम्मर्च परकमे समत्ते ॥२६॥

पविस्तित्विताह्ण भ ते जीव कि जलवर् १। व॰ म्ह भामसुनेसु रुवेसु रागदोसनिगाह जलवर् । तलबर्य बन्मं न याधर, पुरुवर्य च निज्जर्द ॥६३॥

पाणित्य निमाहेण मन्ते जीवे कि अलयह १। पा० मस्ट मामस्ट नसु ग'धेसु रागरोसनिगाह जलयह, तत्पबहर्य कम्म व ब'पह, पुरुषयदे प निकारेह ॥६४॥

जिन्भिवियनिमाहेणं भन्ते जीन कि जलपह ! जि॰ मलुमामसुन्नेसु रथेसु रागवेसिनिमाह जलपह, तल्पवह कस्य

न य धर्म, पुरुषश्चरं च निकारेश ॥६४॥ पासिन्वियनिगाहेश मन्ते और कि अग्रवशः। प्रा० मण्ड कामणुक्तेसु पासेसु रागरोसनिगाहं जग्रवह, सण्वह्य

न व घर, पुम्बवर्स च निकार ॥६६॥ कोह विजण्या भन्ते जीवे कि जयपह १। को० सन्ति जयपर

कोहरेयियाज्ञ कम्म न बन्धइ पुरुषसद्धं च निज्जरेड ॥६७॥ माण्यविजयण भन्ते जीये कि अण्यदः १ मा० महर्व अण्यरः

मायावेबाण्डलं कम्म न बन्धह, पुरुषयद्धं च निरुत्रदेश । दिना। सायाविकारण भन्ते जीवे कि वरणयह १। मा० कारजवं

न्त्रण्यह। मायावेयाणुञ्जं कम्मं न वम्यह प्रस्ववर्धः प नित्रवेह॥६॥ क्रोभृविज्ञप्य मन्ते जीवे किं जणयह १। क्रो० संतोस

हामिवजप्या मन्त जाव कि जगयह १ । हो० संतोस जगयह, तो सबेयगिकज कस्म न व घड पुक्षवद च निक्रदेहाअली

पिज्ञदोसिमण्डापंसणिवजयणं भन्ते जीवे कि जणयही। पि० नाणर्वसण्यिरिणसाहण्यापं चन्युहेर। चहुविहस्स कन्म स्त कम्मगण्डिविमोयण्यापं वप्यडमयापं जहारपुरुबीए चहु

| वत्तराध्ययनसूत्र साध्ययनं २०                                                              | <b>? ? ?</b> |
|-------------------------------------------------------------------------------------------|--------------|
| भहवा सपरिकरमा, भपरिकरमा य भाहिया ।<br>नीहारिमनीहारी, भाहारच्छेओ होम्रु वि                 | ા <b>₹</b> આ |
| भोमोयरणं पंचहा, ममासर्गे विद्याहिय ।<br>रुखभो सेचकातेर्गं, भावेर्गं पत्नवेहि य            | संक्षा       |
| बो बस्त र बाहारो, रत्तो भोमं तु जो करे।<br>जहन्त्रेगोगसित्याई, पव दहवेगा ऊ भवे            | ॥१स्रा       |
| गामे नगरे तह रायहाणितिगमे य बागरे,पद्धी ।<br>स्रोडे कञ्चबरोणमुहपट्टणमदम्बर्धनाह्          | ।(१६॥        |
| मासमपप विहारे,सिन्नवेसे समायघोसे ग ।<br>यत्तिसेणासम्बारे, सत्ये संवहकोहे य                | ।(१७))       |
| वाडेसु व रत्थासु व, घरेसु वा एवमिचियं सेच ।<br>कप्पइ व एवमाइ एव स्रेचेश ऊ भवे             | सरमा         |
| रेडा य श्रद्धपेडा गोमुत्तिपर्यग्रधीड्या चेय ।<br>सम्बुकावद्वायगतुपद्मागया छटा             | ।।१६॥        |
| दिवसस्य पोरुसीयां, चरण्ड पि व जन्तियो भवे कालो ।<br>एवं चरमायो सन्नु, कालोमार्य सुयोयव्यं | ११२०॥        |
| षद्या वर्याप पोरिसीए, ऊलार घासमेसन्तो ।<br>वऊमागुलाप वा, एव कालेग ऊ भवे                   | ॥२१॥         |
| रस्यो वा पुरिसो वा, भ्रतंकिमो वा नलकिमो वाघि ।<br>भाग्यरवयन्यो वा भन्नयरेणं व वस्येणं     | ॥२२॥         |
| षन्तेण विसेसेणं, वर्ष्णेण भावमणुनुपन्ते र ।<br>एवं परमाणो सन्तु, मावोमाणं मुणेयन्य        | ાારફાા       |
| वन्य स्रेसे काले, आयम्मि य खाहिया व जे भाषा ।<br>एपहि बोमयरको, पद्मवषरको भवे भिक्स        | ११२४।        |

पाणिवहमुसावाया, अदत्तमेहुणपरिमाहा विरस्रो ।

राइमोयणविरको, जीवो भवइ कणासवो पंचसमित्रो विगुत्तो, शकसात्री जिङ्गन्दिको । भगारवो य निस्सही, जीवो होइ भणासवो

पर्श्स सु विववासे, रागदोससमक्षिय ।

खनेइ ए जहां मिन्छ दमेगमामग्री सुग्र जहां महावजायस्स, संभिरुद्धे जलागमे । रस्सिचयाप ववणाप, कमेर्य सोसया भवे

एवं तु संजयस्सावि, पावकम्मनिरासवे । भवकोडीसंजियं कम्मं तबसा निस्नरिकार

सो तवो दुविहो वृत्ती बाहिरस्मन्यरो सहा। बाहिरो इतिवही वृत्तो, प्रवमस्मन्त्ररो सबो

ब्रयस्याम्योगरिया, भिक्सायरिया य रसपरिवासी। कायकिसेसी संबीणया य मन्मी तवी होड

इन्हरिय मरग्रफाला य, व्ययसमा दुविहा सबे। इत्तरिय सावकंता, निरवकंता र विद्वस्तिया

जो सो इचरियसको, सो समासेय प्रश्नितो । चेंदितवो पगरतयो, पयो य तह होइ वस्तो म

तत्तो य धमावमी, पचमी झहुको पश्यणस्त्रो । मगाइच्छियचित्रस्यो, नायमो होइ इचरिक्रो

जा सा अयुसणा मरणे, दुविहा सा भियाहिया। सवियारमवियारा, फायचिट पर्र भवे

ntii

nati

П¥П

11211

וואוו

ग्रह्मा

ાાતા

11211

118811

सर्वेड् तवसा भिन्स्, तमेगगगमणी सुख

जहा र पाष्मं फर्म्म, रागदीससमज्जिय ।

| उत्तराभ्ययनसूत्र अभ्ययनं ३१                | १ <b>६</b> ४ |
|--------------------------------------------|--------------|
| एमं तमं दुविह, जे सम्म भायरे मुगी।         |              |
| सो खिप्प सन्वसंसारा, विष्पमुच्छ पविद्वज्ञो | ાારેગા       |
| ॥ वि वेमि ॥ इति तदमगां समस्य ॥३०॥          |              |
| —————————————————————————————————————      |              |
| परणविद्धिं पवस्स्नामि, जीवस्स उ सुहावहं ।  |              |
| ज परिचा बहु जीवा, विग्णा ससारसागर          | 11811        |
| एगओ विरा कुळा, एगओ य पवत्तर्ण ।            |              |
| असजमे नियति च, संजमे य पवचर्ण              | मसा          |
| रागरोसे य दो पावे, पावकम्मपवस्यो ।         |              |
| जे भिष्ट्यू रामई निच्चं, से न भड्छई मण्डले | П¥П          |
| दबाण गारवाग्रा च, सङ्गाण च वियं तियं।      |              |
| वे भिक्स चयइ निरुच से न अच्छाइ मण्डले      | 11811        |
| विष्यं य जे उवसगी, सहा तेरिच्छमाणु से ।    |              |
| जे भिक्स सहद्र निच्चं, से न अन्छद्र मण्डल  | ग्राथा       |
| विगद्दाकसायसन्नाण, माणाण प दुय वहा ।       |              |
| जे भिषस्य वश्वई निच्च, से न भच्छई मण्डले   | 11\$11       |
| षपसु इन्दियत्यसु, समिइसु किरियासु य ।      |              |
| ने भिन्त्यु जयई निच्य से न शब्द्धार मरहते  | livil        |
| लसासु इसु कापसु, इसे माहारकारणे।           |              |
| चे भिक्त् वर्ग्ड निच्चं, से न भच्छड़ मरहल  | 11=11        |
| पिएडोग्गह्पश्चिमासु, भयहाणेसु सचसु ।       |              |
|                                            |              |

वे भिष्का अग्रह निष्यं, से न अध्द्वह मण्डल

ાશા

| १६४                          | ीन मिद्धांत माला                                                                      |         |
|------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------|---------|
|                              | र्ग तु, वहा सत्तंय पसणा ।<br>जे भन्न, भिक्लायरियमादिया                                | וואפון  |
|                              | माइ, पर्गीय पाणभोयण ।<br>गर्ण हु, भणिय रसपिषच्चर्ण                                    | 115 €11 |
| उमा बहार्था                  | ग्राइया, अविस्स उ सुद्दायद्वा ।<br>रेण्यन्ति, फायक्तिसे तमाद्विय                      | ॥२८॥    |
| स्यगासग्रसे                  | र, १२थीपसुविवज्ञिष ।<br>।ण्या, विवित्तसयणासर्ण                                        | ॥रद्मा  |
| चिमन्तरं स                   | ववो, समाचेण वियाहिको ।<br>वं एतो, दुष्डामि क्यापुन्यसो                                | 11નથા   |
| मग्रए च विट                  | एडफो वयावण्य तदेव सबस्त्रको।<br>स्सम्मो पसो कविमन्तरो सबो<br>एईय, पावच्छितं सुवस्तिहं | II€€II  |
| जं भि <b>ष्</b> ख् <b>य</b>  | हरूपः पायाच्या तुष्सावह<br>ई सम्मं पायाच्छतः समाहियं<br>जिलकरणं, वहेवासग्रवायग्रां।   | 113811  |
| ्रुक्सचिभावः                 | प्रस्तुसा विग्रको एस विग्रहिको<br>ए, देगाववस्मि दसविहे।                               | ા(≹શા   |
| मासेषणं जा                   | त्रमाम, वेयावच्चं तमाहियं<br>या चेव, वहंच परिसङ्खा ।                                  | 113311  |
| असुप्पेहा धर<br>अट्टहर्हाण व | सम्बद्धाः, सञ्मत्रको पञ्चहाः सचे<br>विज्ञताः मत्रपञ्जाः सुसमाहिए ।                    | ॥३४॥    |
| = मार्गासणह                  | माणाई, माण वंतु पुदा वय<br>हाले वा, जे उभिष्युन वावरे।                                | ારૈશા   |
| कायस्य विष                   | स्समो बहो सो परिफिचियो                                                                | 113 €11 |

## ॥ मह पमायद्वारण वत्तीसङ्ग भक्तस्यरा ॥

भवन्तकालस्य समूलगस्य, सम्बस्स दुक्सस्स उ जो पमोक्सो । वं मासको से पहिपुरण्याचना, सुलेह एगन्तहिय हियत्यं नाग्रस्स सञ्चस्स पगासगाप श्रमाग्रमोहस्स विषञ्जगाप । रागस्य दोसस्य य सखप्या, एगन्त्रसोक्स समुवेद मोक्स 11511 वस्त्रेस मम्गो गरुविद्वसेषा. विवक्षणा षात्रजणस्य द्रा । सम्मायएगन्तनिसेषणा य सुत्तरथसिषन्त्रण्या पिइ य 11311 माहारमिच्छे मियमेसणिक्तं, सहायमिच्छे निउएत्यवृद्धि । निकेयमिच्छेज विवेगजोगा, समाहिकामे समग्रे तबस्सी न या समेद्या निउर्ण सहाय, गुणाहियं वा गुणुष्मो समं वा । फ्गो वि पावाइ विवज्जयन्तो विहरज्ञ कामेस असज्जमाणो ॥श। चेहा य अरहप्पमवा यतागा, अरहं वतागप्पभव बहा य । एमेष मोहाययण झ तरहा, मोह च वरहाययण वर्यान्त रागो य दोसो वि य कम्मबीय, कम्भ च मोहरूभवं वयस्ति । फर्म च जाइमरणस्य मृद्धा, दुक्स च जाइमरणं वयन्ति ।।।।। दुक्स हुयं बस्स न होइ मोहो मोहो हुको अस्म न होइ तरहा। वण्डा हमा बस्स न होइ लोहो, लोहो हमो जस्स न फिन्नए।ई ॥५॥ राग च दोसं च तहब मोह, उद्भुकामेण समृतवालं। जे जे उपाया पश्चिनाज्ञयम्मा, ते किलइस्सामि महासुपुर्हिय ॥धा रसा पगाम न निसेवियम्मा, पाय रसा दिश्विकरा नराए । ष्ति च मामा समभिद्वन्ति, दुम जहा साउपल य पक्सी ॥१०॥

| Ę | <b>जैन सिद्धां</b> त                    | मार्ल |
|---|-----------------------------------------|-------|
|   | ~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~ |       |

| मदेसु वन्भगृतीसु भियन्तुधन्मन्मि दसथिह ।                                            | . 4 - 11 |
|-------------------------------------------------------------------------------------|----------|
| जे भिक्ख अथइ नियं, से न श्रन्त्र मण्डले                                             | Holl     |
| उवासगाण परिमासु, भिषस्तूण परिमासु य ।                                               |          |
| जे भिष्म् जयई निरुवं, से न भन्छई मयहते                                              | 1[44][   |
| किरियासु भूयगामेसु, परमाहिम्मएसु य ।                                                |          |
| जे भिक्स जेयह निष्य, से न भष्यह मरहते                                               | ॥१२॥     |
| गाहासोलसपहि, तहा असजमन्मि य ।                                                       | 411      |
| जे भिक्स जयई निरुच से न मस्द्रह मरहते                                               | 1 8311   |
| वस्मस्मि नायक्क्ययोसु, ठायोसु य समाहिए ।                                            |          |
| जे भिष्रसू जयह निष, से न सम्झह मण्डले                                               | 118811   |
| पगवीसाप सबले, वाबीसाप परीसहै।                                                       | - 11     |
| जे निक्स जयई निरुष, से न घरछाइ मण्डले                                               | Máxij    |
| तेषीसार स्यगढे स्वाहिएस सुरेस य।                                                    |          |
| जे भिक्स अवर्ध निक्षं से न अच्छा मण्डले                                             | 11581    |
| प्रमुक्षीसभावणासु, उद्देसु वसाइण ।                                                  |          |
| जे भिक्स जगई निक्य से न अच्छाइ मरहते                                                | Healt    |
| भ्रामारगुणेहिं च, पगप्पस्मि सहेव य ।                                                |          |
| ज भिष्त्य जयई निष्यं से न भारतह मगहले                                               | 118=11   |
| पावसुयपसगेसु मोहठाणेसु चेन य।                                                       |          |
| जे भिनस्य जयई निष्णं से न अध्या मरहले<br>सिदाइग्याजीमेसु तेचीसासाययासु य ।          | 114511   |
| सिद्धाइनुयाजागञ्च तत्तासाययासुयः ।<br>स्रो भिक्स् अयाई निक्नं, से न भक्त्युह मण्डले |          |
| इय एएमु ठाणेमु, के भिन्त्य जयह स्या।                                                | ॥२०॥     |
| इय व्यम् असम् अ । मार्यु अन्य स्पा                                                  |          |

खिए सो सम्बससारा दिलमुख्य परिस्थो

॥ (च नेमि ॥ इति घरणविदी समचा ॥३१॥

गदशा

रूपस्स चक्ख् गहुरा वयन्ति, चक्ख्रस्स रूप गहुरा वयन्ति। यगस्य हेच समग्रन्नमाह, दोसस्य हेच भ्रमग्रन्नमाह रुनेसु जो गोहेमुनेष्ट तिव्यं, अकाश्विय पायह से विणासं । रागावरे से जह वा पयने, ब्यालीयलीले समुवेद मण्डु ने यावि दोसं समुवेद विठव, तसि क्सणे से र उनेद दुन्सं। इरन्वरोसेण सएण जातू, न फिक्कि रूव भवरमाई से וואַרוו पान्तरचे स्इरसि हुने **म**तान्तिसे से कुगाई पछोस। दुक्सस्स सम्पीतमुबद्ध याले, न लिप्पई तेण मुखी विरागो ॥२६॥ रूपासुगासासुगए य जीवे, चराचरे हिंसइ स्रोगरुव । चित्रेहि ते परिवावेह वाले, पीलेह अचहगुरू फिलिटे गरदा रूवाणुवाएण परिमाद्देण, चप्पायणे रक्खणसन्तियोगे । वप विद्योगे य कह सुद्द से, सम्भोगदाले य धारित्तलाभे ॥२३॥ रूपे श्रवित्ते य परिगाहन्मि, सत्तोवसत्तो न दवेइ तृष्टिं । षतुहिदोसेण दुही परस्स कोभाविले घाययई भदत विष्हामिम्यस्स अवसङ्गारियो रूवे अविवस्स परिमाइ य । मायामुसं बहुइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुक्त से ॥३०॥ मोसस्स पच्छा य पुरत्यक्षो य, पयोगकाले य दुही दुरनी । एक अद्चाणि समाययन्त्रो, रूवे अतिको दुष्ट्रियो अणिस्सो॥३१॥ रूपाणुरत्तस्स नरस्स एवं कुत्तो सुद्दं होळा कगाइ किब्रिटा। रत्योवभोगे वि फिलेसदुन्खं, निव्यत्तई वस्त रूएण दुन्छ॥३२॥ पमेव रूयन्मि गद्मो पद्मोस, उदेश दुन्छोहरपरपराद्मो । पदुठुविचो य चिएाइ कम्म ज से पुर्णो होइ दुई विदागे ॥३३॥ रूवे विरस्तो महास्रो विसोगो, एएए दुक्खोइपरंपरए । न लिप्पद भवमग्मे वि सन्तो, बलेख या पोषखरिखी प्लासं ॥ ४ बहा त्यमा पर्वार घरो वरो, समारुष्टो नोयसर्ग उवह । पविन्दियमी वि पगामभो ह्णा,न धन्मया रस्स हियाय इस्सई॥११।

विधित्तराज्ञासण्जितियाणं, भ्रोमासणाणं दमिइन्द्रियाणं। न रागसत्त् धरिसेइ चित्त, पराइम्रो बाहिरिनोसहहिं

118311 जहा विराजायसहरस मृजे, न मूसगाण घसही पसत्था । एमेय इत्यीनिक्रयस्स मश्मे, न घम्भयारिस्स खमी निवासी ॥१॥

न रूवज्ञावरण्विसासहासं न जपिय इगियपेहिय वा।

इत्यीण चित्तसि निवेसइत्ता, दहुं वयस्ये समणे तवस्सी ॥१४॥ भवंसमां चेव भपत्थमां च, श्रविन्तमा चेव भक्तिमा च । इत्यीजगुस्सारियम्ब्रगुजुमां हियं सया वस्भवए रयाण

काम तुद्वीहिं विभृसियाहिं न चाइया स्रोमइङ तिगृत्ता । तहा वि एगन्तहिय ति न**वा विवित्त**वासो सुणिए पसत्यो ॥१६॥ मोक्खाभिकंजिस्स च माण्यस्स, संसारभीरस्स ठियस्स धम्मं ।

नेपारिमं दुत्तरमात्य लोए, जहित्यको वालमणोहराको वर य समे समइक्रमिशा, सुदुत्तरा चेष भवन्ति सेसा । जहा महासागरमुचरिचा, नई भने भनि गङ्गासमाणा कामाणुगिद्धिप्पभवं स्रु दुवस, सञ्चस्त क्रोगस्स सदेवगस्स ।

वे काइयं मार्गासयं च किथि वस्तन्तग गच्छइ वीयरागी ॥१६॥ बहा य किम्पागफला मणोरमा रखेण वण्णोण य भ्वत्रमाणा। तं सक्ष जीविय प्रमाणा, एक्सोबमा फामगुणा विवासे

के इन्दियाए विसया मरामा, न तसु भाष निक्तिरे प्रयाह । न यामणु नेसु मण पि कुण्जा, समाहिकाम समणे सबस्ती ॥२१॥ चरुक्तस्त रूव गहण वयन्ति, सं रागद्वतंतु मणुझमातु । क दोसहुउ ध्रमणुप्तमाहु, समी य वो तसु स धीयरागी

115511

सरे विरसो मणुको विसोगो ६एए दुन्सोइपरपरेए। न शिप्पए भवमरुके विसन्तो, जनेण वा पोक्खरिणीपन्नास ॥४५॥ षायस्स गन्धं गहुण वयन्ति, त रागहेर्चं तु मराज्ञमाहु । व दोसहेरं भमणुनमाह, समो य जो तेसु स बीयरागी ॥४५॥ गन्यस्स घाण गहुणुं चयन्ति, घाणस्स ग घं गहुण वयन्ति । रागस्स देव समग्रुममाह, दोसस्स देव समग्रुममाह IISFII गन्धेसु जो गिद्धिसुबेद् तिब्ब, झकालियं पायद से विणास ! रागाउरे मोसहगन्यगिद्धे, सप्पे विज्ञामो विव निक्लमन्ते ॥४०॥ जे यावि दोस समुबेह तिज्ब, तंसि क्सणे से उ उपेह दुक्स। दुरन्तदोस्रेण सएण जन्त, न किंचि गार्ध भवरुग्मई से ॥४१॥ णान्वरते रहरसि गन्धे, भवानिसे से कुण्ई पमीस । उपसस्स संपीलमुदेइ वाले, न क्रिपई तेण मुखी विरागी ॥४२॥ ग धाणुगासाणुगए य जीवे, चरावरे हिंसइऽऐगरुवे । विचेहिं ते परिवावेइ वाले, पीलेइ अवहगुरु किलिहे וו≨עוו गन्याणुबाएण परिगाद्देण चव्यायणे रस्वणसन्निद्योगे। दए विभोगे य इह सुहं से, सभोगकाले य भवित्रलामे 118811 गन्धे भवित्त य परिमाहन्मि, सत्तोषसत्तो न उवद् तुर्हि । मतुट्टियोसेण दुदी परस्स, होभाषिले मायगइ मन्तं 112311 वस्त्रामिभ्यस्य सव्तक्तारियो, गन्धे सवित्तस्य परिगाइ य । मायामुसं बहुइ लोमवोसा वत्थावि दुक्ला न विमुद्दइ से ॥१६॥ भोसस पच्छा य पुरस्थको य, पक्रोगकाले य दुई। दुरन्ते । एव भवताण समाययन्तो ग घे भवित्तो दुहिमो भणिस्सो॥ku॥ गन्धाणुरश्वस्स नरस्स २४ इन्तो सुई होज्ञ कयाशकिंघि। वस्थोषभोगे वि किन्नेसदुक्खं, निञ्चतद् उस्स क्ष्रण दुक्सं ॥१८॥

सोयस्स सहं गहण वयन्ति, व रागहुर्वं तु मणुनमाहु । तं दोसहेच भमगुन्नमाह, समो य जो तेस स वीयरागो 113201 सहस्स सोयं गहरा वयन्ति, सोयस्स सहं गहरां वयन्ति। रागस्त हेर्ड समगुनमाहु, वोसस्त हेर बामगुनमाहु 11391 सहेसु जो गिद्धिसुवेइ विन्यं, अकालियं पावइ से विगासं। रागावरे हरियामिंगे व मुद्रे, सहे अतिते समुवेद मण्णु ||tell जे याबि दोसं समुवेद विस्थ, वंसि क्लगों से उ उवेद दुम्लं ! दुइन्तवोसेण सएण जन्म, न किञ्चि सइ अवरुग्मई से ॥३८॥ एगन्तरत्ते रहरसि सदे, अवालिसे से इगाई पद्मीसं। तुक्सस्स सम्पीलमुबेइ वाले, न लिपाई तेगा मुग्री विरागो ।।३६॥ सदारपुराासारपुराय य अवि चराचरे हिंसइऽयोगरूचे । विसेंद्रि ते परिवाधेइ बाले, पीलेइ अवहगुरू किलिडे મજના सदाखुवाएय परिगाद्देश स्पायस रक्क्ससमिक्रोगे। वप विकारों य कह सुई से संभोगकाले य कावितालामें nstii सद्दे भवित्ते य परिमाहस्मि, सत्तोषसत्तो न उथेइ सुद्धि । बातुद्विदोसेण बुद्दी परस्त सोमाविले बायगई बाव्चं મજરા तरहामिम्यस्स अवत्तहारियो, सह अवित्तस्स परिमाहे य । मायामुसं बहुइ लोभवोसा तत्यावि तुषस्ता न विमुचई थे ॥४३॥ मोसस्स पण्डा य पुरस्थको य, पक्षोगकाले य दुई। दुरन्ते। एवं मदत्ताणि समाययन्तो सद्दे मवित्तो तुद्दीमो मणिस्सो ॥४४॥ सदागुरत्तस्य नरस्य एवं, कत्तो सुदं होन्त फयाइ किंचि । तत्योषमोगे वि किलेसदुक्यं निक्यत्तई जत्स कप्या दुक्यं ॥४॥ पमेब सहस्मि गमी पश्रीसं, उनह दुक्सीहपरंपराची । पतुरुभित्तो य भिणाइ कम्मं, न से पुणो होइ दुह विवागे ॥४६॥

रसागुरसस्स नरस्स एवं, कत्तो सुष्ठ होज्ञ कयाइ विनि । षत्थोवभोगे वि किलेसदुक्स, निव्यत्तइ जस्त कृणग् दुक्यं ॥७१॥ एमेव रसम्मि गच्चो पद्मोस, उवेइ दुक्त्योहपरंपरा भो। पदुदृषिचो य चिए। इ. कम्मं, च से पुराो हो इ. दुहं विवारे ।।७२॥ रसे विरसो मसुस्रो विसोगो, परसा दुक्सोहपरपरेसा । न किपाइ भवमनमे वि सन्तो, जनेग वा पोक्सरिगीपनास॥७३॥

भागरस पासं गहरां वयन्ति त रागद्द तु मराप्रमाहु । व दोसहेर अम्यु ममाहु, समी य जो तेसु स धीयरागी [[७८]] भासरम कार्य गहुरण वयन्ति, कायरस कार्म गहुरण वयति । रागस्स हेउ समगुजमाहु, दोसस्स हेर्ड समगुजमाहु । ৩খা। क्षिशी

प्रसेसु को गिढिमुनइ तिन्य, ऋकालिय पायइ से विग्णासं । रागाउर सीयज्ञवाबसन्ते, गाह्मिहीए महिसे विवन्त षे यावि दोसं समुवेइ तिरुव, विस यस्त्रयों से उ उवेइ दुक्स्नं । दुरन्दरोसेण सएण जातु, न किंचि प्यसं अवस्त्रकाई से फान्तरचे न्यूरंसि फासे, जताजिसे से कुणई पद्मोसं।

llooli ાહિઓ ष्ट्रसाणुवापण परिगाहण, उपायणे रक्सणसिक्सोगे । 115011

दुम्सम्म सपीलमुबंइ वाले, न लिप्पई तेगा मुगी विरागो ॥७५॥ धसाणुगसाणुगए व जीव, चरावरे ्सिंग्डणेगरूवे । षिचेहि ते परितावेद थाले, पीलेद अचटुगुरू किलिट्टे षप विद्योगे य कहं सुहं से, संभोगकाते य व्यतिसलामे भारे प्रतिते य परिगाह्मा, सत्तोवसत्तो न उनेइ तुर्हि । ष्यतुद्धिदोसेण दुद्दी परस्स, लोभाविले भाययई भदत्त ग्रन्था

वण्हाभिभूयस्य अवत्तहारियो कासे अवित्तस्य परिमाह य ।

मायामुसं वहुइ लोभदोसा, बत्थावि दुक्का न विमुष्ट से । म ॥

एमेय ग धम्म गम्भो पमोसं, वर्षे इ वुक्सोहपरंपरामो । पबुद्वचित्तो य नियाइ करम, ज से पुरा होइ दुह दिवारे ॥धः॥ ग धे विरत्तो मराको विसोगो, एरा बुक्सोहपरपरण। न जिप्पइ भयमभ्मे वि स तो, जलगा वा पोरस्तरिगीपलासं ॥६०॥ जिच्माए रसं गहुएं वय न्त, तं रागहुत तु भराननमाहु । त दोसहर समगुन्नमाह, समो य जो तेस स वीयरागी रसस्स जिब्भ गृह्यां ष्यति, जिन्माए रसं गृहुण वयन्ति । रागस्त इंड समगुन्नमाहु, दोसस्त इंड ब्रमगुनमाहु रचेसु जो गिक्सिकेइ विषय अकालिय पायह से विगासं। रागावरे विक्सविभिन्तकाए, मच्छे जहा चामिसभोगगिद्धे ॥६१॥ अ यावि दोसं समुवेद विव्य, तंसि क्सएं) से उ उवेद तुक्तं।

तुरन्तरोसेण सपण जातू न किथि रस क्षयरम्मह से ॥१४॥ पगन्तरस रहरास रसे अतालिसे से कुणई पद्मोस।

दुक्छस्म संपीलसुषइ वाले न लिप्पई तेस सुसी विरागो ॥६४॥ रसासुनासासुनप य जीव, पराचर दिसंइऽसेनक्वे। चित्तेद्वि ते परिवायश्यास पीलंश् चत्तुरुगुरू कित्ते हु

रसासुवाएस परिमाइस, उत्पायसे रक्तसस्त्रिकोरे। 115611 वए विकोगे य कहं सुद्द से संभोगकाल य कवित्रलाभे रस प्रतित्ते य परिमाइम्मि सत्तोबसत्तो न उवह तुर्हि। nfull भतुद्विदासेण दुद्दी परस्स लोभाविल भाययहै भद्ध वण्हाभिम्यस्स भवसहारियो रसे भवित्रस्स परिमाइ य । ₩€록Ⅱ मायामुसं बहुद लोभरोसा, वत्थापि दुषसा न पिमुबद से ॥६६॥ मोसस्य पच्या य पुरायको य, प्रकासकाल य द्वही दुरन्त ।

वय भदत्ता य समाययन्तो रखे प्रतिचा अहिया ना

वर्षाभिभूवस्य भवत्तहारिगो, भावे भवित्तस्स परिगाहे य । मायामुस वर्द्द लोभदोमा, तत्थाचि दुनसा न विमुद्द से ॥६४॥ मोसस्स पच्छा य पुरत्यको य, पक्षोगकाले य दुही दुरन्ते । प्य भवताणि समाययन्तो, भावे अवित्तो दुहिओ अधिस्तो॥६६॥ भाषासुरत्तस्स नरस्स एव, फत्तो सुद्द होज्ञ फयाइ किंचि । क्षोवभोगे वि किलेसदुक्सं, निव्यत्तई अस्स स्पण दुक्स ॥ १७॥ प्मेव भावन्मि गद्यो पद्योसं, उतेइ तुक्सोहपरंपराको । <sup>9</sup>दुहिषसो य चिगाइ करमं, ज से पुणो होइ दुहं विवागे ॥धना। भाव विरक्षो मणुष्यो विसोगो, एएए दुक्सोहपरंपरेण । न तिप्पई भवमम्मे यि सन्तो, जलेख वा पोम्सरिखीयतास ॥६६॥ पिनित्यस्या य मणुरसा बारया, दुनस्यस्य हेउ मणुबरस रागिणो । ते चेव योव पि कयाइ दुक्खं, न वीयरागस्य करन्ति किंचि ॥१०० न हामभोगा समयं उवेन्ति, न याचि मोगा विगई उवन्ति । वे रूपकोसी य परिगाही य, सो तेस मोहा विगइ उनेइ ॥१०१॥ कोइ च माण च तहेव माय, लोइ दुगच्छ बरई रई च । II \$2211 रास मयं सोगपुमित्थिवेयं, नपुसर्वयं विविद्दे य भाष यापरवर्द एयमग्रोगस्ते, एवविद् कामगृग्रोस् सत्तो । मन्ने य प्राप्यभवे विसेसे, कारण्यादीयों हिरिस वहस्से ॥१०२॥ **४**ण न इच्छिक्त सहायतिच्छु परद्वासुतावे स सठ६णमार्य । ए वियारे समियणहारे, सायग्जह इन्दियमोरपस्ये वेषो से जायन्ति पद्मोयणाइ, निर्माश्त्रतं मोहमहरणायम्मि । सुरसियो दुरस्यवियोयण्डा तत्पवयं उञ्जमए य रागी ॥१०४॥ षिरस्जमाणुस्स य इन्द्रियस्था, स्हाइया सायह्यप्पगारा । ने तरस सब्दे वि मशुभयं या निब्यतय ती भ्रमशुभय वा ॥१०६॥ \$og

मोसस्स पच्छा य पुरस्थको य, पन्नोगकाले य,वुही दुएन्ते। एव भवताणि समाययन्तो, पासे मवित्तो दृहिमो मणिस्सो॥५३॥ फासाखुरचस्स नरस्स एवं, फसो सुद्दं होज कवाइ किंचि। वत्योवभोगेषि किलेसदुक्सं, निव्यत्तक् जस्स कप्ण दुक्सं ॥५४॥

एमेव फासम्मि गच्चो पच्चोसं, उनेइ दुक्सोहपरपराच्चो । पदुट्टचिचो य चिएगइ कम्मं, ज से पुणो होई दुई विवागे ॥८॥ प्रसे बिरचो मसुको विसोगो, एएस दुक्खोहपरपरेस ।

न किप्पई सवसरके पि सन्तो, जनेगा वा पोक्सरिगीपन्नासं॥८६॥ मग्रस्स भाषं गङ्ग्ण वयन्ति, तं रागहेच तु मग्रुनामाहु। तं दोसहचं भमगुभमाहु, समो य जो तेसु स भीयरागी 민국에

भावस्स मण गह्रग् वयन्ति मणस्स भावं गह्र्ण वयन्ति । रागस्स द्वेच समग्रुष्नमाहु, दोसस्स द्वेच श्रवसुश्ममाहु

마다 भावेसु जो गिद्धिमुम्ह विन्वं, भक्तांतियं पावह से विखासी। रागाडरे कामगुणेसु गिद्धे, करेखुमगाविद्धेए गर्जे वा जे यावि दोसं समुवद् विक्वं, वसि क्सणे से च उपेद वुक्सं। USU

दुइन्तदासेया सएया जातू, न किंचि भावं झदरुवमई से ॥६०॥ एगन्वरचे रहरांस भागे, भवालिसे से कुणह पश्चीस । दुक्लस्स सं रीलमुधइ वालं न लिप्पई तेया मुखी विरागी ॥ १ ॥

भावासारामास्य य जीवे परापरे हिंसइऽयोगहरे।

चिर्चीह ते परिसानेइ वालं, पीलेइ असहुगुरू किलिहे भावासुबाएस परिमाह्य, ज्लायसे रक्तसस्विकोरी। IIF ATI

वर विद्यारों य कहें सुद्दें से, सभीगदाले य अविद्यक्ताभे 118,311

भावे बातचे य परिमाहामा, सचीयसची न उपेइ सुद्धि । अतदिकासेण दुही परस्त, स्रोभाषित आयगह अवस 118311

| उत्तराध्ययनसूत्रं स्रध्ययनं ३३             | १७७      |
|--------------------------------------------|----------|
| पन्सुमचक्स्भोहिस्स, दसर्गे फेवले य आवर्गे। |          |
| एवं तु नविषगेप्प, नायव्व दंसणावरण          | 11411    |
| वेयणीयं पि य दुविहं, सायमसायं च माहिय ।    |          |
| 🖳 स्स र बहू भेया, एमेव ब्यसायस्स वि        | ાષ્ટ્રા  |
| प्यम्बं पि दुविहं, दंसग्रे चरग्रे तहा।     |          |
| ये तिविद्दं वृत्त, चरणे दुविद्दं भवे       | 미디       |
| नत्त चेव मिच्छत्तं, सम्मामिच्छत्तमेव य ।   |          |
| मो तिमि पयत्रीमो, मोइणिजस्स दंसर्थे        | [14]     |
| समोह्या फन्मं, दुविहं तं वियाहियं।         |          |
| गयमोहिणुक्सं तु, नोकसायं तहेष य            | ॥१०॥     |
| नसविहभेषणं, कम्म तु कसायज ।                |          |
| अविद् नवविद्वं वा, कम्म च नोकसायनं         | 118411   |
| रयितरिक्छार्व, मसुस्सार तद्देव य ।         |          |
| ावयं चक्दयं तु, आचं कम्मं चचव्विहं         | ાષ્ટ્રસા |
| मं कम्मं तु दुविहं, सुहमसुह च माहियं।      |          |
| मस्त र षह् भेया, एमेव ब्यमुहस्स वि         | गश्शा    |
| त्य फम्मं दुविहें, दबं नीय च भाहियं।       |          |
| वं भठ्ठविह होइ, एव नीयं पि चाहियं          | 116811   |
| ये जाने य भोगे य, उबमोगे वीरिए तहा।        |          |
| श्रविहमन्तराय, समासेण वियाहिय              | ારમા     |
| गभो मूलपयशीको, उत्तराको य भाहिया।          |          |
| सिमा लेचकाले य, भावं च एतर सुण             | 118411   |
| सब्बेसि चेव फन्मार्ग, प्रथसमामग्रन्तर्ग ।  |          |
| गण्डियसत्ताईयं अन्तो सिद्धाण आहियं         | ।।१७॥    |

षष स संफणविकणगास्, सजायई समयमुवद्वियस्स। षत्य बसंकणयश्रो तथा से, पहीयए कामगुणेसु वगहा ॥१००॥ म धीयरागो कयसन्धिकचो, सर्वेश नागावरण सर्गोण । वहंच जं दंसग्रमावरेष्ट्र, ज चन्तराय पकरष्ट् फर्मा मञ्च तको जासइ पासस य, अमोहरी होइ निरन्तराए। भणासचे मत्रणसमाहिजुसे, भाउनसम् मोक्समुचेइ सुद्धे ॥१०॥ सो तस्स सम्बन्स दुइस्स मुक्तो, खं वाहर्इ सययं बन्तुमेयं ।

वीडामयं विष्यमुक्को पसत्यो चो होइ सम्बन्तसुदी क्यत्यो ॥११०॥

ष्ट्रकाहकालप्रभवस्म एसो, सञ्चस्स तुक्स्तस्स पमो<del>क्स</del>मस्यो । वियाहिको जं समुदिब सत्ता, कमेग्र अवन्तमही भवन्ति ॥१११॥ ।। चि बेसि ॥ इति पमामहास समस ॥३२॥

।। भइ कम्मप्ययची तेचीसहम अज्यत्यर्ग ॥

नामकरमां च गोय च कान्तराय सहेव य। एषमेयाइ कम्माई ऋहेष उसमासको

नाणायरणं पंचिषदं, सुर्यं भाभिणियोहियं। कोहिनायां च वहर्य, मणनायां च केवलं

बह कम्माइं वोच्छामि, प्रास्पुपुर्तिव जहाकमं। जेहिं बद्धो भर्य जीवो, ससार परिवट्टई H \$11 नाग्यस्मावरिगम्भं, दंसग्रावरम् दहा । वेयाणि ज तहा मोहं, भारकम्मं तहेव य IIRII

11711

11811

11211

निहा तहव पयला, निहानिहा पयलपयला य । तशे य धीणगित्री उ. पंपमाहो इ नायस्या

| <del>एसराध्ययनसूत्रं ऋध्ययनं ३३</del>           | 8aa      |
|-------------------------------------------------|----------|
| चक्लुमचक्लु बोहिस्स, इंसग्रे फेवले य आवर्ग्ये । |          |
| प्षं तु नवविगप्पं, नायठव दंसणावरणं              | 1150     |
| ्रवेष्रणीयं पि य दुविहं, सायमसार्यं च बाहिय ।   |          |
| - स्स र बहु भेया, पमेष असायस्स वि               | ાખા      |
| णिक्जं पि दुविहं, इंसणे चरणे वहा।               |          |
| णे विविद्द वृत्त, चरणे दुविद्दं भवे             | 비디       |
| वस चेव मिच्छ्न्चं, सन्मामिच्क्र्समेष य ।        |          |
| यो तिमि पयडीयो, मोहिशाखस्स एंसगी                | 11411    |
| त्तमोहर्ग कम्मं, दुविहं तं वियाहियं ।           |          |
| गयमोहणिक्वं तु, नोकसायं तहेष य                  | 114011   |
| जसविहभेष्यां, <del>फर</del> ्मां तु कसायजं ।    |          |
| धिषद्द नवविद्दं था, कम्म च नोकसायज              | 118811   |
| द्वयतिरिक्सार, मगुस्तार तहेय य ।                |          |
| षावयं चरुत्यं तु, बाएं कम्मं चडव्यिहं           | ાષ્ટ્રશા |
| मं कम्मं तु दुविहं, सुहमसुह च माहियं।           |          |
| भस्स र बहु भेया, एमेव ब्यमुहस्स वि              | ॥१३॥     |
| ाय फर्म्स पुषिहं, छवं नीय च बाहियं।             |          |
| वं अठुविहं होइ, एव नीयं पि आहियं                | ॥१४॥     |
| यो सामे य मोगे य, उपभोगे वीरिए तहा।             |          |
| धिवहमन्तरायं, समासेण वियाहिय                    | ।(१४॥    |
| पाको मूलपयडीको, उत्तराको य काहिया।              |          |
| रसम्मं सेचकाते य, भावं च क्तरं सुण              | 118411   |
| सब्बेसि चेय फ्रमार्या, प्रथसमामणन्त्रा ।        |          |
| गण्ठियसचाईयं भन्दो सिद्धाया भाहियं              | ।।१७॥    |

पव स संकप्ययिकप्पणास, सजायई समयमुषट्टियस्स । भत्य सर्सकपयको तस्रो से, पहीयए कामगुर्णेस तरहा ॥ 🕬 म बीयरागो क्यमब्बक्कियो, सर्वद्र नाणावरए। खखेण । तहेष जं दसग्रमाषरेड, ज धन्तराय पकरड कम्मं

म॰व तको आगुइ पासए य, क्रमोहुगो होइ निरन्तराए। भणासवे माणसमाहिज् से, भाउक्सप मोक्सम्बेद सुद्धे ॥१०॥ सो सस्त सम्बन्धस दुइस्स सुको, अं बाहर्इ सययं अन्तुमेयं ।

वीहामयं विष्यमुक्को पसत्यो तो होइ अवन्तसुदी क्यत्यो ॥११०॥ ष्मणाइकालव्यमयस्स एसो, सञ्चस्स तुक्खस्स प्रमो<del>दस्</del>मारागे । वियाहिको जं समुविब सका, फरेगा व्यवन्तमुही सवन्ति ॥१९१॥

।। ति बेमि ॥ इति १मायहाण समर्त्तं ॥३२॥

॥ भह फम्मप्ययंडी तेचीसहम अज्यक्ष्यया ॥

चह कम्माई बोन्छामि, आसुपुर्तिव जहाकमं। जेहिं बद्धो कर्य क्षीबो, ससार परिवहर्ड नागस्सावरिक्जं, वृंसणावरम् सहा ।

वेयणिण्यं तहा मोहं भाउकम्मं तहेम य 11311 नामकम्म प गोर्य प, म तरायं सहेम य । एवमेयाइ कन्माई, बहुष उ समासंबो

11311 नाणावरणं पंचविद्दं, सुर्यं माभिणिवोहियं। कोहिनाण प वश्यं, मणनाणं प केवलं

Htil

11811

क्को य धीक्षित्वी उ, पंपमाहोह नायस्या 112/1

निहा वहव पयला, निहानिहा पयलपयला य ।

118011

118 811

॥१२॥

ायमोहिण्डिकं हु, नोकसायं सहेष य

त्रसविद्दभेषणं, कम्मं तु कसायजं । विद्द नवविद्दं था, कम्मं च नोकसायजं

३ तिगिष्मारं, मसुरक्षाचं हुन् क ्र भावं कर्

एव स सकप्रविकृप्यगास्, संजायई समयमुषद्वियस्स ! भत्य असकप्यको तका से, पहीयए कामगुर्येस तरहा ॥१००॥ म वीयरागो फयसम्बक्तिको, सर्वद्द नाखावरः। सर्वोण । वहेव ज दंसग्रमायरेइ, ज चन्तरायं पकरेइ फर्मा 비원하다 मध्यं तको जासद पासए य, अमोहरा होइ निरन्तराए। श्र्यासने म्यणसमाहिजुत्ते, श्राटक्सए मोक्समुनेइ सुद्धे ॥१०॥ सो तस्स सन्वस्स बुहस्स मुको जं वाहर्षः सययं बन्सुमेयं । दीहामयं विष्यमुक्तो पसत्यो, तो होइ भवन्तसुही स्वयत्यो ॥११० ष्रगाइकालप्रभवस्म **ए**सो, सञ्चस्स दु<del>बस्यस्स</del> प्रमो<del>वस्त्र</del>मस्रो । वियाहिको ज समुविव सत्ता, करेण अवन्तमुही मवन्ति ॥१

।। ति वेमि ॥ इति पमायहास समत्त ॥३२॥

।। भह फम्मप्पयन्ती तेचीसङ्गम भज्यस्यग् ॥

बह कम्माई योन्छामि, आसुपुटिव जहाकम । जेहिं बद्धो अर्थ जीवो, ससार परिषद्ध नागस्सावरिगम्भं, दंसगावरगं वहा।

वेर्याणक्त्रं तहा मोर्ड भारफम्मं तहेम य नामकम्म च गोय च, भन्तराय सक्षेत्र य । एक्मेयाइ कम्माइ, बहुव उ समासची

नाणावरणं पंचविद्द, सुर्वं चाभिणिवोद्दियं। बोहिनाण प वहर्य, मणनाणं प केवलं निहा तह्य पयन्ना, निहानिहा पयनप्रयन्ना य ।

तको य भीकुगिद्धी च, पंपमाहोइ नायस्या

ווצוו

ાસા

11311

11811



पथ स संफणविकल्पणास्, संजायई समयमुषट्टियस्स।

भत्य भसकप्पयभो तस्रो से, पहीयप कामगुणेस ववहा ॥१००॥ स वीयरागो फयमब्बक्षियो, स्रवेश नाणावरण खणेण । तहेव जं दसगमावरेइ, ज चन्तरायं पकरइ कम्मं 비원이다 सन्धं तको जागाइ पासए य, क्रमोहरों होइ निरन्तराए। श्रणासने भाणसमाहिजुत्ते, श्रायक्तप मोक्समुनेइ सुद्धे ॥१०॥ सो सस्स सङ्बस्स दुइस्स मुक्को जं वाहर्इ सययं जन्तुमेर्य । दीहामय विष्यमुक्को पसत्यो, वो होइ अवन्तमुही क्यत्यो ॥११०॥ ष्यगाइकालपमवस्स एसो, सञ्यस्स दुक्खस्स पमोक्स्वममो ।

वियाहिको ज समुनिक संसा, फर्नेस कवन्तमुही मवन्ति ॥१११॥ ।। ति बेमि ॥ इति पमायष्टाण समस ॥३२॥

118 11

ાણા

HXII

।। बह फम्मप्ययद्वी रोसीसङ्म अज्यस्यया ।)

षष्ट कम्माइं वोच्छामि, मासुपुर्वित जहासम ।

जेहिं बद्धो अर्थ जीवो, ससारे परिवट्टई नाग्यस्सावरिग्यमं, वसग्रावरगं सद्या।

वेयाणिका तहा मोहं बारकम्मं तहेत य नामकम्मं च गोय च अन्तराय तहेय स ।

एक्मयाइ कम्माइं भट्टेब उसमासभी नाणावरणं पंचविद्दं, सुर्वं व्यामिणिषोदियं। 11711 कोहिनाएं च त.्यं, मणनाएं च फेवलं

निहा तह्य पयसा, निहानिहा पयसपयसा सः। HAII तका य धीवागिद्धी उ, पंत्रमाहोइ नायस्था

| रसराध्ययनसूर्वं सध्ययन ३४                                | १७३    |
|----------------------------------------------------------|--------|
| किएहा नीला य काऊ य, तेऊ पम्हा तहेव य।                    |        |
| स्कलेसा य झडा य, नामाई तु जहकर्म                         | 11₹11  |
| जीम्यनिद्धसकासा, गवलरिष्टगसिनमा ।                        |        |
| संजजणनयण्निमा, किण्हलेसा च वण्णभो                        | 11811  |
| नीलासोगसकासा, चासपिच्छसमप्पमा ।                          |        |
| वैद्वियनिद्धसंकासा, नीत्रतेसा च वण्यको                   | ાશા    |
| भयसीपुष्कसंकासा, कोइलच्छवसन्निभा ।                       |        |
| पारेवयगीवनिभा काऊलेसा उ वण्णको                           | 11511  |
| रिंगुलयधानसंकासा तरुगाइवसिममा।                           |        |
| सुयतुरदपर्ववनिभा, तेऊलेसा ७ वरणको                        | 1011   |
| हरियानमेयसंकासा, हतिहामेयसमणमा ।                         |        |
| संगासग्रञ्जसुमनिमा, पम्हलेसा च वरण्यो                    | ীাবা   |
| संसक्कुन्दसङ्खासा, सीरपूरसमप्पमा ।                       |        |
| रययहारसंकासा, सुक्रतेसा च वयणुक्यो                       | HEI    |
| जह फबुयतुम्बगरसो, निम्बरसो फबुयरोहिणिरसो वा,।            |        |
| पत्तो वि स्रायन्तगुर्यो, रसो य फिर्म्हाप नायम्बो         | 114011 |
| जह विगडुयस्त य रसो,विन्हो जह हत्यिपिपकीर धा।             |        |
| एचो वि मणुन्तगुणो, रसो च नीलाए नायव्यो                   | 118811 |
| अह् सबग्रमन्त्रगरस्रो, तुब्रक्षिष्टुस्स धानि जारिसम्रो । |        |
| एचो वि भणन्तगुणो, रसी र काऊए नायव्यो                     | ॥१२॥   |
| जह परिण्यम्बगरसो, पक्रकथिट्टस्स वावि जारिसको।            |        |
| पत्तो वि भागन्तगुणो रसो च तेऊप नायम्बो                   | गश्चम  |
| बरवारकीए व रसी, विविद्याण व भासवाय जारिसभी।              |        |
| महुमेरगस्स व रसो, पत्तो पन्धाप परपर्या                   | ।।१४॥  |

सञ्यजीवाया कम्म तु, सगहे छहिसागर्य। ।।१व। सब्बेस वि पएसेस, सब्बं सब्वेग बद्धां चवदीसरिसनामाण, वीसङ कोडिकोडीको । चकोसिया ठिई होइ, अन्सोमुहुत्तं ब्रह्मिया ntail भावरियासाय दुएहं पि. वेयिग्रिको बहेब य । भन्तराप य कम्मन्मि, ठिइ एसा विवादिया 113.0[] उद्दीसरिसनामाग्र, सश्चरिं कोडिकोडीको । मोहणिकस्त रक्षोसा, भन्तोमुहुत्तं बहुनिया 113 Fit तेसीससागरोषमा. उक्कोसेग विवाहिया। ठिई र भारकस्मस्स भन्दोमृहत्तं जहसिया ાારશા उद्दीसरिसनामाण, बीसई कोडिकोडीको। नामगोत्ताणं एकोसा, बहं महत्ता अहसिया ॥२३॥ सिद्धाणणन्त्रभागो य अणुभागा इवन्ति उ। सञ्जेस वि पपसगां, सञ्ज्ञाने भावस्थितं તરક્ષા वम्हा एएसि कम्मार्ग, असुमागा विवासिया । ००सि संबरे चेव, सवयो य जप वृहो บระบ ।। ति वेमि ।। इति कम्मप्पयक्षी समन्ता ॥३३॥

## ॥ मह जेसज्मपण गाम वोचीसहमं भज्मस्यण ॥

त्तेसम्बय्य पथक्सामि, काणुपुन्यि जहफमं । द्वयदं पि कम्मतेसाया, बर्णुभाव सुर्येह मं नामाई पट्यारसगम्पद्मसपरियामनकरायं । राणं ठिद्दं गई बारं, तसायं तु सुर्येह म

11711

רוו

| उत्तराध्ययनसूत्रं सध्ययनं १४                                                              | १⊏१          |
|-------------------------------------------------------------------------------------------|--------------|
| नीयावित्ती भाषवले, भ्रमाई मकुउदले ।                                                       |              |
| विणीयविण्य दन्ते, जीगर्य चवहाण्यं                                                         | #ROI         |
| पियधम्मे वृद्धधम्मेऽववज्ञमीरु हिएसए ।                                                     |              |
| रयजोगसमाटको, तेउज्लेसं तु परियमे                                                          | ॥२५॥         |
| पयगुकोहमाणे य, माबाक्षोमे य पयगुए ।                                                       |              |
| पसन्तिचित्ते दन्तप्पा, जोगबं स्वहागाधं                                                    | ાવદાા        |
| वहा प्रयुवाई य, सबसन्ते जिइन्दिए ।                                                        |              |
| एयजोगसमारुचो, पम्हलेस तु परिशामे                                                          | 119611       |
| महरुदाणि वन्त्रिचा, घरमसुष्काणि म्ययए ।                                                   |              |
| पसन्तिचिचे बन्तापा, समिष गुच्चे य गुविसु                                                  | ॥३१॥         |
| सरागे वीयरागे वा, चयसन्ते जिङ्गन्दिए।                                                     |              |
| पयनोगसमावचो, सुक्रलेसं हु परिश्रमे                                                        | ध₹सा         |
| भर्ससिन्जायोसप्पियीय, उस्सिपियीय जे समया।                                                 |              |
| संसाहया लोगा, लेसाया धवन्ति ठायार्थ                                                       | 113311       |
| सुहुच्छं धु जहमा, तेचीसा सागरा सुहुचहिया।                                                 | _            |
| च्कोसा होइ ठिई, नायन्या कियहतेसाप                                                         | ॥इक्षा       |
| सङ्क्तर तु जहना, दस ध्वही पत्तियमसस्त्रभागमञ्भाहिय<br>ध्यासा होइ ठिई, नायब्वा नीत्तलेमाप  |              |
| * - **                                                                                    | ારયા         |
| सुरुद्ध तु अहमा, तिरस्युवही पत्तियमसंसभागमन्भहिय<br>स्फोसा होइ ठिई, नायम्बा कारलेसार      |              |
| सहस्रतं सु जहन्ना, दोरखुदही पत्तियमसंखभागमन्भहिय                                          | 113811       |
| चुकुच्छ तु जहन्ता, वृष्यभुद्दा पात्तपमसस्यमागमञ्माह्य<br>च्छोसा होइ ठिई, नायञ्चा तेचलेसाए | ा।<br>विश्वा |
| मुहुत्तर्द्धं तु अहसा, दस होन्ति य सागरा मुहुत्तहिया।                                     | 114411       |
| रकोसा होइ ठिई, नायरवा पम्हलेसाय                                                           | ॥३द्या       |
|                                                                                           |              |

| <b>(</b> 50        | जेन सिद्धार माला                          |               |
|--------------------|-------------------------------------------|---------------|
| <br>सन्जूरमुहिय    | रसो, स्रीररसो स्नण्डसक्रररसो वा।          |               |
|                    | न्सगुणो, रमो च सुफाए नायम्यो              | 117           |
| अह गोम <b>द</b> स् | । गन्धो, सुग्रगमबस्स व जहा बहिमबस्स ।     |               |
| ८चो वि चय          | व्यगुर्णो <sub>।</sub> लेसाएां भणसत्यार्ण | 114           |
| बह सुरहिकु         | सुमगन्धो, गन्धनासाया पिस्समायाया ।        |               |
| पत्तो वि प्राय     | ान्तग्यो, परत्यद्वेसाया विय <b>र</b> पि   | # 80 H        |
| वह करगवर           | स फासो, गोजिन्माए य सागपत्ताया ।          |               |
|                    | पन्तगुर्यो, तेसार्यं भव्यसस्थाय           | 1142          |
|                    | व फासो, नवणीयस्य व सिरीसकुसुमार्खं ।      |               |
|                    | गन्तगुर्यो, पसत्यतेसाय विषदं पि           | # ( 8.8       |
|                    | त्रविहो वा सत्तावीसइविहेकसीको वा।         |               |
| दुसमो तेय          | लो वा लेसाणं हो। परिणामी                  | ારના          |
| <b>पश्चासव</b> प्प | भो तीहि अगुची असु अविरको य ।              |               |
| तिब्बारमभप         | रियाची सुदी साइसिको नरी                   | # <b>२</b> १॥ |
|                    | रियामो निस्ससो अजिहित्यको।                |               |
|                    | ावचो, कियहर्तेसं सु परिस्रमे              | ∥२रा          |
| इस्सा धर्मा        | रस भवनो। भविज्यमाया भवीरिया।              |               |
|                    | व सर्वे, पमचे रसलोक्षुप                   | แจง           |
| सायगवेसप           | र य चारम्भामी भविरमी खुरो साहस्सिमी       | नरो ।         |
|                    | गावचो, नीव्रक्तेर्स हु परियमे             | แรม           |
| शंक्र भक्स         | मायार नियक्तिने प्रायुक्त ।               |               |

प्रजित्रचगमोनहिए, मिध्यदिही मणारिए

धन्नातगदुरुधाइ य, तेके याथि य मण्यारी । ध्यजोगसमावसो, काञ्जेसं तु परिकॉम 間でおり

| रत्तराध्ययनसूत्रं श्रध्ययन २४                                                        | १⊏३      |
|--------------------------------------------------------------------------------------|----------|
| तेश परं वोच्छामि, तेऊलेसा जहा सुरगाएं।                                               |          |
| भवग्यवद्वाग्यमन्तरजोइसवेमाग्गियाग् च                                                 | 112311   |
| पित्रभोषमं जहन्तं, उपकोसा सागरा उ दन्तिहमा ।                                         |          |
| पित्रयमसस्बन्धेया, होइ भागेया तेऊप                                                   | ાષ્ટ્રશા |
| वसवाससहस्साई, तेउए ठिई जहनिया होइ ।                                                  |          |
| इन्नुवही पित्रकोवसक्संसभागं च उक्कोसा                                                | แหลูแ    |
| वा तेज्य ठिश् साल, एक्कोसा सा च समयमन्महिया।                                         |          |
| बहनेयां पन्हाप, वस च मुहुत्ताहियाइ उक्कोसा                                           | ।।४४॥    |
| भा पन्हाप ठिई सासु, रम्फोसा सा र समयमस्भिहिया।                                       |          |
| <sup>जहन्ने</sup> सं सुकार, तेचीस मुहुत्त मन्महिया                                   | ાયશા     |
| कियहा नीला काऊ, विकि वि एयाची बाहुम्मलेसाची।                                         |          |
| प्याहि विहिषि जीयो, दुग्गइ उष्डर्जाई                                                 | ાાક્ષ્યા |
| <sup>रोऊ पुन्हा</sup> सुका, विभि वि एयाच्यो घम्मलेसाच्यो !                           |          |
| एयादि विहि वि सीधो, सुमाइ स्वयन्जई                                                   | ॥४७॥     |
| नेसाहि सञ्चाहि, पढमे समयम्मि परिग्रयाहि हु ।                                         |          |
| ने दु फस्सइ प्रथमाओ, परे भवे अत्थि जीवस्स                                            | וואבוו   |
| लेखाई सठवाई चरिमे समयम्मि परिग्रयाई तु।                                              |          |
| ने हु कस्सइ उपवासी, परे भने होइ जीवरस                                                | 似起门      |
| भन्तमुहुत्तम्म गप्, भन्तमुहुत्तम्म सेसप् चेव ।                                       |          |
| लेसाहि परियायाहि, नीमा गच्छान्ति परलीयं                                              | ॥६०॥     |
| वम्हा एयासि नेसाणः चासुभावे वियाणिया ।<br>भप्पसत्याची वश्तिचा, पसत्याचीऽहिद्धिर सुणि |          |
|                                                                                      | 114411   |
| त्ति वेमि ॥ इति लेसम्फयण समर्च ॥३४॥                                                  |          |

| १८२                                            | जैन सिद्धात माना                               |                |
|------------------------------------------------|------------------------------------------------|----------------|
| सुदुत्तद्वं सु अहन्ना तेस                      | वीस सागरा सुहुत्तद्दिया ।                      |                |
| चकासा होई ठिई, ना                              | यन्या सुफलेसाए                                 | ((રદી)         |
| पसा खलू नेसाएं, खे                             | डिंग ठिई वसिगामा शोर ।                         |                |
| चन्सु वि गईसु एसी,                             | लेसाया ठिइ त बोच्छामि                          | llegii         |
| दस वासस्तहस्साइ, क                             | ाउए ठिड जहानिया <del>होते</del> ।              |                |
| विष्णुदही पश्चिमोधम                            | , भससमार्गं च उन्नोमा                          | 118411         |
| विरुश्चवृद्दी पवित्रभोवम                       | . <b>अ</b> संख्याणे <del>अन्त्रील जीवन</del> ि | र्फ्र <u>।</u> |
| वसंख्वहा पालकावम,                              | चर्ससभागं च तकोका                              | ાાજરા          |
| दसच्द्री पक्षिकोवम                             | ष्ट्रसंस्थातं अस्टिक्स के                      |                |
| तचाससाग <b>तह प्रका</b> स                      | िष्ठोड किएडाए लेळाल                            | 118411         |
| पसा नेरहयागा, लेसाम                            | । किर्दे व्यवसीलाला के                         |                |
| तथापर वाच्छामा सि                              | रेयमणस्यागः तेवातः                             | 118.811        |
| भन्तामुहुत्तमञ्ज, संसार                        | ण ठिक्क अद्वि अद्वि आव ।                       |                |
| विरियाण नरार्थ भाव                             | ान्जचा के <b>न्छ</b> लेस                       | 118741         |
| सुदुत्तक शु जहन्मा सङ्ग<br>नवहि वरिसेहि उत्पा, | तेसा होइ पुरुषकोडीको :                         |                |
| मवाह् भारताह् अवाः,<br>गगा विभिन्नवामा चेत     | नायव्या सुक्रतेसाप                             | ११८६॥          |
| तेरां परं योच्छामि, तस                         | ाया ठिश्व व विष्याया होश्व।                    |                |
| कम बाससहरशाई, फिर                              | त्य । ०३ व दवासा<br>हाए ठिइ जहन्मिया होइ।      | ।१४७।।         |
| -Complement                                    | न्यार १०६ जहारनया होइ।                         |                |

॥४८॥

usell

likeli

प्रतियमसंसिग्जद्दमो, उस्रोसो होइ व्हिरहाप

जा किण्डार ठिड् सलु, च्छोसा सा उ समयमस्भिद्धिया । अङ्ग्लर्ण नीलाए, पलियमसंस्र च उद्यासा

जा नीताप ठिइ राज, उन्होंसा सा ३ समयमस्मिद्या। जहन्तेर्ण काञ्चण, पतियमसंस्यं च उक्होसा

| <del>एसराध्ययनसूर्व भ</del> ष्ययनं ३४              | ₹≒¥    |
|----------------------------------------------------|--------|
| वलधमनिस्सिया जीवा, पुढवीकट्टनिस्सिया।              |        |
| हम्मन्ति भचपागोसु, सन्हा निष्म्स् न पयावय          | 118811 |
| विसप्पे सब्बभी घारे, बहुपाणिविशासर्गे ।            |        |
| नित्य जोइसमे सत्ये, तम्हा ओई न दीवए                | માશ્સા |
| हिरएगुं जायस्व च, मणसा वि न पत्यए।                 |        |
| समजेठठुकंषणे भिक्स्न, विरए कवविषकए                 | गरका   |
| किणन्तो कश्यो होइ, विकिशन्तो य वाणियो ।            |        |
| ष्ठयविद्ययम्मि षष्टुन्तो, भिष्म्यू न भवद् वारिसो   | 115811 |
| मिषिस्तयव्यं न फेयर्ब्न, भिक्सुणा भिष्स्तुवत्तिणा। |        |
| क्यविषक्षो महादोसो, भिष्यावधी सुहावहा              | ॥१४॥   |
| समुयाणं चक्रमेसिङजा, जहासुत्तमियन्विय ।            |        |
| काभाक्षाभम्मि संतुद्धे, पिग्रहवार्य चरे मुखी       | गश्हा  |
| मलोले न रसे गिद्धे, जिन्मावृन्ते समुच्छिए।         |        |
| न रसद्वाप मुंजिब्जा, जषगट्टाप महामुग्री            | 117911 |
| भवता रयसंचिव वन्दरा पूर्यसंतहा।                    |        |
| ध्रीसक्कारसम्भाग, मगुसा वि न पत्थए                 | ॥१८॥   |
| सुकरमाणं मियापस्त्रा, व्याणियाणे व्यक्तिपणे ।      |        |
| बोसद्वद्धार विद्दरेग्झा, जाव कालस्स पञ्चचो         | वहह्या |
| निश्जूहिक्या भाहारं, कालधम्मे उपट्टिए ।            |        |
| जहिङ्ग्या मासुसं बोन्यि, पह् तुषस्ता विसुधई        | ।।२०॥  |
| निमम्मे निरहकारे, वीयरागो अणासवो।                  |        |
| संपत्तो केवस नार्ण, सासय परिणिब्बुप                | गरसा   |
| ।।चि विम ।। इवि अग्रगारम्मयग् समचे।।३४।।           |        |

#### ।। भइ भगगारज्ञस्यग गाम पचतीसहभ भज्मस्यग्रा।।

सुर्णेह मे प्रागमणा, मर्मा वृद्धेहि दक्षियं।

जमायरन्तो भिक्ख् दुक्खाणन्तकरे भवे

गिह्वासं परिचञ्ज, पवज्जामस्सिए मुग्री ।

इसे संगे वियाणिज्ञा, सेहिं सज्जन्ति माणुवा

तहेव हिसं बाह्मधं, चोम्जं बावम्भसेवर्गं। इच्छा कामं च स्नोमं च, सख्जमो परियञ्जए

मणोहरं भित्रपरं, मह्मध्वेगा वासिय।

सकवार परबुरुक्षेयं, मग्रसावि न पत्यप इन्दियाणि र भिष्तुस्त, वारिसम्मि चयस्तप् ।

दकराई निवार्ष, कामरागविवद्वयो ससायो सुन्नगारे वा, रुक्समूले व एगको । पहरि<del>पके</del> परकडे वा, वासं सत्यामिरोयए कासुयम्मि अणावाहे, इत्यीहि अण्मिहरः।

तिहरूम्मसमारम्भे, भूयार्थं दिस्सद यहो तसार्णं बाबराण प, सुदुमाण बादराण स ।

तत्य संकृपय वासं, भिक्स् परमसजय

त्रन्हा गिमसमारम्भं संजन्मो परिषज्<del>य</del>ण

तह्व भत्तपाणेमु पयणे पयावणेमु य । पास्यम्बद्धाव, न पर्य न प्यावर

न सर्य गिहाई फुस्विजा, योव बन्नेहिं फारए।

[[9]] 미디

1111

HYH

ાચા

11311

11811

ונצוו

ાધા

118011

| क्सराध्ययनसूत्रं बाध्ययन ३६                                                     | ₹ <b>८७</b> |
|---------------------------------------------------------------------------------|-------------|
| सुरुमा सन्यत्तोगम्मि, लोगदेसे य वायरा ।                                         |             |
| इसो कालविभाग तु, तेसि वुच्छ चउब्विह                                             | ॥१२॥        |
| संबद्द पट्प तेऽग्राई, अपन्जवसिया वि य ।                                         |             |
| ठिई पशुच साईया, सपञ्जवसिया वि य                                                 | ।११ दे॥     |
| मसंसकालमुकोसं, एक्को समभो जहमयं।                                                |             |
| मजीवाण य रूवीण, ठिई एसा वियाहिया                                                | ग्रहशा      |
| भएन्तकाक्षमुक्कोसं, एक्फं समय अहमर्य ।                                          |             |
| भवीवाग् य स्वीग्रं, भन्तरेय वियादियं                                            | ॥१४॥        |
| वरगुष्मो गन्धको चेव, रसको फासको तहा ।                                           |             |
| संठाणको य विजेको, परिणामो तेसि पंचहा                                            | 118411      |
| वरुगुष्मो परिगाया जे छ, पद्महा ते पकित्तिया।                                    |             |
| फिण्हा नीक्षा य जोहिया, हिक्स सुकिता वहा                                        | ॥१८॥        |
| गन्धभो परिण्या जे ए, दुविहा ते वियाहिया ।                                       |             |
| सुब्मिगन्भपरिग्रामा, दुन्मिग घा तहेव य                                          | ।१न।        |
| रसचो परिगाया जे उ, पश्चहा ते पकिचिया।                                           |             |
| वित्तकपुर्वकसाया, कम्बिला महुरा तहा                                             | ॥१८॥        |
| फासको परिगाया जे स, बहुदा ते प्रकित्तिया।                                       |             |
| फक्सका मरच्या चेय, गरुया लहुया तहा                                              | ii4•ii      |
| सीया चण्हा य निद्धा य, तहा लुक्सा य आहिया।                                      |             |
| इय फासपरिख्या एए, पुमाला समुदाहिया                                              | ॥२१॥        |
| संठाणुको परिस्था जे उ, पद्महा त पकित्तिया ।                                     | uaau        |
| परिमयहता य बट्टा य, तसा चर्चरसमायया                                             | ।।२२॥       |
| षरगुष्मो जे भवे फिरुह, भइए से उ गन्धणो ।<br>रसबो म्यसबो चेव, भइए संठागुष्मोवि य | गरका        |
| रतमा भसमा यव, मङ्ग चठायमाप य                                                    | 117501      |
|                                                                                 |             |

₹54

| ।। भह | जीवा | जीवविमत्ती | गाम | <b>छत्तीस</b> ! |
|-------|------|------------|-----|-----------------|
| ~     |      | भजसयग      |     | •               |

जीवाजीवविभक्ति, सुर्गेह में एगमणा हुओ।

11 (1)

IIRII

11\$11

जं जाणिक्या भिक्स, सम्मं जयइ संजमे जीवा चेव ऋजीया य, एस लोए वियाहिए।

मजीववेसमागासे, मलोगे से वियाहिए

दब्बको स्रेतको पेव कालको सावको तहा।

परूवणा तेसि भवे, बीवाणमधीवाण य रूवियो चेवरूमी य, भजीवा दुविहा भवे।

मस्त्री दसहा वृत्ता, रूपिणो य परव्यिहा 11811 भन्मत्यकाए वहेंसे तप्पएसे य भाहिए।

भहम्मे तस्स देसे य, तप्पपसे य भाहिए 11211 भागासे सस्त दसे या तप्पएसे य भाहिए।

मदासमय चेव, महती व्सहा समे

धम्माधम्मे य दो खेव, स्नोगमित्ता भिगाहिया। 11811 क्रोगालोगे य भागासे, समए समयस्रेशिय ileti

धम्माधम्मागासा विभि वि एए भणाइया ! मपण्डमसिया चेंच, सम्यद्धं तु विवाहिया

समप् वि सन्तरे पण प्यमय विद्याहिए । 11511

**भा**रसं पप्प साइए, सपम्जवसिए वि व

11211

खन्धा य सम्धदेसा य, तप्पएसा तह्नय य ।

परमाणुणो य योदस्या, रूपिग्णा य पर्जन्<sub>रहा</sub>

रमचेण पुरुषेण, माचा व परमाणुव। 116011

लोगेगद्रे सोएय, भइयन्वात उलेसमा

112 211

| क्तराध्ययनसूत्रं स्रथ्ययनं ३६            | ₹ <b>5.</b> |
|------------------------------------------|-------------|
| भासको मत्तर जे च, भइए से च वरण्यो !      |             |
| गम्बद्भो रसद्भो चेव, भइए संठागुष्टो वि य | ॥३६॥        |
| फासभो गुरुए जे र, भइए से र वरणामो।       |             |
| गन्धको रसको चेव, भइए संठासको वि य        | ।[३७।       |
| पासको तहुए जे र, सहूए से र प्रश्यको।     |             |
| गम्बको रसको चेव, भइड संठागुको वि य       | 11445       |
| फासको सीयप जे उ, मक्ष्य से उ वस्स्को ।   |             |
| गणको रसको चेव, मइए संठासको वि य          | ॥३६॥        |
| फासको इसह्य क्षेष्ठ, भइष से उधस्याको ।   |             |
| गन्धको रसको चेव, भइए संठागुको वि य       | IISoII      |
| श्वसको निद्धए के छ, मक्ष्य से उ वरुएको । |             |
| गन्धको रसको चेव, महुए संठागाचो वि य      | แรงก        |
| फासको सुक्काए जे उ, भइए संउ वयस्त्रको ।  |             |
| गन्धको रसको चेब, भइए सठासको वि ब         | ાાકરા       |
| परिमहत्तर्सठायो, सहूप से व वयग्राच्यो ।  |             |
| गम्बको रसको चेव भइए से फासको वि य        | ાકમા        |
| संठागुको भवे बहु, भइए से ड वयगुको।       |             |
| गन्धको रसको चेव, भइए से प्रसक्तो वि य    | 118.811     |
| सठागुको मचे तंसे, भइए से र वरगुको।       |             |
| गन्धचो रसचो चेव, भइए से फासचो वि य       | likkil      |
| संठाणको जे चवरंसे, भइए से व वयगको।       | 1           |
| गन्धको रसको बेव, भइए से फासको वि य       | ।१४६॥       |
| ने पाययसठायो, भइए से उ वरणायो।           |             |
| गन्धको रसको चेव, भइए से फासको वि य       | ११४७॥       |

| १८६           | जैन सिद्धात माला                                       |         |
|---------------|--------------------------------------------------------|---------|
| बरसमो जे भवे  | नीले, भइए से ए गम्बद्यो ।                              |         |
| रसभो पासभो    | चेव, भइए संठागुभोमि य                                  | ।रिक्षी |
| षरग्रभो लोहिप | र जे छ, भइष से उगन्यक्री।                              |         |
| रसमो ऋसमो     | चेष, महुए संठाणुगोषि य                                 | ાારાકો  |
|               | हे ए, महरू से व गन्यको ।                               |         |
|               | चेम महर संठाणमो विय                                    | 11341)  |
|               | ते जे च, भइष से द गुन्ध मो ।                           |         |
|               | चेव, भइए संठाएको वि य                                  | ારહા    |
| गन्धमो जे सबै | सुन्भी, भइष से उ व्एएको ।                              | ।[२८॥   |
|               | चेव, मध्य संठाणभो वि य                                 | HZ      |
|               | ा दुब्मी, भइए से उ वरक्षमो ।<br>चेव, भइए सठाक्षमो वि व | jjરદી!  |
|               | चव, मह्द सठायमा ।व य<br>त्रे उ. मह्द से उ वस्याची !    | 11/0.   |
|               | न उ, महर खंड वय्यामा ।<br>रोचेय भइए सटाएको विस         | [[0]]   |
|               | वे अध्यक्षे उथरण् <b>यो</b> ।                          |         |

गाधका पामका चेव भइए मठाएको वि य रमधा समाण हे उ, भइए स उ वरण्यो । र पद्मा कामका चेंच, भद्दण मंडालको वि स

रमधा कथ्यिन उ.३ नद्रण से उ स्पर्णको । ह्या कामचा थय नद्रण में रागुधी विस रामक सहरा त न नहार से व वरणाच्या । ाच असदा चर नहा सङ्गाचा विय

, चारमार्थ नहत्त्व प्रवासी। रक्ष ३३ नाः मेशलकाविय

115811

113311

માફરમ

114311

गरश

| उत्तराध्ययनसूत्रं श्रम्ययन ३६           | १८६    |
|-----------------------------------------|--------|
| फासमो मचए जे र, भइए से र वरणायो।        |        |
| ग घषो रसद्भो चेव, भइए सठायुद्धो वि य    | ॥३६॥   |
| फासचो गुरुए जे र, भइए से र वरणभो।       |        |
| गन्यको रसको चेव, भइए संठासको वि य       | ાર્ય   |
| धसभो लहुए जे छ, भइए से उ वरणभो।         |        |
| गम्बक्षो रसक्षो चेव, भइष्ठ संठासको वि य | 11305  |
| फासको सीयए जे उ, भइए से उ वरणको ।       |        |
| गन्धको रसको चेव, भइए संठालको वि य       | ।।३६॥  |
| फासभो स्टब्स् जे र, भइए से उ वरणभो।     |        |
| गन्धको रसको चेब, भइए संठागुको वि य      | IISoll |
| श्वसमो निद्धय जे ड, मद्दप से उ वयण्यो । |        |
| ग धन्नो रसन्नो जेव, महुए संठाणुको वि य  | 118511 |
| श्वसमो सुक्सए जे उ, मइए स उ वण्णमो ।    |        |
| गन्यको रसको केम, सदद सठायाको वि य       | ાાજસા  |
| परिमङ्कसंठाणे, भइए से ट वरणामो !        |        |
| गम्पन्नो रसन्नो चेव भइए से प्रसन्नो विय | ।।४३॥  |
| संठाणुको भन्ने बट्टे, भइप से ड वस्मुको। |        |
| ग धभो रसम्रो चेव, भइए से फासम्रो वि य   | แลงแ   |
| सठाएको भवे तंसे, भद्दर से र वरएको ।     |        |
| गम्पको रसको चेव, भइए से फासको वि य      | ikkii  |
| संदर्भाको जे बदरंसे, भइए से स वर्गाको।  | _      |
| गन्धको रसको चेव, भइए से पासको वि य      | 118411 |
| ने माययसठायों, भइए से उ वस्तामी।        |        |
| ग पद्मी रसद्भी चेष, भइए से फासद्भी वि य | ।१४अ।  |

जैन सिद्धान्त माला १६० एसा भजीवविभन्ती, समार्थेण विवादिया । 비꼬디 इसो जीवविभक्ति, वृच्छामि चारापुन्यसो संसारत्था य सिद्धा य, दुविहा जीवा वियाहिया। લજદા सिद्धा ऐगविहा युवा ते म फिचयमी सुए इत्थी पुरीससिद्धा य, सहेच य नपुसगा। lloggy सकिंगे अभूकिंगे या गिहिकिंगे वहेय य उक्कोसोगाह्याच् य, जहुसम्बिक्तमाह् य। ng(ii) च्हू कहे य विरियं च, समुद्दान्म जल्लान्म य दस य नपुसएसु, बीस इत्थियास य । पुरिसेसु य भट्टसर्य समएग्रेगेश सिम्मई HYXII वकारि य गिहलिंगे, अक्षक्षिंगे दसेव य । सर्तिगेण बहसर्व, समएएोगेण सिक्सर्ज II¥¥II उक्कोसोगाइगाप य, सिज्मन्ते जुगक दुवे । 1128[]

सितिगेण बहुसब, समएग्रीगेण सिकाई ॥१४॥ उक्कोसोगाहगाप ब, सिकान्त जुगक हुवे। बक्तारि जहकाप, मक्के काठ्ठकर सर्व ॥१४॥ बउठहुलोप ब दुवे समुरे, तको कले वीसमई ठवेच ब। सर्व च बाठुकर विरियलोप, समएग्रीगेण सिकाई बुव ॥१४॥ कहिं पहिद्या सिद्धा कहिं सिद्धा पहिन्या।

किह पिंडरुया सिद्धा किहिया।
किह वेल्पि पहलाएं कत्य गल्युण सिक्कई
सलोप पिंडरुया सिद्धा क्षेपमा य पहिला।
इह वोल्पि पहलाएं, सत्य गल्युण सिक्कई
वासाई कोपणेंहि, सञ्बद्धसुर्वार भने।
हैसिपक्मारनामा च पडवी ब्रच्सिटिया
पञ्चालस्यसहस्सा, 'भणाणं त कायया।

वावहर्य जैन निरियरणा, तिगुणो वस्तेव परिरची

| उत्तराभ्ययनसूत्र प्रभ्ययन ३६                                                     | 139     |
|----------------------------------------------------------------------------------|---------|
| महजोयणवाहुला, सा मञ्मास्म वियाहिया।                                              |         |
| परिद्वायन्ती चरिमन्ते, पश्चिमचार वसुयरी                                          | ।।६०॥   |
| पञ्जुणमुक्रणगमम्, सा पुढवी निम्मला सहावेण ।                                      |         |
| रतागगच्छत्तगसंहिया य, भग्निया जिल्बरेहि                                          | ग्रहशा  |
| संसंदर्भवसंकासा पण्डूरा निम्मला सुद्दा ।                                         |         |
| सीयाए जोयगों तत्तो, नोयन्तो र वियाहिको                                           | ।।६२॥   |
| बोयगुस्स र जो तत्य, कोसो रुवरिमो भवे ।                                           |         |
| वस्स कोसस्स छक्भाए, सिद्धाणोगाह्या मवे                                           | ॥६३॥    |
| सत्य सिद्धा महाभागा, स्रोगगगिमा पहद्विया।                                        |         |
| मवपपं <del>च</del> न्नो मुका, सिद्धि वरगई गया                                    | ાક્ષ્યા |
| उस्सेहो जेसि जो होइ, मर्वाम्म चरिमन्मि उ।                                        |         |
| विभागहीयो क्तो य, सिद्धायोगाहया भवे                                              | ।[६४॥   |
| पगत्तेया साईया भपञ्जवसिया वि य ।                                                 |         |
| पुरुचेया मायाश्या मपग्जवसिया वि य                                                | ।।६६॥   |
| भरूषिणो जीवषणा, नागवंसगसित्रया ।                                                 |         |
| भटलं सुद्द संपन्ना, एवमा जस्स नत्थि च                                            | ।।६७॥   |
| कोगेगदेसे ते सम्बे, नाण्यसम्मया ।                                                | _       |
| ससारपारनित्यिण्या, सिद्धि वरगध् गया                                              | ॥६८॥    |
| ससारत्या उ जे जीवा दुविहाते वियाहिया।                                            |         |
| वसा य थावरा चेव, यावरा विविहा वह                                                 | ાધશા    |
| पुरवी भारतीया य सहेव य यगस्तर्ह ।                                                | Iheeli  |
| इचेर थावरा तिथिहा, तेसि भेप सुर्खेह मे<br>दुविहा पुढमीजीमा य, सुहुमा यायरा वहा । | Jool    |
| दुःवहा पुढवाकावा यः, सुदुःमा यायरा वहा ।<br>परजसमपण्डासा, पदमेय दुहा पृथो        | 119411  |
|                                                                                  |         |

| 127            | जन सिद्धात माला           |
|----------------|---------------------------|
| पायरा जे उ परत | त्ता, दुपिहा त दियाहिया।  |
| सण्हा सरा य मो | पट्या, सरहा सत्तविहा वहिं |

क्टिण्हा नीला य रुद्दिरा य, हालिहा सुकिला वहा।

परमुपसमाहृया, खरा खत्तीसइविहा

पुढवी य सफरा यालुया य, उवले सिला य सोणूचे । भैय नम्ब सतय-सीसँग रुप्प-सुवरुखेषा घरह य

हरियाने हिंगुनुष मणोसिना सासगंजण-पवाने। भव्मप्रकारम्थालुय, वायरकाप मणिविहासी

गोमेबबए य हयगे झंके फालहे य लोहियक्से य। भरगय मसारगल्हा, भुयमीयग इन्द्रनीता य

चन्त्रण-गेरुय हंसगब्धे पुत्तप सोगच्चिपय बोधण्डे ।

धन्द्रपह्रवेदक्षिप, जलकन्ते सूरकन्ते य ९ए सरपुरवीए, भेया खचीसमाहिया।

पगविहमणाणचा सुहुमा तत्य वियाहिया सहमा सब्बक्षीगम्मि स्रोगदेसे य वायरा।

इतो कासविभागं सु, वृच्छं तेसि चरव्यिवं

मतइं पप्पणाईया अपम्यवस्यावि य ।

ठिइं पबुच साईया, सपरजवसियाचि य वाधीससहस्साह, बासाखुकोसिया भवे ।

विजवस्मि सप काए पुढविजीवाण अन्तरं

भारतिइ प्रवीयां अन्तोमुहुतं सहन्तर्य भसंत्रकाशमुकास, भन्दोमुहुत्त बहुसर्य ।

कायिठई पुरुषीण त कार्यं तु अमुचको

भग्रन्तकालमुक्कोस अन्तामुदुत्त बहुमय ।

UERIL मि≒शा

ાહરા

|fet|

11981

الغورا

الكواا

[[eef]

II-MII

ᄩᅄ

| उत्तराभ्ययनसूत्र क्राध्ययनं ३६                                              | <b>?£</b> 3       |
|-----------------------------------------------------------------------------|-------------------|
| पर्पर्स वरणुको चेथ, गन्धको रसफासको ।                                        |                   |
| सठाणवेसमो वावि, त्रिहाणाइ सहस्ससो                                           | u <del>-</del> शा |
| दुविहा भाऊत्रीवा र, सुहुमा वायरा वहा                                        |                   |
| पञ्चत्तमपञ्चता, प्यमेय दुहा पुर्णो                                          |                   |
| बायरा जे ७ पञ्चता, पचहा ते पकित्तिया ।                                      |                   |
| सुरोष्य य उस्ते, इरतसु महिया हिमे                                           | u={II             |
| पगविद्मगागाचा, सुदुमा तत्य वियाहिया ।                                       |                   |
| सुदुमा सञ्यक्तोगस्मि, क्तोगदेसे य वायरा                                     | ।म्जा             |
| सन्तरं पप्प गाईंगा, भपज्ञवसिया वि य ।                                       |                   |
| ठिइं पहुच साईया, सपज्ञवसिया वि य                                            | 따다                |
| सचेव सहस्साई, वासायुक्कोसिया भवे ।                                          | lles II           |
| भावितर्वे बाऊर्या, अन्तोमुहुत्तं अहमिया                                     |                   |
| भसंसकालमुक्कोसं, अन्तोमुहुत्तं बहुत्रयं ।                                   | 20                |
| कायिट्टई भाऊगं, सं काय सु समुचित्रो                                         | Heall             |
| भणन्तकासमुक्तोस, भन्तोमुहुर्च वहन्तर्य ।<br>यिवदम्मि सप काप, भाऊवीवाय अन्तर | 118.811           |
| पपसि वयम्भो चेव, गन्धमो रसफासमो ।                                           |                   |
| संठायादेसको वावि, विहायाई सहस्तसो                                           | ાદસા              |
| दुविहा प्रणस्तर्भजीवा, सुदुमा पायरा तहा ।                                   |                   |
| पञ्चमपञ्चना, एषमेष दुहा पुणो                                                | ાથ્ક્રી           |
| गयरा जे र पक्सा, दुविहा ते वियाहिया।                                        |                   |
| साहारणसरीरा य, पत्तेगा य तहेष य                                             | ।।हश्रा           |
| पत्तेगसरीराम्रोऽयोगहा ते पिकत्तिया ।                                        | 11+611            |
| रुनका गुच्छा य गुम्मा य, त्तया यक्षी वर्णा वहा                              | الغلاا            |

जेन सिद्यांत माता. 818 वलय पन्यमा कुहुणा, जलरहा श्रोसदी तहा HEAR हरियकाया बोद्धव्या. पर्तेगाइ वियाहिया सहारणसधैराम्बोऽखेगहा ते पिकचिया। 118:41 चालए मूलए चेया सिंगमेरे तहेव य हरिल्ली सिरिली सस्सिरिली, जावई फेयफन्दली। 11241 पलपङ्क्तसण्कन्दे य, धन्दली य फड्बप लोहिशीह्य भीद्र्य, कुहगा य तहेव य । 112311 करहे य बजकन्दे य, कन्दे सुरखपतहा बारतकरूपी य बोद्धक्या, सीहकरूपी पहेच य । 1100511 मुसुरकी य इक्तिश य, खेगहा एवमायको ध्यविद्मणायाचा, सुद्भा सत्य विमाहिया । सहमा सञ्बद्धीगस्मि जोगदेसे य वायरा 1190911 संसई पप्प गाईया, व्ययक्रवसिया वि य । ठिइ परुष साईया, सपक्षवसिया वि य 1180311 वस चेव सहस्साई, वासायुक्कोसिया सचे। वगस्तईण पाउं तु, पन्तोसुहुचं सहसिया 1180311 भगन्तकालस्कोसं भन्तोस्हर्षं सहसरं। कायित पणगार्य, तं कार्य तु वामंबद्यो 1140811

बर्ससकात्मकोर्स, धन्दोमुहुत्तं बहुबर्स ।

विज्ञद्रम्मि सए काए, पर्यागजीवाया अन्तर

HOXII एएसि वदगुच्नो चेव, गन्धची रसपासची ।

संठाखदेसकी वाबि, विद्याणाई सहस्तसो 1120511

बचेय यापरा दिविहा, समासेख विवाहिया।

इसो उ तसे विविद्दे, मुच्छामि चणुप्यसी ।।१८७॥

| उत्तराध्ययनसूत्रं ऋष्ययनं ३६                                                                                           | १६५     |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------|
| तेऊ वाऊ य दोद्धव्या, चराला य वसा वहा ।<br>श्च्येप तसा विधिहा, तेसि मेप सुणेह मे                                        | [[{o⊆]] |
| दुषिहा तेऊजीया च, सुहुमा थायरा सहा ।<br>पश्चमसमपश्चासा, पथमेप दुहा पुर्यो                                              | ॥१०६॥   |
| वायरा जे उ परजत्ता, खेगहा ते वियाहिया।<br>रगाले मुम्मुरे भगयी, श्रविजाला तहेव य                                        | ॥११०॥   |
| ण्डाविन्त्र्य्य बोघटवा, ग्रेगद्दा एवमायको ।<br>एगविद्दमणायाचा सुदुमा ते विवादिया                                       | 1188811 |
| सुरुमा सञ्चलोगस्मि, लोगदेसे य वायरा ।<br>रेषो फालभिमाग तु, तेसि पुच्छ पर्याञ्चरं                                       | ા૧૧૫    |
| संवर्ष पण गार्ष्या, श्रपम्जवसिया वि य ।<br>ठिष्ट पबुष सार्ष्या, सपज्जवसिया वि य<br>विष्णेव श्रदोरचा, वक्रोसेण वियादिया | ॥११३॥   |
| भावितिई तेऊया, धम्तोमुहुचं जहन्निया<br>भसंस्रकालमुक्कोसं, धम्तोमुहुचं जहन्नयं।                                         | 1144811 |
| कायितई तेड्यां, तं कार्यं तु असुवको<br>अथन्तकालसुक्कोसं, अन्तोसुदुर्तं वहन्नयं ।                                       | ।११४॥   |
| विञ्जदन्मि सप काप, तेजजीवाण जन्तर<br>पपर्सि वयगुष्मो चेव, गायको रसफासको ।                                              | ।।११६॥  |
| संठायादेसको यावि, विहायाई सहस्ससो<br>दुविहा वारजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा ।                                              | ।।११७।। |
| पञ्चसमपञ्चला एवमेए बुद्दा पुर्यो<br>पायरा जे उ पञ्चला पञ्चहा ते पकित्तिया।<br>स्वकतिया मरवतिया घरामुखा सुद्धपाया य     | 1188=11 |
|                                                                                                                        |         |

संबद्दगयाया य, खेगहा एवमायची । एगविहमणाण्या, सुदुमा तस्य विकाहिका 11201 सहुमा सम्वकोगम्मि, एगद्खे य वायरा । इत्तो कालविभाग तु तेसि वृच्छ प्रवन्तित् 11311 मन्तर पपपार्या, अपञ्चयसियायि य । ठिइ पशुच साइया सपञ्चषसियानि य \* १२२ विषयोप सहस्साई वासासुक्कोसिया भव । भाविटई वाऊग्रं, भन्तो<u>मुह</u>त्त जहन्निया 1973 चसंसकालमुक्कोसं, चन्सो<u>महत्त</u> जहन्नयं। कायितर्भ वाऊगां, त कार्य तु सर्मुपद्मी 88788 भग्नकालमुक्कोसं, भन्तोमुहत्त अहस्तय । विज्ञदम्मि सए काए, वाऊजीवाया कम्तुर 日マスと पपसि वरणको चेव ग घको रसप्तसको। मठाणवसको बाबि, विद्याणाई सहस्तसो 0834# पराजा तसा जे ए भग्डा ते पकित्तिया। वेइन्विय-तेइन्विय, घडरो पंचिन्विया खेव

वेद्वन्त्या इसे जीवा दुविहाते पकि चिया। पञ्चमपञ्चा तेसि मेप सुर्योह म

किमियो सोमगसा चेष भवसा माश्याह्या। वासीमुद्दा य सिप्पिया, संसा संसायगा वद्दा

पद्मेयाणुक्या भेष, तहेव य वराहता । जलगा जालगा चेव, चन्दका य दहेब य

इइ वेइन्द्रिया एएऽछेगदा एवमायको । लोगेगपुरे ते सब्बे, न सब्बस्य विवाहिया 11१२५

# 125#

1174

D\$Bo#

. 750

| उत्तराध्ययनसूत्र अध्ययन ३६                 | १६७           |
|--------------------------------------------|---------------|
| संतइ १प्प गाईया, भपञ्चवसिया वि य ।         |               |
| ठिइ परुष साईया, सपञ्चवित्या वि य           | <b>॥१३२॥</b>  |
| वासाइ वारसा चेव, एक्कोसेस विवाहिया।        |               |
| बेहन्दियमाबठिई, भन्दोसुहुत्तं जहन्तिया ।   | nean          |
| संविध्वकातमुक्कोसं, भन्तोमुहुत्त जहन्नय ।  |               |
| बेइन्दियकायिहरू, तं काय हु धर्मुपक्री      | m t as n      |
| भगन्तकालमुक्कोसं, भन्तोमुहुत्तं जहन्तयः।   |               |
| वेइन्दियजीवार्ग, अन्तरं च विधाहियं         | 1123.411      |
| एएसि वरणुको चेव, गन्धको रसफाइको ।          |               |
| संठाणदेसभो वावि, विद्याणाई सहस्वसो         | 884611        |
| तेइन्दिया ७ से सीया, दुविहा ते पकिचिया ।   |               |
| पज्जसमपञ्जला, तेसि भेप सुग्रोह मे          | <b>॥१३७</b> । |
| कुन्थपियीलिउइसा, उनकलु देहिया सहा ।        |               |
| तग्रहारफटुहारा य, मालूगा पचहारगा           | n ? 3 = N     |
| फप्पासहूम्मि जायन्ति, दुगा तत्रसमिञ्जगा ।  |               |
| सदावरी य गुम्भी य, योद्धव्या इन्द्रगाइया   | 1183811       |
| इन्दरोवगमाइया, खेगहा एयमाय हो ।            |               |
| त्तोगेगदसे ते सब्दे, न सन्दस्य वियाहिया    | 1148011       |
| संतर्भपण काईया, अपग्रवमसिया विया।          |               |
| ठिई प्रुष साह्या, सप्ज्जवसिया वि य         | 11 8 8 11     |
| पग्णपयणहोरचा, उन्होसेण वियाहिया।           |               |
| तेइन्वियधावितर्द, भन्तो हुत्तं जहन्निया    | ॥ १४२॥        |
| संसिक्जकालमुक्कोसं, भन्तोमुहुतं जद्दन्तय । |               |
| तेइन्दियकायिहरू, र्त काथ तु अमुपयो         | #१४३॥         |

| १६८                                     | जैन सिद्धाव मात्ता               |          |
|-----------------------------------------|----------------------------------|----------|
| अएन्तकालमुक्कोसं                        | , भन्तो मुद्दुत्त जहन्तय ।       |          |
| ते।न्त्यिजीवार्णं, ध                    | वर च वियाहिया                    | 1148811  |
| एएसि यएगुक्री चेव                       | गचमो रसम्बसमो।                   |          |
| संठाणदेसमो पावि                         | , विहायाद् सहस्ससो               | [[{\$X]] |
| घडरिन्दिया उ जे ज                       | तिषा, दुविहा ते पिकत्तिया।       |          |
| पब्जसमपब्जसा, ते                        | सि मेप सुर्येश मे                | 1158211  |
| प्रन्धिया पोत्तिया चे                   | ष, मच्छिया मसगा सहा ।            |          |
| भगर की इपयगे य                          | विकुणे कंकणे तहा                 | ાક્રેક્સ |
|                                         | ा, नन्दावसे य विच्छुपः।          |          |
| होले भिंगीरीय, विर                      |                                  | १११४म।   |
| भरिक्रले माहर अधि                       | ष्ट्ररोडय विचित्ते चित्तपत्तपरः। |          |
|                                         | य, नीया संतवगाइया                | ાક્ષકા   |
|                                         | , ऽयोगहा एवमायको ।               |          |
| • • • • • • • • • • • • • • • • • • • • | ते सब्वे परिकित्तिका             | 1167611  |
| संतर्भ पत्प सार्थयाः ।                  | मप्रभवसिया वि य ।                | 1100021  |
|                                         |                                  |          |

ठिई पड्डा साईया, संपन्धनसिया वि य 1187611 ळक्चेव य मासाऊ उक्कोसेस विवाहिया। चर्रान्द्रियमार्डाटई, मन्त्रोसुहुस जहन्तिया

1187411 समिक्जकाजमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्तयं। यबरिन्दियकायठिइ ते कार्य तु अर्मुचको usxill भगुन्तकालमुस्कोसं, भन्तोमुहुत्त अहन्तर्य । विज्ञहरिम सप काप अन्तरं च वियाहियं 1187811 एग्सि वरखयो पेव, गन्धवो रसम्बसयो ।

संठाणदेसको वाचि, विहालाई सहस्ससो

| •                                                                         |              |
|---------------------------------------------------------------------------|--------------|
| उत्तराध्ययनस्त्र श्रध्ययन ३६                                              | \$ <b>1.</b> |
| पिषित्या च जे जीवा, चचविहा ते वियाहिया।                                   |              |
| नेराया विरिक्ता व, मराया देवा य आहिया                                     | ॥१४६॥        |
| नेरइया सत्तविहा, पुढवीसु सत्तसु भवे ।                                     |              |
| रयणाम सक्करामा, बालुयामा य माहिया                                         | ।।१४७॥       |
| पकाभा धूमामा, तमा तमतमा तहा ।                                             |              |
| इइ नरइयो टप सत्तहा परिकित्तिया                                            | ॥१४८॥        |
| लोगस्स एगवेसम्मि, ते सब्वे च वियाहिया।                                    |              |
| एसो फास्नविभाग तु, तेसि बोच्छ चरुव्यह                                     | HAKEH        |
| संतद्भं पप्प गाइया, अपञ्चवसिया वि य ।                                     |              |
| ठिष्टं पशुष साईया, सपस्त्रवसिया वि य                                      | ।।१६०।।      |
| सागरोवममेग तु, धन्कोसेया वियादिया।                                        |              |
| पढमाए अहन्तेणं, वसवाससङ्ख्या                                              | ।।१६१॥       |
| तिस्सोव सागरा ऊ, उषकोसेस विवाहिया।                                        |              |
| दोषाए जहन्तेसा, एम तु सागरोषमं                                            | ॥१६२॥        |
| सचेव सागरा ऊ, उनकोसेगा वियादिया ।                                         |              |
| वश्याप जहन्नेगां, विष्णेष सागरीवमा                                        | गश्ह्या      |
| दससागरीवमाऊ, उन्होसेण विवाहिया।                                           |              |
| चन्त्यीए जहन्नेर्ण, स्त्रेष सागरोवमा                                      | गरिष्ठा।     |
| सत्तरससागरा ऊ, चन्कोसेगा विमाहिया ।                                       |              |
| पंचमाय जहम्मेर्या, दस चेय सागरीयमा                                        | गर्धमा       |
| वावीससागरा ऊ, उक्कोसेण विवाहिया ।<br>स्ट्रीय अहन्नेण, सत्तरस सागरोवमा     |              |
| कश्चर अहन्नण, सचरस सानरावमा<br>तेषीससागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया।           | ॥१६६॥        |
| तत्ताससागरा कु उपकास्य वियाहिया ।<br>सत्तमाप बहुन्तेग्रा, बाधीसं सागरोवमा | ।।१६७॥       |
| व्यवस्थात व्यवस्थात वार्यस्था                                             | 114 4011     |

₹00 जैन सिदांत माला जा चेय य आउठिई, नेरह्याएं विवाहिया। सा तेसि फायठिई जहन्तुक्कोसिया भव 비원다 मण्नतकालमुक्कोस, धन्तोमुहत्त जहसर्ग । विजदमिम सप फाए, नेरङ्गार्ग तु भन्तरं 118 64.11 पर्णासं वरुगामो चेय गधमो रसन्धसमो। संठाएदसम्बो वाचि, विहाणाई सहस्ससो [[800]] पचिन्त्यतिरिक्साको, दुषिहा ते वियाहिया । समच्छिमविरिक्साची, गम्भवद्गन्तिया तहा 1180811 दुविहाते भव तिविहा, जनयरा यनगरा सहा। नहयरा य बोदस्था, तेसि भेप सुग्रेह मे गरज्या मच्छा य कब्द्रभाय, गाहाय मगरा तहा। सु सुमारा य बोघठ्या, पंचहा जलयराहिया ।।१७३॥ कोएगदेसे ते सब्दे, न सब्दत्य वियादिया । यत्तो कालविभागं सु, वोच्छं तेसि चष्टव्विहं ।।१७४॥ 1180811 1180611

संदर्भ पण्प गार्ह्या अपञ्चवसिया वि.स.। ठिइं पब्य साईया सपद्धवसिया वि व पगा य पुरुषकोडी उनकोसेगा विवाहिया। भारतिई जनगराणं, भन्तोमुहुत्तं जहनिया पुरुषकोडिपृह्तं तु, धनकोसेग्र विवादिया ।

कार्याठक अलयराणं, बन्दोमुद्धत्तं जहसर्व ।१७७। भगान्तकासमुक्कोसं, भन्दोमुदुच सदस्यं ।

चिजदम्मि सप भाप जलयरायण भन्तर 118641

चक्रवया य परिसप्पा दुविहा धक्तवरा भव ।

चच्च्या चरविहा, ते में फिरायमी सुख 1180811

| <b>प्रश्तराम्ययनस्</b> त्रं सम्यननं ३६                                                                                          | २०१        |
|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------|
| पासूरा दुस्तृरा चेष, गयबीपयसण्हप्पया ।<br>इयमाइ गोणमाइ, गयमाइ सीहमाइणो                                                          |            |
| मुद्रोराग परिसप्पा य परिसप्पा दुविहा भवे ।<br>गोहाई श्रिहिमाई य, पक्षेका सेगहा भवे<br>कोएगदेखे ते सब्बे, न सब्बत्य विद्याहिया । | गरदशा      |
| एतो कालविभगं तु, घोरखं तेसि चरुव्यहं                                                                                            | ॥१८२॥      |
| संतरं पप्प गार्षपा, भपखनस्या वि य ।<br>ठिर प्रमुख सार्थपा सपळावसिया वि य                                                        | ॥१⊏३॥      |
| पत्तिकोवमाई तिथ्यि च उक्कोसेया वियाहिया ।<br>कारुठिई थलयरायां, कन्तो मुहुतं वियाहिया                                            | ાારેવ્દકાા |
| पुष्यकोदिपुहर्त्वेयां, झन्तोसुहुर्त्तं बहन्निया ।<br>कायठिई थक्तयरायां, झन्तर तेक्षिम अवे                                       | IItskii    |
| कालमणुन्तमुक्कोर्स, बन्तोमुहुत्त बहुत्तय ।<br>विजयस्मि सप काप, यलयराण तु बन्तर                                                  | 1185911    |
| चम्मे उ होमपक्कीय, तक्या समुगगपिस्सया।<br>विययपक्सीय बोधस्त्रा पक्सियो य चष्टियहा                                               | ।।१८७।     |
| लोगेगवेसे ते सब्बे, न सब्बस्य विवाहिया।<br>इसो कालविभागं तु, तेसि वोच्छं चवन्त्रिह                                              | ॥१५८॥      |
| संतर्भ पप्प गार्भया, भपस्त्रवसिया वि य ।<br>ठिर्भ पहुच साक्ष्या,सपस्त्रवसिया वि य                                               | 11१584     |
| पत्रिकोषसस्य भागो, क्रसंखेरजङ्गो भवे ।<br>बावठिङ् खह्यराग्, बन्तोमुनुच जहनिया<br>क्रसंक्षभाग पत्रियस्स, बक्षोसेग्र व साहिया ।   | १६०        |
| चससमाग पालपस्त, बक्षाचय उ साह्या ।<br>पुरुषकोद्यीपुरुत्तेयां, भग्तोमुहुत्त जहांमयं                                              | 1186811    |

| २०२                  | बैन सिद्यांत माना              |          |
|----------------------|--------------------------------|----------|
| कायठि <b>इ सहयरा</b> | एं भन्तरं तेसिम भव ।           |          |
|                      | तं, भन्तोमुहुसं जहन्तर्य       | ।।१६२॥   |
|                      | वेव गन्धको रसम्बसको ।          |          |
|                      | वि, विदेशणाई सहस्ससो           | ।।१६२॥   |
|                      | ग उ, ते में कित्तमको सुख।      |          |
|                      | प्रया, गरुभवक्षन्तिया तहा      | ાાકદશા   |
|                      | च, तिविद्या ते वियाहिया।       |          |
|                      | य, भन्तरदीवया तहा              | गरुब्धां |
|                      | ा, भेया चहुर्वीसई ।            |          |
|                      | सिं, इइ एसा विशाहिया           | 1188411  |
| समुच्छिमाण एउँ       | ष, मेभो होइ विगाहिको ।         |          |
| स्रोगस्म एगदेसरि     | म, ते सम्बे वि वियाहिया        | ાશ્ચળા   |
|                      | ा, भणकावसिया वि रा ।           |          |
|                      | ा, सपष्चपसिया वि य             | ।।१६मा   |
| पक्तिकोषमाउ वि       | न्निवि वक्रोसेण विकादिया।      |          |
|                      | ण, सन्तोसुदुत्तं जहाँन्नया     | 1188811  |
|                      | एिए। इ. वक्तासण वियादिया ।     |          |
|                      | भन्तो <u>स्हुत्तं</u> जहन्निया | ॥२००॥    |
| कार्याठइ मणुया       | ण भन्तरं तेसिमं भवे ।          |          |
|                      | तं, भन्तोसुहुच अहन्नयं         | ॥१०१॥    |
| वयमि वरगुष्पी '      | वेष गन्धको रसफासको ।           |          |

भगन्तकालमुकास, भन्तासुद्वच जहन्तये वयसि वययाची चेय गन्याची रसकासको । सठायादसको वापि, विहायाह सहस्ससो द्वा क्वांब्यहा बुचा त से कित्तयको सुख। भोमिजवायामन्तरबोहसवमायिया तहा

।।२०२॥

11६०आ

| इसराध्ययनसूत्रं झध्ययनं ३६                 | २०३      |
|--------------------------------------------|----------|
| दसहा च मवणवासी, बहुहा वस्त्रचारिसो ।       |          |
| पंचिवहा ओइसिया, दुविहा नेमाणिया वहा        | ાાર∘કાા  |
| भसुरा नागसुषरया, विक्जू भग्गी वियाहिया।    |          |
| दीबोवहिविसा वाया यणिया भवणवासिंणो          | ાારવ્યા  |
| पिसायसया जक्का य रक्ससा किन्नरा किंपुरिसा। |          |
| महोरगा य गन्धन्या, बहुविहा बाणमन्तरा       | ।।२०६॥   |
| चन्दा सूरा य नक्खना, गहा वारागणा वहा।      |          |
| ठिया विचारियो चैव, पचहा बोहसालया           | ારજ્યા   |
| वेमाणिया च जे द्वा, दुविहा ते वियाहिया।    |          |
| कप्पोबगा य वोधक्वा, कप्पाइया तहेव य        | ॥२०८॥    |
| कप्पोषमा बारसहा, सोहम्मीसासमा तहा।         |          |
| सण्कुमारमाहिन्दा, धम्मलोगा य सन्तगा        | ાારલ્કાા |
| महासुका सहस्सारा, भागाभा पाण्या तहा ।      |          |
| भारणा भाषुया चेष, ११ कप्पोदगा सुरा         | ॥२१•॥    |
| कप्पाइया च जे देवा, दुविहा ते वियाहिया ।   |          |
| गेविकासुत्तरा चेव गेविक्जा नवविद्या तर्हि  | ાારશ્યા  |
| देडिमादेडिमा चेय, देडिमामग्यिकमा तहा ।     |          |
| इंद्रिमारवरिमा चेव, मर्किसमाइंद्रिमा तहा   | ॥२१२॥    |
| मस्मिमासस्मिमा चेष, मस्मित्रवरिमा तहा।     |          |
| रयरिमाहहिमा चेष, व्यरिमामिक्समा वहा        | ॥२१३॥    |
| ष्वरिमार्विसमा चेव, इय गेविम्बर्गा सुरा।   |          |
| भिज्या वेजयन्ता य, जयन्ता भाषराजिया        | गरश्या   |
| सन्यत्यसिद्धता चेव, पंचहाणुत्तरा सुरा।     |          |
| इय बमाणिया एएऽग्रेगहा एवमायको              | गररजा    |

जैन सिदात माना 20% लोगस्म एगदेसम्मि, ते सब्दे वि विवाहिया । इसो कातविभागं तु, तेसि वृन्छ पर्वाञ्यद्दं ારફેલા सत्रई पट्य काइया. अपद्मयसिया वि य । ।।२१७॥ ठिइं पद्ध साइया सपञ्चषसिया वि य साहीयं सागर एकं, चक्कोसेण ठिई भने। भोमेज्ञाग जहनेग दसवाससहरिसया ॥२१मा पिलकोषममेग तु, बक्कोसेए ठिई भवे। वन्तरायः अहन्नेया, दसवाससहस्सिया ાારાઘા पक्षियोवममेग तु, धासलक्खेग सादिय । पतिकोवमट्रभागे जोइसेस् जहसिया 미국국에

दो चेष सागराई, स्क्रोसेग विवाहिया ।

सोहम्मन्मि बहुनेश परा च पश्चिमोपम सागरा साहिया दुमि, उक्कोसंग्र वियाहिया। ईसायम्मि उहन्नेया साहियं पक्षियोवमं सागराणि य सत्तेष, उद्गोसेणं ठिई भने ।

सर्गाडमारे जहन्तेया, दुनि क सागरोबसा साहिया सागरो सत्त, हक्कोसेयां ठिई सबे । माहिन्द्रान्म जह नेगां, साहिया दुनि सागरा दस चंच सागराई, व्यक्तोखेर्ण ठिई भन्ने।

चत्रम सागराइ एकोचेया ठिई भवे। जन्तर्गाम्स अहन्नेण, इस र सागरोषमा

ब्रम्भनाए जह नेया, सच क सागरीयमा

सत्तरस सागराई, उनकोसेण ठिइ भवे । महासुरके जहन्त्रण, घोर्स, सागरायमा

1122611 गिर्द्धा

**अ**२२१॥

ારરસા

ग्रद्धा

1122811

1133 211

| उत्तराप्ययनसूत्रं मध्ययनं ३६                                                                                       | २०५         |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------|
| षहारस सागराई, उक्कोसेण ठिई भवे ।<br>सहस्तार्राम् बहन्तेणं, सत्तरस सागरीवमा<br>सागरा बरणवीसं सु, उक्कोसेण ठिई भवे । | ॥२२=॥       |
| भागपनिम बहुन्नेर्ग, भट्टारस सागरीवमा                                                                               | ારરઘા       |
| वीसं तु सागराई, उक्कोसेण ठिई भवे ।<br>पाणुयन्मि जहन्तेणं, सागरा घटणधीसई                                            | ॥२३०॥       |
| सागरा इस्कवीस तु, उक्कोसेण ठिइ भवे।<br>भारणम्मि जहन्तेण वीसई सागरीवमा                                              | us इंशा     |
| वाबीस रागराई, उपकोसेण ठिई भवे ।<br>भण्युयम्मि जहन्तेणं, सागरा इक्डवीसई<br>तेबीस सागराई, उक्डोसेण ठिई भवे ।         | ॥२३२॥       |
| तवास सागराइ, उन्छास्य १०३ चर्चा<br>पदमस्मि जहन्तेगां, बाबीसं सागरोबमा                                              | ॥२३३॥       |
| परवीस सागराई, उक्कोसेण ठिई भवे ।<br>विध्यस्मि जहन्नेणं तेवीसं सागरोषमा                                             | ાારફેશા     |
| पण्विस सागराई, एक्कोसेण ठिई भवे।<br>वश्यिम बहन्तेण, पत्रवीसं सागरोवमा                                              | וואָצָּאַוו |
| ख्रवीस सागराई, छनकोसेण ठिई भन ।<br>वस्त्यम्मि जहन्नेणं, सागरा पर्युवीसई                                            | ।।३३६॥      |
| सागरा सत्तवीसं सु, एक्कोसेया ठिई भने ।<br>पद्मभन्मि जहन्नेयां, सागरा ए झवीसइ                                       | ાારફળા      |
| सागरा बाठुवीसं तु, एक्कोसेगा ठिई भने।<br>बहुस्मि जहन्नेग्रं, सागरा सत्त्वीसई                                       | ॥२३८॥       |
| सागरा श्रदणतीसं तु, एक्कोसेण ठिई मवे ।<br>सचमन्म जहरूनेण, सागरा श्रहवीसई                                           | ાારફઘા      |

| <b>२०६</b> उ                                                     | वेन सिद्धान्व माला             |          |
|------------------------------------------------------------------|--------------------------------|----------|
| तीस तु सागराई उक्कोरे<br>घट्टमान्म बहुन्तर्ण, सा                 | गरा घाउणवीस <b>इ</b>           | ।।२४०॥   |
| सागरा ११कातीस तु, उव<br>नवमस्मि जहन्तर्ग, तीर                    | उइ सागरोषमा                    | ।।२४१॥   |
| तत्तीसा सागराई, उक्कोरे<br>च उसुपि विजया <b>इसु,</b> जा          | <b>र</b> न्नेरोफ्कचीस <b>इ</b> | ાારકરા   |
| भजातमाणुनकोसा तेर<br>महाविमाणे सन्बहे ठि                         | र्ष एसा वियाहिया               | ારશ્રમા  |
| आ चैव र भारतिई, देश<br>सा तेसि कार्याटई, बहुर                    | <b>तमुकोसिया मवे</b>           | (1488)   |
| मण्नतकालमुस्कोसं, म<br>विजयन्मि सप काए, दे                       | वाण् <b>हुन्ज भन्तरं</b>       | العلاجاا |
| भगन्तकात्रमुकोसं, बार<br>भागायाईण कप्पाण गे                      | विक्जार्य तु बन्तरं            | ાારક્ષમા |
| संक्षिण्यसागरकोसं वार<br>ऋगुत्तराख य देवार्ण, र                  | मन्तरं तु वियाहिया             | ારકળા    |
| एएसि बण्याको चेव, ग<br>संठाणक्सको वादि वि<br>ससारत्था य सिद्धा य | हायादं सहस्ससो                 | ॥२४८॥    |
| समारत्या यासका य<br>स्विणो चेवह्मी य, भ<br>इय जीवमजीव य, सोच     | जीवा दुविहामि य                | ॥२४धा    |
| स्य आवमजाय ये, सत्य<br>सञ्चनयाखमणुमए रमें<br>सन्मो बहुणि वासाणि  | क्षित्र संजमे मुखी             | ॥२४०॥    |
| इमेण कम्मजीनेल, भव                                               | पाएं संक्रिश मुणी              | गरशा     |

| उत्तराध्ययनसूत्र अध्ययन ३६                        | २०७      |
|---------------------------------------------------|----------|
| बारसेव च बासाई, सलेहुक्कोसिया भने ।               |          |
| संवच्छरमञ्जिममिया, झम्मासा य बहन्निया             | ।।२४२॥   |
| पढमे वासच <del>यकक</del> िम विगई-निव्यक्ष्या करे। |          |
| विश्प वासचचककिम, विचित्त तु तेव चरे               | गर×शा    |
| पगन्तरमायामं, कट्ट् संवच्छरे दुवे।                |          |
| तको सबच्छरद्धं सु नाइविगिष्टं तयं चरे             | ાારપ્રશા |
| वको सबच्छरद्धं, तु, विगिर्ह तु वर्षं चर ।         |          |
| परिमिय चेव भायामं, तम्म संवच्छरे करे              | ારકશા    |
| कोबीसहियमायाम, कट्ट संबच्छरे मुखी।                |          |
| मासद्भासिपणं पु, भाहारेण वर्षं चरे                | ।।२४६॥   |
| दन्त्पमाभिद्योगं च, किथ्यिसियं मोहमासुरुच च ।     |          |
| एयार दुःगाईको, मरणस्मि विराहिया होन्ति            | ાારકહા   |
| मिच्छादसभरता, सनियाणा उ हिंसगा।                   |          |
| इय जे मरन्ति जीवा, तेर्सि पुग दुझ्हा वोही         | ॥२४व्या  |
| सम्मद्रसण्या, भनियाणा सुक्कतेसमोगादा ।            |          |
| इय जे मरन्ति जीवा, तेसि मुनहा भवे बोही            | llaxell  |
| मिच्छावंसण्रचा, सनियाणा कण्डलेसमोगावा ।           |          |
| इय जे मरन्ति जीवा, तेसि पुरा दुझ्दा वोही          | ાારફગા   |
| अिणवयमें अमुरत्ता, अिणवयम वे करेन्ति भावेगा।      |          |
| ममला मसङ्किलिहा,ते होन्ति परित्तर्ससारी           | गर्दशा   |
| पासमरकाणि पहुसो, सकाममरणाणि चेव य वहूणि।          |          |

मरिहन्ति ते बराया, जिल्लवयणं जे न जासन्ति

बहुभागमविभाषा, समाहिरुपायगा य गुणगाही ! १२र्णं कारलेख, चरिहा भालोयण सोट ાારફરાા

1154411

**बैन सिद्धान्स माला** ₹05 कन्द्रपञ्ज्याइं तह, सीक्षसहायहसण्विगहाइं।

विन्हावन्तो य पर, वन्दर्ण भावण कुण्ड

॥२६४॥

الدؤلاا

ાાર્ક્સા

गरहमा

1175411

ારફઘા

मन्ताजोगं कारं, भईकम्म च जे परंबन्ति ।

साय रस-इड्डिडं, अभिष्ठीग भावएं ऋण्ड

बार्यवद्भरोसपसरो वह य निमित्तन्मि होइ पश्चिमेती। पपहिं कारणेहि, बासुरियं भाषणं कुणह

सध्यगहरां विसमन्द्रागं च, जलगां च अलपवेसी य। मणायारमण्डसेवी, जम्मणमरखाणि बंघन्ति

> चि वेमि ॥ बीदाजीवविमची समर्चं॥३६॥ ।। इति उत्तरच्ययणं-सुत्त समत्त ॥

माई अवरणवाई, किन्दिसिय भाषण कुराई

इय पारकरे बुद्धे, नायए परिनिध्यए । द्वशीस क्लरक्त्रप, भवसिद्धीयसंगए

नाग्रस्स केवलीएां, धम्मायरियस्स संघसाद्वगा ।

# श्रीमावविपाकसूत्रम्

होत्था ।
समोसवे ।
ग्रं मगवया
चे । सुह
ग्रं के कहे
थं वयासि
धि । सपतेयां
, भइनदी
महन्नदो

ति । धारमः व सपत्तेणं गागार एव विस्थिमीसे

ाव संपत्तेर्ण

श्रास्ताखं श्रास्ताखं श्रास्ताखं श्रास्ताखं श्रास्ताखं श्रास्ताखं श्रास्ताखं श्रास्ताखं श्रास्त्रा । दिखित्यांमयसामद्भे । तत्यणं सुष्मकदं श्रामं विस्तासं विद्या । सन्यव य पुष्मकत्त्रासामिद्रे, रम्मे, नंद्रश्यवण्यं गार्चे पासाइप ४ । तत्थणं क्यवणमानिपयसं अक्सासः अक्साय-वर्णे होत्या विद्ये ।

त्रस्थां इत्थिसीचे ग्रायरे मदीणमच् नाम राया द्वारया। महया इमर्वते रायवरणाउ । तस्मणं सदीग्रस्तुस्स रयणो पारिणी पामोक्त्यं देशी सहस्सं उरोहेया वि होस्था । तपण सा धारिषी देवी भन्नवा फमाई वेंसि वारिसांसि वास भवणसि सीहं सुमिन्ने जहा मेहजन्मणं वहा भारियक्यं । एवरं सुवाहुकुमारे जाव बह भोगसमत्ये यावि आणंति २ ता भन्मापियरो येच पासायबहि सगसयाई फरेंति भन्मुग्गयमुसियपहसाएवि भवणं ।

एभ जहा महस्यकस्स रच्छो । एवर पुष्कचूका पामोक्कार्यं पंचयह रायवरक्ष्यणा सवार्यं एग दिवसेर्यं पार्थि गेयहार्वे हेर्षे पंचसहार दाउ जाव उप्पियासाय वरगते फुटुमाछा जाव विहर्से । तेर्यं कालेर्यं तेर्यं समर्थां समयो भगवत सहार्वार समोसरे ।

परिसा निगया भदीग्रसन् जहा कोश्रिप निगार । सुबाहुकुमार वि जहा जमाली तहा रहेरों निगगर । जाव भन्मो कहिब राब परिसा पहिनया । सप रां से सुबाहुकुमारे समग्रस्य भगवत महाबीरस्स कंतिर

प्रस्मं सोच्या निसम्मं हह तुहै ४ डठाए वठेड् जांव एवं वयापि सहहामि एं मंते ! निमार्य पाययणं जाव जहार्या देवाणुष्पियापं कंतिए बहुषे राईषर सत्यवाद पमइव मुंडे भविचा कागारा<sup>र्य</sup> कागारियं पटवद्या ! नो सत्तु काई, वहा संचापित मुद्धे भविच कागाराज कायागारियं पटवद्या एक एं एं देवाणुष्पयाणुं कंतिय पंचाणुक्यायां सचित्वस्वावयादं दुवालासिक्षं गिहष्ममं पहिन्यिं स्सामि ! कहा सुधं देवाणुष्पिया मा पहिन्ये केटेड्!

वप या से सुबाहुकुमारे समक्षस मगवव महाबीरस्स क्रीविष पंचायुव्ययाई सर्वासक्साव्ययाई पंडब्बन्नह २ चा वामेच र्व दुरुह्द २ चा जामेच दिसं पाउभूप वामेय दिसं पंडियप । तेर्य कालेयां तया समय्यां समयस्स भगवउ महाबीरस्स सेट्टे क्रीतेवासी इन्ह्यूई स्थान क्रयुगार जाय प षहो एां मन्ते! मुबाहुकुमार इहे इह रूवे १ फंते फंतरूवे २ पिये पियरूवे ३ मएएन्ने मएएन्नरूवे ४ मएएमे मएएमरूवे ४ सोमे मुमा पियर्वसएं मुरूवे धहुज्जस्म वियर्ण मंते! मुबाहु इमार इहे इहरूवे ४ सोमे जाव मुरूवे। साहु चएसर वियर्ण मंते! मुबाहु इमारे इहे इहरूवे ४ जाव मुरूवे। साहु चएसर वियर्ण मंते! मुबाहु एमरेए इसे एवा रुवा उराजा माएएस रिद्धी किएएण कहा किएएण पत्ता कियणा प्राप्त कियणा पत्ता कियागाया। को वा एस बासी जाव कि नामप वा कियाणा प्राप्त कियागाया। को वा एस बासी जाव कि नामप वा कि गोरूप वा कि वा इषा कि वा माएसर वा भावा हि वा समायरिया। कस्स वा वहा रूबस्स सम्पास्त वा भावा एस रिद्धी जहा पत्ता भावासमयएगाया।

पर्य सन् गोयम! तेण कालेणं तेणं समपणं इहेव अनुहीये श्रीव भारह वासे हत्यिणावरे गाम णयरे रिद्धित्यिमयसमिद्धे ययणः। तत्यण हत्यिणावरे गाम गाम गाम गाहायहं परिवसह मन्दे विचे जाम भपरिमृप्। तेण कालेण तेण समपणं मन्म पोस णाम थेर जाहसंपन्न जाव पंपहिं समग्रसप्रिं सिद्धं संपरि १ दे पुठ्याणुप्टिंव चरमाणे गामाणुगामं दृहजमाणे केणेव हत्यिणावरं गायरे जेणेव सहस्तवस्यो उम्म्यणे तेणेव व्यागण्डहं पा महा पहिल्ल वन्गह जिंगग्रहहं र चा संजमेण वयसा भणाण भावेमाणे विहरहं।

तेणं कालेण तेणं समयणं घरमावासाण् येराणं कांतेवासी सुरचे खामं कलागार वराले जाव तवलेसे मास मासेण समामाणे विहरह । वर्णं सुरचे काणगार माससमाणपारणगित पदमाए पोरिसीए सम्माय करह । वहा गोयमे वहेय घरमापोसं परं भाषकहर जाव कांद्रमाणे समहस्स गाहाकहरसाणि कांप्रपादि

तण्ण से सुमुद्द गाहायद सुद्दच काणगार एउन्नमार्ण पासद २ व्य हृष्ट सुद्र कासणाट कारमुद्रदे २ चा पायपीदाट प्रवोदद्वद २ चा पाउयाउ समुयति २ चा पगसाधियं उत्तरासर्ग करेद २ चा सुद्र्य काणगारं सच्छ्रपयाद्दं प्रयुगच्छद २ चा तिस्तुची कायादिणं पन-हिए कर ६ २ चा यंदद ग्रमसद्द २ चा केणेव सच्चपर तेणेव न्यागच्छद २ चा स्वयद्द्यण विरुद्धं कस्तुण पाग स्वादम सादमं प्रविज्ञाभिस्सामि तिक्ष्ट नुद्दे प्रिक्नाभैमार्ग वि नुद्दे प्रविज्ञाभिष् चित्रहे ।

वण्ण सस्स सुमुद्दस्स गाहाबद्दस्स तेण वन्त्र सुद्धेणं वावग सुद्धेणं पविगाह य सुद्धेणं विविद्देणं विकरण सुद्धेण सुवसं काणगारे पिं लामिष सवाणे संसारे परिचीक्ण,मणुस्साऊप निवद्धे गिर्होस व वं इमादं ९व विक्वाई शव्यक्षेत्रकं र कहा—बसुद्दारा बुद्दा १ वस्त्र वयणे कुसुमं निवाहण २ चेलुक्सेयेकच ३ साह्याऊ द्वयुद्धा ४ ४ कारा वियण मागासीस बाहो वाण्यं पूटे य ४ । चए यां हरियणां उर यावरे सिंपाहमा जाय पहेसु बहुज्यों कायणमयणस्स प्रमाहस्वद्ध ४ धन्तेयां देवाणुप्तिया सुसुदं गाहाबद्दं जाव डो धन्तेयां देवाणुप्तिया सुसुदं गाहाबद्धं ।

तप यो से मुद्रहे गाहा कई पहुई बासाइ बाउय पालेह २ वां कालमासे कालं किया हहेय दित्यसीसे एएवरे अवीरामधरपये धारिसीय देवीर कुरिव्हास पुष्ताप उठ्ययरो । तप यो सा भारिसी देवी सर्वाक्र उद्धेस सुष्तागराव्हीरमासी २ वहेय सीह पासह । सेसं तं चेय अपिंगपासाय विहरह । त एव सालु गोयमा ! सुगाहुसा कुमारसी इम पया स्त्रा मासुस्सरिद्धी उद्धा पशा झाल

सुपाहुणा कुमारणे इम पया स्था माणुस्तरिजी र द्या पथा माम समयणागया। पम्र्ल भंत ! सुपाहु कुमार दकालुण्याणे मंतिर मुहे भविचा बागाराउ ब्रालगारियं पश्यक्षण ? हंता पम तहुणे। चे भगव गोयमे समर्गा भगव महावीर वदइ एमसइ २ चा संघमेण वयसा माप्पाण भावेमाणे विहरइ।

वपण से सम्मणे भगव महावीर अरण्या क्याइ हित्यसीकाव ग्रयराव पुष्पकरंडचाट एकाखाव क्यवणमालिष्यस्म अक्सस्स अक्सायवणाव पिडानक्समइ२ चा विह्या जणवयिवहार विहर्द । वर्ण से सुवाहुकुमारे सम्मणेवासप जाप क्यिग्यश्रीवाजीवे जाव पिडानमेमाणे विहर । वर्ण से सुवाहुकुमारे अरण्या क्याइ परवस्ताना विहर । वर्ण से सुवाहुकुमारे अरण्या क्याइ । वर्ण से सुवाहुकुमारे अरण्या क्याइ । वर्ण से सुवाहुकुमारे स्वाहुम अर्थ परिष्ठागरमाणेविहर ।

षण्या तस्स सुवाहुस्स कुभारस्स पुन्वरत्तावरसकोले वस्म वागरिय जागरमाण्यस इमे एया रूवे ध्वक्रसत्याय ४ घरणाणा ते गामागरणागरस्स जाव सिम्नवेसा जत्ययां समणी भगव महावीर विहर । घन्नाणं ते राईसरं जाव सत्यवाह पमहुष वेण समण्यस्य भगव महावीरस्स ध्वतिय मुंबे भवित्ता भागागराच ध्वणागरियं प-वद्यति घरणाणं ते राईसरं जाव सत्यवाह पमहुष वेण समण्यस्य भगवत्व प्रहार प्रस्ति घरणाणं ते राईसरं जाव सत्यवाह पमहुष वेण समण्यस्य भगवत्व प्रस्ति प्रकारणपुर्व ममण्यस्य भगवत्व प्रस्ति प्रकारणपुर्व प्रस्ताविष्ठ प्रस्ति प्रस्ताविष्ठ प्रस्ति प्रस्तविष्ठ प्रस्ति प

त्तप एां समयो भगय महावीर सुवाहुस्त कुमारस्य इम प्या रूव बन्डात्यय जाव विचाणिता पन्नासुपृष्टि परमायो गामासु गाम तूरवमायो जेखेव हत्यसीसे स्थार जेखेव पुष्पकरंडे रक्तारणे जेखेब क्यवणमात्तिष्यस्स जनसास्त अनसायवर्णे तेखेब बवागच्छद् २ सा श्रद्धा पहिरूषं वम्मह् वर्गाविह्सा सजमेशं ववसा व्यप्पाणं भावेमाणे विहरह । परिसा, राया निमाया । वएणं सस्य सुवाहुस्त कुमारस्स वं महया जहा पढमं वहा निमाव । धम्मो कहित परिसा राया पश्चिगया ।

तएण सं सुबाहुकुमारे समण्यस्य भगवन महाबीरस्य कारिए धम्म सोचना निस्सम्मं इह मुद्दे । जहां मेहो तहा क्रम्मापियरे आपुण्डाइ निस्सम्पाभिसेन तहेन जान क्रणागारे जार । इरिया समिप नाव गुनवभगारी । वर यां से सुबाहु क्रणागारे समण्यस्य भगवन महाबीरस्स तहा हवाण येराणं क्रांतिए सामाद्रयमाद्रया एकारस्स क्रंगाइ कहिक्माइ २ ना वहूं इं बासाइं सामर्थ परियागं पानिश्चा मासियाए संतिहणाए क्रप्याणं मृसिसा सर्हि भनाइ क्रांत्रस्य क्रंगाइ केहिक्माइ २ ना वहूं इं बासाइं सामर्थ परियागं पानिश्चा मासियाए संतिहणाए क्रप्याणं मृसिसा सर्हि भनाइ क्रांत्रस्य मासियाए क्रंप्ताच क्रांत्रमासे क्रांत्रस्य क्रांत्रस्य स्वाह्य क्रांत्रमासे क्रांत्रस्य क्रंप्ताच सर्वाह्य स्वाह्य क्रांत्रमासे क्रांत्र क्रंप्ताच सर्वाह्य स्वव्याणे ।

से ग्रां वाउ दवकोगाव धाकन्यएग्रां भवषस्त्रमेग्रां ठिइन्स्वएख इग्रावरं चय चइता माणुस्त विमाह सभिविह २ चा छेवल वोहिं मृक्तिह्इ २ चा घहा रूपाणं येराग्रां चित्र मुद्धे भिवचा जाव पठवहस्तइ । सं ग्रां वत्य यहूद बावादं सामर्थणपरियाग पावणि हिइ २ चा चालोइय पडिवन्दों सामर्थणपरियाग पावणि किच्या सग्रकुमार वृष्यं वेषवार बञ्चरणे । से ग्रां व्यलोगाव माणुस्तं जाव पन्वजा यंभलोण । माणुस्तं महासुक्के । माणुस्तं चाल्य । माणुस्म धारणे । माणुस्तं सक्वह स्टिटे ।

से ए तार बायवरं यय पहचा महाबिबह बारे बाहे जाब हद्पहले सिन्सिहित बुग्मिहित पुष्पिहित परिनिस्बाहिति सम्बद्धस्यायमंत्र करहिति । एक सलु अया समयोगं भगवया महावीरणे जाव सपत्तेणं सुद्रविवागाण् पढमस्य अन्मत्यणस्य अयसट्टे पयणत्ते तिवेमि । इह सुद्दविवागस्स पढमं अवस्यण् सम्मत्तः।

# द्वितीयोऽस्यायः

विशियस्स दम्बेवड । एव सल् जंव् । तेण कालेणं तेणं समएएं उसमपुरे ग्रामं ग्रुवरे यूमकर हर्ग उम्मुग्रः । घरणो जम्मो । घण्णवही राया सरस्तर्भ देवी । सुमिण्यस्तर्णं कहणा जम्म वालक्षणं कलाउप जोवणे पाणिगहण वार पासावय मोगाय जहा सुवाहुस्स ग्रुवरं महनवी कुमारे । सिरी देवी पामोक्त्राणं पंच स्त्रा । सामिस्स समोस्तर्णं सावगयमां पिडवक्जे पुण्यमयं पुष्का महाविदेह वासे पृष्ठिरिगीण नगरीए विजय कुमारे ज्या वाहू तिस्थयरे पिडलामिए मणुस्साउप निवर्ष इहं उच्यप्णे । देस कहा सुवाहुस्स जाव महाविदेहवासे सिविम्मिहित विकासिति । एवं अल्ल अब् । समर्गेणं मगवया महाविरेणं जाव संपत्रेण सुह्र्यं वागाण् वितियस्स क्षान्म्यणं सम्मत्त्रं प्रयाचे पिर्वामास्त वीय क्षान्म्यणं सम्मत्त्रं प्रयाचे विविद्यास वीय क्षान्म्यणं सम्मत्त्रं । इहं मुद्रिविद्यासस वीय क्षान्म्यणं सम्मत्त्रं।

## तृतीयोऽप्याय:

वह्यस्स उक्सेवड वीरपुरे गामं ग्रायरे । मगोरमे बम्मक्षे वीरक्ष्यहमिले राया सिरी द्वी सुजाए कुमारे । वलसिरी पामे क्लाग्रा पंचसया सामी समोसरिय । पुठवभव्यं पूच्छा । वसुयार ग्रायरे उसुभदले गाहावह पुक्तत काग्रागारे पिंडलाभिय मगुस्सा-जय निषद्धे हहं उच्यारग्रो जाव महाविदेह वासे सिग्मिड्वि ४ । इह सुद्विषागस्स वहंब काज्यस्यण् सन्मल ।

# श्री भक्तामरस्तोत्रम्।

### यसंवविलकायुत्तम्

भक्तामरप्रणवमौतिमणिप्रभाणा-मुखोवकं द्विवपापवमोविधा-नम् । सम्यकः प्रयाम्य जिनपावयुगं युगादा, वालम्बनं भवजने पसर्वा जनानाम ॥१॥ य संस्तुत सफलयाङ्गयवत्त्ववोधा-दुद्मू तबाद्भपट्भि सुरजोफनायै ।स्वोत्रेर्जगरित्रवयभिक्तहरैरुवारै,स्वोत्य किलाइमेपि स प्रथम जिनेन्द्रम् ॥२॥ युद्धता विनापि विवुधार्षिष पावपीठ <sup>।</sup> स्तोतु समुचातमविर्विगवत्रपोऽहम् । बालं विहाय अन्तर्स स्थितमितुर्विम्ब-सन्य क इच्छाचि जन सहसाप्रहीतुम् ॥ ३ ॥ वकु गृणान् गुणसमुद्रशराङ्कान्यान्, कस्ते सम सुरगुरुप्रविमी अप वद्भया । कस्पान्तकालपवनोद्भवनक्रथकं, कोवा तरीतुमलसम्बनिर्धि . मजाभ्याम ॥४॥ सोऽहं तथापि तथ भक्तिवशाम्युनीश । कर्तुं स्तव विगतराकिरपि प्रवृत्त । प्रीस्यारमधीयमधिषायं सगो सुगेन्द्रं नाऽस्थिति कि निजरिश्शोः परिपालनार्थम् ॥४॥ श्राक्तमृत मृतवार्ग परिष्ठासधाम, त्यक्रक्तियेष मुखरीकुरते वला माम् । यत्कोकिल किल मधी मधर विरोति वदारपासकलिकानिकरैकहेतु ॥६॥ त्यत्मस्तवेन भवसंतितसम्मयद्भं, पाप स्यात्स्यमुपैति शरीरमा जाम । आक्रांतलाकमिलनीलमशोपमासु, सूर्याश्चामश्चामामास्यार्वर म धकारम् ॥आ मस्पितनाय तथ संस्तवनं मसद-मारस्यते सन्धि वापि तव प्रभावात् । घतो हरिष्यति सर्वा निकनीवृत्तेषु मुक्ताफ-लद्यातमुवैति नन् विदुः ॥=॥ भारतो तय स्वयनमस्यममस्वतायः त्यत्मध्यापि बगवां द्वारवानि इन्ति । दूर सहस्रायरण उस्त प्रमेय वशाकरेषु अज्ञजानि विकासभाजि ॥६॥ नास्पर्मुवं सुपनभवस भतनाथ । मतौर्गणेमुवि भवन्तमभिष्दुर्गत । तुरवा भवन्ति स

नन् तेन कि वा, भूत्याभित, य इह नात्मसम करोति ॥१०॥ द्रष्ट्वा मबन्तमनिमेपविलोकनीयं, नान्यत्र तोपमुपयाति जनस्य चक्षु । पीत्या पय शशिकरपुतिदुग्धसिंधो , ज्ञार अल अलनिघेरसितु क इच्छेत ॥११॥ ये शासरागरुचिमि परमाणुभित्तव, निर्माप विस्मुवनैक्तलामभूत्। । सार्वत एव स्नुतु तेष्यणयः पृथिन्या यत्ते समानमपरं न हि रूपेमस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्र 🖶 ते सुरनरोरगनेत्र-दारि, नि रोपनिर्जितजगस्त्रितयोपमानलहुम । विम्यं कमलिन क निशाकरस्य, यदासरे भवति पाष्युपलाराकरूपम्।। १३॥ संपूर्ण मंडल शशांककलाफलाप शुमा गुणाकिसुवन तेष लंघयंति । ये संभिताकिष्ठगदीस्वर नाथ मेकं, कस्ताभिवारयति संचरतो यथेष्टम ॥ १४ ॥ चित्र किमत्र यदि ते त्रिदरांगनामि, नीतं मनागिप मनो न विकारमार्गम् । कल्पातकालमदता चिलता चलेन, किं मदराद्रिशिक्तर चिलत कवाबित् ॥ १४॥ निर्धमध र्सिरपवर्जिववैलप्रः, कृत्सन जगत्त्रयमिष् प्रकटीकरोपि । गम्यो न जातु मरुठा चित्रवाचळानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगस्त्रकाश ॥१६॥ नासः कवाचिदुपयासि न राहुगम्य , स्पष्टीकरोपि सहसा युगपद्मगात । नाम्भोघरोदरनिरुद्भमहाप्रभाव सूर्यातिशायिमहि मा असि मुनींद्रलोके ॥ १७॥ निस्योदय दलितमोहमहाघकारं गन्यं न राहुषद्नस्य न वारिवानाम् । त्रिभाजतं तथ, मुखान्जमनस्य कांसि विद्योतयञ्चगवदुर्वशाशांकविवम् ॥१८॥ कि शवरीपु शारा नार्राष्ट्र विवस्तवा वा, यद्मान्मुर्सेदुदक्षितेषु तमस्सु नाथ । निष्पम शाक्षियनशास्त्रिन जीवलोके कार्य कियञ्चलघरैजलभारनम्ने ॥१६॥ क्कानं यथा त्वयि विमाति क्रुनावकारा नैयं तथा इरिइसरिवयु नाय केपु । तेज स्फरन्मधियु याति यथा महत्व, नैयं तु काषशकत किरणाकुतेऽपि ४२०॥ मन्य दर हरिहरादय एव द्रष्टा, द्रष्टेषु यपु इत्य लिय वोपमेवि ॥ किं यीचितेन भवता मुनि यन नान्य

कश्चिन्मनो हरति नाथ ! भवावरेषि ॥२१॥ स्त्रीणां शवानि शवशो जनयति पुत्रान् , नान्या सुव त्यदुप जननी प्रसूवा । सर्वा दिशो वधित भानि सहस्ररहिंम, माच्येष विग्धनयति स्फुरवृह्णजालम्

॥२२॥ त्यामामनंति सुनय परमं पुमांस-मादित्यवर्णममल तमस प्रस्तात त्यामेष सम्यगुपत्तभ्य जयति मत्य, नान्य शिव शिव पदस्य मुनीत्र ! पंथा ॥२३॥ स्थामध्यर्य विभुमनित्यमसंख्यमाण, श्रद्मार्यमीश्वरमनंतमनगकेतुम् । योगीश्वरं विदित्तयोगमनेकमेकं

ज्ञानस्वरूपममकां प्रवद्वि संव ॥२४॥ वृद्धस्वमेव विवृपार्निवयुः ब्रिवाधात्त,त्व राकरोऽसि भृषनत्रयरांकरत्यात्। धातासि धीर। शिष मार्गिविधेविधानात् व्यक्तं त्वमेय भगवन्युवपोत्तमोऽसि॥२४॥तुम्यं नम'सम् नार्तिहरायनाथ । तुम्य नम स्वितिहसामसभ्यणाय । तुम्य नमस्त्रि गत परमेश्वराय, तुम्यं नमो जिन ! भषोदेधिशोपग्राय ।।२ ॥ का विस्मयोऽत्र यदि नाम गुर्गैरशेपै-स्त्व संभितो निरम कारातया मुनीरा ! दीपैनपाच विविधा स्याजातगर्वे .. स्थमांतरऽपि न

कदानिव्यीक्ति।ऽमि ॥२७॥ उपैरशाकतरसभितमुन्मयसमामावि रूपममक भयवो नितान्तम् । स्पष्टोक्कनत्करग्रमस्ततमोवितान्, विषे रवेरिव पर्याघरपार्रवेषर्ति ॥ २८॥ सिंहासने मण्णिमयुद्धशिखाधि-चित्रे विभागत तय वप कनकावदावम विव विवक्तिसवशालवा वितान तुगावयाद्रिशिरसीय सद्स्तरसे ॥२६॥ इताववातयवा चामरचारुशार्भ, विश्वाजते तव युप् कल्यीतकांतम् । उगुच्करांक

श्रचिनिर्मरवारिधार-मुबैस्तट सुरगिररिव शातकीमम् ॥ ३०॥ जनम्यं तब विभावि शशासकात मुचे स्थितं स्थागितभानुकर प्रवापम् । मुकाफलप्रकरमानविष्युद्धरामि, प्रक्ष्मापयम् त्रिज्ञरास प्रतापम् । मुक्ताभवाकः परमश्चरत्वम् ॥ ११ ॥ गंभीरतारस्यपृरिविशिवभागःस्त्रीतोकस्य स्त्रमञ्जामभतित्वस्य । सद्धमेराजनयपोपसम्बोपस्य सन्न,

क्षेद्रदुभिर्ध्यनिति ते यशस प्रवादी ॥ ३२ ॥ मंदारमुद्दरनमेरुसुपा रिजात, संवानकादिकुसुमोत्करवृष्टिरुद्धा । गधोन्यिंदुशुभमंदमर स्पाता, विच्या विव पवित ते वचसा विवर्ष ॥३३॥ शुभस्त्रभा वस्तयमूरिविमा विमोस्ते, लोकत्रयश्विमता ध्विमाशिपन्ती । प्रोचिद्वाकरनिरंतरभृरिसंस्या, धीव्या जगत्यपि निशामपि सोम-सौम्या ॥३४॥ स्वगापवर्गगममार्गवमार्गेशेष्ट , सद्वर्मवस्वकथनेथ-पटिस्तिक्षोक्या । विठय-विनर्भवित ते विशवार्यसर्वे भापास्यभाव परिणामग्या प्रयोध्य ॥ ३४ ॥ चित्रह्रहेमनवपक्रजपुजकावी पर्युद्धसमस्यमयस्वशिसामिरामौ । पादौ पदानि तय यत्र जिनेंद्र ! घत्तः, पद्मानि सत्र वित्रधाः परिषद्भपर्यति ॥ ३६ ॥ इत्य यथातय विमृतिरमृज्जिनेंद्र, धर्मापदेशनविधौ न तथा परस्य । यादक्षमा विनकृत प्रदुर्वाघकारा, साहक्कुतो प्रहुगणस्य विकाशिनोपि n ३७ ॥ रुपोतन्मवाविखविज्ञोलकपोल्लम्ल मत्त्रभमव्श्रमर नादिषयद्वकोपम् । पेरावसाभिमममुद्रसमापतन्त, दृष्या भय भवति नो भवदाभितानाम् ॥ ३८ ॥ भिन्नेभकुभगलदुव्यलशो णिताक गुकाफलप्रकरमूपिवम्सिमाग । यदकम क्रमगत हरियाधियोऽपि, नामामति मामयुगाचलसमित ते ॥३६॥ महपां तकाक्षपयनोद्भतवहिकल्पं, दायानलं स्वतितमुत्स्फर्किंग मुस्त्वल विश्वं जिपत्मुमिव समुखमापर्वत, त्यन्नामफीचनजल शमयस्य शेषम् ॥४०॥ रक्तेवर्णं समदकोकिनकंठनोल, कोघोद्धत क्रिशन मुरकणमापर्वतम् । व्याकामति म मयुगेन, निरस्तरांक-स्त्वन्नामना गवमनी इवि यस्य पुस ॥ ४१ ॥ वल्गकुरगगजगर्जिवभीमनाव. माजा वर्जं बस्रवसामिय भूपतीनाम् । चर्चाद्दवाफरगयुस्तशिसाप विद्रं, रत्ररक्षीनाचम द्वारा मिदासपैति ॥४२॥ इतामभिन्नगजशो णितवारियाद-वगावतारवरणातुरयोधभीमे । युद्धे जथ विजिवदुर्ज

यज्ञेयपम्नास्त्रवादर्यक्रवयनामयिणो लमति ॥ ४३ ॥ माम्मोनिष् स्विभितमीपण् नम्नवम् न्याठोनपीठमयदोष्ट्यण्वाद्यवान्नौ । रंगर्व रंगरिष्करस्यितवानपात्राक्षास् यिद्वाय भवतःत्रमरखाद्वप्रचि ॥४४ च्या स्वतःत्रमरखाद्वप्रचि ॥४४ च्या स्वतःत्रमरखाद्वप्रचि ॥४४ च्या स्वतः मास्युक्ति स्वतः । स्वत्यादर्यक्ष्वराचारम् स्वति मन्यत्रम् स्वति मन्यत्रम् स्वतः । स्वत्यादर्यक्ष्वराचारम् स्वति मन्यत्रम् स्वतः स्वतः स्वतः । स्वतः । स्वभाममंत्रमनिरां मनुजाः स्वतः न स्वयः स्वयः विगतवयमया मर्वति ॥४६॥ मचित्रप्रत्रमृगराजद्वानानाहि संप्रामवार्तिप्रमृगराजद्वानानाहि संप्रामवार्तिप्रमृश्वाद्वरविभन्नोस्यम् । तस्याद्यनात्रासुप्याति मर्वः । भवे व, यस्तावक्षं स्वविभन्न मतिमानधीते ॥ ४० ॥ स्वोत्रस्वतं तव जिनेत्रगुर्विनिव्यतं, भक्त्या मया स्विरवर्णविचित्रपुष्पाम् । भन्ते जनेत्रगुर्विनिव्यतं, भक्त्या मया स्विरवर्णविचित्रपुष्पाम् । भन्ते जने य इह कंठगतामजस्य सं मानतुगमवरास्यास्य स्वरीविज्ञपूर्माः। । भन्ते

